Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America, HHFA(USA)

उत्तरी भारत के ब्राह्मणों का सामाजिक अध्ययन

(चरण, शाखा, गोत्र, प्रवर, विनिर्गत और वास्तव्य)

(लगभग ६०० ई० से १२०० ई० तक)

डॉ० गौरीशंकर तिवारी

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

OPINIONS

The Brahmanas played the role in determining, moulding and directing the course of Ancient Indian History and Culture, and the various social and religious institutions, characterising ancient Indian life cannot be thought of without the Brahmanas. Their contributions to the intelectual development and moral well-being are enormous, which explain the great reverence shown to them by all the sections of Indian society in the past. The importance of a sociological study of the Brahmanas can, therefore, be hardly exaggerated, and the writer well deserves for undertaking such a study for the early medieval period which is rich in source-material, particulary, epigraphical.

DR. AJAI MITRA SHASTRI
Nagpur

The writer has dealt with a topic of absorbing interest pertaining to ancient Indian Society. This is the first time that a detailed critical study of the north Indian Brahmanas (600-1200 A. D.) has been attempted. Necessary literary and archaeological (particularly epigraphical) material has been utilized in the present work.

PROF. K. D. BAJPAI
Sagar

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

ी भारत के ब्राह्मणों का सामाजिक अध्ययन

(अभिलेखों पर आधारित)

[चरण, शाखा, गोत्र, प्रवर, विनिर्गत और वास्तव्य]

(लगभग ६००ई० से १२००ई० तक)

परम पूज्य इतिहासविद प्रोफेसर डॉ. बी. एन. पुरी के पुनीत कर कमलों में समर्पित
गौरी शंकर तिवारी
२१।४।८५

State Museum Lucknow
7146

लेखक
डॉ० गौरी शंकर तिवारी
एम०ए०, पी-एच०डी०
प्राध्यापक, (प्राचीन इतिहास, संस्कृति तथा पुरातत्त्व-विभाग),
का० सु० साकेत स्नातकोत्तर महाविद्यालय, फैजाबाद

सं वो मनांसि जानताम्
साकेत प्राच्य विद्या परिषद् फ़ैज़ाबाद (उ.प्र.)

राज्य संग्रहालय पुस्तकालय
प्रो० बी०एन० पुरी संग्रह
लखनऊ

साकेत प्राच्यविद्या-परिषद्, फैजाबाद

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

OPINIONS

The Brahmanas played the role in determining, moulding and directing the course of Ancient Indian History and Culture, and the various social and religious institutions, characterising ancient Indian life cannot be thought of without the Brahmanas. Their contributions to the intelectual development and moral well-being are enormous, which explain the great reverence shown to them by all the sections of Indian society in the past. The importance of a sociological study of the Brahmanas can, therefore, be hardly exaggerated, and the writer well deserves for undertaking such a study for the early medieval period which is rich in source-material, particulary, epigraphical.

DR. AJAI MITRA SHASTRI
Nagpur

The writer has dealt with a topic of absorbing interest pertaining to ancient Indian Society. This is the first time that a detailed critical study of the north Indian Brahmanas (600-1200 A. D.) has been attempted. Necessary literary and archaeological (particularly epigraphical) material has been utilized in the present work.

PROF. K. D. BAJPAI
Sagar

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

ी भारत के ब्राह्मणों का सामाजिक अध्ययन

(अभिलेखों पर आधारित)

[चरण, शाखा, गोत्र, प्रवर, विनिर्गत और वास्तव्य]

(लगभग ६००ई० से १२००ई० तक)

परम पूज्य इतिहासविद प्रोफेसर
डॉ. बी. एन. पुरी
के
पुनीत करकमलों में
समर्पित
गौरीशंकर तिवारी
२१।४।८५

State Museum Library Lucknow
7146

लेखक
डॉ० गौरी शंकर तिवारी
एम०ए०, पी-एच०डी०
प्राध्यापक, (प्राचीन इतिहास, संस्कृति तथा पुरातत्त्व-विभाग),
का० सु० साकेत स्नातकोत्तर महाविद्यालय, फैजाबाद

सर्वो मनांसि जानताम्
साकेत प्राच्य विद्या परिषद फ़ैज़ाबाद (उ०प्र०)

राज्य संग्रहालय पुस्तकालय
प्रो० बी० एन० पुरी
संग्रह
लखनऊ

साकेत प्राच्यविद्या-परिषद्, फैजाबाद

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

(उत्तर प्रदेश शासन द्वारा प्रदत्त अनुदान से प्रकाशित)

प्रकाशक

साकेत प्राच्यविद्या–परिषद्

१२२२, दिल्ली दरवाजा

फैजाबाद–२२४००१

प्रथम संस्करण

१९८२ ई०

मूल्य

पचास रुपये

मुद्रक

श्री सीताराम श्रीवास्तव

अवध प्रिंटिंग प्रेस, रिकाबगंज

फैजाबाद, २२४००१

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

राज्य संग्रहालय पुस्तकालय
प्रो० बी० एन० पुरी संग्रह
लखनऊ

ऋषिकल्प

पूज्यपाद गुरुवर्य

डॉ० विश्वम्भर शरण पाठक

के श्री चरणों में

समर्पित

State Museum Library
7146
Lucknow

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

प्राक्कथन

DR. B. N. PURI

M.A. M.LITT.(UXON), D.PHIL. (OXON)

EMERITUS PROFESSOR

(EX. PROF. DEPT. OE ANCIENT HISTORY
ARCHAEOLOGY & CULTURE
UNIVERSITY OF LUCKNOW

PPONE (RES. 48683
B-58. SECTOR A
MAHANAGAR
LUCKNOW-226006

मुझे यह जान कर प्रसन्नता है कि डा० गौरीशंकर तिवारी का शोध-प्रबन्ध 'उत्तरी भारत के ब्राह्मणों का सामाजिक अध्ययन (चरण, शाखा, गोत्र, प्रवर, विनिर्गत और वास्तव्य, ६००ई० से १२०० ई० तक) प्रकाशित होने जा रहा है। इस ग्रन्थ की अपनी विशेषता है। प्रायः शोध-छात्र किसी कवि की कृति अथवा किसी शासक से सम्बन्धित युग के सांस्कृतिक जीवन को प्रस्तुत करने का प्रयास करते हैं। अभिलेखों का भी सांस्कृतिक दृष्टि से अध्ययन किया जा चुका है, तथापि अभिलेख और साहित्य का साक्ष्य लेकर एक नये दृष्टिकोण से केवल एक ही वर्ण के सामाजिक जीवन को प्रस्तुत करना वस्तुतः कठिक कार्य है। इस कार्य की सफलता लेखक के कठोर परिश्रम तथा लगन का प्रतीक है। लेखक ने ब्राह्मणों के सामाजिक जीवन के विभिन्न पहलुओं पर व्यापक दृष्टि से मूल्यांकन किया है। ग्रन्थ में लेखक ने ब्राह्मणों के नामों का सांस्कृतिक अध्ययन प्रस्तुत किया है, जो मूलतः अभिलेखों पर आधारित है। प्रत्येक अध्याय में विषय-वस्तु का विश्लेषण दानपत्रों के आधार पर किया गया है। लेखक ने इस ग्रन्थ में ब्राह्मणों के केन्द्र, नामकरण, नामान्त, उपाधि, गोत्र, प्रवर, चरण और शाखा का विभिन्न पहलुओं से आभिलेखिक अध्ययन किया है।

मुझे आशा है कि इस पुस्तक के द्वारा पूर्व-मध्ययुगीन उतरी भारत के ब्राह्मणों के सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन पर सम्यक् प्रकाश पड़ेगा।

बैजनाथ पुरी

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

प्रकाशकीय

ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद् बाहू राजन्यः कृतः ।
उरू तदस्य यद् वैश्यः पद्भ्यां शूद्रोऽजायत ।।
ऋग्वेद, १०. ९०.१२

ऋग्वैदिक काल से ही ब्राह्मणों का महत्त्व असंदिग्ध रूप से निरन्तर चला आ रहा है, मनुस्मृति में भी सभी प्राणियों को इस देश के अग्रजन्मा(ब्राह्मण) से अपने-अपने चरित्र की शिक्षा ग्रहण करने की बात कही गई है ।

एतद्देशप्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मनः ।
स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्वमानवाः ।।
मनुस्मृति,२/२०

यह कहना पक्षपातपूर्ण नहीं होगा कि प्राचीन भारतीय सामाजिक व्यवस्था को विधिवत् संचालित करने में ऋषियों तथा उनके ही वंशज ब्राह्मणों की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है । पूर्वमध्ययुगीन उत्तरी भारत में अपनी असाधारण विद्वत्ता, प्रतिभा तथा प्रेरणादायक कार्यों के कारण ब्राह्मणों को समाज में सम्मानित स्थान प्राप्त था ।

वैदिक मन्त्रों के द्रष्टा ऋषियों के अगाध ज्ञान की अजस्र धारा, अद्यावधि ज्ञान के संरक्षक ब्राह्मणों के द्वारा, सम्पूर्ण समाज को अभिषिंचित करती चली आ रही है । ऋग्वेद में 'ब्राह्मण' शब्द का उल्लेख अनेक बार आया है, किन्तु यह शब्द उस समय किसी जाति के लिए नहीं प्रयुक्त हुआ है,क्योंकि वर्ण का आधार जन्म न होकर कर्म था । अथर्ववेद (५/१७/१९) में ब्राह्मणों की महत्ता गाई गई हैं और उन्हें सर्वश्रेष्ठ कहा गया है । ऐतरेय ब्राह्मण (३/३४) में वरुण के कथन के अनुसार ब्राह्मण को क्षत्रिय से उत्तम कहा गया है ।

सम्प्रति उत्तरी भारत की सारस्वत साधना में ऋषिकल्प लब्धप्रतिष्ठ विद्वान् डा० विश्वम्भर शरण पाठक कनिष्ठिकाधिष्ठित हैं । उक्त साधना-परम्परा की छाया आपके सुयोग्य शिष्य डा० गौरीशंकर तिवारी की कृति 'उत्तरी भारत के ब्राह्मणों का सामाजिक अध्ययन' में स्पष्ट रूप से परिलक्षित हो रही है । मुझे इस ग्रन्थ के प्रकाशन-कार्य में साङ्गोपाङ्ग रूप से कई बार इस कृति का अध्ययन करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ । हमें यह कहने में लेशमात्र भी संकोच नहीं हो रहा है कि लेखक की यह कृति अपने आभिलेखिक अध्ययन के कारण इतिहास विषय के विद्वानों के लिये सर्वथा एक नई देन है । यह कृति मूल रूप में डा० तिवारी द्वारा पी-एच० डी० की उपाधि के लिये लिखित शोध-प्रबन्ध के रूप में थी । शोध-प्रबन्ध के परीक्षकों में प्रो० के० डी० बाजपेयी ने इसे सर्वथा अपने

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

ढंग की प्रथम कृति के रूप में स्वीकार किया है तथा डा० अजयमित्र शास्त्री ने तो यहाँ तक स्वीकार किया है कि शोधकर्ता इस तरह के अध्ययन के लिये साधु-वाद का पात्र है। साकेत प्राच्यविद्या-परिषद् का यह सौभाग्य है कि पुस्तक-प्रकाशन की शृङ्खला में इस तरह की वैदुष्यपूर्ण कृति को प्रकाशित करने का श्री गणेश किया।

इस कृति को सुधीजन के समक्ष प्रस्तुत करते हुये परिषद् प्रसन्नता तथा गौरव की अनुभूति कर रही है। आशा है विद्वज्जन इसका स्वागत करेंगे। इस प्रकाशन को विद्वज्जनों के सम्मुख प्रस्तुत करते हुये हमें महाकवि कालिदास के अभिज्ञानशाकुन्तलम् (१/२) का निम्नलिखित श्लोक का स्मरण हो रहा है–

आपरितोषाद् विदुषां न साधु मन्ये प्रयोगविज्ञानम्।

इति शम्

वसन्त पञ्चमी,
संवत् २०३८
३० जनवरी, १९८२

रमाशंकर मिश्र
मन्त्री
साकेत प्राच्यविद्या-परिषद्
फैजाबाद

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

भूमिका

पूर्वमध्ययुगीन (६०० ई०-१२०० ई०) 'उत्तरी भारत के ब्राह्मणों का सामाजिक अध्ययन (उपपद, गोत्र, प्रवर, वेद, शाखा, चरण, विनिर्गत तथा वास्तव्य)' का महत्त्व मात्र इतिहास की ही दृष्टि से नहीं है, अपितु समाजशास्त्र, जातीय विज्ञान (एथनोलोजी), डेमोग्राफी (वह विद्या जिसमें किसी जाति के सामाजिक स्तर आदि का विशेष अध्ययन किया जाता है), मानवशास्त्र (एन्थ्रोपोलोजी), भाषा विज्ञान (फिलोलोजी), भूगोल और मानविकी (ह्यूमनिटीज) के क्षेत्र में भी इस अध्ययन की विशेष महत्ता दृष्टिगोचर होती है। इस विषय का यथासम्भव समुचित अध्ययन करने के पश्चात् इसे संकुचित क्षेत्र में न रखकर बृहद् क्षेत्र में रखने का प्रयास किया गया है। अनावश्यक हठवादिता, कट्टरता तथा अन्य हीन स्तर की बातों से दूर हटकर विषय का, उक्त विद्याओं तथा शास्त्रों के अध्ययन की दृष्टि से, यथासम्भव विवेचन किया गया है। उत्तरी भारत के अधिकांश भागों के ब्राह्मणों का क्रमबद्ध रूप से सामाजिक अध्ययन द्वारा विद्वानों के पूर्व प्रयास की दिशा में एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण कड़ी जोड़ने का प्रयास किया गया है। न चाहते हुए भी कतिपय क्षेत्रों के ब्राह्मणों के सामाजिक अध्ययन को पुस्तक के विस्तार के भय से छोड़ना पड़ा है, इसके लिये सुधीजन हमें क्षमा करेंगे।

समाज के नियम, धर्म, राजनीतिक स्थिति तथा सांस्कृतिक स्तर आदि मनुष्य के नामों को किसी न किसी रूप में प्रभावित किया करते हैं। ऐसा भी सम्भव है कि यत्र-तत्र इसके अपवाद भी हों। यदि किसी परिवार के सदस्यों के नाम शुद्ध संस्कृत भाषा में हों और साथ ही प्राचीन देवी-देवतापरक हों, तो कहना उचित ही होगा कि वे नाम पौराणिक तथा विविध संस्कृति से सम्बद्ध आर्य समाज (श्रेष्ठ समाज) की विचारधारा के प्रतीक हैं, यथा देवदत्त, रामचन्द्र, विष्णुदेव, इन्द्रदेव तथा अन्य इसी प्रकार के अनेक नाम। यदि किसी समाज के लोगों के नाम संस्कृत भाषा या श्रेष्ठ आर्य जनों की भाषा में नहीं हैं तथा उनके नाम ग्राम्य या देशी प्राकृत भाषा में हैं, तो इस आधार पर उनके अनपढ़ समाज की पुष्टि होती है, जैसे देवक या देवन्न, विशुन, जागू, बलक। मनुष्य-नाम का अध्ययन भारतीय संस्कृति के एक विशेष पहलू पर प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से प्रकाश डालता है। पुरातत्त्व शास्त्र के विद्वानों ने क्रमशः भाषा शास्त्र और

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

समाज शास्त्र के सहारे प्राचीन देश-नाम तथा व्यक्ति-नाम के आधार पर संस्कृति के उद्‌घाटन का एक नवीन मार्ग प्रशस्त किया है । विद्वान् एफ० टी० वेन राइट की पुस्तक 'आक्योंलोजी एण्ड प्लेस नेम्स एण्ड हिस्टरी' में सम्यक् रूप से विचार किया गया है ।

भारतवर्ष में नामों के अध्ययन का सूत्रपात महाराष्ट्रीय विद्वान् डाक्टर देवदत्त रामकृष्ण भंडारकर ने अपनी पुस्तक 'फारेन एलीमेन्ट्स इन हिन्दू पापुलेशन' में आनुषगिक रीति से किया है । भंडारकर महोदय ने वंगदेशीय कायस्थों और गुर्जरदेशीय नागर ब्राह्मणों के शर्मा (शर्मन्) उपपद या नामान्तों में सादृश्य पाकर यह मत प्रस्तुत किया था कि यदि बंगाली कायस्थों और नागर ब्राह्मणों में जातीय सम्बन्ध न भी हो, तो भी किसी प्रकार का सम्बन्ध अवश्य ही था । इतिहासकार जगदीश चन्द्र घोष ने 'इन्डियन हिस्टारिकल क्वार्टर्ली', (भाग ६, पृ० ६०-७०) में कामरूप के वर्मन् राजवंश में सुविख्यात नरेश भास्करवर्मा के निधनपुर ताम्रपत्र में उल्लिखित दानग्रहीता ब्राह्मणों के नागर, शर्मन् या उपपद नामान्त की ओर ध्यान आकृष्ट कराने का प्रयास किया है और यह भी कहा गया है कि न केवल आधुनिक बंगाली कायस्थ अपितु पूर्व देश या पूर्वी भारत (कामरूप, बंगाल तथा उड़ीसा) के ब्राह्मणों से गुजराती नागर ब्राह्मणों का कुछ सम्बन्ध अवश्य था । श्री नगेन्द्रनाथ वसु ने अपनी पुस्तक 'सोशल हिस्ट्री आफ कामरूप' (भाग ३) में इस मत को और अधिक विस्तार से आगे बढ़ाया है । उन्होंने स्कन्दपुराण के नागर खण्ड की कथाओं को आधार माना है तथा यह सिद्ध किया है कि नागर ब्राह्मण कामरूप से बंगाल और वहाँ से उड़ीसा होते हुए गुजरात में गये थे । उक्त लेखकों के अनुसार ये नामान्त या शर्मन् आसाम, बंगाल, उड़ीसा और गुजरात में मिलते हैं । डा० घोष ने भास्करवर्मा के निधनपुर ताम्रपत्र के आधार पर यह निष्कर्ष दिया है कि अभिलेख में उल्लिखित दानग्रहीता ब्राह्मण और कोई नहीं, अपितु नागर ब्राह्मणों की ही एक शाखा है; साथ ही आधुनिक समय में सिलहट में पाये जाने वाले ब्राह्मण उनके वंशज हैं । 'वैदिक संवादिनी' के अनुसार ये ब्राह्मण मिथिला से आये तथा 'वैदिक पुरावृत्त' के के अनुसार ये कन्नौज से आये । ऐसा प्रतीत होता है कि अवश्य ही ये ब्राह्मण मिथिला तथा कन्नौज होते हुए आये होंगे और उनमें से कुछ उन्हीं प्रदेशों में निवास करने लगे होंगे । आज भी मिथिला और कन्नौज में नागर ब्राह्मण मिलते हैं ।

इन सारे महत्त्वपूर्ण संदर्भों के बावजूद उक्त विद्वानों के विचार ठोस प्रमाणों और तर्कों के अभाव में सबल नहीं प्रतीत होते । इस दिशा में प्रख्यात पुरातत्त्ववेत्ता डा० हंसमुख धीरजलाल सांकलिया का प्रयत्न सराहनीय है,

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

जिन्होंने अपने 'ठाकुर वस्सोनजी माधव जी भाषण माला' (स्टडीज इन दि हिस्टारिकल एण्ड कल्चरल ज्योग्राफी एण्ड एथ्नोग्राफी आफ गुजरात) में इस विषय का विस्तार से पल्लवन किया । इस पुस्तक में उन्होंने गुजरात से प्राप्त विभिन्न राजवंशों के अभिलेखों से उद्धृत कुछ ब्राह्मणों के नामों पर विवेचन करने का प्रयास किया है । इसके साथ ही उन्होंने इन ब्राह्मणों से सम्बन्धित नामों के साथ प्रचलित उपपदों, गोत्र, प्रवर, वेद, शाखा, चरण तथा वास्तव्य और विनिर्गत का भी यथाशक्य अनुशीलन-परिशीलन किया है । उनके विद्वतापूर्ण प्रयत्न पर विचार करने से ज्ञात होता है कि उनका क्षेत्र केवल गुजराती ब्राह्मणों तक ही था ।

इस पुस्तक में पूर्वमध्ययुगीन ब्राह्मणों के प्रमुख केन्द्र, नामों का सांस्कृतिक तथा अन्य दृष्टिकोण से अध्ययन, उनके नामान्त, उपाधि, गोत्र-प्रवर, वेद-शाखा और चरण आदि का विश्लेषण किया गया है; साथ ही यह प्रयास किया गया है कि पूर्वमध्ययुगीन ख्यातिलब्ध राजवंशों के काल में प्रचलित ब्राह्मणों की सामाजिक दशा का स्पष्ट ज्ञान हो सके । इसके निमित्त पूर्व मध्ययुग के राजनैतिक इतिहास का विस्तारपूर्वक अध्ययन भी अपेक्षित था तथा इसकी सहायता से भिन्न-भिन्न प्रदेशों या देशों की सीमा के अन्तर्गत निवास करनेवाले या देशान्तर गमन करनेवाले ब्राह्मणों का सामाजिक अध्ययन आनुषंगिक रीति से आवश्यक प्रतीत हुआ ।

प्रस्तुत उद्देश्य की पूर्ति के लिए लगभग ६०० ई० से लेकर १२०० ई० तक के ताम्रशासनों या अन्य अभिलेखों को प्रमुख स्रोत बनाया गया; साथ ही सुदूर अतीत से चली आ रही प्रशस्त ब्राह्मण–परम्परा के अध्ययन के लिए सम्पूर्ण वैदिक वाङ्मय (संहितायें, ब्राह्मण ग्रन्थ, उपनिषद् तथा आरंभिक सूत्र ग्रन्थ तथा वेदांगादि),पुराणशास्त्र,स्मार्तसाहित्य, महाभारत,रामायण, निरुक्तशास्त्र, अष्टाध्यायी तथा काशिका जैसे शब्दशास्त्रीय ग्रन्थों का अपेक्षित सिंहावलोकन किया गया । कुछ एतद्विषयक संदर्भ ग्रन्थ, यथा महिदास भाषित शौनक का चरण व्यूह, पुरुषोत्तम पंडित कृत गोत्रप्रवर मंजरी (संपादक, जान ब्रफ), ब्राह्मणोत्पत्ति मार्तण्ड इत्यादि का अध्ययन करते हुए भारत रत्न म म० डा० पाण्डुरंग वामन काणे, स्व० डा० डी० डी० कौसाम्बी, स्व० डा० वासुदेवशरण अग्रवाल तथा गुरुवर्य डा० विश्वम्भरशरण पाठक की एतत्सम्बन्धी महत्त्वपूर्ण कृतियों से भी लाभान्वित हुआ ।

प्रस्तुत पुस्तक छः अध्यायों में विभक्त है, जिसके आधार पर ब्राह्मणों के प्रमुख केन्द्र, नाम, नामान्त, उपाधि, गोत्र-प्रवर तथा चरण-शाखा का यथासंभव विस्तृत विश्लेषण किया गया है । पुस्तक के प्रमुख अध्यायों

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

में वर्णित तथ्यों के ऊपर स्पष्ट प्रकाश डालने के लिये पूर्वमध्ययुग के प्रधान राजवंश मध्यदेशीय प्रतिहार, वर्द्धन सरयूपारीण, कलचुरि, गहड़वाल; बुन्देलखंड (जेजाकभुक्ति) के चंदेल; मालवा के परमार; त्रिपुरी तथा रतनपुर के कलचुरि; गुजरात के सैंधव, चालुक्य, कलचुरि, राष्ट्रकूट, संगमसिंह, गुर्जर; वलभी के मैत्रक; कामरूप के वर्मन् तथा पाल; बंगाल के वर्मन्, पाल तथा सेन और उड़ीसा के गंग, भंज, मुद्गल, नल तथा महाकोसल (दक्षिणी कोसल) के सोम राजाओं के दानपत्र प्रमुख स्रोत हैं।

प्रथम अध्याय में ब्राह्मणों के प्रमुख केन्द्रों पर विचार किया गया है। सर्वप्रथम मध्यदेश, गुर्जर देश, जेजाकभुक्ति, मालवा, मगध, कामरूप, बंगदेश, उड्रदेश तथा महाकोसल के ब्राह्मणों के आद्यस्थान (विनिर्गत) तथा इनके निवास स्थान (वास्तव्य) कौन थे और इन स्थानों से देशान्तर गमन या एक स्थान से बहिर्गत होकर किन-किन प्रदेशों में जाकर फैल गये, इस पर प्रकाश डाला गया है। उन प्रदेशों में शासन करने वाले राजवंशों के नरेशों के काल में अपनी उच्च संस्कृति जन्य श्रेष्ठता और प्रवीणता के कारण राजसत्ता के पुरोहित, राजगुरु, राजपरामर्शदाता, सान्धिविग्रहिक, धर्माधिकारी तथा अन्य विशिष्ट पदों पर सम्मानित रूप से पूजित करके ब्राह्मणों को नियुक्त किया गया। इससे उनके राजनीतिक तथा सामाजिक स्तर का ज्ञान हो जाता है। ब्राह्मणों के स्थानों या केन्द्रों की स्पष्ट रूप से भौगोलिक जानकारी करायी गई है। अनेक स्थानों का भौगोलिक समीकरण करते हुए उन पर यथाशक्य प्रकाश डाला गया है। इसमें प्राचीन तथा पूर्वमध्यकालीन भूगोल से सम्बन्धित पुस्तकों का भी सहारा विशेष रूप से लिया गया है। इस प्रकार पूर्व मध्ययुगीन उत्तरी भारत के प्रमुख भागों से ब्राह्मणों के बहिर्गमन और देशों के अन्य भागों में उनका निश्चित रूप से प्रसार तथा प्रभाव उक्त अध्याय में बताया गया है।

द्वितीय अध्याय में पूर्वमध्यकालीन ब्राह्मणों के नामों का सांस्कृतिक दृष्टि से विवेचन किया गया है। इसमें यह स्पष्ट बताया गया है कि उत्तरी भारत के विभिन्न भागों में शासन करने वाले राजवंशों के नरेशों के काल में ब्राह्मण-नाम चयन के आधार क्या होते थे। इस आधार पर हम उनके धार्मिक विश्वास, अन्ध विश्वास, प्रचलित पद्धति अथवा लोक-धर्म, संस्कृतिजन्य शब्दावली का संकेत पाते हैं। साथ ही नामों के अध्ययन पर विचार भाषा विज्ञान की दृष्टि से भी किया गया है। ब्राह्मणों के नामों के आधार पर इस अध्याय में बताया गया है कि ब्राह्मण शिक्षित समाज का होगा या अनपढ़ समाज का। अनपढ़ समाज या परिवार के ब्राह्मण का नाम प्रायः निश्चित रूप से गवारू या

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

देशी था। उनका नाम हीन भाषा, बोलचाल, निरर्थक या अपभ्रंश भाषा में हो, तो उससे बुरे संस्कार, अशिक्षित समाज तथा पिछड़ेपन का संकेत तो मिल ही जाता है। संभव है कि यत्र–तत्र इसका अपवाद भी मिल जाय।

तीसरे अध्याय में ब्राह्मण-नामान्तों का अध्ययन किया गया है। इससे पता चलता है कि प्रमुख रूप से कौन-कौन नामान्त थे जिनका प्रचलन विशेष रूप से उत्तरी भारत के विभिन्न प्रदेशों में था। उन नामान्त की परिभाषा के साथ ही साहित्यिक आदि साक्ष्यों में वर्णित प्रमुख नामान्तों का भी यहाँ वर्णन है। विभिन्न प्रदेशों से प्राप्त राजवंशों के नरेशों के दानपत्रों, प्रशस्तियों, ताम्रपत्रों और अन्य अभिलेखों में उल्लिखित ब्राह्मण-नामान्तों का सन्दर्भ दिया गया है। यह भी प्रयास किया गया गया है कि किस गोत्र और इससे सम्बन्धित परिवार की कितनी पीढ़ियों तक अमुक नामान्त प्रचलित था। इन नामान्तों के वर्णन करने में कई पक्षों की दृष्टि से भी विचार हुआ है, जिसके आधार पर अनेक तथ्य भी प्रकाश में आते हैं। प्रत्येक प्रदेश में प्राप्त नामान्तों में यत्र-तत्र-थोड़ा बहुत अन्तर छोड़कर समानता पाई जाती है। नागर ब्राह्मण-नामान्तों का भी विधिवत् वर्णन किया गया है। अभिलेखों से प्राप्त नामान्तों और साहित्य से प्राप्त नागर ब्राह्मण-नामान्तों में भी पर्याप्त समता मिलती है। आगे यह भी विचार हुआ है कि पूर्वदेश के कायस्थ-परिवारों में ब्राह्मण-नामान्तों का प्रचलन था। इस पर कतिपय विद्वानों ने यह बताने का थोड़ा प्रयास किया है कि पूर्वदेश यानी कामरूप, बंगदेश तथा उड़ीसा के कायस्थों का सम्बन्ध ब्राह्मणों से बताने का आधार पूर्वमध्यकालीन कुछ प्रचलित ब्राह्मण-नामान्त थे। भाषा विज्ञान की दृष्टि से भी नामान्तों का अध्ययन किया गया है। क्योंकि यदि एक ही प्रकार के नामान्त कामरूप, बंगाल और उड़ीसा के ब्राह्मणों में मिलते हैं, संभव है यत्र-तत्र अन्तर भी हो, ऐसी स्थिति में उनकी एकता-स्थापना या उनमें किसी प्रकार के आपसी सम्बन्ध आदि का उल्लेख भी किया गया है। सार्वदेशिक नामान्तों के साथ कुछ विशेष नामान्तों का यत्र-तत्र वर्णन किया गया है।

चौथे अध्याय में ब्राह्मण-उपाधियों के अर्थ आदि का वर्णन है। यह भी बताया गया है कि अमुक राजवंश के नरेशों के समय ब्राह्मणों की विभिन्न प्रकार की शैक्षणिक उपाधियाँ हुआ करती थीं। यथा-भट्ट, द्विवेदी, त्रिवेदी, चतुर्वेदी आदि। पौरोहित्य कृत्य संपादित करने के कारण याज्ञिक, पुरोहित राजपुरोहित, राजगुरु आदि उपाधियाँ प्रचलित थीं। राजनयिक उपाधियाँ भी इन्हें प्रदान की गई थीं। राज्य की विशिष्ट योग्यता तथा क्षमता के कारण वे नियुक्त किये

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

गये थे। अत्यधिक भूमि रखने के कारण ठाकुर या ठक्कुर जैसी अन्य उपाधियाँ भी धारण की जाती थी। विभिन्न प्रकार की उपाधियों के आधार पर यह बताने का प्रयास किया गया है कि उनकी शैक्षणिक योग्यता कैसी होती थी। उनके प्रमुख व्यवसाय पुरोहिती तथा अध्ययन आदि का भी उल्लेख किया गया है। उनकी अजीविका इत्यादि कैसी थी-इस पर भी विचार किया गया है।

पाँचवें अध्याय में गोत्र और प्रवर की परिभाषा तथा अभिप्राय आदि बताने का प्रयास किया गया है। यह भी बताने का प्रयास किया गया है कि अमुक राजवंश के काल में अमुक प्रदेश में किन-किन गोत्र-प्रवर के ब्राह्मण सर्वाधिक रूप से फैले हुए थे। इन गोत्रों के कौन से प्रवर ऋषियों के नाम थे इसके आधार पर यह पता चलता है कि अमुक गोत्रान्तर्गत अमुक प्रवर ऋषियों से सम्बन्धित ब्राह्मणों का एक दल विशेष अमुक प्रदेश में रहता था। कुछ समान गोत्र के ब्राह्मणों के मिलने से उनका रक्त-सम्बन्ध आदि की दृष्टि से भी विचार किया गया है। कुछ प्रदेशों में सार्वदेशिक गोत्रों के अतिरिक्त ऐसे भी अल्पमात्रा में गोत्रों के नाम मिलते हैं, जिनका अस्तित्व सर्वत्र नहीं है। इस तरह के गोत्र वाले ब्राह्मण कामरूप, गुजरात तथा अन्य कतिपय प्रदेशों के किसी भाग में फैले हुए थे।

छठें अध्याय में ब्राह्मणों के प्रमुख वैदिक चरणों तथा शाखाओं का उल्लेख किया गया है। पूर्वमध्ययुग में प्रचलित चरणों के ब्राह्मण ब्रह्मचारी के रूप में पुकारे जाते थे। यहाँ वेद की विभिन्न शाखाओं के अध्ययन करनेवाले या इन शाखाओं के अनुयायियों का सांगोपांग वर्णन किया गया है। इस अध्याय में यह भी बताने का प्रयास किया गया है कि पूर्वमध्यकालीन अमुक प्रदेश के ब्राह्मण-परिवारों में किन वेदों का विशेष रूप से अध्ययन या अध्यापन होता था। इसके आधार पर यह तो पता चल ही जाता है कि ब्राह्मणों का सम्बन्ध किस प्रकार के चरणों, शाखाओं और वेदों से था। यत्र-तत्र यह भी बताने का प्रयास किया गया है कि चरण कहीं वेद के रूप में है, तो कहीं-कहीं संस्थान (स्कूल) के रूप में। कहीं वेदों को शाखाओं या कहीं चरणों के रूप में उल्लिखित किया गया है। इस अध्याय में स्पष्ट रूप से वेदों की प्रमुख शाखाओं के अनुयायी ब्राह्मणों का वर्णन किया गया है। उक्त तथ्यों की सहायता से यह बताने का प्रयास किया गया है कि पूर्व-मध्ययुग में उत्तरी भारत के ब्राह्मण-परिवारों में वैदिक अध्ययन और अध्यापन कैसे किया जाता था। उनके वेदादिक अध्ययन से उनके शैक्षणिक जीवन का क्रम मालूम होता है।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

उल्लेखनीय है कि उपर्युक्त ब्राह्मणों के सामाजिक अध्ययन में सर्वाधिक रूप से ज्ञान-सामग्री तत्कालीन ताम्रपत्रों से मिलती है। वस्तुतः इन ताम्रशासनों में ब्राह्मणों की वंशावलि, उपपद, गोत्र, प्रवर, वेद, शाखा, चरण, वास्तव्य तथा विनिर्गत इत्यादि का विशद वर्णन पाया जाता है। ये अभिलेख तत्कालीन ब्राह्मणों की विविध प्रवृत्तियों, भाषा, बोल-चाल तथा वैदिक अध्ययन और धार्मिक परिस्थितियों पर प्रकाश डालते हैं। ऐसा स्पष्ट विदित होता है कि ये ताम्रपत्र सामाजिक, धार्मिक तथा राजनीतिक दृष्टिकोण से अत्यधिक महत्त्वपूर्ण हैं। इस आधार पर यह कहना उचित होगा कि 'पूर्वमध्यकालीन उत्तरी भारत के ब्राह्मणों का सामाजिक अध्ययन' विषय पर सही जानकारी के लिये प्रामाणिक रूप से एक मात्र प्रकाश-स्तम्भ का कार्य ताम्रपत्र ही करते हैं।

निर्विवाद रूप से यह कहा जा सकता है कि ब्राह्मणों के विषय में अनेक साहित्यिक ग्रन्थ उपलब्ध हैं। इनमें ब्राह्मणों के गोत्र, प्रवर, वेद, शाखा इत्यादि का विस्तृत वर्णन है। चौथी शताब्दी के शौनक कृत चरणव्यूह नामक ग्रन्थ में अनेक प्रकार के चरणों के सन्दर्भ उपलब्ध हैं। चौथी शताब्दी के बाद के काल में ऐसा कोई भी महत्त्वपूर्ण विश्वसनीय प्रामाणिक साक्ष्य नहीं मिलता, जिसके आधार पर आलोच्य युगीन विषय–सम्बन्धी समस्या का निराकरण किया जा सके। ऐसी विषम परिस्थिति में पूर्वमध्यकालीन विभिन्न राजवंशों से सम्बद्ध राजाओं के दानपत्रों में ही उल्लिखित ब्राह्मणों की विस्तृत जानकारी प्राप्त होती है।

लेखक

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

संकेत–तालिका

आप० ध० सू०	आपस्तम्ब धर्मसूत्र
आप० गृ० सू०	आपस्तम्ब गृह्यसूत्र
आप० श्रौ सू०	आपस्तम्ब श्रौतसूत्र
आश्व० श्रौ० सू०	आश्वलायन श्रौतसूत्र
इ० ब०	इन्सक्रिप्सन्स आफ बंगाल
इ० ए०	इंडियन एण्टीक्वेरी/इंडियन एपिग्राफी
इ० हि० का०	इंडियन हिस्टारिकल क्वार्टर्ली
इ० क०	इंडियन कल्चर
इ० ए० ग्ला०	इंडियन एपिग्राफिकल ग्लासरी
ए० हि० ए०	एन्शियन्ट हिस्टोरियन्स आफ इण्डिया
ए० इ०	एप्रिग्राफिया इंडिका
कार्पस	कार्पस इन्सक्रिप्सनम इंडिकेरम
का० शा०	कामरूप शासनावलि
ज० वै० स्टडीज	जर्नल आफ वैदिक स्टडीज
ज० बं० रा० ए० सो०	जर्नल आफ द बाम्बे ब्रांच आफ द रायल एशियाटिक सोसाइटी
ज० उ० प्र० हि० सो०	द जर्नल आफ दि उत्तर प्रदेश हिस्टारिकल सोसाइटी
ज० ओ० सो०	जर्नल आफ दि अमेरिकन ओरियन्टल सोसाइटी
ज० ब० रा० ए० सो०	जर्नल आफ द बंगाल रायल एशियाटिक सोसाइटी
ज० ब० ब्रा० ए० सो०	जर्नल आफ द बाम्बे ब्रांच आफ एशियाटिक सोसाइटी
ज० बि० उ० रि० सो०	जर्नल आफ द बिहार उड़ीसा रिसर्च सोसाइटी
ज० न्यू० सो० इ०	जर्नल आफ न्यूमिसमेटिक सोसाइटी आफ इण्डिया

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

आभार

पुस्तक का यह संस्करण सन् १९७२ ई० में गोरखपुर विश्वविद्यालय द्वारा प्राचीन इतिहास, संस्कृति तथा पुरातत्त्व विषय में प्रदत्त पी–एच० डी० की उपाधि का संशोधित तथा संवर्द्धित रूप है। शोध-काल से लेकर प्रकाशन के समय तक मुझे प्रत्यक्ष और परोक्ष रूप से कई स्रोतों से हार्दिक सहानुभूति, प्रेरणा, उत्साह तथा सहायता प्राप्त हुई, जिन्हें स्मरण करना मैं अपना दायित्व समझ रहा हूँ। इस शृङ्खला में सर्वप्रथम ऋषिकल्प गुरुवर्य डा० विश्वम्भर शरण पाठक (प्रोफेसर तथा अध्यक्ष, प्राचीन इतिहास, संस्कृति और पुरातत्त्व-विभाग, गोरखपुर विश्वविद्यालय) स्मरणीय तथा वन्दनीय हैं, जिनके अगाध पाण्डित्यपूर्ण निर्देशन में मुझ जैसे अकिञ्चन को शोध-दृष्टि प्राप्त करने का सौभाग्य मिला। गम्भीर निर्देशन के साथ-साथ आपका पितृतुल्य स्नेह तथा संरक्षण धरोहर के रूप में आजीवन मुझे प्रेरणा देता रहेगा। आपको आभार तथा कृतज्ञता ज्ञापित करना औपचारिकता मात्र है। हम आपके आजीवन ऋणी हैं।

शोधकार्य में मुझे अपने जिन गुरुजनों का असीम स्नेह तथा आशीर्वाद मिलता रहा, उनमें डा० रामबृक्ष सिंह, डा० शैलनाथ चतुर्वेदी, डा० सच्चिदानन्द मिश्र, डा० दयानाथ त्रिपाठी, डा० जयमल राय, डा० शिवाजी सिंह, डा० (श्रीमती) कल्याणी जोआरदार तथा डा० विजय बहादुर राव विशेष रूप से प्रशंसनीय हैं। आप सब के प्रति मैं नम्रशिरस्क हूँ। शोधकार्य के सम्पन्न होने में जिनका अधिकतम सहयोग मुझे प्राप्त हुआ, उनमें परम मित्र पं० माताप्रसाद त्रिपाठी (प्रवक्ता, प्राचीन इतिहास-विभाग, गोरखपुर विश्वविद्यालय) विशेष रूप से साधुवाद के पात्र हैं। इसी शोधकाल में भाई डा० महेन्द्रनाथ पाण्डेय को मैं कैसे भूल सकता हूँ, जो अहर्निश मेरे लिए प्रेरणास्रोत रहते थे। आप दोनों ही परम आत्मीय मित्रों के प्रति मैं हृदय से कृतज्ञ हूँ।

मेरे शोधकार्य को गति देने में जिन परम शुभेच्छुओं की कृपा तथा सहानुभूति मुझे प्राप्त हुई, उनमें डा० अतुलचन्द्र बनर्जी (प्रोफेसर तथा अध्यक्ष), डा० हेमचन्द्र जोशी, पं० विश्वम्भर नाथ त्रिपाठी, डा० करुणेश शुक्ल (संस्कृत-विभाग, गोरखपुर-विश्वविद्यालय), डा० लालताप्रसाद पाण्डेय (सम्प्रति, प्रोफेसर, इतिहास-विभाग, हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला), डा० लल्लनजी गोपाल (प्रोफेसर तथा अध्यक्ष), डा० मणिशंकर शुक्ल, (प्राचीन इतिहास-विभाग, कालेज आफ इन्डोलोजी, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के प्रति आभार-प्रदर्शन ही शेष है।

साकेत महाविद्यालय के अध्यापकीय जीवन में जिन मित्रों का असीम सहयोग, स्नेह, प्रेरणा तथा उत्साह प्राप्त होता रहा और जिनके सद्भाव से यह

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

प्रकाशन-कार्य सम्भव हो सका, उनमें डा० स्वामीनाथ पाण्डेय, श्री हरिश्चन्द्र मिश्र, डा० रविनन्दन त्रिपाठी (संस्कृत-विभाग). श्री रामचन्द्र गुप्त (प्राचार्य), डा केदार नाथ अग्रवाल, डा० राम-कृष्ण जायसवाल (राजनीतिशास्त्र-विभाग), श्री ओमप्रकाश गुप्त (पुस्तकालयाध्यक्ष), श्री मानिकचन्द्र अग्रवाल, पं० गंगाप्रसाद पाण्डेय तथा श्री राधेश्याम शुक्ल धन्यवाद के पात्र हैं।

मेरे शोध-प्रबन्ध के लब्धप्रतिष्ठ विद्वान् परीक्षक प्रो० के० डी० बाजपेयी (टैगोर प्रोफेसर तथा अध्यक्ष, प्राचीन इतिहास-विभाग, सागर विश्वविद्यालय) तथा डा० अजयमित्र शास्त्री (प्रोफेसर तथा अध्यक्ष, प्राचीन इतिहास, विभाग नागपुर विश्वविद्यालय) के प्रति मैं बहुत ही आभारी हूँ, जिन्होंने शोध-प्रबन्ध के प्रकाशन के सन्दर्भ में अनेक बहुमूल्य सुझाव प्रदान करने की असीम अनुकम्पा की।

अपने परिवार में किसके प्रति कैसे आभार व्यक्त करूँ, समझ में नहीं आता; क्योंकि स्वर्गीय पिता पं० शुकदेव तिवारी (अवकाश प्राप्त प्रधानाध्यापक, जिला परिषद्, बलिया) की मृत्यु के बाद उनके सपनों को साकार रूप देने वाले तथा पितृ-स्नेह और संरक्षण प्रदान करने वाले पूज्य अग्रज श्री रमाकान्त तिवारी का ही यह श्रेय है कि मैं इस लायक हो सका हूँ। मैं उनके प्रति असीम आदर तथा श्रद्धाभाव से नतमस्तक हूँ। इसी शृङ्खला में नाना शाखाओं में विकसित हम लोगों के लिए वटवृक्ष की जड़ के समान प्रातः वन्द्या जननी श्रीमती फूलमती देवी की प्रेरणा और आशीर्वाद के लिए मैं जन्म-जन्मान्तर तक उनके प्रति ऋणी और कृतज्ञ हूं। मेरे शोधकालीन तथा अध्यापकीय जीवन में पढ़ने-लिखने के प्रति उदार सहयोग देने में भार्या श्रीमती गायत्री तिवारी का विशेष योगदान रहा है, जो उनके अपूर्व दाम्पत्य स्नेह का प्रमाण है, अस्तु उनके प्रति साधुवाद प्रदर्शित करना औपचारिकता मात्र लग रही है। इसी सन्दर्भ में परम पूज्या सासजी (श्रीमती चन्दन लता मिश्रा) का मैं विशेष आभारी हूँ, जो विवाह के बाद प्रतिक्षण मेरे लिए मंगल कामना करती रहीं हैं। पुस्तक-प्रकाशन के बीच अपने भ्रातृज श्री अरविन्द त्रिपाठी तथा अपने परम प्रिय शिष्य श्री गयाप्रसाद सिंह को उनकी सेवाओं के लिए मैं हार्दिक स्नेह तथा साधुवाद देता हूँ।

अन्त में मैं उत्तर प्रदेश शासन के शिक्षा विभाग का बहुत-बहुत ऋणी हूँ, जहाँ से इस पुस्तक के प्रकाशनार्थ ५०००/– (पांच हजार रूपये) की धनराशि अनावर्तक अनुदान के रूप में प्राप्त हुई। इस सन्दर्भ में श्री रमेश चन्द्र त्रिपाठी (शिक्षा सचिव) का मैं विशेष आभारी हूँ इस। पुस्तक के प्रकाशन रूप यज्ञ में जिन शुभ चिन्तकों की प्रत्यक्ष तथा परोक्ष रूप से हार्दिक सहानुभूति मिलती रही है, उनमें श्री रमेशचन्द्र श्रीवास्तव (सह जिला विद्यालय निरीक्षक, फैजाबाद), श्री पी० एन० सिन्हा (कार्यालय अधीक्षक)

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

तथा श्री रामप्यारे लाल श्रीवास्तव विशेष रूप से स्मरणीय तथा धन्यवाद के पात्र हैं।

पुस्तक के प्रकाशन का गुरुभार साकेत प्राच्यविद्या-परिषद् ने वहन किया, इसके लिए मैं परिषद् का विशेष ऋणी हूँ। इस सन्दर्भ में उक्त परिषद् के मंत्री डा० रमाशंकर मिश्र के उपकार को मैं कैसे भूल सकता हूँ, जिन्होंने व्यक्तिगत रूप से पुस्तक के वर्ण-विन्यास से लेकर साज-सज्जा तक को सुव्यवस्थित करने का महत्त्वपूर्ण भार वहन किया। वे साधुवाद के पात्र हैं।

मेरे इस प्रकाशन-कार्य में असीम स्नेही परम मित्र भाई श्री सीताराम श्रीवास्तव और उनके परिवार ने बड़े ही धैर्य तथा उत्साह से मुद्रण-कार्य को सम्पन्न करने में पूर्ण सहयोग प्रदान किया। इसके लिये उनके परिवार के प्रत्येक सदस्य के प्रति मैं हृदय से कृतज्ञ हूँ।

वसन्त पञ्चमी,
संवत् २०३८ — गौरीशंकर तिवारी
३० जनवरी, १९८२

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

विषयानुक्रमणिका

		पृष्ठ संख्या
प्रकाशकीय		क-ख
भूमिका		ङ-ट
संकेत तालिका		ठ
आभार		ड-ण
पहला अध्याय	ब्राह्मणों के केन्द्र	१-८७
दूसरा अध्याय	नामकरण का सांस्कृतिक परिवेश	८८-१५८
तीसरा अध्याय	नामान्त	१५९-२ ०
चौथा अध्याय	उपाधि	२०१-२२३
पाचवाँ अध्याय	गोत्र तथा प्रवर	२२४-२५८
छठा अध्याय	चरण तथा शाखा	२५९-२९०
सन्दर्भ-ग्रन्थ-सूची		२९१-२९८

मुख पृष्ठ— नटराज (१२ वीं शती) — ए हिस्ट्री आफ फाइन आर्ट इन इंडिया ऐण्ड सीलोन प्लेट नं० १४७

मुख पृष्ठ— अभिलेख — एपिग्राफिया इंडिका, वाल्यूम दो, पृ० १६०

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

पहला अध्याय

ब्राह्मणों के केन्द्र

पूर्वमध्ययुगीन उत्तर-भारत में ब्राह्मणों के प्रमुख केन्द्रों के संबंध में जो भी साक्ष्य उपलब्ध हैं, वे प्रधानतः आभिलेखिक हैं। दानपत्रों एवं प्रशस्तियों में ब्राह्मणों के वास्तव्य का उल्लेख प्रायः उनके विनिर्गत के साथ किया गया है। प्रायः विशेष केन्द्र के ब्राह्मणों का ही सम्मान तत्कालीन राजाओं द्वारा होता था। ब्राह्मणों का बहिर्गमन एवं वास्तव्य मध्ययुग की एक सामाजिक प्रक्रिया थी। ब्राह्मण उन्हीं प्रदेशों में गये जहां उन्हें शाँति, सुव्यवस्था एवं धार्मिक स्वतंत्रता के साथ-साथ सम्मान तथा अन्य सुविधाएं भी प्राप्त हो सकीं। पूर्वमध्ययुग में ब्राह्मणों को उत्तरी भारत के विभिन्न भागों के राजवंशों में समय-समय पर ससम्मान राजाश्रय (प्रश्रय) भी मिलता रहा। अधिकांश राजाओं ने भूमिदान देकर ब्राह्मणों को यह सम्मान प्रदान किया था।

राजवंशों में ब्राह्मणों को राजपुरोहित, राजगुरु, धर्माधिकारी, सान्धिविग्रहिक एवं मंत्री जैसे महत्वपूर्ण पद भी प्राप्त होते थे। निश्चय ही, जहां उनको आजीविका आदि की सुविधा मिलती रही होगी वहीं रहने के लिए वे प्रेरित भी होते रहे होंगें। प्रायः समाज में ऐसी धारणा थी कि जिस स्थान में विद्वान् ब्राह्मण रहते हों (अथवा जो ब्राह्मणों का निवास स्थान हो), वह स्थान भी पवित्र एवं महत्वपूर्ण हो जाता है। अभिलेखों में ऐसे स्थानों के उल्लेख हुए हैं जहां दानग्रहीता ब्राह्मण या उनके पूर्वज रहा करते थे। इन अभिलेखों में गोत्र, प्रवर, वेद, शाखा एवं चरण आदि के उल्लेख से इनकी विशुद्ध वंशावली का परिचय तो मिलता ही है, इसके अतिरिक्त तत्कालीन समाज में उनके प्रति समादर की भावना भी स्पष्ट है। अनेक अभिलेखों में दानग्रहीता के साथ 'श्री' आदि सम्मानसूचक उपाधियाँ तो संयुक्त हैं ही, उनके वास्तव्य को भी आदर या गौरव प्रदान करने के लिए 'श्री……वास्तव्य' या 'श्रीमत्……वास्तव्य' अथवा भट्टग्राम या प्रसिद्ध देश (नगर) में स्थित वास्तव्य या उस स्थान में ब्राह्मण समुदायों में चतुर्वेदियों या त्रिवेदियों का भी निवास दिखाया गया है।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

वास्तव्य का अर्थ

पूर्वमध्ययुग के दानपत्रों में अधिकांशतया 'वास्तव्य' शब्द का ही उल्लेख हुआ है, किन्तु कहीं-कहीं इस शब्द की जगह 'निवास स्थान' के साथ-साथ 'अधिवासिन', निवासिन' वसति, ग्राम, भट्टग्राम या ब्रह्मस्थान भी उल्लिखित है।

वास्तव्य का अभिलेखों में अधिकांश सम्बन्ध दानग्रहीता ब्राह्मण एवं उनके पिता या किसी ब्राह्मण समुदाय के वास से ही दिखाया गया है। वास्तव्य एवं विनिर्गत प्रायः दोनों शब्दों का प्रयोग हुआ है।

वास्तव्य का अर्थ निश्चित रूप से रहने का स्थान होता है,जबकि विनिर्गत का अर्थ है वह स्थान, जहाँ से मनुष्य का बहिर्गमन हुआ हो। इस सम्बन्ध में महर्षि पाणिनि के निम्नलिखित सूत्र ध्यातव्य हैं:

'निवासो नाम यत्र सम्प्रत्य उश्यते।
अभिजनो नाम यत्र पूर्व्वैर् उशितम् ॥'

अर्थात् 'निवास वह स्थान हैं जहाँ वर्तमान में कोई मनुष्य रहता है, एवं अभिजन वह स्थान है, जहाँ उसके पूर्वज रहते हैं।'

दानपत्रों में ब्राह्मणों के वास्तव्य, नगर, ग्राम, या भट्टग्राम, या कहीं कहीं देश या प्रदेश होने का भी उल्लेख है। ब्राह्मण धार्मिक के प्रवृत्ति होने के कारण वेद मीमांसा, व्याकरण, तर्कशास्त्र आदि में निष्णात होकर शैक्षणिक वातावरण उत्पन्न कर सकने में सक्षम एवं कट्टर धर्मावलम्बी हुआ करते थे। उनकी पवित्रता एवं कुलीनता की ख्याति सुदूर स्थानों तक फैली हुई थी। निश्चय ही ब्राह्मणों के कारण ही उनके प्रमुख केन्द्रों का भी सांस्कृतिक या धार्मिक महत्व रहा होगा।

ब्राह्मणों का स्थानान्तरण

उत्तर-भारत में ब्राह्मणों का देशान्तरण पूर्वमध्ययुग की एक प्रमुख घटना है, जिसका उल्लेख तत्कालीन प्रशस्तियों एवं दानपत्रों में हुआ है। यहाँ पर यह विचारणीय है कि ब्राह्मणों का स्थानान्तरण किन कारणों को लेकर हुआ जिससे सम्पूर्ण उत्तरी भारत के विख्यात स्थानों से ब्राह्मणों का बहिर्गमन हुआ।

पूर्वमध्ययुग की एक प्रमुख विशेषता यह है कि उत्तरी भारत के विविध राजपूत–राजा पूर्वमध्ययुग में विजय यात्राओं द्वारा अपनी शक्ति का विस्तार करने

१. भाष्य आन् पाणिनि : ४,३,८९,९० (कलकत्ता १८०९), पृ० ४८० (इंडियन एन्टिक्वेरी, भाग ३१ (१९०२) से उद्धृत)

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

में तत्पर रहे। युद्ध की इस स्थिति में तत्कालीन ब्राह्मण पूर्ण संरक्षण एवं सुविधा प्राप्त करने के लिए अपने आद्य स्थानों को छोड़कर अन्य प्रदेशों में जाने लगे। ब्राह्मणों के बहिर्गमन का एक दूसरा कारण यह भी हो सकता है कि ईसवी सन् की सातवीं शताब्दी के पश्चात् उत्तर-पश्चिम से इस्लाम के आक्रमणों से प्रभावित निकटवर्ती स्थानों में ब्राह्मणों का निवास कष्टकर हो गया हो जिससे वे अपने मूल स्थानों को त्याग कर देश के अन्य भागों की ओर प्रस्थान करने लगे हों। संभवतः देश के उत्तर-पश्चिम में ब्राह्मणों के न जाने का मुख्य कारण मुसलमानों का आधिपत्य था।

दानपत्रों से यह स्पष्ट ज्ञात होता है कि ब्राह्मणों का बहिर्गमन किसी एक समय में न होकर भिन्न-भिन्न समय में मध्यदेश, सरयूपार, अवन्ति (मालवा), गुर्जरदेश, कुरुक्षेत्र, शाकद्वीप, मगध, कामरूप, बंगदेश एवं उड्रदेश से हुआ।

ब्राह्मणों का वहिर्गमन या देशान्तरगमन 'विनिर्गत' या 'निर्गत' शब्द का रूपान्तर है। राजाओं द्वारा जारी किये गये दानपत्रों पर ब्राह्मणों के आद्य-स्थानों के नाम के पूर्व 'श्री' लगा हुआ है, जो संभवतः उस स्थान की महत्ता का द्योतक है। अभिलेखों में विनिर्गत दानग्रहीता ब्राह्मणों के लिए प्रयोग हुआ है।

---

१. डा० सुनीति कुमार चाटुर्ज्या का मत है कि 'मध्य प्रदेश वास्तव में भारत का हृदय एवं जीवन संचालन का केन्द्र स्थान था। यहां के निवासियों के हाथ में एक तरह से अखिल ब्राह्मणीय संस्कृति का प्राथमिक सूत्रपात था, तथा हिन्दू जगत् के पवित्रतम देश के रूप में इसकी महत्ता सर्वमान्य थी। परंपरा एवं इतिहास द्वारा वर्णितहसार्वभौम साम्राज्यों के केन्द्र मध्यदेश एवं तन्निकटस्थ आर्यावर्त के अन्य क्षेत्रों में ही रहे हैं। मध्यदेश के जनों को भी अपनी नागरिकता तथा सांस्कृतिक श्रेष्ठता का अभिमान था। भारतीय आर्यभाषा और हिन्दी, पृ० १९०। इसी सम्बन्ध में ध्यातव्य है मनु संहिता (प्रथम से तृतीय शती ई० स०) का एक श्लोक—

"एतद्देशप्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मनः। स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्वमानवाः अर्थात् इस देश के ब्राह्मणां से सारे जगत् के लोगोंने अपना-अपना जीवन विताने की रीति सीखी। इसके अतिरिक्त, 'काव्य मीमांसा' में उद्धृत किसी अज्ञात कवि का यह कथन भी विचारणीय है; 'यो मध्ये मध्यदेशं निवसति, स कविः सर्वभाषा निषण्णः' अर्थात् जो मध्यदेश के मध्य में निवास करता है, वह सभी भाषाओं का प्रतिष्ठित कवि है।-डा० चाटुर्ज्या कृत उपर्युक्त ग्रन्थ के पृ० १९०पर आधारित।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

विनिर्गत शब्द का अर्थ है वह स्थान, जहां से ब्राह्मण गया हो या जहां से आया हो या विदा होने का स्थान या पहले के रहने का स्थान जो दानग्रहीता ब्राह्मण या इसके पूर्वजों द्वारा किसी अन्य स्थान में निवास करने के लिए छोड़ दिया गया हो ।

साधारणतया जब कहीं कोई अन्यत्र अपरिचित स्थान की ओर जाता है,तो वह अपने स्थान आदि का परिचय देकर ही संपर्क बढ़ाता है । संभव है कि भिन्न-भिन्न स्थानों के ब्राह्मणों को भी अपने आद्यस्थानों को बताना पड़ता रहा हो,जहाँ से उनका बहिर्गमन हुआ था । संभव है कि पूर्वमध्य युग में राजाओं ने ब्राह्मणों के आद्यस्थानों के महत्व एवं श्रेष्ठता को प्रदर्शित करने के लिए ही दानपत्रों में इसका उल्लेख कराया हो । वस्तुतः दानपत्रों अथवा ताम्रपत्रों के लेखन की यह परंपरा हो गयी थी, जिसका कालान्तर में भी पालन किया जाता रहा ।

आभिलेखिक सामग्रियों के विश्लेषण से विदित होता है कि उत्तर भारत में ब्राह्मणों के अनेक केन्द्र थे । इन केन्द्रों से उनका बहिर्गमन निरंतर होता रहा । यह वास्तव में पूर्व मध्ययुग की एक महत्वपूर्ण घटना थी । गुर्जर प्रतिहार साम्राज्य के विनष्ट होते ही उत्तर भारत में सामन्तवाद प्रखर हो उठा । अनेक नये-नये राजवंशों को अपनी सत्ता स्थापित करने का अवसर मिला । वे एक दूसरे को परास्त करने की स्पर्द्धा में जुट गये । भारतीय सामाजिक व्यवस्था में शीर्षस्थ ब्राह्मण वर्गों को समाहित करना ही संभवतः उस स्पर्द्धा का एक अंग था । अतः विशिष्ट केन्द्रों से शास्त्रतत्वज्ञ, कुलीन एवं आचारनिष्ठ ब्राह्मणों को सादर आमन्त्रित कर भूमिदान द्वारा अथवा महत्वपूर्ण पद देकर सम्मानित करना इस युग की विशेषता बन गयी थी । विप्र वर्ग को अपने मूलस्थान या आद्यस्थान को सदा के लिए त्यागकर ऐसे राज्याश्रय में बहिर्गमन करने में क्या आपत्ति हो सकती थी । अतः जहां धार्मिक स्वतंत्रता, सुविधायें एवं सम्मान मिला, वे सहर्ष जाने को तैयार हो गये । उन्हें राज्याश्रय देकर भूपति कृतकृत्य होते थे और अभिलेखों में उन विप्रों का गुणानुवाद करने के बाद ही अपने गौरव की वृद्धि करते थे । इसी प्रसंग में प्रायः सम्मान- ग्रहीता ब्राह्मणों के वास्तव्य, विनिर्गत, गोत्र, प्रवर, चरण, शाखा आदि का विवरण प्रस्तुत किया जाता था । यही आभिलेखिक सामग्री प्रस्तुत अध्ययन का मुख्य आधार है ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

मध्यदेश

भारद्वाज केन्द्र

मध्यदेश के भारद्वाज ब्राह्मणों के विनिर्गत एवं वास्तव्य का उल्लेख गुर्जर[1], राष्ट्रकूट[2], यादव[3], सोम[4], भंज[5], चंदेल[6], पाल[7], कलचुरि[8] एवं परमार[9] दानपत्रों में हुआ है। सातवीं शताब्दी से बारहवीं शताब्दी तक प्रमुख भारद्वाज केन्द्र श्रावस्ती, बल्लग्राम, कहल्ल, टकारी, मथुरा एवं मध्यदेश थे, जहाँ से आंगरिस कुल से संबन्धित भारद्वाज गोत्र के ब्राह्मणों का प्रसार गुजरात, कर्णाटक, उड़ीसा, आसाम, बंगाल, बुन्देलखंड, सरयूपार एवं मालवा में हुआ।

श्रावस्ती

प्रारम्भिक गुर्जर नरेश दद्द तृतीय के प्रिंस आफ वेल्स संग्रहालय दानपत्र (क०व०-४२७ = ६७७ ई०) से प्रमाणित होता है कि भारद्वाज ब्राह्मणों का सुविख्यात केन्द्र श्रावस्ती था। प्रमुख नगर श्रावस्ती (श्रीसावस्थी) को भारद्वाज

---

१. दद्द तृतीय का प्रिंस आफ वेल्स संग्रहालय दान पत्र-मिराशी, वि० वि० कार्पस, ४/२ पृ०, ६२०

२. खोट्टिग का कोलगल्लु दानपत्र, ए० इ० २१, पृ० २६४

३. भिल्लम तृतीय का कलसबुदुख दानपत्र, वही, १७, पृ० १२१

४. महाभवगुप्त प्रथम का कटक ताम्रपत्र, वही, ३, पृ० ३४७, महाशिवगुप्त का कटक ताम्रपत्र), वही, ३, पृ० ३५३, महाशिव गुप्त का विविन्नदानपत्र, वही, ११, पृ० ७६

५. जयभंजदेव का अन्तरिगम दानपत्र, वही, १६, पृ० ४४

६. महा चंदेल धंग का खजुराहो अभिलेख, वही, १९, पृ० १७, धंग का नन्योरा दादपत्र, वही, १६, पृ० २०४

७. जयपाल के समय का सिलमीमपुर प्रस्तर अभिलेख, वही, १३, पृ० २९०

८. सोढदेव का कहला दानपत्र, मिराशी — कार्पस, ४/२, पृ० ३९१

९. देवपाल का मानधाता दानपत्र, ए० इ०, पृ० ११८ एवं १११. (९)

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

ब्राह्मणों का वास्तव्य दानपत्र में उल्लिखित किया गया है। सातवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में गुर्जर राज्य (दक्षिणी गुजरात एवं महाराष्ट्र का कुछ भाग) में श्रावस्ती के ऋग्वेदीय भारद्वाज ब्राह्मणों[2] का आगमन हुआ था। ऐसा सम्भव है कि श्रावस्ती के ब्राह्मणों को भी हर्ष की ब्राह्मण विरोधी धार्मिक नीति के कारण गुर्जर राज्य में जाना पड़ा हो।[3]

सातवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में बह्वृच् चरण[4] के अध्येता श्रावस्ती निवासी चतुर्वेदी ब्राह्मणों का प्रसार गुर्जर राज्य था। श्रावस्ती के भारद्वाज ब्राह्मणों को ऋग्वेदीय ब्राह्मण कहा जाता था। बह्वृच ऋग्वेद के अर्थ में प्रयुक्त होता था। माहेश्वर[5] (शिव भक्त) दद्द तृतीय ने ऋग्वेदीय ब्राह्मणों को दान दिया था।

उपरिवर्णित तथ्यों से यह संकेत मिलता है कि श्रावस्ती ऋग्वेदीय भारद्वाज ब्राह्मणों का केन्द्र था एवं उनका प्रसार गुर्जर राज्य में हुआ था। गुर्जर नरेश शैव उपासक थे। उन्होंने ऋग्वेदीय ब्राह्मणों को दान दिया था। श्रावस्ती के चतुर्वेदी ब्राह्मणों के समुदाय का उल्लेख हुआ है।[6] उल्लिखित है कि ऋग्वेदीय भारद्वाज दानग्रहीता ब्राह्मण चतुर्वेदी समुदाय से सम्बन्धित था।

उपर्युक्त तथ्यों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि श्रावस्ती के भारद्वाज गोत्र से सम्बन्धित ऋग्वेदीय ब्राह्मणों का प्रसार गुजरात में सातवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में हुआ था।

---

१. 'श्री सावत्थी वास्तव्य तच्चातुर्विद्य सामान्य भरद्वाज सगोत्रबह्व्रि (ह्वृ) चस ब्रह्मचारि दुंदुमिभ (ट्ठ) पुत्र गंगादित्य सुताय प्रदत्तोद, दद्द तृतीय का प्रिंस आफ वेल्स म्यूजियम दान पत्र, मिराशी — कार्पस, ४/२, १, पृ ६२१

२. वही

३. सातवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में हर्ष की बौद्ध नीति से ब्राह्मणों में असन्तोष व्याप्त था। हुयेनसांग ने लिखा है कि सम्राट हर्षवर्द्धन के बौद्ध हो जाने के कारण कुछ ब्राहमणों ने उसको मरवाने के लिए दो बार यत्न किया — एक बार 'अग्नि बाण के द्वारा एवं दूसरी बार 'छुरे' के द्वारा; परन्तु इसमें वे सफलता न प्राप्त कर सके। हर्ष ने मुखिया लोगों को दंड देकर शेष को छोड़ दिया और ५०० ब्राहमणों को भारत की सीमा से बाहर निकाल दिया।

४,५,६, मिरासी, कार्पस, ४/२, पृ० ६१९

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

टकारी

साधारणतः दशम शताब्दी से द्वादश शताब्दी तक अंगिरस कुल के भारद्वाज ब्राह्मणों का प्रमुख केन्द्र मध्यदेश में स्थित श्रावास्ती के समीप भट्टग्राम टकारी था। राष्ट्रकूट[1], यादव[2], सोम[3], भंज[4], पाल[5], चंदेल[6], एवं परमार[7] दानपत्रों में टकारी के ब्राह्मणों के विनिर्गत एवं वास्तव्य का उल्लेख मिलता है। कर्णाटक उड़ीसा, आसाम, बंगाल, बुन्देलखण्ड एवं मालवा में भारद्वाज ब्राह्मणों का प्रसार हुआ एवं उन्हें विशिष्ट पदों पर नियुक्त किया गया।

कलसबुदुख[8] एवं अन्तिरिगम[9] दानपत्रों में मध्यदेश में स्थित टकारी का उल्लेख है। सिलीमपुर प्रशस्ति[10] से प्रतीत होता है कि टकारी श्रावस्ती में स्थित है। दिनेशचन्द्र सरकार ने भी श्रावस्ती में कोलांच के निकट टकारी की अवस्थिति स्वीकार की है।[11]

उपर्युक्त तथ्यों से यह निश्चित है कि भारद्वाज—केन्द्र टकारी श्रावस्ती में स्थित था।

---

१. खोट्टिग का कोलगल्लु दानपत्र, ए० इ०, २१ पृ० २६३
२. मिल्लम तृतीय का कलश बुदुख दानपत्र, वही, १७, पृ० १२१
३. महागुप्तप्रथम का कटक ताम्रपत्र,वही, ३, पृ० ३४८-४९, महाशिवगुप्त का कटक ताम्रपत्र, ए० इ०३, पृ० ३५३
४. जयभंजदेव का अन्तिरगम दानपत्र, ए० इ०, १९, पृ० ४४
५. जयपाल देव के समय का सिलीम पुर प्रस्तर अभिलेख, वही, १३, पृ० २९०
६. चंदेल धंगदेव का खजुराहो दानपत्र, वही १, पृ० १४६, धंग का नन्यौरा दानपत्र, वही, १६, पृ० २०४
७. देवपाल का मान्धाता दानपत्र, वही, ९, पृ० ११०, वही,पृ० १०३ (९)
८. 'श्री मध्यदेशामतः पाति टक्कारिक भट्टग्राम,'वही, १७, पृ० १२१,
९. 'मध्यदेशीय टाकारी' , वही १९, पृ० ४४
१०. टक्कारिर इत्य आख्याया श्रावस्ती प्रतिव्रि (ब्र) ह्मम् अस्ति',वही, १३, पृ०२९०
११. वही, २९,पृ०, ५२

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

भिन्न-भिन्न दानपत्रो में टकारी के अनेक अपभ्रंश नाम तक्कारी[1], टकारिक[2] टाकारी[3], तर्कारिका[4], तर्कारिका[5], धकारी एवं टकार मिलते हैं, जो एक ही स्थान के द्योतक हैं।

दानपत्रों के आधार पर ज्ञात होता है कि टकारी भारद्वाज ब्राह्मणों का विख्यात केन्द्र था, जहाँ से उनका देश के अन्य भागों में प्रसार हुआ।

कर्णाटक के राष्ट्रकूट, खोट्टिग के दानपत्र (शक सं० ८८९ = ९६७ ई०) से ज्ञात होता है कि टकारी में उत्कृष्ट कर्मारकुल[7] के प्रमुख विद्वान् द्विज ऋषि विश्वविख्यात अतिबल एवं प्रशस्तिकार मधुसूदन थे।[9] संभवतः टकारी के विख्यात कर्मारकुल के द्विज भी अंगिरस कुल के भारद्वाज गोत्र से सम्बन्धित थे, क्योंकि टकारी अधिकांशतः भृग्वङ्गिरस भारद्वाज ब्राह्मणों का भट्टग्राम माना गया है।[10]

खोट्टिगदानपत्र के आधार पर ज्ञात होता है कि टकारी के कर्मारकुल के ब्राह्मणों का बहिर्गमन १०वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में हुआ था। ९वीं शताब्दी के मध्य में सरयूपार के कलचुरि शासक शंकरगण को त्रिपुरी के कलचुरि शासक कोक्क प्रथम से हार खानी पड़ी।[11] संभवतः हार के पश्चात् सरयूपार राज्य में अस्त-व्यस्तता प्रारम्भ हुई थी। इन्हीं परिस्थितियों में अपनी जीविका के लिए

---

१. ए० इ०,१३, पृ० २९०
२. वही, १७, पृ० १२१
३. वही, १९, पृ० ४४
४. वही, १९, पृ० १८
५. वही, १६, पृ० २०४
६. वही, ३, पृ० ३५३
७. श्रीकर्मारकुलाह्वयद्विज —
वरग्रामस्तु (ग्रामात्तु) तर्कारिता निष्क्रम्य क्र =
मनिर्मलस्समभवत्तस्मिनृषि (षं)—
डितस्तत्पुत्रष्पुथितः क्षितावतिव (ब) =
लस्तस्माद्भूदय (य)स्मुतस्तेन श्री म —
धु सूदनाख्य कविना शस्त्रा प्रशस्तिः कृता
खोट्टिग का कोल्गल्लु दानपत्र, वही, २१, पृ० २६४ श्लोक २२
८. वही।
९. वही।
१०. पाठक, वी०यस० : एन्सिएन्ट हिस्टोरियन्स आफ इंडिया : पृ० २४
११. मगूमदार आर० सी० : द एज आफ इंपीरियल कन्नौज, पृ० ९३

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

उन्हें कर्णाटक जाना पड़ा।

कर्णाटक राष्ट्रकूट खोट्टिग के कोलगल्लु दानपत्र से ज्ञात होता है कि टकारी के कर्मारकुल के द्विज कविताएं एवं प्रशस्तियों के लिखने का कार्य करते थे। कर्मारकुल का द्विज प्रशस्तिकार कवि मधुसूदन प्रभावशाली व्यक्ति ज्ञात होता है।[1]

उपर्युक्त खोट्टिग दानपात्र से ज्ञात होता है कि टकारी के भारद्वाज ब्राह्मणों का एक प्रमुख एवं प्रभावशाली कुल कर्मारकुल था। कर्मारकुल एवं इसके द्विजों का अलग से उल्लेख महत्त्वपूर्ण है। संभव है कि उस कुल में भारद्वाज ब्राह्मण कविता प्रशस्ति लिखने के सहारे अपनी जीविका भी चलाते रहे हों। राजकवि एवं प्रशस्तिकार होना उनके व्यवसाय का द्योतक है।

टकारी से भारद्वाज ब्राह्मणों का बहिर्गमन ११ वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में भी होता रहा जिसका उल्लेख कर्णाटक के यादव भिल्लम् तृतीय के कलसबुद्रुख दानपत्र (शक सं० ९४७=१०२५ ई०) में हुआ है।[2] कर्णाटक में मध्यदेशीय टकारी से भारद्वाज ब्राह्मणों के प्रसार की पुष्टि भी उक्त दानपत्र से होती है।[3]

कलसबुद्रुख दानपत्र में उल्लिखित है कि टकारी के माध्यन्दिन शाखानुयायी भारद्वाज ब्राह्मण स्वास्थ्य, स्नान, दान एवं ध्यान में सदा तत्पर रहते थे।[4] वे पंचमहायज्ञों[5] के अनुष्ठाता थे। भारद्वाज ब्राह्मणों के परिवारों में पंचमहायज्ञ[6] से सम्बन्धित अनुष्ठान करने की परम्परा भी प्रचलित थी।

टकारी के ब्राह्मण गृहस्थ जीवन को सुमर्यादित ढंग से निभाते थे। वे गृहस्थ धर्म के उत्कृष्ट कर्तव्यों से पूर्ण रूपेण अवगत थे। दानपत्र के अनुसार दान-ग्रहीता ब्राह्मण परिवार के अतिरिक्त टकारी के अन्य तीस भारद्वाज ब्राह्मण भी

---

१ 'श्री मधुसूदनाख्य कविता शस्त्रा प्रशस्तिः कृता' ए० इ० २१, पृ० २६४,

२. श्रीमध्यदेशामन्तः पाति टकारिक भट्टग्राम विनिर्गतमाध्यन्दिनशाख भारद्वाज गोत्र भट्टाभिधानविप्रप्रवरप्रनप्त्रे श्री पद्मनामनप्त्रे श्री श्रीवात्सानायकसुताय स्वाध्याय-स्नान-दान-पंच-भूताज्ञआदि गृहस्थधर्म आनुष्ठानरताय महाप्रधानपद विराजिताय श्रीमाणम्व-अभिधान नायकाय-तद' – वही, १७, पृ० १२१,

३. ए० इ० १७, पृ० १२१.

४. 'माध्यंदिन शाख भारद्वाज गोत्र……स्वाध्यायस्नान-दान-पंचभूतयज्ञादि गृहस्थ धर्म्म……वही।

५. वही।

६. 'अध्यापनं ब्रह्मयज्ञः पितृयज्ञस्तु तर्पणम्। होमो दैवो (देवयज्ञः) बलिर्भौतो (भूत यज्ञः) नृयज्ञोऽतिथि पूजनम्॥ मनु० ३/७०-७२.

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

गृहस्थों के कर्तव्य[१] को जानते थे। ऐसा संकेत मिलता है कि टकारी के भारद्वाज ब्राह्मणों का जीवन स्तर उच्चकोटि का था। ऐसा संभव है कि टकारी के विद्वान् ब्राह्मणों के उत्कृष्ट गुणों से यादव वंशीय नरेश भिल्लम तृतीय प्रभावित रहा हो। माध्यन्दिन शाखा का अनुयायी भारद्वाज ब्राह्मण माणम्बनायक था जो प्रधानमंत्री[२] जैसे विशिष्ट पद पर विराजमान था।

कलसवुद्रुख दानपत्र में टकारी के भारद्वाज ब्राह्मणों के नामों में नामांत नायक है।[३] महाप्रधान (प्रधान मन्त्री) का नाम माणम्बनायक एवं इनके पिता का नाम श्रीवत्सनायक था।[४] ज्ञात होता है कि उपपद 'नायक' परम्परागत रूप से प्रचलित हो गया।

भारद्वाज ब्राह्मण अपने स्वाध्याय, स्नान, तप एवं दान जैसे विशिष्ट कार्यों को करने में सदा उद्यत रहते थे। यह इस बात का द्योतक है कि उनका व्यावहारिक एवं नियमित जीवन का स्तर पवित्र एवं ऊँचा था।

पंचमहायज्ञों के प्रति भारद्वाज ब्राह्मणों के धार्मिक दृष्टिकोण से ऐसा प्रतीत होता है कि उनकी धारणा थी कि एक ब्राह्मण के लिए पाँच दैनिक यज्ञ (महा-यज्ञ या पंचभूतयज्ञ) अनुष्ठेय हैं।

उक्त दानपत्र में उल्लिखित ब्राह्मणों में नामान्त उपपद 'नायक' लगाने की परम्परा थी जो उनके राजकीय अधिकारी एवं प्रशासकीय अधिकारी होने का संकेत करता है।

दानपत्रों के आधार पर कहा जा सकता है कि १० वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध एवं ११ वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में भृग्वाङ्गिरस भारद्वाज माध्यंदिन शाखा के ब्राह्मणों का केन्द्र मध्यदेश में स्थित टकारी था। इसका व्यापक प्रभाव एवं व्याप्ति कर्णाटक में राष्ट्रकूट खोट्टिग तथा यादव भिल्लम तृतीय के समय में ही थी।

कर्णाटक के अतिरिक्त दशवीं से लेकर १३ वीं शताब्दी तक के टकारी से दीप्तिमान भृग्वाङ्गिरस कुल के भारद्वाज ब्राह्मणों के बहिर्गमन एवं बुन्देलखंड

---

१. 'महाप्रधानपद विराजिताय श्रीमाणम्बाभिधान नायकाय' ए० इ०, १७,पृ० १२१ महाप्रधान पद के महत्त्व के लिए द्रष्टव्य—सरकार : 'ग्लासरी' पृ० १८३.

२. श्रीवत्सनायक सुताय श्रीमाणम्बाभिधाननायकाय। तत्रैव।

३. 'नायक' के अर्थ के लिए द्रष्टव्य, सरकार - 'ग्लासरी', पृ० २१४

४. ए० इ०,१७,पृ० १२१

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

में व्यापक प्रसार एवं प्रभाव का ज्वलन्त प्रमाण तत्कालीन चन्देल राजाओं के खजुराहो[1] नन्यौरा[2] दानपत्रों में मिलता है।

नन्यौरा एवं खजुराहो दानपत्र से ज्ञात होता है कि दशवीं शताब्दी के अन्तिम वर्षों में टकारी से भारद्वाज गोत्रीय ब्राह्मण बहिर्गत हुए थे। अङ्गिरस कुल के भारद्वाज ब्राह्मण यशोधर[3] का उल्लेख दानग्रहीता के रूप में हुआ है।

सुविख्यात भारद्वाज-केन्द्र टकारी का भट्ट यशोधर चंदेल नरेश धंगदेव के समय (६५०-१००८ ई०) में धर्माधिकारी एवं कुल पुरोहित (महापुरोहित) के पद पर आसीन था।[4] दण्डनायक यशोधर हिन्दू धर्मशास्त्र के विहित कार्यों को करता था।[5] इससे बेधस्[6] (विद्वान् पुरुष) के रूप में भी उल्लिखित किया गया है। उसकी महान् कीर्तियों के फलस्वरूप चंदेल नरेश को सफलता मिलती रही।[7]

उपरिवर्णित नन्यौरा दानपत्र में भट्ट यशोधर दानग्रहीता के रूप में उल्लिखित है।[8] खजुराहो अभिलेख से ज्ञात होता है कि यशोधर धर्माधिकारी जैसे विशिष्ट पद पर भी नियुक्त था।[9] इससे यह आभास होता है कि भारद्वाज ब्राह्मण राज्य के श्रेष्ठ अधिकारी होने के साथ ही साथ परंपरागत कार्य दान आदि भी स्वीकार करते थे। परंपरागत रूप से दान लेना उनकी यजमानी वृत्ति थी।

चंदेल दानपत्रों में भारद्वाज ब्राह्मणों के नामों के साथ नामान्त धर[10] एवं पाल[11] का उल्लेख है। चरखारी दानपत्र (वि० स० १३४६=११८९ ई०) में

---

१. धंगदेव का नन्यौरा दानपत्र, ए० इ० १६, पृ०२०४, (२) धंगदेव का खजुराहो दानपत्र, वही, १, पृ० १४६. (३) नन्यौरा दानपत्र में दानग्रहीता ब्राहमण यशोधर धकारी (टकारी का अपभ्रंश नाम) से बहिर्गत हुआ बताया गया है। वही, १६, पृ० २०४. पाठक,ए० हि०आ० इ०, पृ० २३,

४. धर्माधिकार मनुसा (शा) सति सा (शा)स्त्रोतोत्रमित्रे सतां स्फुरित धामनि धर्म्मंवु (बु) (द्वौ) श्रीयशोधर पुरोधसि वेद्यसीव सिद्धि जगाम जंगतीयति कीर्ति रेषां खजुराहो अभि' – ए० इ० १, पृ० १४६,

५. वही

६. वही

७. वही

८. वही, १६,पृ० २०४

९. वही १, पृ० १४६, वही ४ पृ० १६५,

१०. वही, २०, पृ० १३६.

११. ए० इ०,४, पृ० २७४

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

भारद्वाज ब्राह्मण परिवार के दो ब्राह्मणों का नाम श्रीधर एवं विद्याधर मिला है।[1] विद्याधर का पौत्र श्रीधर था। सेमरा दानपत्र में पिता महीधर एवं पुत्र महाधर का नाम मिलता हैं।[2] इसी दानपत्र में गंगाधर एवं उसके लड़के अंसधर के नाम का भी उल्लेख है।[3]

उपर्युक्त चन्देल कालीन भारद्वाज ब्राह्मणों में धर एवं पाल परम्परागत उपपद के रूप में प्रयोग किया जाता था।

इन चन्देल दानपत्रों से यह भी स्पष्ट होता है कि टकारी के भारद्वाज ब्राह्मणों का राज्य के प्रशासन में प्रमुख हाथ था। भारद्वाज ब्राह्मणों को दण्ड-नायक (धर्माधिकारी) एवं महापुरोहित (कुल पुरोहित) जैसे विशिष्ट पद प्रदान करना[4] उनके राज्य स्तर की महान् प्रतिष्ठा को प्रदर्शित करता है।

महापुरोहित जैसे पद पर नियुक्त होना भारद्वाज ब्राह्मणों के राज्य में प्राप्त विशिष्ट सम्मान को सिद्ध करता है। ऐसा भी सम्भव है कि टकारी के अन्य भारद्वाज ब्राह्मण बुन्देलखण्ड में अपने पौरोहित्य या पुरोहिती कार्य करते रहे थे। इसके साथ ही स्पष्ट रूप से ज्ञात होता है कि भारद्वाज ब्राह्मणों को राजपुरोहित पद मिला था जो बुन्देलखंड में उनके धार्मिक प्रभाव का द्योतक है।

जीविका निमित्त सैनिक वृत्ति के अतिरिक्त भारद्वाज ब्राह्मण खेती भी करते थे। इस बात के भी प्रमाण कुछ अभिलेखों में प्राप्त हैं कि मृतक सैनिक के परिवार को कृषि करने के लिए भूमि दान दी गई थी[5] जिसके सहारे उसके आश्रितों का जीवन-यापन होता रहे। अभिलेखों में भारद्वाज ब्राह्मणों के युद्ध में वीरगति प्राप्त करने का उल्लेख विशिष्ट शौर्य,[6] राष्ट्रीय विचारधारा एवं देशभक्ति को प्रमाणित करता है।

भारद्वाज ब्राह्मणों के उपपद[7] धर एवं पाल मंगलसूचक न होकर शूरपरक थे। ऐसा संकेत मिलता है कि ये नामान्त किसी विशेष पद्धति के सूचक नहीं थे।

---

९. वही, २० पृ० १३६
१०. वही, ४, पृ० १६५–१६९
११. वही।
१. ए० इ०, १९, पृ० १७.
२. वही, १६, पृ० २७४.
३. वही,
४. वही, ४, पृ० १६५ एवं १६९; वही १६, पृ० २७४; वही, २०, पृ० १३६.

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

चंदेल कालीन खजुराहो एवं नन्यौरा दानपत्रों के आधार पर प्रख्यात केन्द्र टकारी के भृग्वांगिरस कुल के विद्वान् भारद्वाज ब्राह्मणों का काल-निर्धारण किया जा सकता है। इनका बुंदेलखण्ड में प्रभाव एवं प्रसार दशवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध से लेकर ग्यारहवीं शताब्दी तक था। बुंदेलखण्ड के अतिरिक्त टकारी से भृग्वांगिरस कुल के भारद्वाज ब्राह्मणों का देशान्तरगमन तथा उनका परमार राज्य मालवा में प्रसार एवं प्रभाव तेरहवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में हुआ था, जिसकी पुष्टि परमार देवपाल के मान्धाता दानपत्र[1] से होती है।

टकारी से भारद्वाज ब्राह्मणों का बहिर्गमन उस समय हुआ, जब देश में मुस्लिम आक्रमण की विभीषिका का पूर्ण प्रभाव १२वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में मध्यदेश में व्याप्त था। तराईन[2] (११९२-९३ ई०) एवं चंदवार[3] (११९३-९४ई०) के युद्धों ने तत्कालीन लोगों में आतंक फैला दिया था। मुस्लिम आक्रांताओं ने अनेक नगरों को लूटा एवं तीर्थस्थानों को नष्ट किया। ब्राह्मण धर्मावलंबियों को भी इसका सामना करना पड़ा। ऐसा संभव है कि मध्यदेशीय टकारी के भारद्वाज ब्राह्मण भी तत्कालीन परिस्थिति से प्रभावित हों एवं मालवा में संरक्षण प्राप्त करने के लिए वहाँ से बहिर्गत हुए।

मालवा में टकारी के भृग्वांगिरस भारद्वाज ब्राह्मण कौथुम[4] एवं माध्यन्दिन[5] शाखाओं के अनुयायी थे। दोनों शाखाओं के ब्राह्मणों का प्रवर[6] (अंगिरस, भारद्वाज एवं बार्हस्पत्य) एक ही था। कौथुम शाखानुयायी भारद्वाज ब्राह्मण अधिकांशतः त्रि,[7] (त्रिवेदी या त्रिपाठी) होते थे, जबकि माध्यन्दिन शाखा के भारद्वाज गोत्रीय ब्राह्मण 'दी'[8] (दीक्षित) कहे जाते थे। संभवतः

---

१. ए० इ० ९, पृ १११.

२. त्रिपाठी : 'द हिस्ट्री आफ कन्नौज', पृ० ३२७–२८,

३. वही, पृ० ३२८–२९

४. टकारी स्थान विनिर्गताय भारद्वाजगोत्राय भारद्वाजसगोत्राय भारद्वाज-अंगिरस -वार्हस्पत्य-इति=त्रिप्रवराय कौथुमशाखाध्यायिते त्रि – –। देवपाल का मान्धाता दानपत्र, वही ९ पृ० १११.

५. वही।

६. वही।

७. 'त्रि डालणपौत्राय त्रि असाधरपौत्राय त्रि विश्वशर्मणे' ए०इ० ९, पृ १११,

८. दी कौल्हणपौत्राय दी मधुपुत्राय दी राम शर्म्मणे' वही।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America, HHFA(USA)

दीक्षित भारद्वाज गोत्रीय ब्राह्मण दीक्षा-कार्य में व्यस्त पुरोहित के रूप में सम्मानित थे। इसके अतिरिक्त यह भी ज्ञात होता है कि तत्कालीन माध्यन्दिन शाखानुयायी दीक्षित[1] ब्राह्मणों ने या उनके पूर्व पुरुषों ने ज्योतिष्टोम जैसे बृहद् यज्ञ का अनुष्ठान किया था। ज्योतिष्टोम यज्ञ के अनुष्ठाता को दीक्षित ब्राह्मण कहा जाता था। उक्त तथ्यों से संकेत मिलता है कि टकारी के माध्यन्दिन शाखा के भारद्वाज ब्राह्मण पौरोहित्य कार्य करते थे, जो उनके व्यवसाय,धर्म एवं कर्मकाण्डी होने का द्योतक है। सामवेदीय कौथुम शाखा के भारद्वाज ब्राह्मणों को त्रैविद्य या तीन वेदों का विद्वान् बताया गया है। इन्हीं अभिलेखों से यह भी विदित होता है कि बारहवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध एवं तेरहवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में टकारी के भृग्वांगिरस कुल के भारद्वाज गोत्रीय ब्राह्मणों का प्रभाव तथा प्रसार मालवा में था।

दशवीं एवं ग्यारहवीं शताब्दी के सोम तथा भंज दानपत्रों में भारद्वाज ब्राह्मणों के मध्यदेशीय टकारी से विनिर्गत एवं वास्तव्य से सम्बन्धित प्रमुख केन्द्र तुव्वुंना (महाकोसल) शिलाभंजपाटि एवं दक्षिण तोषल में स्थित पटवाडपाटक (कोण्डर वंगविषय)का उल्लेख हुआ है। सोमवंशीय महाभवगुप्त(९३५-७० ई०) के समय में टकारी से वाजसनेय शाखानुयायी भारद्वाज ब्राह्मणों का वहिर्गमन हुआ था। केवल उनके द्विप्रवर[2] (वार्हस्पत्य एवं अंगिरस) का उल्लेख हुआ है। तुव्वुंना[3] 'कोसल' में भारद्वाज ब्राह्मणों ने अपना निवास स्थान बनाया था। टकारी से वहिर्गत तुर्व्वना निवासी एक ब्राह्मण दानग्रहीता का उल्लेख महाभवगुप्त के ताम्रपत्र में हुआ है।[4] महाभवगुप्त के समय भट्ट महत्तम श्री साधारण प्रधान मंत्री के पद पर आसीन था।[5] उसे महत्तम की प्रख्यात उपाधि प्राप्त

---

१. 'दीक्षित' शब्द के अर्थ के लिए द्रष्टव्य—आप्टे : 'सं०हिं०को०' पृ ४६०

२, 'टकारी-विनिर्ग्गताय कोशले तुव्वुंना-वास्तव्याय भारद्वाज-गोत्राय। बार्हस्पत्य-अंगिरस-प्रवराय। वाजसनेयशाखाध्यायिने भट्ट श्री महत्तम साधारण-य भट्टश्री शोभन सुताय, — महाभवगुप्त का कटक ताम्रपत्र, वही, पृ० ३४८.

३. संभवतः मूल से प्रवर के एक ऋषि का नाम उल्लिखित न हो सका ए० इं० ३, पृ० ३४८

४. वही, ३, पृ० ३४८.

५. वही।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

थी। वह राजा को आख्यान सुनाकर[1] आनन्दित करता था। ऐसा संभव है कि भारद्वाज ब्राह्मण कथा, कहानी विशेष रूप से पौराणिक उपाख्यानों को सुनाकर राजपरिवारों एवं समाज को प्रभावित करते थे।

दशवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में सोमनरेश महाशिवगुप्त (९७०-१०००ई०) के राज्यकाल में मध्यदेश के श्री वल्लग्राम से 'टक्कर-पूर्व-भारद्वाज'[2] गोत्र (टक्कार-भारद्वाज गोत्र) के ब्राह्मणों ने बहिर्गत होने के पश्चात् उड्रदेश (उड़ीसा) के शिला-भंजपाटि[3] में अपना केन्द्र स्थापित किया। ऐसा ज्ञात होता है कि सर्वप्रथम टकारी से भारद्वाज गोत्र के ब्राह्मणों का बहिर्गमन हुआ। वहां से ब्राह्मण मध्यदेश के श्रीवल्लग्राम[4] जिसका तादात्म्य अभी संदिग्ध है) में आये एवं वहां से उड़ीसा में उनका प्रसार तथा प्रभाव बढ़ा। टक्कार-भारद्वाज के वर्णन से ज्ञात होता है कि भारद्वाज ब्राह्मणों में टक्कार-विनिर्गत के आधार पर एक वर्ग बन गया था और वह सम्मानित वर्ग था।

उपर्युक्त दानपत्र में टकारी के भारद्वाज ब्राह्मण छन्दोग कौथुम शाखानुयायी त्रिप्रवर (अंगिरस, बार्हस्पत्य एवं भारद्वाज) से सम्बन्धित थे[5], जबकि महाभवगुप्त (९३५-९७० ई०) के कटक ताम्रपत्र में टकारी के वाजसनेय शाखानुयायी भारद्वाज ब्राह्मणों के केवल द्विप्रवर[6] (बार्हस्पत्य एवं अंगिरस) का उल्लेख हुआ है। संभव है मूल से भारद्वाज छूट गया हो।

उड्रदेश में ग्यारहवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में भंज शासक जयभंजदेव (खिजली विषय का शासक) के समय टकारी के विप्र समुदाय से उद्भूत भारद्वाज ब्राह्मण बहिर्गत होने के पश्चात् सर्वप्रथम कोन्डरवंग विषय के दक्षिण में स्थित पटवाड-

---

१. वही, ३, पृ० ३५०, वही ८, पृ० १४३, वही २३, पृ० २५३.

२. 'टक्कार-पूर्व-भारद्वाज गोत्राय' महाशिवगुप्त का कटक ताम्रपत्र वही, पृ० ३५२,

३. मध्यदेशीय श्रीबल्लग्राम विनिर्गताय उड्र-देशे श्री शिला भंजपाटि वास्तव्याय टक्कार पूर्व्व-भारद्वाज गोत्राय। अंगिरस-बार्हस्पत्य-भारद्वाज-प्रवराय। छंदोग कोथुम शाखाध्यायिने भट्टपुत्र अनन्त वात्रे श्री – – –। वही, ३, पृ० ३५२,

४. वही।

५. ए०इं०, ३, पृ० ३५२.

६. वही।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

पाटक[1] में आये। पटवाडपाटक से भी भारद्वाज गोत्र के ब्राह्मणों का बहिर्गमन हुआ[2] एवं प्रसार खिजली विषय (उड्रदेश) में हुआ। पटवाडपाटक (दक्षिण तोषल) से भी यजुर्वेदीय[3] माध्यन्दिन शाखा एवं त्रिप्रवर[4] (अंगिरस, बार्हस्पत्य तथा भारद्वाज) के भारद्वाज ब्राह्मणों का बहिर्गम हुआ। दक्षिण तोषल में स्थित पटवाडपाटक निवासी (टकारी के भारद्वाज ब्राह्मण) दैवज्ञ (ज्योतिषी) जगधर था। भारद्वाज जगधर भंज राजा जयभंज के समय (११वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध) राजज्योतिषी था। भारद्वाज परिवार के ब्राह्मणों के नामों के साथ नामान्त 'धर'[5] का प्रयोग होता था। धर उपपद परम्परागत जान पड़ता है। इस संदर्भ में भारद्वाज, ब्राह्मण पण्डित धराधर पिता एवं पुत्र दैवज्ञ जगधर के नाम ध्यातव्य हैं। ऐसा संभव है कि अन्य भारद्वाज परिवारों में भी धर उपपद का प्रयोग परम्परागत हो गया था।

उपरिवर्णित तथ्यों से ज्ञात होता है कि सोम राजाओं ने भारद्वाज ब्राह्मणों से विशेष रूप से प्रभावित होकर प्रधान मन्त्री[6] एवं महत्तम[7] जैसे सम्मानित स्तर के विशिष्ट पद प्रदान किये थे जिससे कोसल (दक्षिण कोसल) एवं उड़ीसा में उनका प्रशासकीय अधिकार का आभास होता है। महत्तम उपाधिधारी भारद्वाज ब्राह्मण राजपुरुष सभासद होते थे। इससे भारद्वाज ब्राह्मणों के महत्त्वपूर्ण राजनैतिक प्रभाव संकेतित लगते हैं। राजनीतिक प्रभाव के अतिरिक्त भारद्वाज ब्राह्मणों का धार्मिक प्रभाव सोमराज परिवार पर भी था। भारद्वाज ब्राह्मण पौराणिक पाठक का काम करते थे। दानपत्र से ज्ञात है कि भारद्वाज ब्राह्मण आख्यानों[8] को सुनाकर राजा को प्रसन्न रखते थे। ऐसा संभव है कि

---

१. मध्यदेशीय टकारी-विप्र समुद्भवम्। आगताय को (ण्ड) खंग विषय दक्षिण तोषलस्थ पटवाडक-विनिर्गताय भारद्वाज-सगोत्राय-अंगिरस-बार्हस्पत्य -भारद्वाज त्रिःप्रवराय। जयभंजदेव का अंतिरिगम दानपत्र, वही, १९, पृ० ४४.

१. वही।

२. 'यजुर्वेद आध्यायिने मध्यन्दिन शाखाय' — वही।

३. वही।

४. 'दैवज्ञ श्री जगधराय' वही।

५. 'पंडित धराधरस्य पुत्राय दैवज्ञ श्रीजगधराय' वही।

६. ए० इ० ३, पृ० ३४९; वही, ८, पृ० १४२; वही, २३, पृ० २५३

७. 'महत्तम'—वही। सरकार: 'इ० ए० ग्ला०', पृ० १९१.

८. वही।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

तत्कालीन भारद्वाज ब्राह्मणों की जीवनवृत्ति का आधार राजकीय प्रशासकीय सेवाओं के अतिरिक्त अन्य कार्य जैसे धार्मिक पुस्तकों का पाठ आदि भी था। भारद्वाज ब्राह्मण राजज्योतिषी श्री जगधर उड़ीसा के भंज शासक जयभंजदेव के समय में था। तत्कालीन कुछ भारद्वाज ब्राह्मण ज्योतिष के सहारे अपनी जीविका चलाते थे। संकेत मिलता है कि भारद्वाज ब्राह्मण ग्रह नक्षत्रों की गति, स्थिति एवं उनके शुभाशुभ फल बताकर राज्य एवं समाज को लाभान्वित करते थे। ज्योतिर्विद् होना उनके व्यवसाय का अंग था।

उपर्युक्त अनेकानेक तथ्यों से अवगत होता है कि दसवीं शताब्दी में सोम राजाओं के टकारी के भृग्वांगिरस भारद्वाज छंदोग, कौथम तथा वाजसनेय शाखानुयायी ब्राह्मणों का प्रसार एवं प्रभाव कोसल और उड़ीसा में था। इसके अतिरिक्त भंजराजाओं के समय (११वीं शताब्दी) केवल उड़ीसा में ही यजुर्वेदीय माध्यन्दिन शाखानुयायी ब्राह्मणों का प्रसार विशेषरूप से हुआ। साधारणतः सातवीं शताब्दी से ग्यारहवीं शताब्दी के करीब श्रावस्ती में स्थित टकारी से भृग्वांगिरस कुल के भारद्वाज गोत्रीय ब्राह्मणों के बहिर्गमन एवं बंगाल में प्रसार तथा प्रभाव के सम्बन्ध में सूचनार्थ जयपालदेव (११ वीं शताब्दी का पूर्वार्द्ध) के समय का सिलीमपुर प्रशस्ति[1] ध्यातव्य है। टकारी के अंगिरस कुल के भारद्वाज ब्राह्मणों ने विशाल गौरव एवं मर्यादा अर्जित की थी। उन्होंने अपने वंश एवं आद्यस्थान को घोषित करने में गौरव का अनुभव किया है। समाज ने उन्हें विशिष्ट सम्मान दिया था।[2] टकारी के भारद्वाज ब्राह्मणों का दैनिक जीवन धर्मशास्त्रों में वर्णित नियमों पर आधारित था। भारद्वाज ब्राह्मण यज्ञीय कृत्यों या यज्ञीय आहुतियों (वैतान)[3] एवं गार्हस्थ्य[4] संस्कारों का संपादन वेदों और स्मृतियों में उल्लिखित नियमों के अनुसार करते थे।

उक्त सिलीमपुर प्रशस्ति से ज्ञात होता है कि टकारी के भारद्वाज ब्राह्मणों का बंगाल में प्रसार एवं प्रभाव प्रमुख रूप से बालग्राम तथा शियम्बा में हुआ

---

१. 'दैवज्ञ श्री जगधराय' ए०इ०, १९, पृ०४४, जयपाल देव के समय का सिलीमपुर अभिलेख — वही, १३, पृ० २९०–९२.

२. वही।

३. 'यस्मिन्=वेद-स्मृति-परिचयोद्भिन्न-वैतान-गार्हप्रज्यावृत्त-आहुतिषु चरताम् किर्तिभिः=व्योम्नि शुभ्रे'–वही।

४. 'तत-प्रसूताश=चपुंड्रेषु सकति व्यवधानवन। वरेन्द्रि मन्डनम् ग्रामो व (बा) लग्राम इति श्रुतः' — वही।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

था। अभिलेख के अनुसार भारद्वाज केन्द्र बालग्राम पुण्ड्रदेश (उत्तरी बंगाल) में स्थित बरेन्द्री की भूमि का आभूषण था। वहाँ टकारी के भारद्वाज ब्राह्मणों का प्रसार हुआ। उनको अपनी विद्या, वंश एवं अनुशासित जीवन (आत्म संयम) पर गर्व था। बालग्राम के निकट शियम्बा में भारद्वाज पण्डित परिवारों का प्रसार हुआ था। शियम्बा में सबसे विशिष्ट प्रभावशाली भारद्वाज ब्राह्मण परिवार प्रहास का था, जिसके पूर्वजों का उल्लेख प्रमुख रूप से सिलीमपुर प्रशस्ति[1] में किया गया है। ब्राह्मण प्रहास (११ वीं शताब्दी पूर्वार्द्ध) के सातवें पूर्व पुरुष पशुपति (नवीं शताब्दी का उत्तरार्द्ध) तक का उल्लेख किया गया है। इस आधार पर अनुमानित है कि टकारी से भारद्वाज ब्राह्मणों का बहिर्गमन सातवीं शताब्दी में हुआ था, क्योंकि टकारी से बालग्राम तथा बालग्राम से शियम्बा तक पहुँचने में समय लगा होगा। भारद्वाज केन्द्र शियम्बा के ब्राह्मणों के प्रसार एवं प्रभाव का समय ९ वीं शताब्दी से लेकर ११ वीं शताब्दी तक साधारणतया माना जाना चाहिए।

भारद्वाज ब्राह्मण प्रहास एक विख्यात राजपुरुष था। तत्कालीन लोगों तथा राजाओं ने उसे उच्च स्तर की मर्यादा दी थी। आसाम के महान् शक्तिशाली पाल नरेश जयपाल देव ने उसके समक्ष विशिष्ट सम्मान के साथ ९०० स्वर्ण मुद्राएं एवं भूमि (जिससे १००० सिक्कों की आय होती) प्रस्तुत की थी किन्तु उसने ग्रहण करना स्वीकार नहीं किया। शियम्बावासी टकारी के भारद्वाज ब्राह्मण वैष्णव धर्मानुयायी थे। साहित्य (ब्राह्मण प्रहास के प्रपितामह के पितामह) ने विष्णु की मूर्ति[2] स्थापित कराई थी। प्रहास ने स्वयं भी अमरनाथ[3] (विष्णु) एवं त्रिविक्रम[4] (विष्णु) की मूर्ति की स्थापना की थी। प्रशस्ति के आरम्भ में भी भगवान् वासुदेव एवं चतुर्भुज (विष्णु) की आराधना की गई है।[5] भारद्वाज ब्राह्मण तपोनिधि (प्रहास का पितामह) एक प्रख्यात ज्योतिषी, तांत्रिक एवं मीमांसा दर्शन शास्त्री था। प्रशस्ति से ज्ञात होता है कि वह कुमारिल भट्ट के सिद्धांतों[6]

---

१. ए० इ०, १९, पृ० ४४.
२. वही, पृ० २९०.
३. वही, पृ० २९२.
४. वही।
५. ए० इ०, १९ पृ० २९०
६. वही, पृ० २९१

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

का सुविख्यात ज्ञाता था। मीमांसा दर्शनशास्त्री कार्तिकेय (प्रहास का पिता) का नाम भी उल्लेखनीय है। भारद्वाज ब्राह्मण परिवार में तांत्रिक, तर्कशास्त्री और धर्मशास्त्री होते थे। प्रहास एक तांत्रिक[1] के रूप में प्रख्यात था।

भारद्वाज ब्राह्मणों को राज्यस्तर का सम्मान प्राप्त हुआ था। उनका राजनीतिक प्रभाव समाज एवं शासक वर्ग पर था। आसाम के जयपाल देव तथा अन्य नरेशों ने ब्राह्मण प्रहास को विशिष्ट सम्मान उसे कुलीन समझकर दिया था। ऐसा प्रतीत होता है कि टकारी से भारद्वाज ब्राह्मणों का प्रसार आसाम में भी नारायणपाल के समय ग्यारहवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में हुआ। शियम्बा वासी भारद्वाज ब्राह्मणों ने अमरनाथ, त्रिविक्रम एवं विष्णु की मूर्तियों की स्थापना करायी थी। वैष्णव धर्मानुयायी भारद्वाज गोत्रीय ब्राह्मणों का बंगाल में प्रभाव स्पष्ट रूप से ज्ञात होता है। भारद्वाज ब्राह्मण ज्योतिषी तपोनिधि (जो कुमारिल भट्ट के सिद्धान्तों का ज्ञाता था) एवं तांत्रिक प्रहास के उल्लेख है। ज्योतिष तथा तंत्र उनके व्यवसाय का द्योतक हो सकता है। ऐसा भी सम्भव है कि भारद्वाज ब्राह्मण अपने ज्योतिष और तन्त्र के बल पर तत्कालीन समाज को प्रभावित करते थे।

उपर्युक्त तथ्यों से ज्ञात होता है कि टकारी के भारद्वाज ब्राह्मणों का बहिर्गमन करीब सातवीं शताब्दी से होता रहा एवं बंगाल तथा आसाम में उनका प्रसार ग्यारहवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध तक चलता रहा। डा० विश्वम्भरशरण पाठक भी सोमेश्वर के 'ललित विग्रहराज नाटक' के आधार पर भृग्वाङ्गिरसों का प्रभाव चाहमान राज्य में मानते हैं।[2] शुभानन्द यात्री का नाटक में परिचय कराते समय कवि ने उसकी उत्कट प्रशंसा की है एवं विशिष्ट सम्मान प्रदान किया है। स्वयं राजा विग्रहराज चतुर्थ भी उसकी योग्यता से प्रभावित था।[3] शुभानन्द टकारी से बहिर्गमन हुआ। नाटक में टकारी विद्वान् ब्राह्मणों का केन्द्र माना गया है, जिसको देखने के लिए दूर-दूर से प्रख्यात विद्वान् आया करते थे। ललित विग्रहराज नाटक में अंगिरसों के प्रख्यात केन्द्र टकारी के विद्वान् ब्राह्मण शुभानन्द का परिचय एवं इसके प्रति विग्रहराज चतुर्थ का विशिष्ट सम्मान देखकर ज्ञात होता है कि भृग्वांगिरस ब्राह्मणों का १२वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में चाहमान राज्य में विशेष रूप से प्रभाव था। इन विवेचनों से स्पष्ट है कि टकारी के भृग्वांगिरस कुल के भारद्वाज ब्राह्मणों का बहिर्गमन तथा उनका प्रसार एवं प्रभाव कर्णाटक,

---

१. वही, पृ० २९२
२. पाठक, वि० श० : 'एन्शिएन्ट हिस्टोरियन्स आफ इंडिया', पृ० २३
३. ए० इ०, २०, पृ० २०१

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

उड़ीसा, कोसल, बुन्देलखण्ड, मालवा, राजस्थान बंगाल एवं आसाम में हुआ।

कहल्ल

कहला दानपत्र में कहल्ल ग्राम से भारद्वाज ब्राह्मणों के बहिर्गमन और सरयूपार के कलचुरि नरेश सोढ़देव (११वीं शताब्दी का उत्तरार्द्ध) के राज्य में प्रसार और प्रभाव का उल्लेख हुआ है। भारद्वाज केन्द्र कहल्ल ग्राम स्पष्ट रूप से कहला ग्राम ही है जहाँ उक्त दानपत्र (वि०सं० ११३४ = १०७७ ई०) मिला था। यह स्थान उत्तर प्रदेश के गोरखपुर जनपद के धुरियापार परगना में स्थित कहल्ल ग्राम है।[1] सरयूपार में बह्वृच शाखानुयायी एवं त्रिप्रवर भारद्वाज ब्राह्मणों का प्रसार हुआ था। कलचुरि कालीन कहला दानपत्र के आधार पर यह भी कहा जा सकता है कि कहल्ल से ऋग्वेदीय भारद्वाज ब्राह्मणों का बहिर्गमन तथा सरयूपार में प्रसार ११वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में हुआ।

मथुरा

बारहवीं शताब्दी के उतरार्द्ध एवं तेरहवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में भारद्वाज ब्राह्मणों का प्रमुख केन्द्र मथुरा था, जिसकी पुष्टि देवपाल के मान्धाता दानपत्र[2] से होती है। १२वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में मुसलमानी आक्रमणों के कारण तराईन एवं चन्दवार युद्धों के दुष्परिणाम से मध्यदेश के अनेक तीर्थस्थान प्रभावित थे। सम्भव है कि इन्हीं परिस्थितियों में मथुरा से राणायनीय शाखानुयायी भारद्वाज ब्राह्मणों का बहिर्गमन हुआ। मथुरा के राणायनीय शाखा के भारद्वाज ब्राह्मणों का प्रसार[3] मालवा में परमार देवपाल के समय हुआ। ब्राह्मण धर्मावलंबी एवं संरक्षक देवपाल ने मथुरा के ब्राह्मणों को भी दान दिया था। राणायनीय भारद्वाज ब्राह्मण त्रिवेदी[4] होते थे। ऐसा संभव है कि मथुरा के भारद्वाज ब्राह्मणों

---

१. कहल्ल ग्राम गोरखपुर से २८ मील की दूरी पर गोरखपुर–आजमगढ़ रोड पर है।

२. देवपाल का मान्धाता दानपत्र, ए० इ०, ९, पृ० १११

३. 'मथुरास्थान विनिर्गताय राणायनीय शाखाध्यायिने भरद्वाजगोत्राय अंगिरस-वा (बा र्हस्पत्य भारद्वाज इति त्रि प्रवराय त्रिमाधव-पौत्रायत्रिसोमेश्वरपुत्राय त्रिकुलधर शर्मणे' —वही। 'मथुरास्थान विनिर्गताय राणायनीशाखाध्यायिने भारद्वाजगोत्राय अंगिरस (वा) वार्हस्पत्य–भारद्वाज इति त्रि प्रवराय त्रि ऋषि पौत्राय त्रि मार्कण्ड पुत्राय त्रि मधुसूदन शर्म्मणे।' — वही

४- ए० इ०, ९ पृ० १११,

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

का प्रसार मालवा में १२वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में हुआ हो। अभिलेखों में कहीं-कहीं उपर्युक्त केन्द्रों के भारद्वाज ब्राह्मणों के विशिष्ट आद्यस्थान का उल्लेख न कर उन्हें मोटे तौर पर मध्यदेशीय कहा गया है।[1] इससे प्रतीत होता है कि इन विभिन्न केन्द्रों के भारद्वाज ब्राह्मणों के लिए एक सामान्य संज्ञा भी प्रचलित हो चली थी। मध्यदेश से तात्पर्य पूर्वमध्यकालीन कन्नौज राज्य (कान्यकुब्ज; सम्पूर्ण उत्तर प्रदेश) है।

शाण्डिल्य ब्राह्मणों के केन्द्र

मध्य देश में स्थित शाण्डिल्य गोत्रीय ब्राह्मणों के विनिर्गत तथा वास्तव्य का बंगाल के पाल, मालवा के परमार, सरयूपार के कलचुरि और कामरूप के पाल दानपत्रों[2] में उल्लेख है। उक्त दानपत्रों का समय साधारणतः ८ वीं शताब्दी से लेकर १३ वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध तक माना जाता है। शाण्डिल्य ब्राह्मणों के प्रमुख केन्द्र पाञ्चाल, कोलाञ्च और मध्यदेश थे तथा इन्हीं स्थानों से ब्राह्मण बंगाल, बिहार, मालवा, सरयूपार तथा कामरूप की ओर गये।

पाञ्चाल

बादल प्रशस्ति के आधार पर ज्ञात होता है कि पाञ्चाल[3] में शाण्डिल्य गोत्र के ब्राह्मण रहते थे। ८ वीं और ९वीं शताब्दी में शाण्डिल्य ब्राह्मणों ने

१- 'मध्यदेश विनिर्गताय माध्यन्दिनशाखाध्यायिने भारद्वाज-गोत्राय अंगिरस-वा (बा) र्हस्पत्य-भारद्वाज इति त्रिप्रवराय द्वि नारायण पौत्राय द्वि पद्मनाभ-पुत्राय पाठ वायुदेव-शर्म्मणे—वही।

२- नारायण पाल के समय का बादल स्तम्भ अभिलेख, वही २,पृ० १६१; विग्रह पाल तृतीय का बनगांव दानपत्र,वही २९, पृ० ५६-५७; विग्रहपाल तृतीय का आमगाछी दानपत्र, वही, १५, पृ० २९८; वाक्पतिमुंज का गोनरी दानपत्र, वही, २३, पृ० १०९; देवपाल का मान्धाता दानपत्र, वही ९, पृ० १११-१२; सोढदेव का कहला दानपत्र, मिराशी, कार्पस, ४/२, पृ० ३९०; धर्मपाल का दानपत्र, कामरूप शासनावली, पृ० १५५

३- पाञ्चाल प्रारम्भ में दिल्ली के उत्तर-पश्चिम दिशा में हिमालय की तलहटी से लेकर चंबल के बीच के भूभाग को कहते थे। बाद में यह उत्तर एवं दक्षिण पाञ्चाल के रूप में विभाजित हो गया। गंगा दोनों की सीमा थी, उत्तर पांचाल की राजधानी अहिच्छत्र तथा दक्षिण पाञ्चाल की राजधानी

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

बंगाल के पालशासकों के यहाँ अपनी शैक्षणिक योग्यता व प्रतिभा के कारण विशिष्ट पदों[1] को प्राप्त किया था।

खलीमपुर दानपत्र से ज्ञात होता है कि पालशासक धर्मपाल (८वीं शताब्दी उत्तरार्द्ध) ने पाञ्चाल की राजधानी कन्नौज में राजसभा[2] आयोजित की जिसका मुख्य उद्देश्य तत्कालीन पाल प्रभुसत्ता का प्रदर्शन तथा विजित इन्द्रायुद्ध के स्थान पर चक्रायुद्ध का राज्याभिषेक[3] करना था। १०वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में कर्पूर-मञ्जरी के लेखक राजशेखर ने वज्रायुद्ध को पाञ्चाल का राजा माना है।[4] वज्रा-

---

काम्पिल्य थी। राजा द्रुपद का राज्य दक्षिण पांचाल था। माकन्दि दक्षिण पांचाल की दूसरी राजधानी थी। गंगा के दक्षिणी तट से लेकर चर्मण्वती (चंबल) तक दक्षिण पांचाल था। (महाभारत, आदिपर्व, अनु० १४०) एवं उत्तर पाञ्चाल गंगा से हिमालय तक फैला हुआ था। बुद्ध के समय में पांचाल की राजधानी कन्नौज थी। विशेष विवरण के लिए द्रष्टव्य रीज-डेविड्स : बुद्धिस्ट इंडिया, पृ० २७, डे० एन० एल०—द जियोग्राफीकल डिक्सनरी आफ एन्सेंट एण्ड मेडियेवल इंडिया (द्वि० सं०-१९२७), पृ० १४५

कान्यकुब्ज पांचाल के अन्तर्गत था-ऐसा सिलीमपुर ताम्रपत्र से ज्ञात होता है (ए० इ०, ४, पृ० २४३) ऐतिहासिक काल में पांचाल जनपद ही कान्यकुब्ज नाम से प्रसिद्ध हुआ, जिसका अवशेष अब कन्नौज नगर या कान्यकुब्ज ब्राह्मणों तथा कुछ अन्य उपजातियों के रूप में हम पाते हैं — द्रष्टव्य, वर्मा, धीरेन्द्र : मध्यदेश (प्र० सं० १९५५), पृ० १७···शाण्डिल्य बंगे भूद्वीरदेवस्तदन्वये पाञ्चालो नाम तद्गोत्रे गर्गस्तस्मादजायत—'नारायण पाल के समय की बादल प्रशस्ति—वही (ए० इ०) २, पृ० १६१.

१- वही, १६१-६४, प्रो० कीलहार्न ने पांचाल के शाण्डिल्य ब्राह्मणों के राज्याधिकार का उल्लेख किया है —वही, २, पृ० १६०,

२. 'भोजैर्—मत्स्यैः समद्रैः कुरुयदुयवनावन्ति गन्धारकीरैर्भूपैर्व्यालोलमौलिप्रणति परिणतैः साधु सङ्गीर्यमाणः हृष्यत्पञ्चालवृद्धोद्धृतकनकमयस्वाभिषेकोदकुम्भो दत्तः श्रीकन्यकुब्ज (ब्ज) स्सललितचलितभ्रूलतालक्ष्म येन' — धर्मपाल का खलीमपुर दानपत्र, ए० इ०, ४, पृ० २४३

३. वही।

४. राजशेखर प्रणीत कर्पूरमञ्जरी, ३, ५ पृ० ७४ २६६. (कानोव एवं लेन्मस संस्करण)।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

युद्ध का तादात्म्य इन्द्रायुद्ध[1] से स्थापित किया जा सकता हैं। वादल प्रशस्ति से ज्ञात होता है कि धर्मपाल (७७०-८१५ ई०) ने पाञ्चाल के शाण्डिल्य ब्राह्मण गर्ग को अमात्य पद पर नियुक्त किया।[2] अतः अनुमान है कि पाञ्चाल राज्य में धर्मपाल का चक्रायुद्ध के राज्याभिषेक प्रसंग में शाण्डिल्य ब्राह्मणों से परिचय हुआ ओर उसने पाञ्चाल के प्रमुख ब्राह्मण वंश को अपने राज्य में निमन्त्रित किया।

अमात्य ब्राह्मण गर्ग का लड़का दर्भपाणि पाल नरेश देवपाल के समय (८१० ई०) मन्त्री था।[3] दर्भपाणि को द्विजेश, चार वेदों का प्रख्यात विद्वान्[4] और विशिष्ट राजपुरुष[5] बताया गया है। दर्भपाणि के पौत्र केदार मिश्र गौडेश्वर

---

१ राजशेखर तत्कालीन राजाओं के नाम को परिवर्तित कर अपने सट्टक में पात्रों के रूप में उपस्थित करता है। विद्धशालभञ्जिका और कर्पूरमञ्जरी के ऐतिहासिक पात्रों के लिये द्रष्टव्य, मिराशी, कार्पस, भूमिका, पृ० ८१.

२. '– –शण्डिल्य वंगे भूद्वीर देवस्तदन्वये।
पाञ्चालो नाम तद्गोत्रे गर्ग्गस्तस्मादजायत।
शक्रः पुरोदिशि पतिर्न्न दिगन्तरेषु तत्रापि दैत्यपतिभिर्ज्जित एव(१) धर्म्मः कृतस्तधिपस्त्वखिलासु दिक्षु मयेति विजहास वृ (वृ)हस्पति यः (२)
—वही, भाग २, पृ०१६१.

३. 'आरेवाजनकान्मतङ्गजमदस्तिम्यच्छिला (ल)सङ्घते–रा गौरीपितुरीश्वरेन्दु-किरणैः पुष्यत्सितिम्नो गिरेः। मार्तण्डास्तमयोदयारुणजलादा वारिराशिद्वया-नीत्या यस्य भुवं चकार करवां श्री देवपालः नृपः (५) माद्यन्नानागजेन्द्रस्रवदन वरतोद्दामदानप्रवाहो — न्मृष्ट क्षोणीविसर्षिप्रव (ब) ल – घररजः सम्वृता-शावकाशं, दिक्चक्रायातभूभृत्यपरिकरविसरद्वाहिनी दुर्व्विलोक–स्तस्थौ श्री देवपालो नृपतिरवसरापेक्षया द्वारि यस्य (६)– वही, पृ० १६२,

४. विद्याचतुष्टयमुखाम्वु (म्बु) रुहात्तलक्ष्म नैसर्गिकोत्तमपदाधरितत्रिलोकः सूनुस्तयोः कमलयोनिरवद्विजेशः श्री दर्भपाणिरिति नाम निजन्दधानः (४), द्रष्टव्य, तत्रैव, पृ०१६१

५. दक्चाप्यनल्पमुडुपच्छविपीठमग्रे यस्यासनं नरपतिः सुरराजकल्पः। नानानरेन्द्र मुकुटाङ्कत पादयान्सुः सिंहासनं सचकितः स्वयमाससाद– वही, पृ० १६२

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

(देवपाल)[1] के समय मन्त्री था।[2] वह एक महान् कूटनीतिज्ञ के रूप में जाना जाता था।[3] केदार मिश्र का लड़का गुरव (राम) मिश्र ज्योतिषी के अतिरिक्त सुयोग्य वक्ता और राजनीतिज्ञ था।[4] वह भाष्यकार[5] के रूप में उल्लिखित है। नारायण पाल ने उसे विशिष्ट सम्मान अपने यहाँ दिया था।[6] नारायण पाल के भागलपुर ताम्रपत्र से ज्ञात होता है कि वह दूतक[7] के पद पर नियुक्त किया गया था। पाञ्चाल के शाण्डिल्य ब्राह्मणों का धार्मिक प्रभाव भी पाल राज्य में किसी न किसी रूप में व्याप्त था। पाञ्चाल के शाण्डिल्य ब्राह्मणों की विद्वत्ता का उल्लेख बादल प्रशस्ति में हुआ है। विशेषकर वेद आदि में दक्ष ब्राह्मण दर्भपाणि और गुरव मिश्र के नाम उल्लेखनीय हैं। गुरव मिश्र वेदों का भाष्यकार था। इससे ज्ञात होता है कि ब्राह्मणों का धार्मिक प्रभाव अवश्य ही समाज में विशिष्ट रहा होगा। शूरपाल का राज्याभिषेक केदारमिश्र ने कराया था। इस आधार पर यह ज्ञात होता है कि पालशासक धार्मिक दृष्टिकोण से प्रभावित थे। उक्त अभिलेख में

पाञ्चाल के शाण्डिल्य ब्राह्मण ज्योतिषी गुरवमिश्र का उल्लेख हुआ है। इससे ज्ञात होता है कि ज्योतिष-व्यवसाय शाण्डिल्य ब्राह्मण परिवारों में प्रचलित था। उनकी ज्योतिष विद्या से सम्भवतः तत्कालीन पाल शासक और समाज अवश्य प्रभावित रहा होगा।

---

१. कीलहार्न ने देवपाल को गौडेश्वर माना है, ए०इ०,२, पृ० १६०.

२. उत्कीलितोत्कलकुलं हृतहूणगर्व्वं
खर्व्वीकृतद्रविडगुर्ज्जरनाथदर्प्पं।
भूपीठमब्धि(ब्धि)रशनाम्भरणम्बु
(म्बु) भोज गौडेश्वरश्चिरमुचास्य धियं यदीयां (१३)
— वही, पृ०, १६२

३. वही।

४. वही १,पृ० १६३

५. 'अतिलोमहर्षणेषु(च)कलियुगवाल्मीकिजन्मपिशुनेषु
धर्म्मेतिहास पर्व्वसु पुण्यात्मा यः श्रुतीर्व्वत वृणोत्' — वही २, पृ० १६४

६. 'कुशलो गुणान्विवेक्तं विजिगीषुर्यन्नृपश्चव(ब)हुमेने
श्रीनारायणपालः प्रशस्तिरपरास्तु का तस्य।'—वही, पृ० १६३

७. 'भट्टः श्रीमानिह स गुरवो दूतकः पुण्डकीर्ति—नारायणपाल का भागलपुर ताम्रपत्र, वही, १५, पृ० ३१०
'दूतक' के महत्त्व के लिए: द्रष्टव्य-सरकार, डी०सी०, इं०ए०ग्ला०' पृ० १०३-४

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

कोलाञ्च

पाञ्चाल के अतिरिक्त शाण्डिल्य ब्राह्मणों का प्रमुख केन्द्र कोलाञ्च था। तत्कालीन परमार[1], पाल[2] तथा कलचुरि दान-पत्रों[3] पर शाण्डिल्य गोत्रीय ब्राह्मणों का केन्द्र कोलाञ्च का उल्लेख हुआ है। उक्त अभिलेखीय साक्ष्यों से प्रमाणित हो जाता है कि पूर्वमध्ययुग में विद्वान् सामवेदीय शाण्डिल्य ब्राह्मणों का निवास स्थान कोलाञ्च था।[4] पूर्वमध्ययुगीन उत्तर भारत विशेष रूप से मध्य देश में सरयूपार का सुविख्यात केन्द्र था जहाँ कोलाञ्च (उत्तर प्रदेश के सरयूपार में स्थित माना जाता है) से शाण्डिल्य ब्राह्मणों का प्रसार मालवा, बंगाल, सरयूपार तथा कामरूप (आसाम) में हुआ।

परमार वाक्पति मुंज के गोनरी-दानपत्र (वि०सं० १ ३८=९८१ ई०) से ज्ञात होता है कि कोलाञ्च (कन्नौज? के छंदोग शाखानुयायी शाण्डिल्य ब्राह्मणों का बहिर्गमन[5] हुआ था तथा उन्हें मालवा में राजाश्रय प्राप्त था। कोलाञ्च के शाण्डिल्य ब्राह्मण को परमार वाक्पति मुंज ने दान दिया था।

---

१. देवपाल का गोनरी दानपत्र, ए० इ०, २३, पृ० १०९.

२. विग्रहपाल तृतीय का वनगाँव दानपत्र, ए० इ०, २९, पृ० ५६-५७, विग्रहपाल तृतीय का आमगाछी दानपत्र, वही, पृ० २९८, आसम के धर्मपाल का दानपत्र, कामरूपशासनावली, पृ० १५५

३. सरयूपार के कलचुरि सोढदेव का कहला दानपत्र, मिराशी, कार्पस, ४/२, पृ० ३९०,

४. ग्राम कोलाञ्च के भिन्न-भिन्न नाम क्रोडाञ्च, क्रोडाञ्चि, क्रोडाञ्च, कुलाञ्च, कोलाञ्च तथा क्रोसञ्ज है, जिनका उक्त दानपत्रों में उल्लेख है।

टिप्पणी:—निश्चित तथा अन्तिम रूप से कोलाञ्च का तादात्म्य स्थापित नहीं किया जा सकता तथापि यह सर्वविदित है [विशेषकर अभिलेखों के माध्यम से] कि मध्यदेश से कुलीन विद्वान् ब्राह्मणों का वहिर्गमन हुआ और तत्पश्चात् उनको भिन्न-भिन्न राज-दरबारों में सम्मान प्राप्त हुआ। उन्हें भूमि आदि दान दिया गया। पूर्व मध्ययुग में मध्यदेश का विख्यात केन्द्र कन्नौज था, जिससे कोलाञ्चका तादात्म्य स्थापपित किया जा सकता है। विस्तृत जानकारी के लिये द्रष्टव्य-उपाध्याय, वासुदेव : दि सोसियो रेलीजियस कांडीसन आफ नार्थ इंडिया : पृ० ३७

५. 'कुलाञ्चा ग्राम विनिर्गत सां [शां] ण्डिल्य सगोत्रतृ [त्रि] प्रवर छं [च्छं] दोगशाखिने व्रा [ब्रा] ह्मणशाव [ब] राय रना [णा] दित्यसूनवे,' —वही, ए० इ०, २३, पृ० १०९

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

सरयूपार के कोलाञ्च से शाण्डिल्य ब्राह्मणों का बहिर्गमन उस समय हुआ था, जब सरयूपार कलचुरि नरेश शंकरगण द्वितीय को तत्कालीन पाल-शासक देवपाल (८१० ई० से लेकर ८५० ई०) ने आक्रमण करने की धमकी दी थी, जिसकी रक्षा के लिए उसे शक्तिशाली राज्यों से मैत्री करनी पड़ी।[1] संभवतः उस समय आत्मरक्षार्थ ब्राह्मणों का बहिर्गमन हुआ। शाण्डिल्य ब्राह्मणों का बहिर्गमन उस समय भी अधिक संभव प्रतीत होता है जब सरयूपार कलचुरि नरेश भामन प्रथम से मालवा के परमार नरेश (धारा-नरेश) मुंज से युद्ध हुआ था, जिसमें परमारों को चोट खानी पड़ी। संभवतः धारा–नरेश वाक्पति मुंज होना चाहिए। वाक्पति मुंज का शासन-काल करीब ९७४ ई० से ९९५ ई० तक माना जाता है।[2] ऐसी स्थिति में संभाव्य है कि सरयूपार के कोलाञ्च-ब्राह्मणों को वहाँ (मालवा) राजकीय सम्पर्क के कारण जाना पड़ा। वाक्पति मुंज भी ब्राह्मण धर्मावलम्बी नरेश था। गोनरी दानपत्र से विदित होता है कि देश के अनेक भागों से ब्राह्मणों ने आकर दान ग्रहण किया था।

उपरिर्वणित तथ्यों से ज्ञात होता है कि वाक्पति मुंज के समय मालवा में सामवेदीय शाण्डिल्य गोत्रीय ब्राह्मणों का प्रसार हुआ। उन शाण्डिल्य ब्राह्मणों के त्रिप्रवर[3] (संभवतः शाण्डिल्य, असित और देवल) का उल्लेख हुआ है। मालवा के अतिरिक्त बंगाल और बिहार में पाल राजाओं के समय कोलाञ्च के अधिकांश सामवेदीय ब्राह्मणों के प्रसार का उल्लेख दानपत्रों में हुआ है। आमगाछी[4] तथ बनगाँव-दानपत्रों के आधार पर कहा जा सकता है कि सरयूपार के कोलाञ्च से सामवेदीय शाण्डिल्य ब्राह्मणों का बहिर्गमन पाल-शासक (१०५०-७० ई०) विग्रह-पाल के समय में हुआ था।[5] संभवतः कोलाञ्च से शाण्डिल्य ब्राह्मण उस समय

---

१. मिराशी, कार्पस, ४/१, भूमिका, पृ० ११३
२. वही।
३. ए० इ०, २३, पृ० १०९
४. 'शाण्डिल्य-स-गोत्राय-शाण्डिल्यअसितदेवल-प्रवरा [य]हरि-सत्र [ब्र]ह्मचा-रिणे। सामवेदिने। कौथुमि-शाखाध्यायिने। मीमांसाम्या [व्या] करणतर्क्क विद्याविदे। क्रोडाञ्चि विनिर्गत मत्स्यावास-विनिर्गताय। छत्राग्राम-वास्त व्यायवित पद्मावन-देव पौ (पौ) त्राय। महोपाध्याय-अर्क्कदेव-पुत्राय खोदुलदेव-शर्म्मणे'—ए० इ०, १५, पृ० २९८
५. 'शाण्डिल्य-सगोत्राय। शाण्डिल्य-असित-देवल-प्रवराय नरसिंह-सत्र [ब्र]ह्मचा-रिणे। छंदोग शाखाध्यायिने। मीमांसा-व्याकरण-तर्क्कविद्याविदे। कोलाञ्च विनिर्ग्गताय। इत्ताहाक-वास्तव्याय। जोग-सा[स्वा]मिपौत्राय तुंग पुत्राय। श्रीघाण्टूक शर्म्मणे—'ए० इ०, २९, पृ० ५६

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

बहिर्गत हुए थे जब सरयूपार के कलचुरि शासक सोढदेव के प्रपितामह भामनदेव की मृत्यु के बाद राजसिंहासन के लिए गृहयुद्ध छिड़ गया था। भामनदेव के पुत्र भीम को ११ वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में राज सिंहासन से वंचित होना पड़ा। संभवतः गृहयुद्ध ही इसका कारण रहा हो।[1] ऐसी स्थिति में कहा जा सकता है कि सरयूपार में विपरीत राजनीतिक स्थिति में कोलाञ्च या क्रोडाञ्च (श्रावस्ती) से प्रभावशाली शाण्डिल्य ब्राह्मणों का बहिर्गमन हुआ तथा उनका प्रसार बिहार और बंगाल में विग्रह पाल के समय में हुआ।

विग्रहपाल तृतीय (१०५०-७० ई०) के आमगाछी तथा वनगांव-दानपत्र से ज्ञात होता है कि शाण्डिल्य ब्राह्मण कोलाञ्च में सामवेद के अनुयायी थे।[2] पाल शासक के दानपत्र में शाण्डिल्य ब्राह्मण अर्कदेव स्वामी महोपाध्याय[3] (विद्वान् अध्यापक) तथा कौथुम शाखानुयायी शाण्डिल्य ब्राह्मण खोदुल देव शर्मा को विशिष्ट मीमांसक, व्याकरणाचार्य और तर्कशास्त्री[4] के रूप में उल्लिखित किया गया है। आमगाच्छी दानपत्र में उल्लिखित क्रोडाञ्च (कोलाञ्च) के शाण्डिल्य ब्राह्मणों के नामों के साथ नामान्त (उपपद) 'देव'[5] लगा है। नामान्त 'देव' परम्परागत ज्ञात होता है। वहाँ पितामह पद्मावनदेव, पिता अर्क्कदेव तथा पौत्र खोदुलदेव का नाम उल्लिखित किया गया है।

उक्त पाल-दानपत्रों में कोलाञ्च के शाण्डिल्य ब्राह्मणों के त्रिप्रवर (शाण्डिल्य, असित, देवल) के अतिरिक्त उनके चरणों का भी उल्लेख है। हरि और नरसिंह चरणों[6] से उस समय शाण्डिल्य ब्राह्मणों का सम्पर्क था। चरणों के नाम का आधार वेद या कोई शाखा न होकर स्पष्ट रूप से गुरु के नाम पर रखा गया है। ऐसी स्थिति में यह भी सम्भव है कि तत्कालीन शाण्डिल्य ब्राह्मण परिवारों में गुरु-शिष्य-परम्परा चल पड़ी थी। कोलाञ्च या क्रोडाञ्च के शाण्डिल्य ब्राह्मण तीरभुक्ति (उत्तरी बिहार) में भी फैले हुए थे। ब्राह्मण काच्छ क्रोडाञ्च से ब्राह्मण काच्छ निर्गत हुआ था।[7] वह तीरभुक्ति का निवासी हो गया

---

१. 'दि एज आफ इम्पीरियल कन्नौज', पृ० ९४

२-३-४-ए० इ०, १५, पृ० २९८

५. वही।

६. ए० इ०, १५, पृ० २९८, वही २९, पृ० ५६

७. 'क्रोडाञ्चान=निरियाय=काच्छ इतियः सदवा[ब्रा]ह्मणानाम् स्थितिस= तस्माद्=गोहणको द्विजोत्तम-गृहम्=विश्राम-भूर्=यज्वनाभ [नाम]। अस्माद=इद्धला=इति यत्र विव=दौ [दो] योगेश्वरो यत-सुतः ख्यातस=तुंग इतो=पि निर्स्मल-यशा घाण्टीश-नाम=आत्मजः [२४]

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

था ।[1] कोलाञ्च ब्राह्मण काच्छ का सम्बन्धी दानदाता तथा प्रमुख ब्राह्मण अधिकारी[2] घाण्टीश शर्मा था । घाण्टीश शर्मा गौडाधिप का सेवक (विधेय) था ।[3] उसने स्वयं को क्रोडाञ्च के ब्राह्मण काच्छ से अपने सम्बन्ध का उल्लेख दानपत्र में कराया है[4] जिसके आधार पर यह ज्ञात होता है कि वे कोलाञ्च के शाण्डिल्य ब्राह्मणों से अपना सम्बन्ध बताने में गौरव का अनुभव करते थे । ऐसी स्थिति में यह भी कहा जा सकता है कि कोलाञ्च के शाण्डिल्य ब्राह्मणों का पाल राजाओं के समय बिहार तथा बंगाल में श्रेष्ठ स्थान था ।उल्लेखनीय है कि बिहार में स्थित तीरभुक्ति के ब्राह्मणों को 'तिरहुतिया ब्राह्मण' के नाम से भी पुकारा जाता है ।

तीरभुक्ति के अतिरिक्त बिहार में इत्ताहक या इतुहोक[5] (सहरसा जिला) में भी कोलाञ्च के शाण्डिल्य ब्राह्मण फैले हुए थे । दानग्रहीता सामवेदीय शाण्डिल्य ब्राह्मण यहीं का निवासी था[6] जिसे तीरभुक्ति का ब्राह्मण घाण्टीश शर्मा ने दान दिया था ।[7] दानदाता ब्राह्मण का आद्यस्थान कोलाञ्च था । बिहार के तीरभुक्ति और इत्ताहक के अतिरिक्त बंगाल के छत्रग्राम[8] में भी सामवेदीय शाण्डिल्य ब्राह्मण निवास करते थे । इस ग्राम का तादात्म्य अभी स्थापित नहीं हुआ है । छत्रग्राम के शाण्डिल्य ब्राह्मणों का आद्यस्थान कोलाञ्च ही था ।[9]

उपरिवर्णित तथ्यों के आधार पर यह स्पष्ट हो जाता है कि १०वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध और ११ वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में कोलाञ्च सामवेदीय शाण्डिल्य ब्राह्मणों का गढ़ था । इस प्रसंग में डी० सी० सरकार का मत ध्यातव्य है ।[10] सरकार का कहना है कि पूर्वमध्ययुग में पूर्वी भारत के शासकों ने टकारी और कोलाञ्च के ब्राह्मणों के नाम दानपत्र जारी किया था । यह इस तथ्य को निश्चित रूप से प्रकट करता है कि तत्कालीन समय में टकारी और कोलाञ्च (जो निकटवर्ती थे) विद्वान् ब्राह्मणों के विख्यात केन्द्र थे । इसके अतिरिक्त उनका

यो गौडाधिपतेर्=असीम-गुण-भूराज्ञो विधेयो दिशम=भूपाळेषु विधाय मैत्रायम, विग्रहपाल का बनगांव-दानपत्र, वही, २९, पृ० ५७,

१ – ३–वही ।

४–५–वही

६. ए० इ० २९, पृ० ५६

७. वही, १५, पृ० २९८

८–९–वही

१०. वही, २९, पृ० ५२

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

यह भी कहना है कि कोलाञ्च या क्रोडाञ्च अथवा क्रोडाञ्च तीनों एक ही स्थान को द्योतित करते हैं तथा इसको गोंडा और बहराइच की सीमा पर श्रावस्ती में स्थित टकारी के निकट माना जा सकता है।

उपरिर्वणित आमगाछी दानपत्र के आधार पर ज्ञात होता है कि बंगाल में कोलाञ्च (क्रोडाञ्च) के शाण्डिल्य ब्राह्मणों का व्यवसाय अध्यापन था। विद्वान् अध्यापक अर्कदेव का नाम अभिलेख में उल्लिखित है। महोपाध्याय (विद्वान् अध्यापक)अर्कदेव के पुत्र खोदुलदेव के अगाध पाण्डित्य का ज्ञान उक्त अभिलेख से होता है। ज्ञात होता है कि शाण्डिल्य ब्राह्मण परिवारों में शिक्षक,अध्यापक तथा वेदवेदाङ्ग पढ़ाने वाले होते थे।

इसके अतिरिक्त सामवेदीय शाण्डिल्य ब्राह्मण परिवारों में मंगलसूचक नामान्त 'देव'[1] ब्राह्मण नामों के साथ प्रयोग किया जाता था जो उनके धार्मिक विश्वास का द्योतक है। बंगाल और बिहार में पाल शासक विग्रहपाल के समय ब्राह्मणों का राज्य में कुछ स्वतन्त्र स्वत्व था। कोलाञ्च से सम्बन्धित दानग्रहीता ब्राह्मण घाण्टीश शर्मा संभवतः जागीरदार के रूप में ज्ञात होता है क्योंकि उसने अपनी जागीर से कोलाञ्च के शाण्डिल्य ब्राह्मण घाण्टीश शर्मा को भूमिदान देकर दानपत्र जारी किया था[2]। इस दानपत्र में राजा विग्रहपाल को दानपत्र जारी करने का श्रेय नहीं दिया गया है। इतना संकेत मिलता है कि भूमिदान और दानपत्र जारी करने के लिए राजा का अनुमोदन लिया गया था। राजा ने उस भूमि का लगान भी माफ कर दिया था।[3] ब्राह्मणों से लगान न लेना कोलाञ्च के शाण्डिल्य ब्राह्मणों के धार्मिक प्रभाव का द्योतक है।

पाल राज्य में ब्राह्मणों को प्रशासकीय कार्य करने के लिये राज्याधिकार प्रदान किया गया था। विग्रहपाल के समय ब्राह्मण अधिकारियों का एक समूह भी था।[4] उन उच्च अधिकारियों में कोलाञ्च से सम्बन्धित ब्राह्मण अधिकारी घाण्टीश था। ऐसी स्थिति में यह ज्ञात होता है कि पाल शासकों के यहाँ शाण्डिल्य ब्राह्मणों को सम्मानित पद प्राप्त थे। राजनीतिक दृष्टिकोण से शाण्डिल्य ब्राह्मणों का प्रभाव बंगाल के पाल शासक पर था। इस दानदाता ब्राह्मण का अनेक राजाओं

---

१. महोपाध्याय 'अर्कदेव', ए० इ०, १५, पृ० २९८

२. वही, २९, पृ० ५८

३, वही, पृ० ५२

४. वही, २९, पृ० ५७

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

से मैत्री सम्पर्क था।[1] इससे ज्ञात होता है कि राज-परिवारों पर उनका प्रभाव था और वह राज्य के एक विशिष्ट राज-पुरुष रूप में था। बनगाँव दानपत्र में वर्णित महत्त्व पूर्ण रोचक तथ्यों से ज्ञात होता है कि उत्तरी बिहार के स्थानीय ब्राह्मणों का कोलाञ्च के ब्राह्मणों से सम्बन्ध था। घाण्टीश तीरभुक्ति उत्तरी बिहार) का ब्राह्मण था और वह अपना पितृ-परम्परागत सम्बन्ध कोलाञ्च ब्राह्मण काच्छ से बतलाता है।[2] ब्राह्मण काच्छ की पौत्री इद्धला घाण्टीश (दानदाता तथा ब्राह्मण अधिकारी) की प्रपितामही (परदादी) थी।[3] उसका कोलाञ्च के ब्राह्मणों से लगाव उस समय स्पष्ट होता है जब उसने कोलाञ्च के ही ब्राह्मण घाण्टीस शर्मा के नाम भूमिदान देकर दानपत्र जारी किया था। बनगाँव दानपत्र से यह प्रतीत होता है कि पूर्वी भारत के ब्राह्मणों का कोलाञ्च के ब्राह्मणों के प्रति सम्मानित दृष्टिकोण उत्तरी बिहार तथा बंगाल के रोचक कुलीनवाद नामक संस्था के विकास में सहायक था।[4]

राजा आदिशूर की कहानी का उल्लेख बंगाल की कुलजी[5] (कुलपंजिकाओं) के अनुसार राढी तथा वारेन्द्र के ब्राह्मणों को बंगाल के ब्राह्मणों का एक बड़ा समुदाय माना जाता है। उन्हें कोलाञ्च (कान्यकुब्ज) से आये पाँच विद्वान् ब्राह्मणों का वंशज बताया गया है। राजा आदिशूर ने वेदों में निष्णात ब्राह्मणों को अपने यहाँ बसने का आमंत्रण भी दिया था। राजा आदिशूर के बारे में भिन्न-भिन्न पुस्तकों में उसकी वंशावलियाँ दी गई हैं। उसे बंगाल और उड़ीसा का शासक कहा गया हैं। यद्यपि कुछ विद्वान् अंग, कलिंग, कर्णाट, केरल, कामरूप, सौराष्ट्र, मगध, मालवा और गुजरात को उसके राज्य में स्थित मानते हैं। कुछ लोग उसके राज्य की राजधानी पश्चिमी बंगाल में स्थित गौड को मानते हैं तथा कुछ लोग पूर्वी बंगाल में स्थित विक्रमपुर मानते हैं। छः भिन्न-धार्मिक संस्कारों को सम्पादित करने के लिए कोलाञ्च के ब्राह्मणों को आमन्त्रित किया गया था।

उन पाँच ब्राह्मणों के आगमन की तिथियाँ शक सं० ६५४, ६७५, ८०४, ८५४, ८६४, ९१४, ९५४, ९९७, तथा ९९९ दी गई हैं। कोलाञ्च के ब्राह्मणों के आगमन का समय ८ वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध तथा ११ वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध

१,२-ए० इ०, २९, पृ० ५७

३. वही

४. वही, पृ० ५३

५. मजूमदार-आर० सी०, हि० आ० बं०, पृ० ६२५-२६

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

के बीच में निर्धारित होना चाहिए । यद्यपि उपरिर्वाणित ब्राह्मणों की तिथियाँ संदेहास्पद प्रतीत होती हैं तथापि यह भी सम्भव है कि ब्राह्मणों के आगमन के सम्बन्ध में ये कहानियाँ १२ वीं शताब्दी के करीब रची गई होंगी।

बंगाल में शूर वंश के शासक से सम्बन्धित प्रमाण भी ध्यातव्य हैं । बंगाल के साक्ष्यों से कोई वास्तविक शासक आदिशूर का नाम तो नहीं मिलता,किन्तु पूर्वमध्यकालीन भारतीय इतिहास से ज्ञात होता है कि आदिशूर नामक एक छोटा सामन्त उत्तरी विहार या इसके ही निकट में कहीं ९ वीं शताब्दी में था। मैथिल वाचस्पति मिश्र ने इस पुरुष का उल्लेख अपनी न्यायकणिका में किया है। न्यायकणिका मण्डन मिश्र के विधि-विवेक पुस्तक पर भाष्य है। (विधिविवेक : निज-भुज विर्यस=अस्थाय=शूरान=आदिशूरो जयति)

आदिशूर वाचस्पति मिश्र का समकालीन (करीब ९ वीं शताब्दी के मध्य) निश्चित रूप से नहीं कहा जा सकता। वह बिहार तथा बंगाल के पाल राजाओं का एक सामन्त था और यह नहीं कहा जा सकता कि वह शक्तिशाली शासक था। जब पाल शासक बौद्ध अनुयायी थे तब ब्राह्मण धर्मावलम्बी आदिशूर सम्भवत: मिथिला तथा उत्तरी बंगाल का राजा था और वाचस्पति मिश्र तथा अन्य ब्राह्मण लेखकों से वह सुपरिचित था। यह कहा जाता है कि राजा आदिशूर अपने धार्मिक क्रियाकलापों के कारण बंगाल में कोलाञ्च के ब्राह्मणों से सम्बन्धित आगमन की काल्पनिक कहानियों में अतिप्रख्यात हो गया। यदि उक्त सुझाव को स्वीकार किया जाता है, तो अधिक सम्भव है कि बंगाल में कुलीनवाद नामक संस्था मूलतः उत्तरी बिहार से अनुकरण करके स्थापित की गई हो। उपरिर्वाणित पाल कालीन दानपत्रों के अतिरिक्त कोलाञ्ल(कुलाञ्च)के सामवेदीय शाण्डिल्य ब्राह्मणों का उल्लेख सरयूपार के कलचुरि नरेश सोढ़देव के कहला दानपत्र (वि० सं० ११३४=११७७ ई०) में भी हुआ है।[1] कहला दानपत्र में सरयूपार के निकटवर्ती स्थानों और देश के अन्य विभिन्न भागों के ब्राह्मणों को सोढ़देव ने दान दिया था।[2] उन्होंने निकटतम स्थान कोलाञ्च (सरयूपार-श्रावस्ती) के छंदोग शाखानुयायी ब्राह्मण को भी दान दिया था।

---

१. 'कुलाञ्चा(ञ्ची)य महानन्दपुत्र श्री सा(शा)ण्डिल्य गोत्र त्रिप्रवर च्छंदोग सा(शा)खि पंडित जालू'—कहला दानपत्र, मिराशी--कार्पस,४/२, पृ०३९१, प्रो० कीलहार्न ने कुलाञ्धीय पढ़ा है। मिराशी इसको कुलाञ्च या कुलाञ्चा पढ़ते हैं—वही।

२. वही, पृ० ३९०–९१

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America, HHFA(USA)

कहला दानपत्र से स्पष्ट हो जाता है कि कुलाञ्च (कोलाञ्च) में सामवेदीय शाण्डिल्य ब्राह्मण थे और उनका भी त्रिप्रवर था।[1] इस दानपत्र से ज्ञात होता है कि ११ वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में कोलाञ्च के शाण्डिल्य ब्राह्मणों का सम्पर्क अपने निकटवर्ती सरयूपार के कलचुरि शासक सोढ़देव से था। ऐसा जान पड़ता है कि उन दिनों सरयूपार (बस्ती, गोरखपुर तथा देवरिया) में शाण्डिल्य गोत्र के ब्राह्मण फैले हुए थे। कहला दानपत्र के अतिरिक्त कामरूप (आसाम) के धर्मपाल के दानपत्र पर स्पष्ट रूप से उल्लेख है कि श्रावस्ती में स्थित क्रोसंज ग्राम (जो कोलाञ्च का अपभ्रंश रूप है) से सामवेदीय कौथुम शाखानुयायी शाण्डिल्य ब्राह्मणों का वहिर्गमन हुआ[2] तथा उन्हें राज्याश्रय आसाम के शासक धर्मपाल के यहाँ मिला। श्रावस्ती में स्थित क्रोसंज के शाण्डिल्य ब्राह्मणों को यज्ञकर्त्ता[3] के रूप में बतलाया गया है। प्रमुख रूप से उन ब्राह्मणों को प्रतिभाशाली सामवेदीय कौथुमशाखा का ब्राह्मण बतलाया गया है।[4] पाल कालीन बंग देश में सामवेदीय शाण्डिल्य ब्राह्मणों का विस्तार हुआ था।

उपरिर्वणित धर्मपाल के दानपत्र से ज्ञात होता है कि १२ वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में क्रोसञ्ज (कोलाञ्च) के सामवेदीय कौथुम शाखानुयायी शाण्डिल्य गोत्र के ब्राह्मणों का प्रसार हुआ था। यज्ञादिक क्रियाओं से उनके पौरोहित्य और कर्मकाण्डीय कर्मों का संकेत मिलता है। सरयूपार के कोलाञ्च (क्रोसञ्ज) से १२ वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध के पहले ही शाण्डिल्य ब्राह्मणों का बहिर्गमन आरम्भ हुआ था। करीब १०९७ ई० तक कलचुरि सोढदेव का शासन-काल सरयूपार में माना जाता है। कहला दानपत्र से अवगत होता है कि सोढ़देव ब्राह्मण-संरक्षक था। ब्राह्मण धर्मावलम्बी कलचुरि शासक सोढ़देव के बाद सरयूपार में राज्य की स्थिति विषम हो गई थी। वह सरयूपार कलचुरि शाखा का अन्तिम नरेश था। कहला दानपत्र के जारी करने के बाद ज्ञात होता है कि सोढ़देव को संभवतः त्रिपुरी के कलचुरियों का समर्थन न मिला क्योंकि यशः कर्ण

---

१. मिराशी, कार्पस ४/२ पृ० ३९०–९१

२. ग्रामक्रोसञ्ज नामास्ति श्रावत्स्यां यत्र यज्वनां होम धू मान्धकारान्धं ना विशत् कलिकल्मषं तत्सम्भवानां प्रवरो द्विजानामुदार धीः कौथुम शाखामुख्यः रामोपमः सामविदामरवरांङ्यः शाण्डिल्यगोत्रोऽजनि रामदेवः—कामरूप शास०, पृ० १५५

३. कामरूप शासनावलि, पृ० १५५

४. वही।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

को गहडवाल नरेश गोविन्दचन्द्र ने बनारस जिले से हटा दिया था। चन्द्रावती दानपत्र (वि० सं० ११४८=१०९०ई०) बनारस जिला में प्राप्त दानपत्र के पहले का है।[1] चन्द्रावती दानपत्र से संकेत मिलता है कि यश: कर्ण को बनारस से १०९० ई० के पहले ही हटना पड़ा। संभवत: गहडवालों का प्रभाव क्षेत्र सरयू-पार (बस्ती, गोरखपुर, देवरिया) में बढ़ा और उस राज्य पर उनका अधिकार स्थापित हुआ था।[2] दूसरी तरफ यश: कर्ण को राष्ट्रकूटों से भी युद्ध करना पड़ा तथा उनका राज्य बर्बाद हुआ,[3] किन्तु वह सरयूपार प्रदेश पर अधिकार न कर सका। इस तरह से ज्ञात होता है कि सरयूपार के कलचुरि राजवंश का लोप ११ वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में हुआ।[4]

उक्त स्थिति में सरयूपार प्रदेश के कोलाञ्च के शाण्डिल्य गोत्रीय ब्राह्मणों को अपने संरक्षण तथा सुविधा आदि की प्राप्ति के लिए बहिर्गमन करना पड़ा। क्रोसञ्ज (कोलाञ्च) के सामवेदीय शाण्डिल्य ब्राह्मणों का प्रसार कामरूप (आसाम) में धर्मपाल के समय (१२ वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध) में हुआ। धर्मपाल के आसाम दानपत्र में उल्लिखित सामवेदीय शाण्डिल्य ब्राह्मण केन्द्र क्रोसञ्ज को क्रोडञ्ज, जे० सी० घोष पढ़ते हैं तथा इस सम्बन्ध में अपने विचार प्रस्तुत किये हैं। उनके मत से क्रोसञ्ज अशुद्ध है। वह आसाम दानपत्र में उल्लिखित श्रावस्ती के आधार पर कोलाञ्च का तादात्म्य बंगाल के श्रावस्ती में स्थित कोलाञ्च से करते हैं।[5] अभिलेख में उल्लिखित श्रावस्ती को वर्तमान श्रावस्ती (सहेत-महेत) से भिन्न मानते हैं। बंगाल-ब्राह्मण–केन्द्र श्रावस्ती का उल्लेख १० वीं शताब्दी के पहले नहीं हुआ। इसके अतिरिक्त श्री घोष ने डा० राधागोविन्द बसाक के मत का समर्थन किया है। डा० बसाक का कहना है कि 'वै' ग्राम दीनाजपुर (बंगाल) में है।[6] दामोदर-पुर ताम्रपत्र सं० ३ में भी ग्राम 'वायी' का उल्लेख हुआ है।[7] डा० घोष 'वै' ग्राम अथवा 'वायी' (ग्राम) दोनों को एक ही मानते हैं।[8] 'वै' ग्राम का उल्लेख आसाम के एक दूसरे दानपत्र (इन्द्रपाल के द्वितीय ताम्रशासन) में हुआ है। उस दानपत्र में उल्लेख है कि वै ग्राम श्रावस्ती में स्थित है।[9] ऐसी स्थिति में घोष ने वै ग्राम को बंगाल में स्थित माना है तथा उनकी धारणा

१-३. मिराशो, कार्पस, ४/१, भूमिका, पृ० ११४.
४. मिराशी : कार्पस, ४/१, पृ० १४४
५-८. इंडियन कल्चर, भाग २, (जुलाई, १९३५) पृ० ३५८-५९
९. इन्द्रपाल का द्वितीय ताम्रशासन, कामरूप शासनावलि, पृ० १३६

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

है कि श्रावस्ती को भी उसी के निकट स्थित होना चाहिए। उन्होंने सिलीमपुर प्रशस्ति में उल्लिखित भारद्वाज केन्द्र श्रावस्ती और तर्क्कारिका[1] (टकारी) को बंगाल में स्थित करना चाहा है।

उपर्युक्त तथ्यों को ध्यान में रखते हुए डा० घोष कोलाञ्च को बंगाल के श्रावस्ती में स्थित मानते हैं। वे उत्तरी बंगाल में दीनाजपुर तथा बोगरा जिलों की सीमा पर श्रावस्ती की स्थिति मानते हैं। ऐसी स्थिति में उक्त विचारों के आधार पर कोलाञ्ज का तादात्म्य विवादास्पद तथा संदेहास्पद प्रतीत होता है। विद्वान् इतिहासकार जे० सी० घोष ने आसाम के धर्मपाल के दानपात्र में उल्लिखित क्रोसञ्ज को क्रोडाञ्ज पढ़ा है तथा उक्त दानपत्र के सम्पादक पद्मनाथ भट्टाचार्य द्वारा सम्पादित क्रोसञ्ज को अशुद्ध माना है, किन्तु क्रोसञ्ज, क्रोडाञ्ज, क्रोडाञ्च या कुलाञ्च आदि नाम कोलाञ्च के अपभ्रंश हैं। यह स्पष्ट है कि उक्त सभी नाम एक ही स्थान—कोलाञ्च के द्योतक हैं।

श्री घोष आसाम के धर्मपाल तथा इन्द्रपाल के दानपत्र के आधार पर कोलाञ्च को बंगाल के श्रावस्ती में स्थित मानते हैं जो उचित नहीं जान पड़ता। वास्तव में सुविख्यात प्राचीन नगरी श्रावस्ती, गोण्डा तथा बहराइच की सीमा पर स्थित आधुनिक सहेत-महेत है। नन्दूलाल डे ने भी इसे ही श्रावस्ती (सहेत-महेत) माना है।[2] इससे स्पष्ट जान पड़ता है कि पूर्वमध्यकालीन बंग तथा असम प्रदेश में सुप्रसिद्ध नगर श्रावस्ती के निकटवर्ती कोलाञ्च के शाण्डिल्य गोत्र के ब्राह्मण फैल गये।

डा० बोगेल ने गोविन्दचन्द्र दानपत्र (११२८ ई०) के आधार पर श्रावस्ती का सहेत-महेत से तादात्म्य स्थापित किया है।[3] ऐसी स्थिति में जे० सी० घोष का यह मत कि क्रोडाञ्च (कोलाञ्च) तथा 'वै' ग्राम श्रावस्ती (बंगाल) में स्थित है, तथ्यहीन ज्ञात होता है। अभिलेख में उल्लिखित सावथ्या, श्रावस्ती नहीं होगा।

श्री घोष द्वारा श्रावस्ती और तर्क्कारिका (टकारी) को बंगाल में स्थित करना आधार रहित जान पड़ता है। उत्तर प्रदेश के सरयूपार में गोण्डा-बहरा-

१. जयपाल के समय का सिलीमपुर प्रस्तर अभिलेख, ए० इ०, १३, पृ० २९०
२. डे, नन्दूलाल : 'द जियोग्राफिकल डिक्शनरी आफ एन्सेन्ट एण्ड मेडियेवल इंडिया, (द्वितीय संस्करण, १९२७) पृ० १९०
३. कन्नौज के गोविन्द चन्द्र का दानपत्र—द्रष्टव्य : आर्क्या०स०रि० (१९०७–९) पृ० १३१, २२७

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

इच की सीमा पर स्थित श्रावस्ती में प्रमुख स्थान टकारी ब्राह्मणों का एक प्रमुख केन्द्र था। डी० सी० सरकार ने भी कोलाञ्च और टकारी को एक दूसरे के निकट श्रावस्ती में स्थित ब्राह्मण केन्द्र माना है।[1]

कहला दानपत्र के आधार पर कहा जा सकता है कि कोलाञ्च सरयूपार में ही था। सरयूपार के शासक सोढ़देव ने देश के अन्य भागों से आये ब्राह्मणों के अतिरिक्त सरयूपार में निकटवर्ती ब्राह्मणों के प्रमुख केन्द्रों के ब्राह्मणों को भी दान दिया। ऐसी स्थिति में कोलाञ्च श्रावस्ती में स्थित टकारी के पास था।

उपरिवर्णित बंगाल के पाल, मालवा के परमार, सरयूपार के कलचुरि और आसाम के पाल दानपत्रों के आधार पर यह स्पष्ट प्रतीत होता है कि १०वीं शताब्दी से लेकर १२वीं शताब्दी तक कोलाञ्च सामवेदीय शाण्डिल्य ब्राह्मणों का एक प्रमुख केन्द्र था। सभी शांडिल्य ब्राह्मणों का त्रिप्रवर (शांडिल्य, असित, देवल) था। वे सभी सामवेदीय ब्राह्मण होने के कारण उत्तरा पथ (उत्तरी भारत) के भिन्न-भिन्न प्रदेशों में सर्वश्रेष्ठ समझे जाते थे। कोलाञ्च के छंदोग शाखानुयायी शाण्डिल्य ब्राह्मणों का प्रसार बिहार, बंगाल, मालवा और सरयूपार में हुआ जब कि कोलाञ्च के कौथुम शाखानुयायी शाण्डिल्य ब्राह्मणों का प्रसार बंगाल तथा आसाम में हुआ। ऐसा ज्ञात होता है कि बिहार और बंगाल में छंदोग तथा कौथुम दोनों शाखाओं के ब्राह्मणों का प्रसार हुआ। ध्यातव्य है कि वैदिक वाङ्मय में सामवेद की दो प्रमुख शाखायें यथा छन्दोग तथा कौथम का उल्लेख है। सम्बन्धित शाखाध्यायी शाण्डिल्य गोत्र के ब्राह्मणों को सामवेदी ब्राह्मणों के नाम से पुकारा जाता था।

मध्यदेश

सामवेदीय शाण्डिल्य ब्राह्मणों के अतिरिक्त मध्यदेश के यजुर्वेदीय शाण्डिल्य ब्राह्मणों के बहिर्गमन का उल्लेख मालवा के परमार देवपाल के मान्धाता दानपत्र (वि० स० १२८८=१२२५ ई०) में है।[2]

मध्यदेश से माध्यन्दिन शाखानुयायी शाण्डिल्य ब्राह्मणों को उस समय बहिर्गमन करना पड़ा जब कि मध्यदेश में १२ वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में शहाबुद्दीन मुहम्मद गोरी के आक्रमण के कारण आतंक मचा हुआ था। ११९२-९३ में

---

१. ए०इ०, २९, पृ० ५२

२. वही, ९, पृ० १११–११२

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America-HHFA(USA)

तराई के युद्ध में[1] पृथ्वीराज चौहान को और ११९४ ई० में चन्दवार[2] (एटा) के पास कन्नौज नरेश गहडवाल जयचन्द को मुहम्मद गोरी ने परास्त किया। तत्कालीन स्थिति में देश में नैराश्य की भावना लोगों में व्याप्त हो गई थी। सम्भवतः इन्हीं परिस्थितियों में मध्यदेशीय माध्यन्दिन शाखानुयायी शाण्डिल्य ब्राह्मणों का बहिर्गमन हुआ। उन ब्राह्मणों को मालवा में परमार देवपाल ने शरण दिया। मान्धाता दानपत्र से ज्ञात होता है सि मध्यदेश के शाण्डिल्य ब्राह्मणों का भी त्रिप्रवर[3] (असित, देवल और शाण्डिल्य) था। याज्ञिक नागदेव, याज्ञिक कृष्ण तथा दीक्षित पुरुषोत्तम जैसे शाण्डिल्य ब्राह्मणों के नामों का उल्लेख मिलता है। दानपत्र में उल्लिखित याज्ञिक नागदेव ब्राह्मण से ज्ञात होता है कि वह यज्ञ कराने वाला पुरोहित था। दीक्षित पुरुषोत्तम (दी पुरुषोत्तम) से पता चलता है कि वह दीक्षा-कार्य करने वाला पुरोहित था। इस प्रकार उक्त दानपत्र के आधार पर ज्ञात होता है कि मध्यदेश (कन्नौज) के यदुर्वेदीय माध्यन्दिन शाखा के शाण्डिल्य ब्राह्मण परिवारों में पुरोहित तथा यज्ञकर्त्ता के कर्तव्य जीविका के लिये किये जाते थे।

सावर्णकेन्द्र

११वीं और १२वीं शताब्दी के लगभग मध्यदेश कन्नौज या कान्यकुब्ज) के सुप्रसिद्ध सावर्ण गोत्रीय ब्राह्मणो के बहिर्गमन, वास्तव्य और तत्सम्बन्धी प्रभाव के विषय में सूचनार्थ भुनेश्वर प्रशस्ति[4] तथा बेलवा दानपत्र[5] द्रष्टव्य हैं।

बेलवा दानपत्र से ज्ञात होता है कि सिद्धल ग्राम (बंगाल का उत्तर राढ़ा) के सावर्ण गोत्रीय ब्राह्मण अपने आद्यस्थान मध्य देश (कान्यकुब्ज) से बहिर्गत[6] हुए थे, जब कि भुवनेश्वर प्रशस्ति में उनके विनिर्गत होने का उल्लेख नहीं है, किन्तु सिद्धल ग्राम[7] (राढ़ा) के सावर्ण गोत्रीय ब्राह्मण परिवार की कृतियों[8] आदि का सन्दर्भ मिलता है। ऐसा ज्ञात होता है कि प्रशस्ति और दानपत्र में उल्लिखित सावर्ण गोत्रीय ब्राह्मण या तो एक ही परिवार के थे या एक दूसरे

१-३. त्रिपाठी, आर० एस० : 'द हिस्ट्री आफ कन्नौज', पृ० ३२७–३२९

४. भट्टभवदेव का भुवनेश्वर अभिलेख, इ० बं०, ३, पृ० ३२-३५

५. भोजवर्मन का बेलवा ताम्रपत्र, वही, पृ० २१

६. 'सावर्णसगोत्राय···मध्यदेश विनिर्गत (स्य) उत्तराढायां सिद्धल ग्रामीय'··· द्रष्टव्य, वही।

७-८. 'सावर्णस्य मुनेर्म्महीयसि कुले जनिगृहं ग्रामाः सन्तु ते·· ग्राम सिद्धल'··· वही, पृ० ३३–३५

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

के निकटवर्ती थे। अतः ऐसी स्थिति में अधिक सम्भावना है कि भुवनेश्वर प्रशस्ति में उल्लिखित सावर्ण गोत्र के ब्राह्मणों का बहिर्गमन मध्यदेश से बहुत पहले ही हुआ था। साधारणतया भुवनेश्वर प्रशस्ति का समय लगभग ग्यारहवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध से लेकर बारहवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध तक माना जाता है, किन्तु प्रशस्ति में विख्यात ब्राह्मण भट्टभवदेव के सातवें आद्य पुरुष (पूर्व पुरुष) भवदेव, महादेव और अट्टहास (तीनों भाई हैं)[1] का उल्लेख हुआ है, जिनका सम्भावित समय लगभग छठीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध से लेकर सातवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध तक होगा। ऐसा सम्भव है कि मध्यदेश से सावर्ण गोत्र के ब्राह्मणों का बहिर्गमन छठीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध या सातवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में हुआ होगा। मध्यदेश से सावर्ण गोत्रीय ब्राह्मणों के विनिर्गत होने का समय और कारण निश्चित रूप से नहीं दिया जा सकता, किन्तु दानपत्रों में उल्लिखित तथ्यों पर आधारित सम्भावित समय की राजनीतिक स्थिति पर तर्क के साथ विचार किया जा सकता है।

महान् शक्तिशाली गुप्त राजवंश का पतन हूणों के आक्रमण के कारण हुआ और बाद में भी हर्ष के पहले भी उत्तरी भारत, विशेष कर मध्यदेश हूणों से प्रभावित रहा,[2] जिसके कारण तत्कालीन राजनीतिक वातावरण में सदा भय की स्थिति उत्पन्न होने से विघटनकारी शक्तियों को बल मिलता रहा। प्रभाकर वर्द्धन (वर्द्धन नरेश) ने अपने पुत्र राज्यवर्द्धन की सहायता से दबाने का प्रयत्न किया था।[3] प्रभाकरवर्द्धन की मृत्यु के बाद हर्षवर्द्धन के द्वारा उतरी भारत में विशाल राज्य स्थापित करनेऔर बौद्ध धर्म के प्रचार की नीति के विरुद्ध तत्कालीन गौडाधिप या गौड नृप शशांक था।[4] वह उतरी भारत में अपना प्रभुत्व रखना चाहता था, जिसका विरोध हर्ष ने किया। दोनों की भयानक शत्रुता का उल्लेख बाण के हर्षचरित में हुआ है।[5] ऐसा प्रतीत होता है कि ब्राह्मण धर्मावलम्बी शशांक (गौडनृप) के यहाँ मध्यदेशीय सावर्ण गोत्र के ब्राह्मण गये थे। भुवनेश्वर प्रशस्ति में उल्लिखित भट्ट भवदेव का सातवां आद्यपुरुष अट्टहास[6] (छठीं शताब्दी का उत्तरार्द्ध तथा सातवीं शताब्दी पूर्वार्द्ध) को तत्कालीन गौडनृप[7] (शशांक) ने जिसका अभ्युदयकाल ६१९ ई० के पहले माना

---

१. इ० बं०, ३, पृ० ३३–३५

२-५. मुकर्जी, आर० के० : एन्शियेन्ट इण्डिया, पृ० ३४७–३५०

६-७. 'भव इव विद्यातत्वप्रभवः प्रवभूव भवदेवः (५) अग्रजानुजयोर्म्मध्ये महदेवा ट्टहासयोः। स जज्ञे यज्ञपुरुषो विरिञ्चिहरयोरिव। (६)स शासनं गौड़नृपादवाप श्री हस्तिनीभिट्टमभीष्टभूमि।- इ० बं०, ३, पृ० ३३

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

जाता है, विख्यात ग्राम हस्तिनी-भट्ट [1] दान में दिया था।

उपरिवर्णित तथ्यों से ज्ञात होता है कि मध्यदेश से सावर्ण गोत्र के ब्राह्मणों का देशान्तर गमन करीब छठीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध या सातवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध से प्रारम्भ हुआ था और इनका प्रसार तथा प्रभाव बंगाल में द्वादश शताब्दी पूर्वार्द्ध तक चलता रहा। सावर्ण गोत्र के विद्वान् ब्राह्मणों का केन्द्र सिद्धल तत्कालीन युग में लोगों को आकर्षित किया था। सिद्धल ग्राम एक दीप्तिमान आभूषण सदृश है, जिसकी शोभा से आर्यावर्त देश चमत्कृत होता है तथा उसे बंगाल में (राढ़ा का श्री) 'राढ़ा श्रियः' कहा जाता है। [2] सिद्धल ग्राम उत्तरी राढ़ा में स्थित है। [3] मनमोहन चक्रवर्ती सिद्धल ग्राम को वर्द्धवान जिले के कालना में स्थित मानते हैं। [4] बंगाल की कुल-पंजिकाओं के अनुसार सिद्धल ग्राम राढ़ीया ब्राह्मणों के ५६ ग्रामों में से एक था, जो सावर्णगोत्रीय ब्राह्मण वशिष्ठ को दान में मिला था। [5] उपर्युक्त तथ्यों से ज्ञात होता है कि सिद्धल ग्राम राढ़ा या उत्तर राढ़ा में स्थित है जो मध्यदेशीय सावर्णगोत्रीय ब्राह्मणों का प्रमुख केन्द्र था। वे सिद्धल ग्राम (उत्तरी राढ़ा) में रहते थे। [6] भुवनेश्वर प्रशस्ति से भी ज्ञात होता है कि सिद्धल ग्राम में सावर्णमुनि के वंशज रहते थे। [7] ऐसी स्थिति में यह स्पष्ट हो जाता है कि मध्यदेशीय सावर्णगोत्र के ब्राह्मणों का प्रमुख केन्द्र सिद्धल था जिनका विस्तार समग्र बंगाल में हुआ। उक्त तथ्य से यह भी प्रमाणित होता है कि पूर्वमध्ययुगीन उत्तरी भारत के

---

१. इ० बं, ३, पृ० ३३
२. 'आर्यावर्त्त भुवाम्बिभूषणमिह ख्यातस्तु सर्वाग्रिमो ग्रामः सिद्धल एव केवल-मलङ्कारोस्ति राढ़ाश्रियः' इ०बं०, ३, पृ० ३३
३. 'उत्तरराढ़ायां सिद्धलग्रामीय'—इ बं, ३, पृ० २१
४. जर्नल एण्ड प्रोसिडिंग्स आफ दि एशियाटिक सोसाइटी आफ बंगाल, न्यू-सिरीज, भाग ८, (१९१२) पृ० ३९९
५. गौड ब्राह्मण, पृ० १६४, इ०बं०, ३, पृ० ३१
६. सावर्ण सगोत्राय भृगु—च्यवन—आप्नुवान—और्व—जगदग्नि प्रवराय बाज-सनेयचरणाय यजुर्व्वेदकण्वशाखाध्यायिने मध्यदेश विनिर्गत (स्य) उत्तरराढ़ायां सिद्धलग्रामीय—इ०बं०, ३, पृ० २१
७. 'सावर्णस्य मुनेर्म्महीयसि कुले ये जज्ञिरे श्रोत्रिया स्तेषा शासन-भूमयो जनिगृहंग्रामाः शतं सन्तु ते। आर्यावर्त्त भुवाम्बिभूषाणामिह ख्यातस्तु सर्वाग्रिमो ग्रामः सिद्धल एव केवलमलंकारोस्ति राढ़ाश्रियः'।-इ० बं० ३, पृ० ३३

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

सुप्रसिद्ध प्रदेश मध्यदेश (उत्तर प्रदेश) से सावर्ण गोत्र के ब्राह्मणों का बहिर्गमन हुआ, तत्पश्चात् वे बंगाल में फैले। सिद्धल ग्राम निवासी सावर्ण ब्राह्मण आदिदेव (भट्टभवदेव का पितामह) बंगराज का विश्रामसचिव, महामन्त्री तथा सान्धिविग्रहिक था।[1] अभिलेख में बंगराज के नाम का उल्लेख तो नहीं है किन्तु इसका तादात्म्य वज्रवर्मन, वर्मन या यादव नरेश से स्थापित करने का प्रयास किया गया है ।[2] भट्टभवदेव के पिता गोवर्द्धन को भुवनेश्वर प्रशस्ति में उल्लिखित तथ्य के आधार पर डा० मुकर्जी ने बंगराज का मन्त्री माना है।[3] इनके मत से बंगराज को राज्य से च्युत जाटवर्मन ने किया था।[4] गोवर्द्धन युद्ध तथा सभा स्थल का प्रभावशाली वीर पुरुष था।[5] सम्भवतः वह वह उच्च सैनिक अधिकारी था ।

भट्टभवदेव पूर्वी (सिंहपुर, पुण्ड्रवर्द्धन, विक्रमपुर के यादव या वर्मन शासक हरिवर्म्मदेव (हरिवर्मन) का सान्धिविग्रहिक था।[6] उसकी सुनियोजित बुद्धिमत्तापूर्ण मंत्रणा के फलस्वरूप हरिवर्मन को अधिक दिन तक राज्य करने का शुभ अवसर मिला था।[7] हरिवर्मन का अन्तिम समय बारहवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध का प्रथम भाग(१२२५ ई०)था। उसने ४६ वर्ष तक शासन किया था।[8] राज्य के प्रशासन में उच्चधिकार के अतिरिक्त धार्मिक क्षेत्र में भी मध्य देशीय सावर्ण गोत्रीय ब्राह्मणों को बंगाल में राजपुरोहित, महापुरोहित, धर्माधिकारी

---

१. श्री आदिदेव इतिदेव इवादिमूर्तिर्म्म त्यां) त्मना भुवनमेतदलङ्करिष्णुः (९) यो बंगराज राज्य श्रीविश्रामसचिवः शुचिः। महामंत्री महापात्रम-बन्ध्यः सन्धिविग्रही (१०) इ० बं० ३ पृष्ट ३३

२. मजूमदार, आर० सी०, पुशालकर, ए० डी० तथा मजुमदार, ए० के० : (सम्पादक) द स्ट्रगील फार इम्पायर, पृ० ३४

३ तथा ४. मुकर्जी–एन्शियेंट इण्डिया ३८८-३८९

५. 'वीरस्थलीषु च समासु च तीर्थिकानां दो [र्ल्ली] लया च कलया च वचस्वितायाः । यो वर्द्धयन् वसुमतीश्च सरस्वतीश्चद्वेधा व्यधत्त निजनामपदं सदर्थं । इ० बं० ३, पृ० ३३

६. यन्मन्त्र शक्तिसचिवः सुचिरं चकार राज्यं स धर्म्मविजयी हरिवर्म्मदेवः। तन्नन्दने वलति यस्य च दण्डनीतिवर्त्मानुगा बहलकल्पलतेव लक्ष्मीः। इ० बं० ३, पृ० ३४

७. वही।

८. मजूमदार तथा पुशालकर (सम्पादक) द स्ट्रगील फार इम्पायर पृ० ३५

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

धर्ममहामात्र जैसे मत्त्वपूर्णपद पर प्रदान किये गये थे। भोजवर्मन के समय सावर्ण गोत्र के ब्राह्मण श्री रामदेव शर्मा शान्त्यागाराधिकृत[1] के पद पर नियुक्त था। शात्यागाराधिकृत पूजन गृह में कुपित देवी-देवताओं की आराधना करने और कराने का एक विशिष्ट अधिकारी राजपुरोहित या राज्य ज्योतिषी रामदेव शर्मा था। भुवनेश्वर प्रशस्ति से ज्ञात है कि गौडनृप (जिसका नाम उल्लिखित नहीं है) ने भट्टभवदेव के सातवें आद्यपुरुष को श्रीहस्तिनीभिट्ट ग्राम दान में दिया था।[2] ऐसा संभाव्य है कि दानग्रहीता गौडनृप के समय विशिष्ट प्रभावशाली महापुरोहित या कुल पुरोहित ब्राह्मण के रूप में था क्यों कि प्रशस्ति में गौडनृप द्वारा भूमिदान स्पष्ट रूप से उक्त ब्राह्मण के नाम से उल्लिखित है जो किसी विशेष रहस्य का द्योतक हो सकता है।

सावर्ण गोत्र के ब्राह्मण देवताओं के मन्दिरों के पुजारी होते थे जो पूजा के अतिरिक्त मन्दिर से सम्बन्धित अन्य कार्य भी करते थे। सिद्धल ग्राम के ब्राह्मण वैष्णव धर्मानुयायी थे। उन्होंने वैष्णव मन्दिरों की देख-रेख के लिये देव-दासियों का भी प्रबन्ध किया था।[3] सिद्धल ग्राम में यिष्णु की मूर्ति का अभिषेक भवदेव ने स्वयं किया था।[4] भट्ट भवदेव ने नारायण की मूर्ति का अभिषेक किया था/ इसके अतिरिक्त एक मन्दिर में त्रिमूर्ति नारायण, अनन्त तथा नृसिंह मन्दिर की स्थापना कराया था।[5] सावर्ण गोत्रीय ब्राह्मणों के नामों के साथ 'देव' उपपद लगाने की पद्धति बंगाल में प्रचलित थी। भुवनेश्वर प्रशस्ति में उल्लिखित 'देव' उपपद धारी ब्राह्मणों के नाम भवदेव (प्रथम) महादेव, आदिदेव तथा भट्टभव-देव हैं[6] जबकि बेलवा दानपत्र में प्रपितामह पीताम्बरदेव, पितामह जगन्नाथ-

---

१. 'शान्त्यागाराधिकृत श्री रामदेवशर्म्मणे'—इ० बं० ३, पृ० २१ शान्त्यागारा-धिकृत' पद विशेष के सम्पादन शान्तिक क्रिया सम्पन्न करते थे। वस्तुतः वैदिक कर्मकाण्डीय याज्ञिक क्रियाओं के सम्पादनार्थ तीन प्रकार की परम्पराएं विहित हैं–१. शान्तिक, २. पौष्टिक और ३. अभिचारिक। प्रथम क्रिया का सम्पादन अनिष्टकारी ग्रहों के उपशमन के लिये होता था। द्वितीय क्रिया सम्वर्द्धन के निमित्त सम्पादित की जाती थी तथा अन्तिम परम्परा में मारण, उच्चाटन तथा वशीकरण आदि अभिचारिक क्रियाओं का सम्पादन होता था।

२. इ० बं० ३, पृ० ३२

३. 'एतस्मै हरिमेधसे वसुमती विश्रान्तविद्याधरी विभ्रान्तिन्दधती: शतं स हि ददौ शारङ्गशावीदृश:" इ० बं० ३ पृ० ३५

४-६. वही।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

देव, व पिता विश्वरूपदेव तथा पुत्र रामदेव[1] का नाम उल्लिखित है।

सिद्धलग्राम के ब्राह्मण परिवारों में उपाधियाँ रखने की भी परम्परा प्रचलित थी। भवदेव के छठें आद्यपुरुष अत्यंग की एक उपाधि स्फुरित[2] थी, जब कि भवदेव ने दूसरी उपाधि वालवलभीभुजंग को धारण किया था।[3] भट्टभवदेव एक सुप्रसिद्ध तान्त्रिक और मीमांसा शास्त्री था। कुमारिलभट्ट के तन्त्रवार्तिक का सुविख्यात ज्ञाता था क्योंकि उसने इस पर भाष्य लिखा था।[4] फलसंहिता, होराशास्त्र तथा गणित या गणना विज्ञान[5] का ज्ञाता होने के कारण ज्योतिषी के रूप में भवदेव जाना जाता था। होराशास्त्र में अगाध पाण्डित्य प्राप्त करने के कारण द्वितीय वराह[6] के सदृश समझा जाता था। भवदेव वैदिक मंत्रों और स्तुतियों को जानने तथा क्रमबद्ध रूप से कहने की क्षमता रखता था। वह एक अर्थशास्त्री, चिकित्सक (आयुर्वेदज्ञ) अस्त्र-शस्त्र तथा आगम विद्या का विद्वान् होने के अतिरिक्त कविता करने की क्षमता रखता था।[7] वह ब्रह्म के अद्भुत रूप को ठीक से समझता था।[8]

सिद्धलग्राम के मध्यदेशीय सावर्ण ब्राह्मणों का वैवाहिक सम्बन्ध बंगाल के प्रसिद्ध ब्राह्मण ग्राम वंद्यघटीया ब्राह्मणों से था। भट्टभवदेव की मां सागोंका वंद्यघटीया ब्राह्मण परिवार की थी जिसकी शादी गोवर्द्धन (भवदेव के पिता) से हुई थी।[9] भट्टभवदेव ने राढ़ा के सिद्धलग्राम के निकट त्रिमूर्ति मन्दिर के सामने जलाशयों का निर्माण कराया था।[10] मन्दिर के निकट सुरम्य उपवन या बाटिका

---

१. 'मध्यदेश विनिर्गत (स्य) उत्तराढायां सिद्धलग्रामीय पीताम्बरदेवशर्म्मणः प्रपौत्राय जगन्नाथदेवशर्म्मणः पौत्राय विश्वरूपदेवशर्मणः पुत्राय शान्त्यागाराधिकृत श्रीरामदेव शर्म्मणे'। इ० बं०,३, पृ० २१

२. 'रथाङ्गादत्यङ्गः समजनि जनानन्दजननः शशीव क्षीरोदा दविकलकलाकेलिनिलयः। स्फुरत्प्रज्ञाज्योतिः स्फुरित इति नाम्ना दिशि'– इ० बं० ३, पृ० ३३

३. प्रशस्तिरियं बालवलमी भुजङ्गापरनाम्नो भट्टश्रीभवदेवस्यं'–वही, पृ० ३५

४-८. वहीं, पृ० ३४

९. 'वन्द्यां वन्द्यघटीयस्य ब्राह्मणः प्रयतां सुताम्। साङ्गोकामङ्गनारत्नम्पत्नीं स परिणीतवान्'॥–वही, पृ० ३३

१०. 'राढ़ायामजलासु जाङ्गल पथग्रामोपकण्ठस्थलीसीमासु श्रममग्नपान्थपरिषत् प्राणाशय प्रीणनः। येनाकारि जलाशयः परिसरस्नाताभिजाताङ्गना वक्त्राब्जप्रतिबिम्बमुग्धमधुपीशून्याब्जिनीकाननः।'–वही।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

की भी व्यवस्था की गयी ।[1] उपरिवर्णित तथ्यों के आधार पर ज्ञात होता है कि मध्यदेश के (कन्नौज या कान्यकुब्ज राज्य) वाजसनेय चरण, यजुर्वेदीय काण्व शाखानुयायी तथा पञ्चप्रवर (भृगु, च्यवन, आप्नुवान, और्व्व तथा जमदग्नि) के सावर्ण गोत्रीय ब्राह्मणों का प्रसार और प्रभाव बंगाल में विशेष रूप से बंग राजा गौडनृप तथा पूर्वी बगाल के यादव या वर्मन राजाओं के राज्यों में हुआ । सावर्ण गोत्र के ब्राह्मणों को मन्त्री, महामन्त्री, सांधिविग्रहिक, विश्राम-सचिव और अन्य श्रेष्ठ पद प्राप्त था । सम्भवतः अन्य प्रशासकीय पद भी मिला था । ऐसा संकेत मिलता है कि बंगाल में बंग,गौड,पूर्वी बंगाल तथा अन्य भागों में सावर्ण ब्राह्मणों का राजनीतिक तथा कूटनीतिक प्रभाव था । वे राज्य के विशिष्ट प्रशासकीय अधिकार प्राप्त कर राज्य की स्थिति और गतिविधि से सुपरिचित थे । इससे यह ज्ञात होता है कि सावर्ण ब्राह्मणों को राज्यस्तर के राजपुरुषों के समान महान् प्रतिष्ठा दी गयी थी । राजनीतिक प्रभाव के अतिरिक्त मध्यदेशीय सावर्ण ब्राह्मणों का धार्मिक प्रभाव भी बंगाल में व्याप्त था । सावर्ण ब्राह्मणों को राजपुरोहित, शांत्यागाराधिकृत तथा विशिष्ट प्रभावशाली दानग्रहीता का स्थान मिला था । शांत्यागाराधिकृत शांतिक क्रिया सम्पन्न करते थे । इस क्रिया का सम्पादन अनिष्टकारी ग्रहों के उपशमन के लिए होता था । भोजवर्मन के राज्य में शांत्यागाराधिकृत के पद पर रामदेव शर्मा नियुक्त था । गौडनृप ने 'अट्टहास' (दानग्रहीता) को प्रमुख प्रभावशाली सावर्ण गोत्रीय ब्राह्मण समझकर हस्तिनी भट्टग्राम दान में दिया था । ऐसा ज्ञात होता है कि वे महान् राजनीतिज्ञ, विद्वान् और प्रख्यात सावर्ण गोत्रीय ब्राह्मण थे । बस्तुतः भवदेव के पहले से ही भवदेव के पूर्वजों को अपने पवित्र धार्मिक और अन्य प्रभावशाली कृत्यों के फलस्वरूप राज्य में मर्यादित स्थान प्राप्त होने पर दान आदि लेते थे । ऐसा सम्भाव्य है कि बंगाल में मध्यदेशीय सावर्ण ब्राह्मण अपने पौरोहित्य कर्तव्य के द्वारा जीविकोपार्जन करते थे ।

सिद्धलग्राम के सावर्ण गोत्र के ब्राह्मण वैष्णव सम्प्रदाय के थे । वैष्णव ब्राह्मणों का प्रभाव नारायण मूर्ति तथा त्रिमूर्ति (अनन्त, नारायण तथा नरसिंह) की स्थापना और अभिषेक से ज्ञात होता है । सम्भवतः वैष्णव ब्राह्मणों का प्रभाव बंगाल में दूर तक फैला हुआ था और उन्होंने वंग में ब्राह्मण धर्म के उत्थान तथा प्रसार के लिए वैष्णव मन्दिर से सम्बन्धित सक्रिय कार्य किया ।[2]

---

१. इ० वं० ३, पृ० ३३
२. वही ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

इस धारणा की पुष्टि पुशालकर तथा मजूमदार के मत से भी हो जाती है।[1] सिद्धलग्राम में रहने वाले मध्यदेशीय सावर्ण ब्राह्मण परिवारों में देव नामान्त (उपपद) परम्परागत ज्ञात होता है। उपपद देव का प्रयोग सावर्ण गोत्रीय ब्राह्मणों के धार्मिक विश्वास का द्योतक है।

सावर्ण ब्राह्मण परिवारों में नाम के साथ उपाधियों को धारण करने की परम्परा थी। यथा स्फुरित और बालवलभीभुजंग। सावर्ण ब्राह्मण तान्त्रिक और ज्योतिषी भी होते थे। ऐसी स्थिति से ज्ञात होता है कि उनके व्यवसाय का द्योतक तन्त्र और ज्योतिष था। सावर्ण गोत्रीय ब्राह्मण के परिवार में ब्राह्मण चिकित्सक (आयुर्वेदज्ञ), अस्त्र विद्याविद् तथा अर्थशास्त्री होते थे। ऐसा सम्भाव्य है कि चिकित्सा कार्य, अस्त्रों की सहायता से सैनिकों और राजकुमारों को सैनिक शिक्षा देना तथा देश की अर्थ व्यवस्था को एक अच्छे अर्थशास्त्री के रूप में होकर समझना आदि कार्यों की सहायता से अपनी जीविका चलाने के लिये किसी न किसी रूप में अर्थोपार्जन करने के साथ-साथ बंगाल में अपना प्रभाव जमाये थे।

सामाजिक दृष्टि से राढ़ा स्थित सिद्धल ग्राम के मध्यदेशीय सावर्ण गोत्रीय ब्राह्मणों का विशिष्ट महत्व बंगाल में था। विशेषकर भवदेव ब्राह्मण परिवार के गौरवपूर्ण महद् कार्यों से प्रभावित होकर लोग उनके सम्पर्क रखने में अपना उच्च स्तर समझते थे। इनका ज्वलन्त उदाहरण स्पष्ट रूप से गोवर्द्धन । भवदेव के पिता) की शादी वंद्यग्राम के वंद्यघटीया ब्राह्मणों के परिवार की लड़की सांगोका के साथ सम्बन्ध से ज्ञात होता है। आज भी वंद्यघटीया ब्राह्मण राढ़ीया के तीन कुलीन ब्राह्मणों में से जाने जाते हैं। प्रशस्ति में सांगोका के पिता (भट्टभवदेव के नाना (मातामह) का नाम उल्लिखित है। ऐसी स्थिति से ज्ञात होता है कि वह सम्भवतः छोटे स्तर का व्यक्ति था। राढ़ा के सावर्ण गोत्रीय ब्राह्मणों से वैवाहिक सम्बन्ध से ऐसा आभास मिलता है कि बहुत पहले से ही वंद्यघटीया ब्राह्मणों का समाज में उच्च स्तर था। उपरिवर्णित ग्यारवीं शताब्दी की प्रशस्ति से ज्ञात होता है कि बंगाल में सावर्ण गोत्रीय और वंद्यघटीया ब्राह्मणों का अस्तित्त्व पहले से ही था। इस विचारधारा की पुष्टि मनमोहन चक्रवर्ती के मत से भी होती है। उन्होंने बंगाल में दोनों प्रकार के ब्राह्मणों के अस्तितव के होने से बंगाल में प्रचलित कुलजी पुस्तकों पर आधारित कन्नौज से राढ़ा (राढ़िया) ब्राह्मणों के ग्यारहवीं शताब्दी में आगमन पर संदेह किया है।[2]

---

१. मजूमदार तथा पुशालकर(सम्पादक)—द स्ट्रगील फार इम्पायर, पृ० ३४-३५

२. जर्नल एण्ड प्रोसिडिंग आफ दि एशियाटिक सोसाइटी आफ बंगाल, न्यू-सिरिज ३, (१९१२), पृ० ३४१

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

उपर्युक्त तथ्यों से ज्ञात होता है कि ग्यारहवीं और १२ वीं शताब्दी में मध्यदेश से बहिर्गत हुए सिद्धलग्राम के सावर्ण गोत्रीय ब्राह्मणों का प्रसार तथा प्रभाव लगभग सम्पूर्ण बंगाल में, विशेषकर गौड, राढा और पूर्वी बंगाल (सिंहपुर, विक्रमपुर तथा पुण्ड्रवर्द्धन) में व्याप्त था।

कश्यप केन्द्र

विश्रुत स्थान मधुपालिका ग्राम[1], महुआली,[2] मथुरा[3] और मध्यदेश[4] से बहिर्गत होने वाले काश्यप ब्राह्मणों का मालवा, सरयूपार तथा प्राग्ज्योतिष (आसाम) में प्रसार तथा प्रभाव आदि से सम्बन्धित दशम शताब्दी से त्रयोदश शताब्दी पूर्वार्द्ध तक के परमार, कलचुरि और पाल (आसाम के पाल) दानपत्रों में उल्लिखित तथ्य वेदितव्य हैं। गोनरी दानपत्र(वि० सं० १०३८=९८१ ई०) में उल्लिखित काश्यप केन्द्र मधुपालिका ग्राम[5] का तादात्म्य उत्तरप्रदेश के सरयूपार देवरिया में स्थित मझवली (मझौली) से स्थापित किया जाता है और के० एन० दीक्षित ने भी इसे स्वीकार किया है।[6] काश्यपगोत्रीय ब्राह्मणों का मधुपालिका से देशान्तरगमन सम्भवतः दसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में हुआ था, जबकि परमार शासक की सरयूपार के कलचुरि शासक भामन प्रथम से संघर्ष में पराजय हुई थी।[7] वह संघर्ष त्रिपुरी के कलचुरि जाज्वलदेव द्वितीय और धारा के शासक के बीच था जिसमें सरयूपार के शासक से सहायता त्रिपुरी के शासक ने माँगी थी।[8] सम्भवतः उसे (भामन प्रथम) युद्ध करना पड़ा।[9] तत्कालीन धारा का शासक वाक्पति मुञ्ज (९७४-९९५ई०) था। ऐसा संभाव्य है कि सरयूपार और त्रिपुरी के कलचुरि शासकों के साथ मालवा में या इसके निकटवर्ती किसी स्थान में विजयोत्सव मनाने में धार्मिक क्रियाओं के संपादनार्थ मधुपालिका के काश्यप ब्राह्मणों को जाना पड़ा तथा बाद में वाक्पतिमुञ्ज उन ब्राह्मणों की विद्वत्ता से प्रभावित हुआ होगा और सम्पर्क होने पर दान आदि

---

१. वाक्पति मुञ्ज का गोनरी दानपत्र, ए० इ० २३, पृ० ११०

२. मिराशी, कार्पस ४/२, पृ० ३९०

३. देवपाल का मान्धाता दानपत्र, ए० इ०, ९, पृ० १११

४. प्राग्ज्योतिष के धर्मपाल का खोनमुख दानपत्र, वही, ३०, पृ० २०८

५. वही,२३, पृ० ११०

६. वही, पृ० १०२

७. मिराशी, कार्पस, ४/१, पृ० ११३

८-९. मिराशी, कार्पस, ४/१, पृ० ११३

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

देकर सम्मानित किया। साधारणतः परमार वाक्पतिमुञ्ज ब्राह्मण धर्मानुयायी राजा था जिसके राज्य में देश के अनेक विभिन्न भागों से ब्राह्मण आये और उन्हें आने पर दान में अग्रहार आदि देकर सम्मानित किया गया। ऐसा प्रतीत होता है कि मधुपालिका ग्राम के काश्यप ब्राह्मण भी वक्पतिमुञ्ज के विचार से सुपरिचित होकर दान ग्रहण करने के साथ ही निवास करने की भावना से मालवा में आये। कालान्तर में उक्त कश्यप गोत्र के ब्राह्मणों के वंशज मालवा के विभिन्न भागों में फैल गये। मालवा में मधुपालिका से विनिर्गत हुए काश्यप ब्राह्मणों का सम्बन्ध त्रिप्रवर तथा छंदोग शाखा से था।[1] कश्यप गोत्रीय ब्राह्मणों से सम्वद्ध त्रिप्रवर के प्रमुख ऋषियों के नामों के सम्बन्ध में निश्चित रूप से कुछ नहीं कहा जा सकता किन्तु अन्य परमार-कालीन मान्धाता दानपत्र में काश्यप ब्राह्मणों के उक्त प्रवर ऋषियों........ 'काश्यप', आवत्सार और नैध्रुव' नाम उल्लिखित है।[2] इस तथ्य की पुष्टि आपस्तम्ब सूत्र में उल्लिखित 'काश्यप, आवत्सार और नैध्रुव' से होती है तथा ठीक इसी प्रकार के त्रिप्रवर ऋषियों के नाम का उल्लेख पुरुषोत्तम पण्डित ने अपनी पुस्तक 'गोत्रप्रवरमञ्जरी' में किया है। सम्बन्धित पुस्तक पर आधारित संस्कृत-निष्ठ विद्वान् जानब्रफ महोदय ने उक्त ऋषियों के नाम का सन्दर्भ दिया है।[3] ऐसी स्थिति में यह सम्भाव्य है कि मधुपालिका के काश्यप ब्राह्मणों के त्रिप्रवर के वही ऋषि हैं, जो उपरिर्वाणित हैं। काश्यप गोत्रीय ब्राह्मण परिवारों में नामान्त या उपपद 'स्वामी'[4] का प्रयोग होता था जो परम्परागत्त रूप में ज्ञात होता है। पिता-पुत्र गोविन्द स्वामी और देवस्वामी का उल्लेख हुआ है। उपरिर्वाणित तथ्यों से ज्ञात होता है कि मालवा में त्रिप्रवरान्तर्गत छंदोग शाखानुयायी मधुपालिका के काश्यप ब्राह्मणों का सम्मान होता था। काश्यप गोत्रीय ब्राह्मणों के नामान्त 'स्वामी' से यह संकेत मिलता है कि वे सम्भवतः विद्वान् ब्राह्मण

---

१. 'मधुपालिकाग्राम विनिर्गत कास्य (श्य) पसगोतृ (त्रि) प्रवर छं (च्छ) दोग शाखिने व्रा (ब्रा) ह्मण गोविन्दश्वा (स्वा) मिने देवश्वा (स्वा) मिसूनवे'—ए० इ०, २३, पृ० ११०

२. 'काश्यप गोत्राय काश्यप-आवत्सार-नैध्रुव-इति त्रिप्रवराय'—देवपाल का मान्धाता दानपत्र, ए० इ०, ९, पृ० १११–११२

३. ब्रफ जान : द अर्ली ब्राह्मनिकल सिस्टम आफ गोत्र एण्ड प्रवर, (मूल लेखक पुरुषोत्तम पण्डित की पुस्तक गोत्र-प्रवरमञ्जरी पर आधारित (१९५३), पृ० १६२

४. ए० इ०, ९ पृ० १११–११२

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

या अत्यन्त ऊँचे स्तर के धार्मिक पुरुष थे। सम्भवतः इसी अर्थ में यह काश्यप ब्राह्मणों के नामों के साथ जुड़ता था। गोनरी दानपत्र के आधार पर यह कहा जा सकता है कि दसवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में काश्यप ब्राह्मणों का केन्द्र मधुपालिका था, जहाँ मालवा में उनका प्रसार (दसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में) हुआ। उपर्युक्त मधुपालिका के अतिरिक्त बारहवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध और तेरहवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में मथुरा[1] तथा मध्यदेश[2] से काश्यप गोत्रीय ब्राह्मणों के बहिर्गमन और मालवा में उनके प्रसार का ज्ञान होता है।

मथुरा

मान्धाता दानपत्र (वि० सं० १२८२=१२२५ ई०) के आधार पर ऐसा प्रतीत होता है कि मथुरा और मध्यदेश से कश्यप गोत्रीय ब्राह्मणों का बहिर्गमन सम्भवतः उस समय हुआ था जब मुहम्मद गोरी ने अजमेर-दिल्ली के चाहमान शासक महाराज पृथ्वीराज को ११९२ ई० में परास्त किया था।[3] कान्यकुब्ज के गहड़वाल-शासक महाराज जयचन्द (११९४ ई०) को मुहम्मद गोरी की सेना से टक्कर लेनी पड़ी[4] किन्तु उनकी पराजय हुई। तत्पश्चात् काशी तक के मध्यदेशीय समस्त प्रदेश का शासन स्थायी रूप से मुसलमानों के हाथ में चला गया।[5] ऐसी स्थिति में सम्भाव्य है कि मथुरा और मध्य देश के ब्राह्मणों ने अपने धर्म आदि की रक्षा के लिए ब्राह्मणों के संरक्षक परमार देवपाल के मालवा राज्य में शरण ली हो।

मालवा में मथुरा से बहिर्गत हुए आश्वलायन शाखा तथा त्रिप्रवर के 'काश्यप, आवत्सार, नैध्रुव' से सम्बन्धित काश्यप ब्राह्मणों[6] का प्रसार त्रयोदश शताब्दी के पूर्वार्द्ध में हुआ था। अधिकांश काश्यप गोत्रीय ब्राह्मण मथुरा के चतुर्वेदी समुदाय से सम्बन्धित थे। ऐसा प्रतीत होता है कि विख्यात केन्द्र मथुरा वासी प्रभावशाली चतुर्वेदीय ब्राह्मणों की अत्यधिक प्रतिष्ठा मालवा में थी। उनकी उपाधि च (चतुर्वेदी)[7] परम्परागत रूप में प्रयुक्त होती थी।

१-२. ए० इ०, ९ पृ० १११-११२
३. त्रिपाठी, आर० एस०—'द हिस्ट्री आफ कन्नौज', पृ० ३२७
४. वही, पृ० ३२८-३०
५. वही।
६. 'मथुरास्थान विनिर्गताय आश्वलायनशाखाध्यायिने काश्यपगोत्राय काश्यपआवत्सार-नैध्रुव—इति त्रिप्रवराय······।'—देवपाल का मान्धाता दानपत्र, ए० इ०, ९, पृ० १११
७. 'च समुद्धर—पौत्राय च देवधर पुत्राय च गदाधर शर्म्मणे ब्राह्मणाय'।-वही।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

दानपत्र में उल्लिखित 'च' से यह संकेत मिलता है कि मालवा में उनकी विद्वत्ता की ज्योति चमकती थी। 'च' उपाधिधारी ब्राह्मण चातुर्विद्य होते थे।

काश्यप ब्राह्मण परिवारों में धर उपपद का प्रयोग नामों के साथ होता था। 'धर'[1] उपपद पितामह, पिता और पुत्र (समुद्धर, देवधर तथा गदाधर) के नाम के साथ प्रयुक्त हुआ है। संकेत मिलता है कि मथुरा के चतुर्वेदी ब्राह्मणों के परिवारों में नामकरण करते समय उपपद या नामान्त रखने का क्षेत्र सीमित नहीं था। यह भी सम्भव था कि वे वीर या शौर्य की भावना को ध्यान में रखकर 'धर' उपपद, का नामों के साथ प्रयोग करते थे। धर नामान्तधारी काश्यप ब्राह्मण परम्परागत रूप से मथुरा में फैले हुये थे। उपर्युक्त तथ्यों के आधार पर ज्ञात होता है कि मथुरा के ऋग्वेदीय काश्यप ब्राह्मणों का त्रिप्रवर 'काश्यप, आवत्सार, तथा नैध्रुव' था। उपरिर्वणित तथ्यों के आधार पर यह कहा जाना समीचीन होगा कि मथुरा चतुर्वेदीय काश्यप ब्राह्मणों का प्रमुख केन्द्र द्वादश शताब्दी में था तथा उनका प्रभाव और प्रसार मालवा में त्रयोदश शताब्दी के पूर्वार्द्ध में हुआ था। मालवा में मथुरा के काश्यप ब्राह्मणों के अतिरिक्त मध्यदेशीय काश्यप ब्राह्मणों का भी आगमन उन्हीं दिनों हुआ था।

मध्यदेश

परमार देवपाल के मान्धता दानपत्र से ज्ञात होता है कि तेरहवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध से मध्यदेश से माध्यन्दिन शाखा अनुयायी त्रिप्रवर 'काश्यप-आवत्सार-नैध्रुव'[2] से सम्बन्धित काश्यप ब्राह्मण निर्गत होने के पश्चात् मालवा में गये थे। अभिलेख में उल्लिखित मध्यदेश से तात्पर्य कान्यकुब्ज (कन्नौज) होगा। मध्यदेशीय काश्यप ब्राह्मण भिन्न-भिन्न उपाधियों यथा उपा (उपाध्याय) 'दी' (दीक्षित) और 'अग्नि' (अग्निहोत्र) को धारण करते थे।[3] कश्यपगोत्रीय ब्राह्मणों की उपाधियों के आधार पर उनके व्यवसाय और योग्यता आदि का पता चलता है। उक्त तथ्यों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि त्रिप्रवर के काश्यप ब्राह्मण शुक्लयजुर्वेदीय माध्यन्दिन शाखा के अनुयायी थे। इससे

---

१. ए० इ०, ९ पृ० १११

२. 'मध्यदेश-विनिर्गताय माध्यन्दिन शाखाध्यायिने काश्यप-गोत्राय काश्यप-आवत्सारनैध्रुव–इति त्रिप्रवराय,–देवपाल का मान्धाता दानपत्र, वही, ९, पृ० ११२

३. '…उपा नारायण पौत्राय अग्नि जशदेव पुत्राय दी. लाहडशर्म्मणे ब्राह्मणाय…।'-वही।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

काश्यप ब्राह्मणों के शैक्षणिक स्तर तथा पौरोहित्य कर्तव्य का भी पता चलता है। उपाध्याय शिक्षा देकर शिष्यों के सुजीवन का निर्माण करता था। ऐसा प्रतीत होता है कि काश्यप ब्राह्मणों का शैक्षणिक प्रभाव भी था। दीक्षित तथा अग्निहोत्री के कार्य का सम्बन्ध पौरोहित्य से है। ऐसा सम्भाव्य है कि पौरोहित्य कर्तव्य अपनी जीविका चलाने के लिए शुक्ल यजुर्वेदीय माध्यन्दिन शाखा के काश्यप ब्राह्मण करते थे। उनका पौरोहित्य कर्तव्य एक तरफ व्यवसाय का द्योतक है तो दूसरी तरफ धार्मिक प्रभाव का भी। धार्मिक कर्मकाण्ड को विधिवत् सम्पादित करने के कारण वे सम्मानित किये जाते थे। उपरिवर्णित तथ्यों के आधार पर यह कहा जांना समीचीन होगा कि द्वादश शताब्दी के उत्तरार्द्ध में मध्यदेश (कन्नौज या कान्यकुब्ज) शुक्ल यजुर्वेदीय माध्यन्दिन शाखानुयायी काश्यप ब्राह्मणों का केन्द्र था। वहाँ से त्रयोदश शताब्दी के पूर्वार्द्ध में मालवा में प्रसार तथा प्रभाव परमार देवपाल के समय में हुआ।

महुआली

एकादश शताब्दी के उत्तरार्द्ध में कश्यप गोत्रीय ब्राह्मणों का केन्द्र महुआली था,[1] जिसके सम्बन्ध में सूचना कलचुरि नरेश सोढ़देव (सरयूपार कलचुरि) के कहला दानपत्र से मिलती है। काश्यप केन्द्र महुआली ग्राम उत्तर प्रदेश के सरयूपार गोरखपुर जनपद में स्थित धुरियापार परगना से सात मील पश्चिम है।[2]

कहला दानपत्र (वि० सं० ११३५ = १०७७ ई०) से ज्ञात होता है कि महुआली में वाजसनेय शाखा और त्रिप्रवर के काश्यप ब्राह्मण रहते थे।[3] ऐसा प्रतीत होता है कि सरयूपार के धुरियापार परगना (गोरखपुर) में स्थित महुआली के कश्यप गोत्रीय ब्राह्मणों को प्रभावशाली समझकर कलचुरि सोढ़देव ने विशिष्ट सम्मान के साथ दान अर्पित किया था।[4] काश्यप ब्राह्मणों के प्रभावशाली होने का संकेत परम्परागत 'पंडित'[5] उपाधिधारी ब्राह्मणों के नाम से मिलता है। ज्ञात होता कि धूरियापार परगना के स्थानीय ब्राह्मणों में महुआली के काश्यप ब्राह्मण शास्त्रज्ञ, विद्वान्, बुद्धिमान तथा वेदों में निष्णात होते थे।

---

१. 'महुआलीकीय · काश्यपगोत्र'–मिराशी, कार्पस, ४/२, पृ० ३९०
२. वही, पृ० ३८६
३-५. 'महुआलीकीय पण्डित नीम्वो (म्बो) पुत्रकास्य (श्य) पगोत्रत्रिप्रवर-वाजसनेय सा (शा) खिपण्डित च्छांच्छी (छी),-·· मिराशी, कार्पस, ४/२, पृ० ३९०

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

कहला दानपत्र से ज्ञात होता है कि सरयूपार के धूरियापार परगना के निकट-वर्ती महुआलीग्राम के काश्यप ब्राह्मण शुक्लयजुर्वेदीय थे तथा उनके त्रिप्रवर ऋषियों का नाम काश्यप, आवत्सार और नैध्रुव था क्योंकि अन्य मध्यदेशीय काश्यप ब्राह्मणों के त्रिप्रवर के ऋषियों के नाम वही हैं जो उपरिवर्णित है।[1] कहला दानपत्र से स्पष्ट जानकारी होती है कि ग्यारहवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में शुक्लयजुर्वेदीय वाजसनेय शाखा के काश्यप ब्राहमणों का केन्द्र महुआली था।

एकादश शताब्दी के उत्तरार्द्ध तथा द्वादश शताब्दी के पूर्वार्द्ध के मध्य-देशीय काश्यप ब्राह्मणों के विनिर्गत, प्राग्ज्योतिष (आसाम) में प्रसार और प्रभाव के सम्बन्ध में महत्वपूर्ण तथ्य आसाम के पाल नरेश खोनमुख दानपत्र[2] में अभिहित हैं। प्रतिहार वंश के समाप्त हो जाने पर मध्यदेश में कुछ दिन अरा-जकता रही और फिर कान्यकुब्ज का राज्य (मध्यदेश) गहड़वाल वंश के हाथ में आ गया[3]। ११०० ई० के लगभग महाराज चन्द्रदेव की मृत्यु के बाद इनका एक उत्तराधिकारी महराज गोविन्दचन्द्र[4] हुआ जिसको ११०९ ई० के लगभग मुस्लिम आक्रमणकारियों का सामना बड़ी सतर्कता से करना पड़ा। इस भयंकर युद्ध का उल्लेख गहडवाल कालीन राहन दानपत्र में हुआ है। ऐसा सम्भाव्य है कि इन दिनों मुस्लिम आक्रमणकारियों के कारण मध्यदेश में आतङ्क का राज्य उत्पन्न हुआ हो और विधर्मियों के द्वारा अनेक स्थान पर धार्मिक अत्याचार भी किये गये हों, जिनसे अपनी सुरक्षा के लिये मध्यदेशीय काश्यप ब्राह्मण भी बहिर्गत हुए तथा आसाम की तरफ राज्याश्रय प्राप्त किये। इस आधार पर कहा जा सकता है कि पूर्व मध्ययुग के अन्तिम भाग तक मध्यदेश (कन्नौज ?) से निर्गत होकर असम (प्राग्ज्योतिष या कामरूप) में फैल गये। मध्यदेश से बहिर्गत होने वाले यजुर्वेदीय काण्व शाखा के काश्यप गोत्रीय ब्राह्मण[5] लगभग द्वादश शताब्दी के पूर्वार्द्ध में वेदविहित विधि के अनुसार यज्ञानुष्ठान किया करते थे।[6] वे वेद तथा वेदाङ्ग में पारङ्गत[7] होने के कारण प्राग्ज्योतिष (आसाम) में सम्मान के पात्र समझे गये। यहाँ प्राग्ज्योतिष राज्य से तात्पर्य कामरूप है। मध्यदेशीय, काश्यप

---

१. देवपाल का मान्धाता दानपत्र – ए० इ०, ९, पृ० १११-१२

२. प्राग्ज्योतिष के धर्मपाल का खोनमुख दानपत्र, ए० इ०, ३०, पृ० २०८

३-४. वर्मा, धीरेन्द्र–मध्यदेश, पृ० १५३

५-७. 'मध्यदेशोद्भवो विप्रो यज्वा वेदाँग-पारग:। योगी रथिक उम्मोक सर्व्व-शास्त्रविशारद: (१६), काश्यपो=सौ यजुर्वेदी काण्व शाखो महामख: (।) अग्निष्टोम–आदिभि:=यो (या) गैर्=येन=इष्टमं–ए० इ०, ३०, पृ० २०८

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

ब्राह्मण उम्मोक सर्वशास्त्र विशारद, योगी और रथिक था।[1] उसका पुत्र विष्णु उद्भट विद्वान् के रूप में विख्यात था क्योंकि वह शास्त्रों, पुराणों तथा धार्मिक ग्रन्थों का पाठ करने वाले ब्राह्मण के रूप में प्रख्यात हो गया था।[2] विष्णु का योग्य और प्रभावशाली पुत्र महाबाहु था जो विशिष्ट मीमांसाशास्त्री था।[3] ब्राह्मण महाबाहु की माँ मनोरमा मनस्विनी समझी जाती थी।[4] सम्भवतः वह भी शिक्षित परिवार में रहने के कारण बुद्धिमती हो गयी थी। खोनमुख दानपत्र से यह भी ज्ञात होता है कि ऐसे सर्वविद्या सम्पन्न ब्राह्मण-परिवार में पिञ्जरस्थ शुक-सारिकाएं भी प्रज्ञावान थे जो अपनी कुशल वाग्मिता के कारण सुविज्ञ मनीषियों को भी लज्जित करने में सक्षम थे। ऋत्विजों और अध्ययनरत विद्यार्थियों के विस्मृत होने पर ये (शुक-सारिकायें) स्मरण दिलाया करते थे।[5] शुक-सारिकाओं का वेदशास्त्रों में पारङ्गत होने की बात यद्यपि अतिरञ्जना प्रस्तुत करती है तथापि वह अतिरञ्जित वर्णन सर्वथा तथ्यहीन नहीं है क्योंकि इस वर्णन के माध्यम से इतना तो स्पष्टतः समझा ही जा सकता है कि इस काल में विशेषकर उक्त परिवारों में शास्त्रों तथा वेद ग्रन्थों का अनुशीलन होता रहता था। दूसरे शब्दों में कहा जा सकता है कि वेदाभ्यासी अथवा विद्याव्यसनियों के निरन्तर उच्चारण से घर में पाले गये शुक और सारिका जैसे पक्षियों में भी वाग्पटुत्व आ जाता था, वे भी न्यूनाधिक रूप से अपनी अस्पष्ट भाषा में कुछ एक प्रकार का पारायण सा किया करते थे। उक्त काश्यप ब्राह्मण शास्त्र-विहित दैनिक पञ्च महायज्ञों (भूत यज्ञ, मनुष्य यज्ञ, पितृ यज्ञ, देव यज्ञ और ब्रह्म यज्ञ) सम्पादन करते थे। उस परिवार के ब्राह्मण विशेषतः अध्वर्यु[6] का कार्य करते थे। ऐसा सम्भव है कि काश्यप ब्राह्मण परिवार में पौरोहित्य कार्यों के द्वारा जीवन यापन होता था। उपरिवर्णित कश्यपगोत्रीय ब्राह्मणों के विशिष्ट विद्वत्तापूर्ण ज्ञान को देखकर यह प्रतीत होता है कि प्राग्ज्योतिष (आसाम) में उनका शैक्षणिक प्रभाव अत्यधिक था। ऐसा ज्ञात होता है कि दानग्रहीता काश्यप ब्राह्मण महाबाहु एक विश्रुत मीमांसक था तथा उससे आसाम के पाल शासक धर्मपाल भी प्रभावित था। इससे संकेत मिलता है कि पाल शासक उसके प्रभावशाली परिवारों के ब्राह्मणों की उत्कृष्ट योग्यता से सुपरिचित थे। सम्भवतः इसी से प्रभावित होकर काश्यप महाबाहु को धर्मपाल ने दान दिया था। ऐसा लगता है कि दान लेना परम्परागत कार्य था जिसके सहारे इनकी जीविका चलती थी। वस्तुतः उस परिवार में पौरोहित्य कार्य का

१-५. ए० इ०, ३०, पृ० २०८

६. वही।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

सम्पादन आजीविका की दृष्टि से हुआ करता था। धर्मपाल के दानपत्र से ज्ञात हुआ है कि जब ऋत्विजों द्वारा यज्ञादिक कृत्यों में त्रुटियों और मन्त्रोच्चारण में अशुद्धियां मिलती थी तो उसे काश्यप ब्राह्मण दूर कर देते थे। ऐसा संकेत मिला है कि काश्यप ब्राह्मण यज्ञ के पुरोहिती कार्य से पूर्ण भिज्ञ थे। वे भी (काश्यप ब्राह्मण) भी होता, उद्गाता, अध्वर्यु तथा ब्रह्मा (चार मुख्य ऋत्विज) का काम करते थे। ऐसी स्थिति में स्पष्ट कहा जा सकता है कि अध्वर्यु का कार्य या पौरोहित्य कार्य (पुरोहिती) उनके व्यवसाय का द्योतक है। उक्त अभिलेख से प्रमाणित होता है कि विभिन्न प्रकार की यज्ञादिक कर्मकाण्ड के कारण वे सर्वत्र सम्मान पाते रहे तथा उनसे प्रभावित राजा लोग दान में अग्रहार भी पुराहिती कार्य आदि के लिए दिये। ऐसा जान पड़ता है कि मध्यदेश से निर्गत होकर कामरूप में फैले हुये कश्यप गोत्रीय ब्राह्मण मनुस्मृति में अभिहित विविध यज्ञों से सुपरिचित थे[1]।

उपरिवर्णित तथ्यों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि लगभग ग्यारहवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध से ही मध्यदेश के काश्यप ब्राह्मणों को समाज में महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त था और उनका प्रसार तथा प्रभाव बारहवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में आसाम में हुआ।

वत्स केन्द्र

मध्यदेश के वत्स गोत्रीय ब्राह्मणों के विनिर्गत तथा वास्तव्य का उल्लेख परमार[2], शिलाहार[3], पाल[4], सेन[5] और कलचुरि[6] दानपत्रों में हुआ है। लगभग दशम शताब्दी उत्तरार्द्ध से त्रयोदश शताब्दी पूर्वार्द्ध तक के प्रमुख

१. अध्यापनं ब्रह्मयज्ञः पितृयज्ञस्तु तर्पणम्।
होमो दैवो (देवयज्ञः) बलिर्भौतो (भूत यज्ञः) नृयज्ञोऽतिथिपूजनम् -
मनु० ३/७०-७२
आप्टे–संस्कृत–हिन्दी कोश पृ० ७८७
२. वाक्पतिमुञ्ज का गोनरी दानपत्र, ए० इ० २३ पृ० ११०-१११, परमार भोज को तिलकवाडा दानपत्र, वही २८, पृ० ७८, देवपाल का मान्धाता दानपत्र, वही ९, पृ० ११२
३. मुम्मुनिराज का ताम्रपत्र, वही, २५, पृ० ६१
४. नयपाल का इर्दा ताम्रपत्र, वही, २२, पृ० १५६
५. विजयसेन का बैरकपुर ताम्रपत्र, इ० बं०, ३, पृ० ६३
६. रत्नदेव द्वितीय का सर्खो दानपत्र, कार्पस ४/२, पृ० ४२६-२७

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

केन्द्र श्रावणभद्र, सोणभद्र, टकारी, मुञ्ज, द्रोण तथा मध्यदेश (कान्यकुब्ज राज्य) के वत्स ब्राह्मणों का प्रसार और प्रभाव मालवा, रत पुर, कोंकण तथा बंगाल में था।

श्रवणभद्र (सोणभद्र)

श्रवणभद्र मध्यदेश में स्थित कन्नौज नगरी के निकट माना जाता है। परमार वाक्पतिमुञ्ज के गोनरी दानपत्र (वि० सं० १०३८=९९१ ई०) में वत्स गोत्रीय ब्राह्मण परिवारों का ग्राम श्रवणभद्र था, जहाँ पर शूरादित्य[1] के परिवार का आगमन हुआ था, जो कन्नौज से बहिर्गत हुआ था। [2] ब्राह्मण शूरादित्य परिवार का उल्लेख परमार भोज के तिलकवाडा दानपत्र में हुआ है। अधिक सम्भव है कि श्रवणभद्र ही सोणभद्र है।[3] रतनपुर के कलचुरि रत्नदेव द्वितीय के सर्खो दानपत्र (क० व० ८८०=११२८ ई०) से ज्ञात होता है कि इलावर्त्त तथा अन्य देशों के बीच उत्तम भारत के मध्यदेश में स्थित वत्स ब्राह्मणों का विख्यात केन्द्र सोणभद्र है।[4] उक्त तथ्यों के आधार पर श्रवणभद्र का तादात्म्य सोणभद्र से स्थापित किया जा सकता है जिसकी पुष्टि मिराशी[5] और के० एन० दीक्षित[6] के मतों से भी होती है। दशम शताब्दी उत्तरार्द्ध में कन्नौज (कान्यकुब्ज) के निकटवर्ती स्थान श्रवणभद्र से वत्स गोत्रीय ब्राह्मणों का वहिर्गमन का कारण कान्यकुब्ज के तत्कालीन प्रतिहार शासक सम्भवतः राज्यपाल (९८८ ई० के लगभग) और बुन्देलखण्ड के चंदेल शासक धंग के बीच युद्ध था।[7] उस समय कन्नौज में दुर्बल शासक था जबकि धंग के समय (९५०-१००० ई०) बुंदेलखण्ड राज्य का विस्तार बड़ी तीव्र गति से शुरू हो गया था।[8] कान्यकुब्ज पर धंग के विजय का उल्लेख मऊ[9] तथा खजुराहो[10]

---

१. ए० इ०, २३, पृ० ११०
२. वही, २८, पृ० ७८, मिराशी, कार्पस, ४/२, पृ० ४२५
३. चौधरी, शशिभूषण–'एथनिक सेटीलमेन्ट्स इन एंशियेंट इन्डिया' २, पृ० २५-२६
४. मिराशी, कार्पस, ४/२, पृ० ४२६
५. कार्पस, ४/२, पृ० ४२५
६. वही, ए० इ०, २३, पृ० १०१
७. त्रिपाठी, आर० एस०, 'द हिट्री आफ कन्नौज', पृ० २७७
८. वही।
९. ए० इ०, १, पृ० १९७, २०३
१०. वही, पृ० १२४-१३४

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

के अभिलेखों में हुआ है। वाक्पतिमुञ्ज के गोनरी दानपत्र (वि०सं० १०३८=९९१ई०) के आधार पर ज्ञात होता है कि श्रवणभद्र से बह्वृच् शाखा[1] और वाजिमाध्यंदिन[2] शाखानुयायी पञ्चप्रवर के वत्सगोत्र के ब्राह्मणों का बहिर्गमन[3] हुआ था जिनको मालवा में तत्कालीन परमार नरेश वाक्पतिमुञ्ज ने भूमिदान दिया था। उपरिवर्णित तथ्यों से प्रतीत होता है कि दशवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में ऋग्वेदीय और यजुर्वेदीय वत्स गोत्र के ब्राह्मणों का केन्द्र श्रवणभद्र था। अभिलेख में श्रवणभद्र निवासी ब्राह्मणों के केवल पञ्चप्रवर का उल्लेख है किन्तु पञ्चप्रवर के कौन-कौन ऋषि हैं, इसका उल्लेख नहीं है। इस सम्बन्ध में मध्यदेश के अन्य वत्स केन्द्र के ब्राह्मणों के पञ्चप्रवर ऋषियों के नामों के आधार पर विचार किया जा सकता है। पाल शासक नयपाल के इर्दा दानपत्र[4], सेन शासक विजयसेन के बैरकपुर दानपत्र[5] और परमार देवपाल के मान्धाता दानपत्र[6] में उल्लिखित वत्स केन्द्र के ब्राह्मणों के पञ्चप्रवर ऋषि—भार्गव, च्यवन, आप्नुवान, और्व, जमदग्नि—का उल्लेख हुआ है। वत्स गोत्र के पञ्च-प्रवर ऋषियों के नाम—भार्गव, च्यवन, आप्नुवान, और्व तथा जामदग्न्य को बौधा-यन में दिया गया है।[7] ऐसा संभाव्य है कि गोनरी दानपत्र में उल्लिखित श्रवणभद्र के वत्स ब्राह्मणों के पञ्च ऋषियों के वही नाम हैं, जो उपरिलि-खित हैं। श्रवणभद्र के वत्स गोत्रीय ब्राह्मणों ने परमार देवपाल द्वारा प्रदत्त भूमिदान प्राप्त किया था जिससे प्रतीत होता है कि उनका व्यवसाय दान-दक्षिणा लेना भी था जो उन्हें पौरोहित्य कृत्यों के फलस्वरूप मिला था। यह कहा जा सकता है कि दशम शताब्दी उत्तरार्द्ध के अन्तिम भाग और एकादश शताब्दी पूर्वार्द्ध के प्रथम भाग में श्रवणभद्र के बह्वृच् और वाज-सनेय माध्यन्दिन शाखा तथा पञ्चप्रवर के वत्स गोत्रीय ब्राह्मणों का प्रसार तथा प्रभाव मालवा में अत्यधिक था। रतनपुर के कलचुरि रत्नदेव द्वितीय के सर्खो दानपत्र (क०व० ८८०=११२८ ई०) से ज्ञात होता है कि इलावर्त

---

१. 'श्रवणभद्र विनिर्गतवत्स सगोत्र पञ्चप्रवर बह्वृच् शाखिने' वही २३, पृ० ११०
२. श्रवणभद्र विनिर्गत वत्स सगोत्र पञ्चप्रवर वाजिमाध्यन्दिन शाखिने-वही।
३. वही।
४. ए० इ०, २२, पृ० १५६
५. इ० बं०, ३, पृ० ६३
६. ए० इ०, ९, पृ० ११२
७. ब्रफ, जान-द यर्ली ब्राह्मनिकल सिस्टम आफ गोत्र एण्ड प्रवर, पृ० ३१, ८१

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

और अन्य देशों के बीच महान् भारत के मध्यदेश में स्थित सोणभद्र (श्रवणभद्र से सोणभद्र का तादात्म्य स्थापित किया जाता है) के वत्स गोत्र और पञ्चप्रवर से सम्बन्धित द्विजवंश के ब्राह्मण नवम शताब्दी के पूर्वार्द्ध में बहिर्गत[1] होने के पश्चात् रतनपुर में राज्याश्रय प्राप्त किये थे। सोणभद्र का वत्स गोत्रीय ब्राह्मण पद्मनाभ ज्योतिर्विद् (खगोल विद्याविज्ञ, ज्योतिः शास्त्रज्ञ) तथा नक्षत्रविद्याविद् (दैवज्ञ, गणक, मौहूर्तिक, सांवत्सरिक) था क्योंकि दानपत्र में उसको होरा शास्त्र में पारंगत और संहिता शास्त्र के प्रकाण्ड पण्डित के रूप में उल्लेख किया गया है।[2] वह यज्ञादिक कृत्यों को भी जानता था।[3] कलचुरि रत्नदेव की सभा में ज्योतिषियों के समक्ष प्रभावशाली ज्योतिषी के रूप में होकर विवादास्पद विषय चन्द्रग्रहण के होने के सम्बन्ध में घोषणा की थी।[4] इस घोषणा से कलचुरि शासक रत्नदेव द्वितीय प्रसन्न होकर चिचातलाई ग्राम दान में दिया था।[5] ब्राह्मण महसोण (पद्मनाभ का प्रपितामह) षड्दर्शन और कला में निष्णात था।[6] वह देव और आगमों का पण्डित था।[7] वह वेदान्त के सिद्धान्तों को जानता था।[8] विभिन्न विषयों में विद्वान् होने के कारण सर्वत्र विशिष्ट सम्मान का पात्र समझा जाता था।[9] वत्स द्विज समाज का विभूषण सोमेश्वर वेदों का एक उत्कृष्ट विद्वान् था।[10] वह एक प्रतिभाशाली ज्ञानी समझा जाता था।[11] सोमेश्वर का पुत्र कुलचन्द्र आगमों का ज्ञाता था।[12] उसके पास शाप या वरदान देने की सामर्थ्य थी।[13] नवम शताब्दी के पूर्वार्द्ध में पद्मनाभ का प्रपितामह महसोण सोणभद्र से बहिर्गत हुआ।[14] दानपत्र में सोणभद्र के वत्स गोत्रीय ब्राह्मणों के पञ्चप्रवर ऋषियों के नाम का उल्लेख तो नहीं है किन्तु अन्य परमार[15], पाल[16] तथा सेन[17] दानपत्रों में वत्स गोत्रियों के पञ्चप्रवर ऋषियों के नाम भार्गव, च्यवन, आप्नुवान, और्व और जामदग्नि उल्लिखित हैं। बौधायन[18] से भी इसकी पुष्टि होती है। ब्राह्मण पद्मनाभ ज्योतिर्विद् (ज्योतिषी) के रूप में था। ज्योतिष उनके व्यवसाय का द्योतक है। ब्राह्मण पद्मनाभ को मखकर्म में निपुण कहा गया है।

---

१. मिराशी, कार्पस, ४/२ पृ० ४२६
२-७ वही, पृ० ४२७
८-१४ मिराशी, कार्पस ४/२, पृ० ४२६–४२७
१५. ए० इ०, २२, पृ० १५६
१६. इ० वं०, ३, पृ० ६३
१७. ए० इ०, ९, पृ० ११२
१८. ब्रफ, जान-'दि अर्ली ब्राह्मनिक सिस्टम आफ गोत्र एण्ड प्रवर' पृ० ३१,८१

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

सोणभद्र के ब्राह्मण यज्ञविषयक कृत्यों को करते थे। ऐसा सम्भव है कि वे पौरोहित्य और कर्मकाण्ड के माध्यम से परिवार का जीविकोपार्जन करते थे। पौरोहित्य कृत्य भी उनके व्यवसाय का द्योतक है। रतनपुर के कलचुरि रत्नदेव द्वितीय की सभा में पद्मनाभ ज्योतिषियों के बीच चन्द्रग्रहण सम्बन्धी विवादास्पद विषय में निर्भय होकर निर्णय दिया था। वह रत्नदेव के के यहाँ राजज्योतिषी था। यह संभाव्य है कि उसे राज्यस्तर का सम्मान रत्नदेव द्वितीय की सभा में मिला था। सोणभद्र के वत्स गोत्रीय ब्राह्मणों का शैक्षणिक प्रभाव किसी न किसी रूप में रतनपुर में व्याप्त था। दार्शनिक महासोण, प्रतिभाशाली, द्विज समाज विभूषण सोमेश्वर और आगम ज्ञाता कुलचन्द्र था। ये सभी ब्राह्मण वेद-वेदान्त से पूर्ण भिज्ञ थे। अधिक संभव है कि उक्त ब्राह्मण भिन्न भिन्न विषयों में विशिष्ट पाण्डित्य के कारण तत्कालीन कलचुरि शासकों और समाज को प्रभावित किये थे। सोणभद्र के वत्स गोत्रीय ब्राह्मण द्विजवंश[1] या द्विजसमाज[2] से सम्बन्धित थे। ऐसा प्रतीत होता है कि सोणभद्र में वत्स गोत्र के ब्राह्मणों का सम्बन्ध प्रभावशाली द्विजवंश या समाज से था, जिनका विशेष रूप से प्रभाव और प्रसार रत्नपुर (रतनपुर) में भी हुआ। उपर्युक्त तथ्यों से निष्कर्ष निकलता है कि नवम शताब्दी से लेकर द्वादश शताब्दी पूर्वार्द्ध तक विश्रुत वत्स गोत्रीय ब्राह्मणों का केन्द्र सोणभद्र था जहाँ से वे बहिर्गत होने के पश्चात् कलचुरि राज्य रतनपुर में राज्याश्रय प्राप्त किये। ऐसा प्रतीत होता है कि सोणभद्र के वत्स गोत्रीय ब्राह्मणों का रतनपुर (मध्य प्रदेश) में प्रसार और प्रभाव बारहवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में में हुआ था।

टकारी

परमार देवपाल के मान्धाता दानपत्र (वि० सं० १२८२ = १२२५ ई०) से ज्ञात होता है कि द्वादश शताब्दी के उत्तरार्द्ध में टकारी वत्स गोत्रीय ब्राह्मणों का केन्द्र था जबकि वह भृग्वांगिरस कुल के भारद्वाज ब्राह्मणों का भी प्रख्यात आद्यस्थान माना जाता है। टकारी श्रावस्ती (गोंडा और बहराइच की सीमा पर स्थित वर्तमान सहेत-महेत) के निकट माना जाता है। मान्धाता दानपत्र से ज्ञात होता है कि त्रयोदश शताब्दी के पूर्वार्द्ध में टकारी से कौथुम शाखा तथा पञ्च-प्रवर 'भार्गव, आप्नुवान, और्व च्यवन और जामदग्नि' के वत्स गोत्रीय ब्राह्मण

---

१. 'द्विजवंश (श) जः'–मिराशी, कार्पस ४/२, पृ० ४२६

२. वही, पृ० ४२७

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

बहिर्गत हुए थे।[1] टकारी के 'त्रि'[2] (त्रिपाठी या त्रिवेदी) उपाधिधारी वत्स-गोत्रीय ब्राह्मणों का प्रसार और प्रभाव मालवा में परमार देवपाल के समय था। मालवा में 'त्रि' उपाधि परम्परागत रूप में प्रचलित हो गई थी। मान्धाता दानपत्र में वत्सगोत्र के त्रिवेद या त्रि उपाधिधारी ब्राह्मण (पितामह, पिता) जनार्दन तथा नरसिंह का नाम उल्लिखित है किन्तु पुत्र की उपाधि 'आव' (आवसथिक या अवस्थी) अभिनन्दशर्मा का था। 'आव'[3] उपाधिधारी ब्राह्मणों से ज्ञात होता है कि वत्स गोत्रियों में ऐसे भी ब्राह्मण थे जो अग्निहोत्र द्वारा होमाग्नि को सुरक्षित रखते थे। आव (अवस्थी या आवसथिक) उपाधिधारी ब्राह्मण अपने घरों में पावन अग्नि सुरक्षित रखते थे। टकारी से बहिर्गत हुए वत्स-गोत्रीय ब्राह्मणों के परिवारों में योग्यता और काम के आधार पर भिन्न-भिन्न उपाधियों को धारण करने की प्रथा प्रचलित थी। कहीं-कहीं परम्परागत 'त्रि' जैसी उपाधि इसी आधार पर धारण की जाती थी। उपरिवर्णित तथ्यों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि द्वादश शताब्दी के उत्तरार्द्ध में वत्स गोत्रीय केन्द्र टकारी था जहाँ त्रयोदश शताब्दी के पूर्वार्द्ध में वत्सगोत्रीय ब्राह्मण बहिर्गत होने के पश्चात् मालवा में प्रभाव जमाये।

द्रोण (द्रोणायण)

बंगाल के कम्बोज वंश के नरेश नयपालदेव के इर्दा ताम्रपत्र से ज्ञात होता है कि दशम शताब्दी के लगभग मध्यदेश में वत्स ब्राह्मणों का केन्द्र द्रोण[4] था, जहाँ से ब्राह्मणों का प्रसार बंगाल में हुआ। अभिलेख में उल्लिखित द्रोण ग्राम उत्तरप्रदेश के देवरिया जनपद में स्थित सलेमपुर तहसील में है, जो भाटपार के करीब दो मील की दूरी पर है। इस प्रकार के नाम का दूसरा ग्राम लार के निकट भी है। गोविन्दचन्द्र के दोनबुजुर्ग दानपत्र (वि० स० ११७६=१११९ ई०) में उल्लिखित वत्स ब्राह्मणों का केन्द्र द्रोणायण सलेम-पुर (देवरिया) के निकटवर्ती स्थान द्रोण या दोन से तादात्म्य स्थापित किया जाता है। द्रोणग्राम में छंदोग चरण, कौथुम शाखा, और पञ्चप्रवर–भार्गव, च्यवन, और्व, जामदग्नि, आप्नुवान–से सम्बन्धित वत्स गोत्रीय ब्राह्मणों का

---

१. टकारी स्थान विनिर्गताय कौथुम शाखाध्यायिने वत्सगोत्राय भार्गव च्यवन आप्नुवान और्व्व जामादग्नि········।–ए० इ०, ९, पृ० ११२

२-३ वही।

४. ए० इ०, २२, पृ० १५६, वही १४, पृ० २२२

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

निवास था।[1] द्रोणग्राम के वत्स ब्राह्मण भट्ट[2], उपाध्याय[3], और भट्ट[4]पुत्र पण्डित उपाधियों को धारण करते थे जिसके आधार पर ऐसा प्रतीत होता है कि वे ही लोग भट्ट उपाधि धारण करते थे जो विशेष प्रकार से विद्वान् हुआ करते थे। उपाध्याय उपाधिधारी ब्राह्मण अध्यापक या शिक्षक कहा जाता था जो अध्यापन-कार्य कर अपनी और अपनी परिवार की जीविका चलाता था। पंडित उपाधिधारी ब्राह्मण किसी विशेष विषय में दक्षता प्राप्त किया हुआ होता था। द्रोणग्राम के वत्स गोत्रीय ब्राह्मण भट्ट दिवाकर शर्मा, उपाध्याय प्रभाकर शर्मा, उपाध्याय अनुकूल मिश्र, भट्टपुत्र पण्डित अश्वत्थ शर्मा (प्रपितामह, पितामह, पिता, पुत्र)[5] एक ही प्रभावशाली परिवार में थे। उपाध्याय अनुकूलमिश्र[6] को पूज्य और प्रभावशाली ब्राह्मण समझा जता था। इर्दा दानपत्र में उल्लिखित वत्स परिवार के ब्राह्मणों के नामों में केवल उपाध्याय अनुकूल को ही 'मिश्र' उपनाम से सम्बोधित किया गया है। मिश्र उपनाम बहुत ही प्राचीन उपनाम है। संस्कृत नाटको में इसका अर्थ 'पूज्य' के रूप में लिया गया है।[7] नारायणपाल के अभिलेखों में उसके मंत्रियों के नाम के साथ मिश्र का उल्लेख मिलता है[8]। वत्स ब्राह्मण पण्डित अश्वत्थ शर्मा मीमांसक, व्याकरणाचार्य और तर्कशास्त्री था।[9]

वत्स ब्राह्मण परिवार में नामान्त 'कर' का प्रयोग हुआ है तथा प्रपितामह दिवाकर तथा पितामह प्रभाकर का नाम मिला है। यह परम्परागत उपपद ज्ञात होता है किन्तु इसी परिवार में बाद में कर उपपद का प्रयोग नहीं हुआ है। कर

---

१. 'भट्ट श्रीदिवाकरशर्म्मणः प्रपौत्राय उपाध्याय श्रीप्रभाकरशर्म्मणः पौत्राय उपाध्याय श्री अनुकूल मिश्राणम पुत्राय द्रोणोद्भव–कुंटिर विनिर्गताय वात्स-सगोत्राय भार्गवच्यवन-और्व्व-जामदग्नि-आप्नवान-प्रवराय छंदोग चरण कौथुम शाखाध्यायिने भट्टपुत्र पण्डित श्री अश्वत्थशर्म्मणे मीमांस-व्याकरण-तर्क्क-वेद-वेदिने।'—कम्बोज नरेश नयपालदेव का इर्दाताम्रपत्र, ए० इ०, २२, पृ० १५६

२-६. ए० इ०, २२, पृ० १५६

७. भास के लगभग सभी नाटकों में यह शब्द प्रयुक्त हुआ है। कालिदास के मालविकाग्निमित्र में आर्यमिश्रः प्रमाण में उल्लिखित हैं—आप्टे : सं० हि० कोश, पृ० ८०१ से उद्धृत

८. ए० इ०, २, पृ० १६०

९. वही, २२, पृ० १५६

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

उपपद का प्रयोग मध्यदेशीय वत्स गोत्रीय ब्राह्मण नामों के साथ भी हुआ है।[1] वत्स परिवारों में 'मिश्र' उपनाम प्रयोग से ऐसा प्रतीत होता है कि कुछ वत्स ब्राह्मण अपने उत्कृष्ट गुणों के कारण समाज में पूज्य स्थान प्राप्त किये थे। मिश्र उपनाम उनके पूज्य स्थान का द्योतक है। उपरिर्वणित तथ्यों को देखकर यह ज्ञात होता है कि सामवेदीय कौथुम शाखानुयायी और छंदोग चरण तथा पञ्चप्रवर से सम्बन्धित वत्स ब्राह्मणों का केन्द्र द्रोण था। द्रोण के ब्राह्मण परिवारों में भट्ट उपाधि का प्रयोग उनके विशिष्ट पाण्डित्य तथा विद्वत्ता का द्योतक है। सम्भवतः उनका शैक्षणिक प्रभाव बंगाल में व्याप्त था। उपाध्याय कार्य उनके व्यवसाय का द्योतक है। उक्त तथ्यों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि दशम शताब्दी में विख्यात वत्सगोत्रीय ब्राह्मणों का निवास स्थान द्रोण था जहाँ से उनका प्रसार बंगाल में कम्बोज नयपाल के समय हुआ।

द्रोणायण:

वत्स ब्राह्मणों में द्रोणग्राम से विनिर्गत होना विशेष महत्वपूर्ण था। इस विनिर्गत के आधार पर वत्स गोत्रियों का एक वर्ग द्रोणायन वत्स कहलाने लगा था। दोन बुजुर्ज अभिलेख में द्रोणायन वत्स गोत्र के ब्राह्मणों का उल्लेख है। दोन बुजुर्ज अभिलेख द्रोणायन के वत्सों के विनिर्गत द्रोणग्राम की पहचान के लिए विशेष महत्वपूर्ण है। दोन अथवा दोन बुजुर्ज जहाँ यह अभिलेख प्राप्त हुआ है, निस्संदेह ही अभिलेख में उल्लिखित द्रोणायन वत्सों का द्रोण दोन है।

सरयूपार के कलचुरि शाखा का अन्तिम शासक सोढ़देव था।[२] कहला दानपत्र जारी करने के पश्चात् विदित होता है कि वह त्रिपुरी के कलचुरियों का विश्वास खो दिया था।[३] बनारस जनपद से गहडवाल चन्द्रदेव ने त्रिपुरी के कलचुरि यशःकर्ण को भगा दिया था,[४] इसकी पुष्टि बनारस जनपद से प्राप्त चन्द्रावती दानपत्र[५] (वि० सं० ११४८=१०९० ई०) से होती है, जिससे प्रतीत होता है कि यशःकर्ण ने चन्द्रदेव को बनारस हार मानकर दिया था।[६]

---

१. कर उपपद का प्रचलन मध्यदेशीय वत्स गोत्र के ब्राह्मण परिवार में भी नामों के साथ था, इसकी पुष्टि बंगाल के विजय (१०९५–११५९) के बैरकपुर ताम्रपत्र में उल्लिखित वत्सब्राह्मण नाम उदयकरदेव, भास्करदेव, रहस्करदेवः रत्नाकर देव के नामों से होती है–इ० बं० ३, पृ० ६३

२-४. इ० बं०, ३, पृ० ६३

५. ए० इ०, भाग ९, पृ० ३०२
मिराशी, कार्पस, ४/१, पृ० ११४ की टिप्पणी सं० ४ से उद्धृत।

६. वही।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

ऐसा सम्भाव्य है कि सरयूपार की दुर्बल स्थिति देखकर गहडवाल नरेश का उस तरफ आक्रमण हुआ था। एकादश शताब्दी के उत्तरार्द्ध में सरयूपार में कलचुरियों की शक्ति नष्ट हो गई थी।[1] सम्भवतः सरयूपार के देवरिया में स्थित सलेमपुर के निकटवर्ती वत्स केन्द्र द्रोणायण के ब्राह्मणों का बहिर्गमन हुआ और ब्राह्मण धर्मावलम्बी गहडवाल शासक गोविन्दचन्द्र से सम्बन्ध होने के कारण मध्यदेश (विशेषकर कन्नौज राज्य) में राज्याश्रय मिला।

ऐसा ज्ञात होता है कि द्रोणायण के छंदोग शाखानुयायी वत्स गोत्र के विद्वान् ब्राह्मणों का पञ्चप्रवर भार्गव, च्यवन, और्व, आप्नुवान् और जामदग्नि था।[2] द्रोणायण के वत्स गोत्रीय ब्राह्मण भट्ट टुल्टाइच शर्मा[3] गोविन्दचन्द्र का दानग्रहीता था। टुल्टाइच शर्मा विद्वान् ब्राह्मण परिवार से सम्बन्धित था। विद्वान् परिवार होने का संकेत भट्ट उपाधिधारी द्रोणायण के वत्स गोत्रीय ब्राह्मणों के नामों से मिलता है। भट्ट श्रीनरसिंह, भट्ट श्री टुल्टाइच शर्मा[4] (प्रपौत्र, पितामह,, पुत्र के नाम) के नाम ध्यातव्य हैं। ऐसा भी सम्भाव्य है कि भट्ट परम्परागत उपाधि हो गयी थी फिर भी द्रोणायण का यह वत्स ब्राह्मण विशेष रूप से शिक्षित और प्रभावशाली समझा जाता था। उपरिर्वाणित टुल्टाइच शर्मा दानग्रहीता के रूप में उल्लिखित है। ऐसा प्रतीत होता है कि गहडवाल गोविन्दचन्द्र ने वत्स गोत्र के ब्राह्मण को विशेष रूप से पवित्र मानकर बड़ग्राम दान देकर सम्मानित किया था।[5] द्रोणायण के वत्सगोत्रीय ब्राह्मणों का किसी न किसी रूप में धार्मिक प्रभाव था। ऐसा सम्भाव्य है कि वत्स गोत्रीय ब्राह्मणों की जीविका भूमि या अन्य किसी दानसामग्री के माध्यम से चलती थी। सामवेदीय छंदोग शाखा के वत्स गोत्र के भट्ट उपाधिधारी ब्राह्मणों के नामों से ज्ञात होता है कि वे महान् विद्वान् ब्राह्मण हुआ करते थे। भट्ट उपाधि उनकी विद्वत्ता या किसी विषय में दक्षता का द्योतक है।

---

१. वही, पृ० ११४

२. 'द्रोणायणषडीयवच्छ (त्स) गोत्राय भार्गवच्यववा (न) और्व्व (और्व) जामद्(द) ग्न्य आप्नवानप (पं) चप्रवराय छं (i) दोगसा (शा) खिने। भट्ट श्री नरसिंह प्रपौशाय भट्ट श्री जान्ता पौत्राय श्री जान्ता पौत्राय श्रीपून्त पुत्राय भट्ट श्री टुस्टाइचश्व (श) र्म्मणे ···। गोविन्दचन्द्र का दोन बुजुर्ज दानपत्र, अभिलेख ए०इ०, १८, पृ० २२२

३-५. वही, १८, पृ० २२२

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

उपरिर्वणित तथ्यों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि एकादश शताब्दी के उत्तरार्द्ध में छंदोगशाखा और पञ्चप्रवर के वत्स गोत्रीय ब्राह्मणों का केन्द्र द्रोणायण था, जहाँ से उनका प्रसार तथा प्रभाव द्वादश शताब्दी के पूर्वार्द्ध में मध्यदेश में गहडवाल गोविन्दचन्द्र के समय में हुआ था।

मुञ्ज स्थान

शिलाहार मुम्मुनिराज के ताम्रपत्र के आधार पर ज्ञात होता है कि मध्य-देश में स्थित मुञ्ज स्थान है। मुञ्ज का तादात्म्य कानपुर से १० मील दक्षिण में स्थित मझवां से स्थापित किया जाता है तथा अन्य लोग इसका तादात्म्य एटा से दक्षिण १४ मील की दूरी पर इसी नाम के ग्राम से स्थापित करते हैं। मुञ्ज में ब्राह्मणों का किला था, जिसको नष्ट करना महमूद गजनवी सम्भवतः चाहता था। १०१८ ई० में महमूद गजनवी की सेना मध्यदेश में घुस आई थी।[१] प्रतिहार शासक राज्यपाल डर के मारे कन्नौज से अन्यत्र भाग गया। महमूद की सेना ने कन्नौज में लूटपाट किया।[२] तत्पश्चात् मुंज पर धावा बोल कर इसी प्रकार का कार्य किया। मुञ्ज के लोगों के रक्षार्थ युद्ध करना पड़ा किन्तु उन्हें भी प्राण देने पड़े।[३] ऐसा सम्भाव्य है कि इन दिनों मुंज में आतंक की स्थिति में वत्स गोत्रीय ब्राह्मणों को अपने रक्षार्थ दक्षिण कोंकण में शिलाहार मुम्मुनिराज के समय में जाना पड़ा। दशम शताब्दी के उत्तरार्द्ध तथा एकादश शताब्दी के पूर्वार्द्ध में वह्वृच् शाखानुयायी वत्स ब्राह्मणों का केन्द्र मुंज था,[४] जहाँ से विनिर्गत होने के पश्चात् वे कोंकण में फैल गये। मुंज के वत्स ब्राह्मणों के नामों के साथ उपनाम दीक्षित[५] का प्रयोग परम्परागत रूप में ज्ञात होता है। ऐसा सम्भाव्य है कि वे पुरोहिती कृत्यों को करते थे। उपरिर्वणित दानपत्र के आधार पर कहा जाना समीचीन होगा कि दशवीं शताब्दी में वत्स ब्राह्मणों का केन्द्र मुञ्ज था, जिनका कोंकण में प्रसार और प्रभाव लगभग ग्यारहवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में हुआ।

मध्यदेश

१०१४ ई० में मध्यदेश (कन्नौज अथवा कान्यकुब्ज ?) पर महमूद गज-

---

१. वर्मा, धीरेन्द्र- 'मध्यदेश', पृ० १५३
२. मजूमदार तथा पुशालकर (सम्पादक), 'द स्ट्रगिल फार इम्पायर', पृ० १४
३-४. वही, पृ० १५
५. 'मध्यदेसा (शा) न्तष्याति मुञ्ज स्थान विनिर्गत वत्स गोत्रव (ब) ह्वृच् साखा (शाखः) देवधर दीक्षित (:) यज्ञ दीक्षित सुत,–मुम्मुनिराज का दानपत्र, ए० इ०, २५, पृ० ६१

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

नवी का प्रथम आक्रमण हुआ था और थानेश्वर मुसलमानों के हाथ में चला गया था। [1] लगभग १०१८ ई० में कान्यकुब्ज के प्रतिहार शासक महाराज राज्यपाल की शक्ति नष्ट होने के कारण महमूद गजनवी की सेनायें आतंक फैलाते हुए मध्य देश में घुस पड़ीं। [2] मुसलमान आक्रमणकारियों ने प्रथम बार में ही मध्यदेश के प्रसिद्ध नगर मथुरा, कन्नौज आदि का धन-जन लूटा था और प्राचीन भवन और मन्दिर नष्ट किये। [3] ऐसा सम्भाव्य है कि तत्कालीन मध्यदेश की अस्थिर राजनीतिक स्थिति तथा मुसलमानों द्वारा ब्राह्मण धर्म के विरुद्ध में किये गये अत्याचारों के कारण लगभग एकादश शताब्दी के पूर्वार्द्ध में मध्यदेश से वत्स गोत्रीय ब्राह्मणों का बहिर्गमन हुआ, जिसका उल्लेख बंगाल के सेन नरेश विजय सेन (१०९५-११५८ ई०) के बैरकपुर ताम्रपत्र में किया गया है। [4] ऐसा प्रतीत होता है कि एकादश शताब्दी के पूर्वार्द्ध में मध्यदेश से ऋग्वेदीय आश्वलायन शाखा और पञ्चप्रवर 'भार्गव, च्यवन, आप्नुवान तथा और्व' के वत्स ब्राह्मणों [5] का देशान्तरगमन हुआ। तत्पश्चात् उनका प्रसार बंगाल में एकादश शताब्दी के उत्तरार्द्ध तथा द्वादश शताब्दी के पूर्वार्द्ध में हुआ। बंगाल में मध्यदेशीय वत्स केन्द्र कान्तिजोंग था [6] जिनका तादात्म्य अभी स्थापित नहीं हुआ है। वत्स गोत्रीय ब्राह्मण श्री उदयकर शर्मा को विक्रमपुर के राजमहल में महादेवी विलास देवी ने कनकतुला पुरुषमहादान देते समय यज्ञ और होमादिक कृत्यों के कारण दक्षिण में घाससम्भोगभट्ट बड़ाग्राम (खाड़ी विषय) दान दी थी[7]। संभवतः उदयकरशर्मा राजपुरोहित या महापुरोहित था। उदयकरशर्मा वेद के छः अंग[8] (शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छंद और ज्योतिष) का अध्येता था। ऐसा संभाव्य है कि वत्स ब्राह्मणों के यहां वेद तथा षड्वेदांग पढ़ने और पढ़ाने की व्यवस्था थी। कांतिजोंग के निवासी मध्यदेशीय ब्राह्मणों के नामों के साथ दो नामान्त (उपपद) कर तथा देव[9] का प्रयोग हुआ है। ब्राह्मण रत्नाकरदेव, रहस्करदेव, भास्करदेव और उदयकरदेव[10] (प्रपितामह, पितामह, पिता तथा पुत्र) के नाम इस सम्बन्ध में ध्यातव्य हैं। ऐसा ज्ञात होता है कि उपपदों को नामों के साथ जोड़ने की यह प्रथा परम्परागत हो गयी थी।

---

१. वर्मा, धीरेन्द्र—'मध्यदेश', पृ० १६८

२. त्रिपाठी, आर० एस०-'द हिस्ट्री आफ कन्नौज', पृ० २८४—२८६

३. वर्मा, धीरेन्द्र-'मध्यदेश', पृ० १६८

४. इ० बं०, ३, पृ० ६३

५-१०. विजयसेन का बैरकपुर ताम्रपत्र, इ० बं०, ३, पृ० ६३

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

उपर्युक्त तथ्यों से ज्ञात होता है कि वत्स ब्राह्मणों का प्रभाव सेन राजवंश पर था। राजमहल में उदयकर शर्मा को महादान देते समय रानी विलासदेवी के सामने होमादिक कृत्यों को करना पड़ा था, जहाँ उसको विशिष्ट सम्मान के साथ दान मिला। राजप्रासाद के वत्स ब्राह्मण को विशिष्ट सम्मान देने से स्पष्ट ज्ञात होता है कि वह प्रभावशाली ब्राह्मण था। यह सम्भाव्य है कि कान्तिजोंग के वत्स ब्राह्मणों का बंगाल में धार्मिक प्रभाव व्याप्त था। सम्भवतः महादान में होमादिक कृत्यों को वत्स ब्राह्मण उदयकर को राजपुरोहित या पुरोहित के रूप में होकर करना पड़ा था। पुरोहिती कृत्य वत्स ब्राह्मणों के व्यवसाय का द्योतक है। सम्भव हो कि वत्स ब्राह्मणों के अन्य बहुत से परिवारों में पुरोहिती कार्यों या यजमानी कृत्यों के माध्यम से जीवन का भरण-पोषण होता था। ऋग्वेदीय वत्स ब्राह्मणों का शैक्षणिक प्रभाव बंगाल में था। उदयकर शर्मा वेद-वेदांग से पूर्ण भिज्ञ था। दो नामान्त 'कर' तथा 'देव' वत्स ब्राह्मणों के नामों के साथ रखना और इसको परम्परागत रूप से प्रचलन में लाना उनके धार्मिक विश्वास का द्योतक है। उक्त ताम्रपत्र से विदित होता है कि मध्यदेश से बहिर्गत हुए ऋग्वेद, आश्वलायन शाखा तथा पञ्चप्रवर (भार्गव, च्यवन, आप्नुवान्, और्व और जामदग्नि) के वत्स गोत्रीय ब्राह्मणों का प्रसार तथा प्रभाव बंगाल में लगभग एकादश शताब्दी के उत्तरार्द्ध और द्वादश शताब्दी के पूर्वार्द्ध में था।

गौतम केन्द्र

परमार देवपाल तथा जयवर्मन द्वितीय के मान्धाता दानपत्र से ज्ञात होता है कि मध्यदेश में गौतम गोत्रीय ब्राह्मणों के प्रमुख केन्द्र महावन[1] और टकारी थे, जहाँ से उनका देशान्तर गमन लगभग द्वादश शताब्दी के उत्तरार्द्ध से लेकर त्रयोदश शताब्दी के उत्तरार्द्ध के प्रथम भाग तक होता रहा[2]। उन्हीं दिनों देश के अनेक भागों से विभिन्न गोत्र के ब्राह्मणों का आगमन मालवा में हुआ था[3], जिनमें महावन तथा टकारी के गौतम ब्राह्मणों को भी दान दिया गया।[4]

महावन

परमार देवपाल के मान्धाता दानपत्र (वि॰सं॰ १२८२=१२२५ ई०)

---

१. देवपाल का मान्धाता दानपत्र, ए० इ०, ९, पृ० ११२
२. जयवर्मन द्वितीय का मान्धाता दानपत्र, वही, पृ० १२१
३. देवपाल तथा जयवर्मन द्वितीय का मान्धाता दानपत्र, वही, पृ० ११०-१२३
४. वहीं, पृ० ११२,१२१

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

में उल्लिखित गौतम केन्द्र महावन स्थान मथुरा में यमुना के तट पर स्थित है ।[1] महावन ही व्रज है ।[2] चैतन्यचरितामृत में इसे गोकुल बताया गया है ।[3] मान्धाता दानपत्र के आधार पर मथुरा के निकटवर्ती स्थान महावन से गौतम गोत्रीय ब्राह्मणों के बहिर्गमन का काल लगभग एकादश शताब्दी के पूर्वार्द्ध के प्रथम भाग या द्वितीय भाग से लेकर द्वादश शताब्दी के उत्तरार्द्ध तक निर्धारित किया जा सकता है । गौतम गोत्र के दानग्रहीता ब्राह्मण का समय लगभग द्वादश शताब्दी के उत्तरार्द्ध से लेकर त्रयोदश शताब्दी के पूर्वार्द्ध तक ज्ञात होता है ।[4] दानपत्र में उसके पितामह[5] का भी उल्लेख है, जिसका काल एकादश शताब्दी पूर्वार्द्ध होगा । गौतम गोत्रीय ब्राह्मणों का बहिर्गमन लगभग एकादश शताब्दी के पूर्वार्द्ध में महमूद गजनवी के मथुरा और महावन पर आक्रमण तथा लूटपाट के कारण[6] हुआ था । महावन से विनिर्गत कौथुम शाखानुयायी त्रिप्रवर—गौतम अंगिरस, औतथ्य (औचथ्य) और गौतम गोत्र के ब्राह्मण हुए थे ।[7] महावन के गौतम गोत्रीय ब्राह्मण पंडित[8] उपाधिधारी हुआ करते थे । पितामह, पिता और पुत्र (पं मदन, पं काण्हड तथा पं०कुलधर)[9] को पंडित उपाधिधारी ब्राह्मण के रूप में उल्लेख किया गया, जिससे प्रतीत होता है कि गौतम परिवार में पंडित उपाधि परम्परागत हो गई थी ।

उपर्युक्त तथ्यों से संकेत मिलता है कि एकादश तथा द्वादश शताब्दी में महावन के गौतम गोत्रीय ब्राह्मणों ने वेद, शास्त्र तथा अन्य विद्याओं में पांडित्य प्राप्त किये थे । ऐसा सम्भाव्य है कि उनके पांडित्य से मालवा के परमार शासक देवपाल भी प्रभावित था । ऐसी अवस्था में कहा जाता है

---

१. मजूमदार तथा पुशालकर (सम्पादक), 'द स्ट्रगिल फार इम्पायर', पृ० १३

२-३. डे, एन०एन०- 'द जियोग्राफिकल डिक्सनरी आफ एन्शियेन्ट एण्ड मेडियवेल इन्डिया', पृ० ११९

४. ए० इ०, ९, पृ० १०८

५. वही, पृ० ११२

६. मजूमदार तथा पुशालकर (सम्पादक), 'द स्ट्रगिल फार इम्पायर', पृ० १४–१५

७-९. 'महावनस्थानविनिर्गताय कौथुमशाखाध्यायिने गौतमगोत्राय गौतमअङ्गिरस–औतथ्य-इति त्रिप्रवराय पं मदन-पौत्राय पं काण्हड-पुत्राय पं कुलधर शर्म्मणे ब्राह्मणाय,-देवपाल का मान्धाता दानपत्र, ए० इ०, ९, पृ० ११२

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

कि महावन से गौतम गोत्रीय ब्राह्मणों का मालवा में प्रभाव तथा प्रसार लगभग द्वादश शताब्दी के उत्तरार्द्ध से लेकर त्रयोदश शताब्दी के पूर्वार्द्ध तक हुआ था ।

टकारी

टकारी को प्रायः सरयूपार प्रदेश में श्रावस्ती का निकटवर्ती स्थान माना जाता है । गौतम–केन्द्र टकारी[1] का उल्लेख परमार जयवर्मन द्वितीय के मान्धाता दानपत्र (वि०सं० १३१७=१२६० ई०)[2] में हुआ है । ऐसा प्रतीत होता है कि सम्भवतः गौतम गोत्रीय ब्राह्मणों का बहिर्गमन एकादश शताब्दी के उत्तरार्द्ध में उस समय हुआ था जब सरयूपार से कलचुरि शासक सोढ़देव का शासन समाप्त हो गया था ।[3] गहड़वाल नरेश चन्द्रदेव के चन्द्रावती दानपत्र[4] (वि॰सं० ११४८=१०९० ई०) से ज्ञात होता है कि चन्द्रदेव ने त्रिपुरी के कलचुरि शासक यशःकर्ण (सरयूपार के कलचुरि शाखा से सम्बन्धित त्रिपुरी की कलचुरि शाखा) को बनारस के युद्ध में परास्त किया था । ऐसा सम्भव है कि तत्कालीन गहडवालों ने सरयूपार प्रदेश के भीतर निर्बल राज्य सत्ता होने के कारण उसे अपना प्रभाव क्षेत्र बना लिया था ।[5] इसके अतिरिक्त सरयूपार प्रदेश में कलचुरियों के पतन के समय श्रावस्ती क्षेत्र में अशान्ति उत्पन्न हुई हो तथा उस स्थान के निकटवर्ती स्थान टकारी से गौतम गोत्रीय ब्राह्मणों का बहिर्गमन एकादश शताब्दी के उत्तरार्द्ध में हुआ । मान्धाता दानपत्र के आधार पर यह कहा जा सकता है कि टकारी के गौतम गोत्रीय दानग्रहीता ब्राह्मण के पितामह का भी उल्लेख है जिसका समय लगभग एकादश शताब्दी के उत्तरार्द्ध से लेकर द्वादश शताब्दी के पूर्वार्द्ध तक रखा जा सकता है। उक्त तथ्यों के विवेचन से जान पड़ता है कि एकादश शताब्दी के पूर्वार्द्ध में टकारी से गौतम ब्राह्मणों का बहिर्गमन हुआ और उनका प्रसार मालवा में परमार जयवर्मन द्वितीय के समय में हुआ ।

---

१. ए० इ०, ९, पृ० १२२
२. वही, पृ० १२१
३. मिराशी, कार्पस, ४/२, १, पृ० ११४
४. वही ।
५. 'टकारीस्थानविनिर्गताय गौतमसगोत्राय गौतम-अङ्गिरस-औतथ्यइति-त्रिप्रवराय आश्वलायनशाखाध्यायिने···ब्राह्मणाय'–जयवर्मन द्वितीय का मान्धाता दानपत्र, ए० इ०, ९ पृ० १२२

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

जयवर्मन द्वितीय के मान्धाता दानपत्र (वि० सं० १३१७=१२६० ई०) के अनुसार टकारी में आश्वलायन शाखानुयायी तथा त्रिप्रवर ('गौतम, अङ्गिरस, औचथ्य') से सम्बन्धित गौतम ब्राह्मण रहते थे।[1] टकारी स्थान के गौतम ब्राह्मण द्वि[2] (द्विवेदी) और च[3] चतुर्वेदी उपाधिधारी होते थे। एक ही परिवार में भिन्न-भिन्न उपाधिधारी ब्राह्मणों के नामों का उल्लेख हुआ है जिनके आधार पर यह संकेत मिलता है कि योग्यता के आधार पर उपाधियों को धारण करने की प्रथा प्रचलित थी। उपाधियों का प्रयोग परम्परागत हो गया था। मान्धाता दानपत्र में जयवर्मन द्वितीय का दान-ग्रहीता टकारी का गौतम ब्राह्मण 'च' उपाधि धारण किया था।[4] ऐसा सम्भाव्य है कि उक्त ब्राह्मण चारों वेदों का अध्ययन किया था। इसके चातुर्विद्य के अतिरिक्त दानग्रहीता के पिता तथा पितामह के नाम के साथ द्वि (द्विवेद) उपाधि[5] का प्रयोग हुआ है। द्विवेदी या द्विवेद उपाधिधारी ब्राह्मण से तात्पर्य वह ब्राह्मण है जो दो वेदों का अध्ययन कर चुका हो। उपर्युक्त तथ्यों से संकेत मिलता है कि टकारी के आश्वलायन शाखानुयायी तथा त्रिप्रवर (गौतम, अङ्गिरस, तथा औचथ्य) से सम्बन्धित गौतम ब्राह्मण वेदों में विशिष्ट दक्षता प्राप्त किये थे। ऐसा सम्भाव्य है कि वेदों के आधार पर उक्त ब्राह्मणों को द्विवेद या द्विवेदी या चातुर्विद्य उपाधिधारी ब्राह्मण मालवा में परमार जयवर्मन द्वितीय के समय (१२६० ई०) में समझा जाता था।

उपर्युक्त तथ्यों के आधार पर यह कहा जाना समीचीन होगा कि टकारी गौतम ब्राह्मणों का केन्द्र था, जहाँ एकादश शताब्दी के उत्तरार्द्ध से लेकर द्वादश शताब्दी तक विशेष प्रभाव दिखाई पड़ता है तथा वहाँ से उनका प्रभाव और प्रसार त्रयोदश शताब्दी के उत्तरार्द्ध के प्रथम भाग तक मालवा में परमार जयवर्मन द्वितीय के समय तक होता रहा।

भार्गव केन्द्र

भार्गव गोत्रीय ब्राह्मणों के प्रमुख केन्द्र चन्दवार तथा मथुरा का

---

१. 'टकारी स्थानविनिर्गताय गौतमसगोत्राय गौतम-अङ्गिरस-औचथ्य-इति-त्रिप्रवराय आश्वलायनशाखाध्यायिने-ब्राह्मणाय'-जयवर्मन द्वितीय का मान्धाता दानपत्र, ए० इ०,९, पृ० १२२

२. 'द्वि लांशू पौत्राय द्वि लीमदेव पुत्राय च जनार्ज्जनशर्म्मणे ब्राह्मणाय'-वही।

३-५. वही।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

उल्लेख पाल सामन्त[1] और परमार[2] दानपत्रों में हुआ, जिनका समय लगभग द्वादश शताब्दी के उत्तरार्द्ध से लेकर त्रयोदश शताब्दी के पूर्वार्द्ध के बीच रखा जाता है। उक्त दानपत्रों से संकेत मिलता है कि चन्दवार के भार्गव ब्राह्मणों का प्रसार बंगाल में हुआ, जबकि मथुरा के भार्गव ब्राह्मणों का प्रसार मालवा में भी था।

चन्दवार

उत्तर प्रदेश में एटा के निकट चन्दवार है, जिसका उल्लेख मुस्लिम इतिहासकारों ने किया है।[3] चन्दवार तथा एटा के बीच युद्ध में शहाबुद्दीन मुहम्मद गोरी ने गहड़वाल जयचन्द को परास्त किया था।[4] यह युद्ध ११९४ ई० के बाद हुआ था।[5] ऐसा सम्भाव्य है कि अन्य स्थानों की तरह एटा के निकटवर्ती स्थान चन्दवार को भी जीतने के पश्चात् लूटपाट जैसे विध्वंसक कार्य मुसलमानों द्वारा किया गया, जिसके परिणाम स्वरूप चन्दवार से भार्गव गोत्रीय ब्राह्मण अपने धर्म आदि के रक्षार्थ बहिर्गत हुए तथा बंगाल में जाने पर उनको दान मिला जिसकी सहायता से वे वहाँ रहने लगे।

पाल सामंत ईश्वर घोष के रामगंज के ताम्रपत्र (द्वादश शताब्दी का उत्तरार्द्ध) से ज्ञात हुआ है कि चंदवार से विनिर्गत हुए यजुर्वेदीय भार्गव ब्राह्मणों के पंचप्रवर ऋषियों के नाम—आप्नुवान्, और्व, जमदग्नि, च्यवन, तथा भार्गव हैं।[6] दानपत्र में दो बार प्रवर ऋषियों के नामों का उल्लेख हुआ है।[7] प्रथम बार में केवल तीन ऋषियों के नामों (जमदग्नि, और्व, आप्नुवान) का उल्लेख है।[8] ऐसा आभास होता है कि किसी कारण से दो ऋषियों का नाम (च्यवन तथा भार्गव) छूट गया है किन्तु दूसरी बार पंचप्रवर का उल्लेख करते समय पांच ऋषियों के नामों[9] का उल्लेख किया गया है, जो उपरिवर्णित है। रामगंज ताम्रपत्र के आधार पर ज्ञात होता है कि चन्दवार में भार्गव ब्राह्मण विद्वान् हुआ करते थे जैसा कि उनके भट्ट[10] उपाधि से ज्ञात होता है। भट्ट उपाधिधारी तीन ब्राह्मणों के नामों का उल्लेख मिलता है। पितामह भट्ट पिता वासुदेव (सम्भवतः भट्ट उपाधि मिट गया है) तथा पुत्र भट्ट निव्बोक शर्मा के नाम ध्यातव्य हैं।[11]

---

१. ईश्वरघोष का रामगंज ताम्रपत्र, इ० बं०, ३, पृ० १५५
२. देवपाल का मान्धाता दानपत्र, ए० इ०, ९, पृ० १११
३. तबकात-ए-नासिरी, (रेवर्टी का अनुवाद), पृ० ४७०-७४२
   इलियट : हिस्ट्री आफ इण्डिया, २, पृ० २९७
४-५. त्रिपाठी, आर० एस०— 'द हिस्ट्री आफ कन्नौज', पृ० ३२८–३२९
६-११. ईश्वरघोष का रामगंज दानपत्र, इ० बं०, ३, पृ० १५४

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

इस परिवार में भट्ट उपाधि आनुवंशिक प्रतीत होती है। चंदवार के भार्गव गोत्रीय ब्राह्मणों को अपने विशिष्ट पांडित्य के कारण बंगाल में सम्मान प्राप्त था। सम्भवतः अपने पांडित्य के कारण ही उन्हें समाज में प्रतिष्ठा प्राप्त थी। उन्होंने समाज को प्रभावित किया था। इन्हीं परिस्थितियों में पाल सामन्त भी उनकी विद्वता से प्रभावित होकर भार्गव ब्राह्मण को भूमिदान देना स्वीकार किया था।

उपरिवर्णित रामगंज दानपत्र के आधार पर कहा जा सकता है कि द्वादश शताब्दी के उत्तरार्द्ध और त्रयोदश शताब्दी के पूर्वार्द्ध में चंदवार के भार्गव ब्राह्मण का प्रसार तथा प्रभाव बंगाल में हुआ।

मथुरा

देवपाल के मान्धाता दानपत्र में उल्लिखित मथुरा के भार्गव गोत्रीय ब्राह्मणों का देशान्तर गमन[1] सम्भवतः मुस्लिम आतंक से हुआ था। ऐसा सम्भाव्य है कि पृथ्वीराज और मुहम्मदगोरी के बीच तराइन (११९२ ई०) तथा मुहम्मद गोरी और गहड़वाल जयचन्द्र के बीच चन्दवार (११९४ ई०)[2] के युद्धों के कारण मध्यदेश में आतंक फैला हुआ था। उन्हीं दिनों मुस्लिम आक्रामक अनेक प्रकार की लूटपाट तथा देव मन्दिरों और तीर्थ स्थानों को नष्ट करने में व्यस्त थे। मथुरा भी इससे अछूता न रहा होगा। इन्हीं विकट परिस्थितियों में लगभग द्वादश शताब्दी के उत्तरार्द्ध में मथुरा से भी भार्गव ब्राह्मणों का बहिर्गमन हुआ होगा। उक्त मान्धाता दानपत्र के आधार पर ज्ञात होता है कि अन्य गोत्रों के ब्राह्मणों का भी बहिर्गमन इन्हीं परिस्थितियों में मथुरा से हुआ था।

मथुरा के बहिर्गत हुए भार्गव ब्राह्मण आश्वलायन शाखानुयायी थे।[3] उनके त्रिप्रवर ऋषियों के नाम भार्गव, वैतहव्य तथा सावेतस[4] का उल्लेख है, जब कि पाल सामन्त ईश्वरघोष के रामगंज के दानपत्र में चंदवार के भार्गव गोत्रीय ब्राह्मणों के पंचप्रवर ऋषियों के नाम आप्नुवान, और्व, जमदग्नि, च्यवन तथा

---

१. 'मथुरास्थानविनिर्गताय आश्वलायनशाखाध्यायिने भार्गवगोत्राय' देवपाल का मान्धाता दानपत्र, ए० इ०, ९, पृ० १११
२. त्रिपाठी, आर० एस०—'द हिस्ट्री आफ कन्नौज', पृ० ३२७-२९
३. ए० इ०, ९, पृ० १११
४. 'भार्गवगोत्रमथुरास्थानविनिर्गताय आश्वलायनशाखाध्यायिने भार्गव—गोत्राय भार्गववैतहव्य—सावेतस इति त्रिप्रवराय च पवित्र-पौत्राय च धरणीधर-पुत्राय च गर्भेश्वर शर्मणे ब्राह्मणाय' – ए० इ०, ९, पृ० १११

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America, HHFA(USA)

भार्गव का उल्लेख है।[1] मान्धाता दानपत्र से ज्ञात होता है कि आश्वलायन शाखानुयायी भार्गव ब्राह्मण चातुर्विद्य हुआ करते थे। भार्गव ब्राह्मणों द्वारा 'च'[2] (चतुर्वेदीय या चातुर्विद्य) उपाधि धारण की जाती थी जिससे यह संकेत मिलता है कि उनके परिवार में चारों वेदों का अध्ययन होता था। भार्गव ब्राह्मणों के नाम के साथ 'च' उपाधि आनुवंशिक हो गई थी, क्योंकि दानपत्र में पितामह 'च' पवित्र, पिता 'च' धरणीधर तथा पुत्र 'च' गर्मेश्वर के नाम का उल्लेख मिलता है।[3]

उपर्युक्त तथ्यों से ज्ञात होता है कि मथुरा से बहिर्गत हुए ऋग्वेदीय भार्गव ब्राह्मण चारों वेदों के ज्ञाता होते थे। सम्भवतः चारों वेदों के ज्ञाता होने के कारण ही मथुरा के चतुर्वेदी समुदाय या चौबे ब्राह्मण विशिष्ट सम्मान के पात्र समझे जाते थे।

पाराशर केन्द्र

मध्यदेश के पाराशर गोत्रीय ब्राह्मणों के विनिर्गत और वास्तव्य के सम्बन्ध में सूचना पाल, कलचुरि तथा परमार दानपत्रों से मिलती है। बागड दानपत्र के आधार पर ज्ञात होता है कि मध्यदेश में हस्तिपद के पराशर गोत्र के ब्राह्मणों का प्रसार चावटी (बंगाल का सुप्रसिद्ध चट ग्राम अथवा चट गाँव) में हुआ था।[4] हस्तिग्राम के ब्राह्मणों को सरयूपार के कलचुरि सोढदेव ने एकादश शताब्दी के उत्तरार्द्ध में दान दिया था।[5] मान्धाता दानपत्र से ज्ञात होता है कि हस्तिनापुर के पराशर ब्राह्मणों का आगमन मालवा में परमार देवपाल के समय में हुआ था।[6] लगभग दशम शताब्दी के उत्तरार्द्ध से लेकर त्रयोदश शताब्दी के पूर्वार्द्ध तक उक्त पराशर ब्राह्मणों के बहिर्गमन तथा प्रसार का काल निर्धारित किया जाता है।

हस्तिपाद

हस्तिपाद को मध्यदेश के सरयूपार प्रदेश में स्थित माना जाता है। कुछ विद्वान् हस्तिपाद (हस्तिपद) तथा हस्तिग्राम को एक ही मानते हैं।[7] हस्तिग्राम

---

१. इ० बं०, ३, पृ० १५५
२-३. ए० इ०, ९, पृ० १११
४. महिपाल प्रथम का बागड़ दानपत्र, ए० इ०, १४, पृ० ३२६
५. सोढदेव का कहला दानपत्र, मिराशी, कार्पस, ४/२, पृ० ३९०
६. देवपाल का मान्धाता दानपत्र, ए० इ०, ९, पृ० ११९
७. साहित्य परिषद् पत्रिका, १३४१ (१९३४ ई०), पृ० २५

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

का उल्लेख उत्तर प्रदेश के गोरखपुर जनपद में स्थित सोढदेव के कहला दानपत्र में हुआ है।[1] इस ग्राम का उल्लेख दीघनिकाय (२, पृ० १२३) में भी प्राप्त है और संयुत्त निकाय (४, पृ० १०९) से ज्ञात होता है कि बुद्ध अपने यात्रा-काल में राजगृह से कुशीनगर हत्तिग्राम (हस्तिग्राम) से होकर गये थे। इस प्रकार यह स्पष्ट है कि हस्तिपद या हस्तिपाद या हस्तिग्राम अथवा हस्ति गाँव मध्यदेश में स्थित था। हस्तिपद से पराशर ब्राह्मणों का बहिर्गमन उस समय हुआ था जब कि सरयूपार प्रदेश में नवम शताब्दी के उत्तरार्द्ध में कलचुरि शासक शंकरगण को पूर्वी पड़ोसी पाल शासक देवपाल धमकियाँ[2] दिया था, जिसका सामना करने के लिये तत्काल कन्नौज के शक्तिशाली प्रतिहार-शासक भोज तथा त्रिपुरी-शासक से मित्रता करनी पड़ी थी।[3] महिपाल प्रथम के बांगड दानपत्र में उल्लिखित दानग्रहीता का पितामह सम्भवतः नवम शताब्दी के उत्तरार्द्ध तथा दशम शताब्दी के पूर्वार्द्ध के बीच हस्तिपद से बहिर्गत हुआ था और उसके परिवार को बंगाल में राज्याश्रय प्राप्त हुआ। हस्तिपद के यजुर्वेदीय वाजसनेय शाखानुयायी के परासर (पराशर) गोत्र के ब्राह्मण का सम्बन्ध त्रिप्रवर[4] से था। त्रिप्रवर के ऋषियों[5] के नाम शक्ति, वशिष्ट (वशिष्ठ) तथा परासर (पराशर) का उल्लेख किया गया है। हस्तिपद के यजुर्वेदीय परासर (पराशर) ब्राह्मणों का प्रसार चावटि (बंगाल का चट ग्राम) में हुआ था।[6] इस चावटि या चावटी ग्राम का तादात्म्य चट-ग्राम से स्थापित किया जाता है। बंगाल के राढ़ीया ब्राह्मणों के ५६ ग्रामों में चटग्राम भी है, जहाँ के ब्राह्मणों को बंगाल में सम्मानित किया जाता था। ऐसा संकेत मिलता है कि चावटि (चट) ग्राम निवासी हस्तपाद ग्राम के यजुर्वेदीय पराशर ब्राह्मण मीमांसक, व्याकरणाचार्य तथा तर्कशास्त्री होते थे।[7] ऐसा सम्भाव्य है कि अपने पांडित्य के कारण पराशर ब्राह्मण पाल राज्य में प्रभावशाली विद्वान् समझे जाते थे। भट्टपुत्र कृष्णादित्य[8] के नाम

---

१. मिराशी, कार्पस, ४/२, पृ० ३९०

२. वही, ४/१, भूमिका, पृ० ११३

३. वही।

४-८. 'परासर-सगोत्राय। शक्ति।वशिष्ठ। परासर-प्रवराय। यजुर्वेद-सब्रह्मचारिणे वाजसनेय-शाखाध्यायिने मीमांसा-व्याकरण-तर्क-विद्याविदे। हस्तिपद ग्राम-विनिर्गताय चावटि-ग्राम-वास्तव्याय भट्टपुत्र-ऋषिकेशपौत्राय भट्टपुत्र मधुसूदनपुत्राय भट्टपुत्रकृष्णादित्य-शर्म्मणे'-महिपाल का बांगड़ दानपत्र, ए० इ०, १४, पृ० ३२६

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America, HHFA(USA)

का उल्लेख हुआ है, जिससे ज्ञात होता है कि वह किसी विशिष्ट विद्वान् का पुत्र था। उक्त प्रभावशाली ब्राह्मण परिवारों में उच्चस्तरीय शिक्षा के माध्यम से आजीविका चलती थी। उसमें दानग्रहीता का भी उल्लेख है। इस परिवार में दान लेने की प्रथा थी, जिससे उनका भरण-पोषण होता था। पराशर गोत्रीय ब्राह्मणों को विशिष्ट उपाधि 'भट्ट' मिली थी। दानग्रहीता कृष्णादित्य, उसके पिता मधुसूदन तथा पितामह ऋषिकेश तीनों भट्ट उपाधिधारी पराशर ब्राह्मण थे।[1] उक्त तथ्यों से संकेत मिलता है कि नवम शताब्दी के उत्तरार्द्ध तथा दशम शताब्दी के पूर्वार्द्ध में यजुर्वेदीय और पराशर ब्राह्मण, जिनका सम्बन्ध त्रिप्रवर से था, का केन्द्र हस्तिपद था, जहाँ से वे लगभग दशम शताब्दी के उत्तरार्द्ध में बहिर्गत होने के पश्चात् बंगाल में गये।

परासर (पराशर) ब्राह्मणों के केन्द्र चावटी (बंगाल) का तादात्म्य चटग्राम से स्थापित किया गया है। इस चावटि या चट ग्राम के ब्राह्मणों को चटर्जी या चट्टोपाध्याय उपनाम से पुकारा जाता है। ठीक चटर्जी या चट्टोपाध्याय की तरह राढ़ीय ब्राह्मणों के छप्पन ग्रामों में बन्द्य ग्राम के ब्राह्मणों को बन्द्योपाध्याय या बनर्जी कहा गया है।

बंगाल में हस्तिपद के पराशर ब्राह्मणों को मीमांसक, व्याकरणाचार्य तथा तर्कशास्त्री के रूप में उल्लेख किया गया है। इससे उनके पांडित्य का पता चलता है। ऐसी स्थिति में यह भी सम्भाव्य है कि उनका शैक्षणिक प्रभाव समाज में था। इस सम्बन्ध में उपरिवर्णित पराशर गोत्रीय ब्राह्मणों की उपाधि भट्ट ध्यातव्य है। सम्भवतः भट्ट उस ब्राह्मण को कहते थे जो स्वयं विद्वान् होता था। ऐसा ज्ञात होता है कि पराशर विद्वान् ब्राह्मणों के नामों के पूर्व विद्वतासूचक उपाधि भट्ट का प्रयोग किया जाता था। प्रयुक्त होने वाली उक्त उपाधि परम्परागत या आनुवंशिक हो गई थी। भट्ट उपाधि विद्वत्ता अथवा पाण्डित्य का प्रतीक है। पराशर गोत्र के ब्राह्मण भट्टपुत्र कृष्णादित्य (दानग्रहीता) को पाल शासक महिपाल ने दान दिया था। इससे आभास मिलता है कि हस्तिपद के पराशर ब्राह्मण दान आदि के माध्यम से अपनी आजीविका चलाते थे।

उपर्युक्त बंगाल के पाल शासक महिपाल के बांगड़ दानपत्र के अनुसार हस्तिपद के ब्राह्मणों का बहिर्गमन और बंगाल में प्रसार लगभग दशम शताब्दी के उत्तरार्द्ध तथा एकादश शताब्दी के पूर्वार्द्ध में हुआ था।

हस्तिग्राम

पराशर केन्द्र हस्तिग्राम का उल्लेख कलचुरि सोढदेव के कहला ग्राम दान-

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

पत्र (क० व० ११३५=१०७७ ई०) में हुआ है।[1] महिपाल (९९२=१०४० ई०) के बांगड़ दानपत्र से भी हस्तिपद से पराशर गोत्रीय ब्राह्मणों के बहिर्गमन के सम्बन्ध में सूचना मिलती है।[2] हस्तिग्राम और हस्तिपद दोनों का एक दूसरे से तादात्म्य स्थापित किया जाता है। हस्तिग्राम को मध्यदेश में स्थित माना गया है।[3] कहला दानपत्र के आधार पर ज्ञात होता है कि लगभग एकादश शताब्दी में हस्तिग्राम के पराशर ब्राह्मण प्रभावशाली होने के कारण मध्यदेश के सरयूपार प्रदेश में मर्यादित स्थान प्राप्त किये। दानग्रहीता के पितामह के नाम के साथ उसके ग्राम का नाम हस्तिग्रामीय दीक्षित श्रीधर[4] उल्लिखित है। हस्तिग्राम के पराशर गोत्रीय ब्राह्मण माध्यन्दिन शाखानुयायी थे,[5] जिनका त्रिप्रवर था।[6] कहला दानपत्र में उनके त्रिप्रवर ऋषियों के नाम क उल्लेख नहीं हुआ है, किन्तु उपरिवर्णित महिपाल के बांगड़ दानपत्र में हस्तिपद के पराशर ब्राह्मणों के त्रिप्रवर ऋषियों के नाम शक्ति, वशिष्ठ और पराशर[7] का उल्लेख है। हस्तिग्राम के पराशर गोत्रीय ब्राह्मणों के त्रिप्रवर ऋषियों के नाम शक्ति, वशिष्ठ तथा पराशर हैं।

हस्तिग्राम के पराशर ब्राह्मणों को दीक्षित तथा अग्निहोत्री उपाधिधारी ब्राह्मण कहा जाता था।[8] ऐसा संकेत मिलता है कि एक ही परिवार में भिन्न-भिन्न उपाधियों का प्रयोग ब्राह्मण द्वारा किये जाने वाले कार्यों के आधार पर होता है। माध्यन्दिन शाखानुयायी त्रिप्रवर के पराशर ब्राह्मण दीक्षित, श्रीधर और उसके पुत्र अग्निहोत्रि भास्कर के नाम ध्यातव्य हैं।[9] उक्त कहला दानपत्र से ज्ञात होता है कि पराशर गोत्रीय ब्राह्मणों का प्रख्यात केन्द्र हस्तिग्राम था जिनके महत्त्व को प्रदर्शित करने के लिये दानग्रहीता के पिता के नाम[10] के साथ प्रयोग किया गया है। ऐसा सम्भाव्य है कि उन दिनों हस्तिग्राम में कुलीन पराशर ब्राह्मण थे. जिन्होंने अपने पवित्र धार्मिक कार्यकलापों आदि के कारण तत्कालीन सरयूपार के कलचुरि तथा समाज को प्रभावित किये थे। इसके अतिरिक्त हस्ति-

---

१. मिराशी, कार्पस, ४/२, पृ० ३९०
२. ए० इ०, १४, पृ० ३२६
३. साहित्य परिषद् पत्रिका, १३४१ (१९३४ ई०), पृ० २५
४. मिराशी, कार्पस, ४/२, पृ० ३९०
५-६. 'हस्तिग्रामीयदीक्षितश्रीधरपुत्रपारास(श)रगोत्रत्रिप्रवरमाध्यन्दिन सा (शा) खि अग्निहोत्रिभास्कर'—मिराशी, कार्पस, ४/२, पृ० ३९०
७. ए० इ० १४, पृ० ३२६
८-१० मिराशी, कार्पस, ४/२, पृ० ३९०

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

ग्राम के पराशर ब्राह्मणों के दीक्षित उपाधि से ज्ञात होता है कि वे पुरोहित हुआ करते थे। पुरोहिती उनके व्यवसाय का द्योतक है। दीक्षित श्रीधर के नाम का उल्लेख उक्त दानपत्र में है।[1] इसके पुत्र को अग्निहोत्री भास्कर कहा गया है,[2] जिसके आधार पर यह कहा जा सकता है कि यज्ञ या अन्य धार्मिक उत्सवों के अवसर पर वह अग्निहोत्र के द्वारा होमाग्नि को सुरक्षित रखता था। उक्त कार्य भी पौरोहित्य कृत्यों के अन्तर्गत माना जाता है। यह भी इनके व्यवसाय का द्योतक है। दानग्रहीता अग्निहोत्रि भास्कर को कलचुरि शासक सोढ़देव ने अग्रहार दान में दिया था। ऐसा लगता है कि एकादश शताब्दी में हस्तिग्राम के माध्यन्दिन शाखानुयायी पराशर ब्राह्मणों को राजाओं द्वारा जीवन निर्वाहार्थ दान में भूमि दी जाती थी। उपरिवर्णित तथ्यों के आधार पर यह कहना समीचीन होगा कि एकादश शताब्दी में हस्तिग्राम के पराशर ब्राह्मणों को मध्यदेश में विशेषकर सरयूपार प्रदेश (गोरखपुर तथा अन्य निकटवर्ती जनपद) में सम्मानित स्थान मिला था।

हस्तिनापुर

परमार देवपाल के मान्धाता दानपत्र के आधार पर ज्ञात होता है कि लगभग द्वादश शताब्दी के उत्तरार्द्ध तथा त्रयोदश शताब्दी के पूर्वार्द्ध में हस्तिनापुर से पराशर गोत्रीय ब्राह्मणों का बहिर्गमन और मालवा में प्रसार हुआ था।[3] मेरठ से २२ मील उत्तर-पूर्व और विजनौर से दक्षिण पश्चिम गंगा के दाहिने तट पर हस्तिनापुर की स्थिति मानी गयी है।[4] हस्तिनापुर[5] की गणना प्राचीन भारत के प्रमुख नगरों में की जाती है, जिसकी विशेष ख्याति महाभारत युग में थी। द्वादश शताब्दी के उत्तरार्द्ध के अन्तिम भाग में मुहम्मद गोरी के

१-२. मिराशी, कार्पस, ४/२, पृ० ३९०

३. देवपाल का मान्धाता दानपत्र, ए० इ०, ९, पृ० ११२

४. डे, एन० एल०, 'द जियोग्राफिकल डिक्शनरी आफ एनशियेन्ट एण्ड मेडिवेल इण्डिया, पृ० ७४

५. हास्तिनपुर (हस्तिनापुर)—गंगातट पर बसी हुई एक नगरी, जिसे सुहोत्र के पुत्र राजा हस्ती ने बसाया था, इसीलिए इसका नाम 'हस्तनपुर' हुआ, (आदि० ९५/३४) यह कौरवों की रमणीय राजधानी थी। यहाँ किसी समय राजा शान्तनु राज्य करते थे (आदि० १००/१२)। अभिमन्यु पुत्र परीक्षित को यहीं का राजा बताया गया था। (महा० प्र० १, ८)—महाभारत की नामानुक्रमणिका — गीताप्रेस, गोरखपुर (सं० २०१६', पृ० ४०४ से उद्धृत।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

दो भयंकर आक्रमणों—तराईन (११९२ ई०) तथा चंदावर-एटा युद्ध (११९४ ई०) के कारण मध्यदेश में अराजकता उत्पन्न हो गई थी।[1] मुस्लिम आक्रमणकारियों ने दिल्ली, कन्नौज, मथुरा, काशी और अन्य स्थानों में विध्वंसकारी कार्य करके भय का वातावरण उपस्थित किया था। ऐसा सम्भाव्य है कि उक्त प्रकार की स्थिति हस्तिनापुर में भी हुई थी, जिसके कारण वहाँ से पराशर गोत्रीय ब्राह्मण बहिर्गत हुए। हस्तिनापुर के पराशर गोत्रीय ब्राह्मण कौथुम शाखानुयायी थे,[2] जिनके त्रिप्रवर के ऋषियों के नाम पराशर, शक्ति तथा वशिष्ठ[3] का उल्लेख मान्धाता दानपत्र (वि० सं० १२८२=१२०५ ई०) में हुआ है। हस्तिनापुर के पराशर ब्राह्मण को ही तत्कालीन परमार नरेश ने अग्रहार दिया था।[4] हस्तिनापुर के पराशर ब्राह्मण पञ्च[5] तथा पण्डित[6] उपाधिधारी होते थे। पितामह तथा पिता के नाम के साथ पञ्च उपाधि (पञ्च काण्हड पौत्राय पञ्च कुमार पुत्राय)[7] तथा पुत्र के नाम के साथ पण्डित (पण्डि कुसुमपाल शर्म्मणे)[8] उपाधि का प्रयोग हुआ है। पञ्च उपाधि परम्परागत रूप से पराशर परिवार में प्रचलित थी, किन्तु पौत्र के नाम के साथ पण्डित का प्रयोग हुआ है। जिसके आधार पर यह कहा जा सकता है कि एक ही पराशर ब्राह्मण परिवार में अपने कार्यों तथा योग्यता के अनुसार भिन्न-भिन्न प्रकार की उपाधियों को धारण करने की परम्परा थी। उपरिवर्णित तथ्यों के द्वारा संकेत मिलता है कि द्वादश शताब्दी में सामवेदीय कौथुम शाखानुयायी तथा त्रिप्रवर (पराशर, शक्ति तथा वशिष्ठ) के पराशर ब्राह्मणों का केन्द्र हस्तिनापुर था। ऐसा संकेत मिलता है कि हस्तिनापुर के पराशर ब्राह्मणों को मालवा में विशेष रूप से प्रभावशाली समझ कर सम्मानित किया गया। यह सम्भाव्य है कि हस्तिनापुर के पराशर ब्राह्मण उन दिनों कुलीन परिवार से सम्बन्धित थे जिनसे तत्कालीन परमार देवपाल (१२२५ ई०) प्रभावित हुआ था। हस्तिनापुर के पराशर ब्राह्मण की पञ्च उपाधि विवादास्पद है। प्रो० कीलहार्न[9] ने संदिग्ध अवस्था में उपाधि पञ्च का अर्थ पञ्चकुल या पञ्चकल्पिन (पञ्चाली) बताया है। ऐसा आभास होता है कि हस्तिनापुर के पञ्च या पञ्चकुल

---

१. त्रिपाठी, आर० एस०—द हिस्ट्री आफ कन्नौज, पृ० ३२७-२९

३-८. 'हस्तिनापुर विनिर्गताय कौथुमशाखाध्यायिने पारास (श रगोत्राय, परा-(श)र-(श)शक्ति-वशि(सि)ष्ठ इति त्रि-प्रवराय पञ्च कान्हड (ण्ह) पौत्राय पञ्च कुमार पुत्राय पण्डि कुसुम पाल शर्म्मणे ब्राह्मणाय।'
——ए० इ०, ९, पृ० ११२

९. ए० इ०, ९, पृ० ११२

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

(मन्दिर के देख–रेख के लिये पांच लोगों की समिति के सदस्य) या पञ्चकलिपन (पञ्चाली) जैसे परम्परागत रूप से विशेष उपाधि धारण कर्ता पराशर ब्राह्मण मालवा में भी महत्त्वपूर्ण स्थान ग्रहण किये थे, जिनका प्रसार तथा प्रभाव व्याप्त था। पण्डित उपाधि उनके पाण्डित्य का द्योतक है।

उपरिवर्णित मान्धाता दानपत्र से ज्ञात होता है कि द्वादश शताब्दी के उत्तरार्द्ध तथा त्रयोदश शताब्दी के पूर्वार्द्ध में सामवेदीय कौथुम शाखा-नुयायी त्रिप्रवर के पराशर ब्राह्मणों का केन्द्र हस्तिनापुर था जहाँ से वे बहिर्गत होने के पश्चात् मालवा में फैल गये।

हारित-कुत्स द्विगोत्र के ब्राह्मणों का केन्द्र

सरस्वती स्थान

मालवा में आगत हारित–कुत्स द्विगोत्र के ब्राह्मणों का आद्यस्थान सरस्वती है,[1] जिसका तादात्म्य कुरुक्षेत्र में स्थित सिरसा से स्थापित किया जाता है। यह नगर सरस्वती नदी के तट पर था।[2] सरस्वती स्थान से आगत हारित-कुत्स द्विगोत्र के ब्राह्मण कृष्ण यजुर्वेदीय कठशाखा-नुयायी थे। वे त्रिप्रवरान्तर्गत चतुर्वेदी ब्राह्मण थे।[3] ध्यातव्य है कि गोत्र के अतिरिक्त कुछ ऐसे भी कुल हैं जो द्विगोत्र कहे जाते हैं। आश्वलायन ने इनके लिये 'द्विप्रवाचना' शब्द बताया है। जानब्रफ ने भी द्विगोत्र के सम्बन्ध में उल्लेख किया है।[4] उपरिवर्णित तथ्यों से विदित होता है कि देवपाल कालीन मालवा में कुरुक्षेत्र में स्थित सरस्वती स्थान के हारित-कुत्स द्विगोत्र के ब्राह्मण फैले हुए थे।

---

१. 'सरस्वतीस्थान — विनिर्गताय कठशाखाध्यायिने (हर) इत-कुत्स-गोत्राय अङ्गिरस (श) अम्ब (ब) रिष यौवनास्व (श्व) इति त्रिप्रवराय च विजयि पौत्राय च अजयि पुत्राय च अल्लिशर्म्मणे ब्रा (ब्रा) ह्मणाय —देवपाल का मान्धाता दानपत्र, ए० इ०, ९, पृ० ११२

२. डे, नन्दूलाल, जि० डि० ए० मे० इ०, पृ० १८१

३. द्रष्टव्य, उपर्युक्त टि० सं० १

४. ब्रफ, जान — ब्रा० सि० गो० प्र०, पृ० ३३

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

कौण्डिन्य केन्द्र

हस्तिपद

मध्यदेश के कौण्डिण्य गोत्रीय ब्राह्मणों का केन्द्र हस्तिपद था।[1] उनके बहिर्गमन का उल्लेख दक्षिणकोसल (रायपुर, सम्भलपुर, बिलासपुर तथा उत्कल प्रदेश का पश्चिमी भाग) के सोमवंश के नरेश महाभवगुप्त द्वितीय (१०००-१०१५ ई०) के कुडोपली दानपत्र में हुआ है।[2] मध्यदेश के सरयूपार प्रदेश में हस्तिपद माना जाता है। हस्तिपद तथा हस्तिग्राम दोनों को एक माना जाता है।[3] हस्तिग्राम का उल्लेख गोरखपुर जनपद में स्थित सोढदेव के कहला दानपत्र में भी है।[4] बौद्ध साक्ष्य संयुत्तनिकाय से (४, पृ० १०९) सूचना मिलती है कि बुद्ध अपने पर्यटन काल में राजगृह से कुशीनगर हत्थिग्राम (हस्तिग्राम) से होकर गये थे। ऐसा प्रतीत होता है कि हस्तिपद या हस्तिपाद या हत्थिग्राम मध्य-देश में स्थित है। महाभवगुप्त द्वितीय के कुडोपली दानपत्र से ज्ञात होता है कि हस्तिपद के कौण्डिन्य ब्राह्मण कण्व शाखानुयायी थे[5] तथा उनका मित्रावरुण[6] प्रवर से सम्बन्ध था। कीलहार्न का कथन है कि कौडिन्य ब्राह्मणों के साधारणतया त्रिप्रवर के ऋषियों के नाम वासिष्ठ, मैत्रावरुण तथा कौण्डिन्य हैं।[7] ऐसा सम्भाव्य है कि भूल या किसी अन्य कारणवश त्रिप्रवर के दो ऋषियों के नाम (वासिष्ठ तथा कौण्डिन्य) छूट गये थे। कौण्डिन्य ब्राह्मण परिवार में भट्ट पुत्र श्रीनारायण दानग्रहीता था।[8] कौण्डिन्य ब्राह्मण परिवार में भट्ट[9] उपाधि का प्रयोग होता था। दानग्रहीता नारायण को भट्टपुत्र अर्थात् भट्ट का पुत्र बताया गया है। ऐसा प्रतीत होता है कि दानग्रहीता ब्राह्मण एक विद्वान् पिता का पुत्र था। विद्वान् पिता जनार्दन का भट्ट पुत्र नारायण ब्राह्मण था। उपरिवर्णित तथ्यों से संकेत मिलता है कि दशम शताब्दी में हस्तिपद में कण्व शाखानुयायी त्रिप्रवर (वासिष्ठ, मैत्रावरुण तथा

---

१. महाभवगुप्त द्वितीय का कुडोपली दानपत्र, ए० इ०, ४, पृ० २५८
२. मजूमदार तथा पुशालकर [सम्पा०], 'द स्ट्रगिल फार इम्पायर, पृ० २०९
३. साहित्य परिषद् पत्रिका १३४१ (१९३४ ई०), पृ० २५
४. मिराशी, कार्पस, ४/२, पृ० ३९०
५-७. 'हस्तिपद विनिर्गत कौण्डिन्य गोत्र मित्रावरण प्रवर कण्व शाखाध्यायि भट्ट-पुत्र श्री नारायण द(ज)नार्दन सुत ··।' महाभवगुप्त द्वितीय का कुडोपवली दानपत्र, वही, ४, पृ० २५८
८-९. ए० इ०, ४, पृ० २५८

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

कौण्डिन्य) से सम्बन्धित कौण्डिन्य ब्राह्मणों का केन्द्र था, जहाँ से वे दक्षिण कोसल में शरण पाये थे। हस्तिपद के कौण्डिन्य ब्राह्मण को दान दिया गया था। इससे संकेत मिलता है कि हस्तिपद के कौण्डिन्य गोत्रीय ब्राह्मण परिवारों में पौरोहित्य कृत्य होते थे जो उनके व्यवसाय या जीविका के द्योतक हैं। उपाधि भट्ट या भट्टपुत्र का प्रयोग कौण्डिन्य ब्राह्मण करते थे। भट्ट उपाधि उनके विद्वता का परिचायक है। उपरिवर्णित कुडोपली दानपत्र पर आधारित तथ्यों से संकेत मिलता है कि दशम शताब्दी के उत्तरार्द्ध में हस्तिपद से कौण्डिन्य ब्राह्मण विनिर्गत हुए थे तथा एकादश शताब्दी के पूर्वार्द्ध के प्रथम भाग में दक्षिण कोसल के सोमवंशीय नरेश महाभवगुप्त द्वितीय के यहाँ राज्याश्रय स्वीकार किये। ऐसा सम्भाव्य है कि उन्हीं दिनों हस्तिपद के कौण्डिन्य ब्राह्मणों का प्रसार तथा प्रभाव दक्षिण कोसल में फैल गया था। उक्त गोत्र के ब्राह्मण परिवार के लोग भट्ट परिवार [विद्वानों से सम्बद्ध भट्ट परिवार] के थे तथा उनके नाम के पूर्व पद के रूप में भट्टपुत्र का प्रयोग होता था।

कौत्स केन्द्र

मथुरा

परमार देवपाल के मान्धाता दानपत्र (वि०सं० १२८८=१२२५ ई०) से ज्ञात होता है कि आश्वलायन शाखानुयायी तथा त्रिप्रवर (अङ्गिरस, आम्बरीष, यौवनाश्व) से सम्बन्धित कौत्स ब्राह्मणों[1] का केन्द्र मथुरा था। मथुरा से कौत्स ब्राह्मणों का बहिर्गमन[2] हुआ था जो सम्भवतः द्वादश शताब्दी के उत्तरार्द्ध के अन्तिम भाग में हुआ। मथुरा के कौत्स ब्राह्मण भी मुस्लिम आतंक से भयभीत होकर सम्भवतः बहिर्गत होने के पश्चात् मालवा में त्रयोदश शताब्दी के पूर्वार्द्ध में आए थे। शहाबुद्दीन ने तराइन के युद्ध (११९२ ई०) में पृथ्वीराज चौहान तथा इटावा के निकटवर्ती स्थान चन्दवार के युद्ध में (११९४ ई०) गहडवाल जयचंद को हराया था।[3] इन दोनों युद्धों के पश्चात् मुस्लिम आक्रमणकारियों द्वारा अनेक जगहों पर विभिन्न प्रकार के अत्याचार किये गये। ऐसा सम्भाव्य है कि मथुरा पर भी इसका प्रभाव पड़ा जिससे वहाँ के कौत्स

१-२. 'मथुरास्थानविनिर्गतायआश्वलायनशाखाध्यायिने कौत्स गोत्राय अङ्गिरस-अंवरीष–यौवनाश्व इति त्रिप्रवराय 'च' हरि पौत्राय पौत्राय च जनार्दन-पुत्राय च राजेशर्म्मणे ब्राह्मणाय'—देवपाल का मान्धाता दानपत्र, ए० इ० ९, पृ० ११३

३. त्रिपाठी, आर० एस०, द हिस्ट्री आफ कन्नौज, पृ० ३२८-२९

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

ब्राह्मणों के मालवा में परमार देवपाल के समय जाना पड़ा। मान्धाता दानपत्र से ज्ञात होता है कि मथुरा के आश्वलायन शाखानुयायी कौत्स ब्राह्मण 'च' (चतुर्वेदी या चातुर्विद्य) उपाधिधारी होते थे।[1] प्रपितामह, पिता जनार्दन तथा पुत्र राजेशर्मा तीनों च उपाधिधारी कौत्स थे।[2] इससे ज्ञात होता है कि मथुरा के कौत्स ब्राह्मणों में चतुर्वेदी उपाधि परम्परागत हो गई थी। दानग्रहीता चतुर्वेदी या चातुर्विद्य राजशर्मा था।[3] इससे यह संकेत मिलता है कि मथुरा के कौत्स ब्राह्मण दान आदि लेकर अपनी जीविका चलाते थे। उपरिर्वणित मान्धाता दानपत्र पर आधारित तथ्यों से ज्ञात होता है कि मथुरा में ऋग्वेदीय कौत्स ब्राह्मण थे जिनका त्रिप्रवर (अङ्गिरस, आम्बरीष तथा यवनाश्व) से सम्बन्ध था। उनका प्रसार मालवा में हुआ था। मथुरा के कौत्स ब्राह्मणों के 'च' उपाधि से ज्ञात होता हैं कि उनके परिवार में चारों वेदों के अध्ययन की परम्परा विद्यमान थी। इससे उनके पाण्डित्य का भी संकेत मिलता है। दानग्रहीता राजशर्मा था। इससे ज्ञात होता है कि मथुरा के कौत्स ब्राह्मण पौरोहित्य कृत्य भी सम्भवतः करते थे। यह भी उनके व्यवसाय का द्योतक है।

उपरिर्वणित तथ्यों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि मथुरा से द्वादश शताब्दी के उत्तरार्द्ध में ऋग्वेदीय कौत्स ब्राह्मणों का बहिर्गमन हुआ तथा मालवा में त्रयोदश शताब्दी के पूर्वार्द्ध में उनका प्रसार हुआ।

कुमारहारित केन्द्र

दक्षिण कोसल के सोमवंशीय दानपत्रों में कुमार हारित (अथवा 'हारित') गोत्रीय ब्राह्मणों के केन्द्र महुवालि (महुवाली) तथा कमालपुर का उल्लेख हुआ है।[4] उक्त दानपत्रों का समय लगभग द्वादश शताब्दी का पूर्वार्द्ध माना जाता है। दानग्रहीता भट्टपुत्र उदयकर शर्मा तथा भट्टपुत्र आभासकर शर्मा कुमारहारित गोत्र के ब्राह्मण थे[5], जिन्हें सोमकुल राजकुमार सोमेश्वर ने द्वादश शताब्दी के पूर्वार्द्ध के करीब दान दिया था। दानपत्रों में दानग्रहीता ब्राह्मणों के प्रपितामह तथा प्रपितामह के पिता [भट्ट जयकर तथा भट्टपुत्र लक्ष्मीधर] का उल्लेख[6] है, जिनका समय करीब दशम शताब्दी का उत्तरार्द्ध हो सकता है। ऐसा सम्भाव्य है कि लगभग एकादश शताब्दी के उत्तरार्द्ध तथा पूर्वार्द्ध के बीच

१-२. ए० इ०, ९, पृ० ११२
३. ए० इ०, ९, पृ० ११२
४-५. सोमेश्वर प्रथम का दानपत्र, ए० इ०, २८, पृ० ३२५; वही, पृ० ३२७
६. ए० इ०, २८, पृ० ३२७

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America: HHFA(USA)

में महुआली से प्रभावशाली कुमारहारित परिवार के ब्राह्मणों का बहिर्गमन हुआ।

महुआली

उत्तर प्रदेश के गोंडा—बहराइच की सीमा पर वर्तमान सहेत-महेत है जो प्राचीन समय में श्रावस्ती कहा जाता था। महुवालि (महुवाली) श्रावस्ती क्षेत्र में स्थित माना जाता है।[1] श्रावस्ती मण्डल के अन्तर्गत महुआली का उल्लेख सोम दानपत्रों में है।[2] महुवाली के सुप्रसिद्ध कुमारहारित गोत्रीय ब्राह्मणों का बहिगर्मन सम्भवतः उस समय हुआ था जब मध्यदेश के सरयूपार प्रदेश के कलचुरि राजवंश की शक्ति एकादश शताब्दी के उत्तरार्द्ध में समाप्त हो चली थी। सरयूपार का कलचुरि वंश का अन्तिम शासक सोढदेव था। सम्भवतः वह त्रिपुरी के कलचुरियों का विश्वास खो चुका था। तत्कालीन कन्नौज के गहडवाल नरेश चन्द्रदेव ने बनारस जनपद से त्रिपुरी के कलचुरि शासक यशःकर्ण को खदेड़ दिया था।[3] चन्द्रावती दानपत्र[4] (वि०सं० ११४८ = १०९० ई०) से संकेत मिलता है कि यशःकर्ण को विवश होकर बनारस चन्द्रदेव को देना पड़ा। प्रो० मिराशी ने यह सम्भावना की है कि तत्कालीन गहडवाल नरेश सरयूपार के भीतरी भाग में प्रवेश कर वहाँ के कलचुरियों को हटाया।[5] त्रिपुरी के कलचुरि यशःकर्ण ने अपने सरयूपार के कलचुरि सम्बन्धियों की रक्षा करने में समर्थ न हुआ जिससे उनका प्रभाव एकादश शताब्दी के उत्तरार्द्ध के अन्तिम भाग से डर समाप्त हो गया।[6] सरयूपार के श्रावस्ती मण्डल में भी उक्त परिस्थितियों के कारण सम्भवतः अशान्ति हुई हो तथा श्रावस्ती मण्डल में स्थित महुवाली से कुमारहारित गोत्र के ब्राह्मणों को बहिर्गत होने के बाद दक्षिण कोसल के कमालपुर में निवास बनाना पड़ा। सावत्थ मण्डल के अन्तर्गत महुवाली के कुमारहारित गोत्रीय ब्राह्मण रहते जिनका सम्बन्ध माध्यान्दिन काण्व शाखा तथा पञ्चप्रवर से था।[7] दानपत्रों में पञ्चप्रवर ऋषियों के नाम का उल्लेख

---

१. वही, पृ० ३२३-२४
२. वही।
३-४. मिराशी, कार्पस, ४/१, पृ० ११४
५. मिराशी, कार्पस, ४/१, पृ० ११४
६. वही।
७. 'कुमारहारित्र (त) गोत्राय पञ्च—अर्क-प्रवराय माध्यन्दिन-काण्व-शाखाध्यायिने सावत्थमण्डलाय। महुवालिविनिर्गताय कमालपुरवास्तव्य'। ए० इ०, २८, पृ० ३२५

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

नहीं हुआ है। डी० सी० सरकार का कथन है कि कहीं अन्यत्र कुमारहारित गोत्र का उल्लेख नहीं मिलता।[1] कमलापुर निवासी महुवाली के कुमारहारित ब्राह्मण 'भट्ट' उपाधि धारण करते थे।[2] पिता भट्ट लक्ष्मीधर प्रपौत्र तथा दानग्रहीता (प्रथम) उदयकर शर्मा[3] और द्वितीय दानग्रहीता आभाकर शर्मा को भट्टपुत्र कहा गया है।[4] जब कि प्रथम दानग्रहीता के पिता विद्याधर तथा पिता भट्ट जयकर को भट्ट उपाधिधारी बताया गया है।[5]

महुवाली के कुमारहारित परिवार में ब्राह्मणों के नाम के साथ उपपद कर[6] का प्रयोग अधिकांश होता था। इस सम्बन्ध में उपरिर्वाणित नाम द्रष्टव्य हैं।[7] दक्षिण कोसल के कमालपुर के महुवाली के कुमारहारित ने दो दानग्रहीता भट्टपुत्र उदयकर शर्मा तथा उदयकर शर्मा के पुत्र (भट्टपुत्र) आभासकर शर्मा को दक्षिण कोसल के तत्कालीन सोमकुल के राजकुमार महेश्वर (शिव) पूजक सोमेश्वर ने नायक महीपति और भट्ट अनिरुद्ध के विनय करने पर दान दिया था।[8] नायक महीपति तथा भट्ट अनिरुद्ध दोनों महासन्धि विग्रहिक और रामक (आश्रित शासक) ज्ञात होते हैं।[9] उक्त तथ्यों से ज्ञात होता है कि श्रावस्ती मण्डल का महुवाली ग्राम माध्यन्दिन-काण्व शाखानुयायी पञ्चप्रवर से सम्बन्धित कुमारहारित ब्राह्मणों का केन्द्र था जहाँ से वे बहिर्गत होने के पश्चात् दक्षिण कोसल के कमलापुर में भी केन्द्र स्थापित किये। वहाँ भी महुवाली के प्रभावशाली कुमारहारित गोत्र के ब्राह्मणों की प्रसिद्धि हुई, जिसके कारण तत्कालीन सोमकुल प्रभावित हुआ था। कुमारहारित ब्राह्मण भट्ट पुत्र उपाधि धारण करते थे। इससे संकेत मिलता है कि उक्त ब्राह्मण परिवारों में भट्ट अर्थात् विद्वान् होते थे। भट्टपुत्र की उपाधि कुमारहारित ब्राह्मण धारण करते थे, यह ध्यातव्य है। सम्भवतः वे विद्वान् (भट्ट) ब्राह्मण के पुत्र थे, जो विद्वान् नहीं होते थे, उन्हें पुत्र (विद्वान् ब्राह्मण पुत्र) कहा जाता था। इस तथ्य की पुष्टि डी० सी०

---

१. ए०इ०, २८ पृ० ३२३-२४

२. '...भट्टपुत्रलक्ष्मीधरपौत्रायभट्टजयकरपौत्रायभट्टविद्याकरपुत्रायभट्टपुत्रउदयकर शर्म्मणे'—वही, पृ० ३२५

३. वही।

४. वही, पृ० ३२७

५. वही, पृ० ३२५

६-७. ए० इ०, २८, पृ० ३२५

८-९. वही।

Digitization by Hindu-Heritage Foundation of America. HHFA(USA)

सरकार ने भी की है।[1] भट् उपाधि उनके पाण्डित्य का द्योतक है। कुमारहारित ब्राह्मण परिवार में भट्ट या भट्टपुत्र उपाधि परम्परागत हो गयी थी तथा मध्यदेशान्तर्गत स्थाण्वीश्वर,[2] कासील्ली,[3] भट्टग्राम (श्रावस्ती मंडल) और श्रावस्ती[4] थे जहाँ से कौशिकगोत्रीय ब्राह्मणों का बहिर्गमन हुआ तथा तत्पश्चात् उड़ीसा, मालवा, दक्षिण कोसल और रतनपुर में उन्हें राज्याश्रय मिला।

मध्यदेश

उड़् (उड़ीसा) देश के खिञ्जिङ्ग के भञ्ज शासक शत्रुभञ्ज (दशम शताब्दी का पूर्वार्द्ध) के समय मध्यदेश से कौशिक ब्राह्मणों का बहिर्गमन[5] हुआ। निश्चित रूप से कौशिक ब्राह्मणों के स्थान का उल्लेख नहीं है किन्तु उनके देश मध्यदेश का नाम अभिलेख में अभिहित है। मध्यदेश से कौशिक ब्राह्मणों का बहिर्गमन सम्भवतः उस समय हुआ जब मध्यदेश में प्रतिहार शासन विघटित हो रहा था।[6] मध्यदेश के अन्तिम प्रतिहार शासक देवपाल थे।[7] प्रतिहार राज्य मध्यदेश की दुर्बल स्थिति की ओर चन्देलों की दृष्टि लगी थी। समय पाकर चन्देल यशोवर्मन ने[8] प्रतिहारों के ऊपर आक्रमण कर कालिञ्जर का दुर्ग अधिकृत कर लिया। चन्देल आक्रमण का उल्लेख खजुराहो अभिलेख में किया गया है।[9] इसके अतिरिक्त राष्ट्रकूट तृतीय के कन्नौज पर आक्रमण प्रतिहार साम्राज्य के पतन का कारण माना जाता है।[10] मध्यदेश की विकट परिस्थिति में यह सम्भाव्य है कि अशान्ति उत्पन्न हुई हो जिसके कारण मध्यदेश से कौशिक ब्राह्मणों को अन्य गोत्रों के ब्राह्मणों की तरह बहिर्गत होना पड़ा। मध्यदेश से विनिर्गत होने वाले कौशिक गोत्रीय ब्राह्मण त्रिप्रवर से सम्बन्धित थे[11], किन्तु उनके त्रिप्रवर के ऋषियों के नाम का उल्लेख नहीं हुआ है। मध्यदेशीय कौशिक गोत्र के ब्राह्मण भट्टपुत्र दण्डपाणि को ग्रामदान उड़ीसा के भञ्ज शासक शत्रुभञ्ज ने दिया था।[12] दानग्रहीता

---

१. ए० इ०, २८, पृ० ३२३-२४
२. भोजदेव का वेतमा दानपत्र, ए० इ०, १८, पृ० ३२३
३. महाभवगुप्त द्वितीय का कटक ताम्रपत्र, वही, ३, पृ० ३५६
४. पृथ्वीदेव प्रथम का रायपुर दानपत्र, मिराशी, कार्पस, ४/२, पृ० ४००
५. ए० इ०, २५, पृ० १६३
६-१०. त्रिपाठी, आर० एस०, द हिस्ट्री आफ कन्नौज, पृ० २७१–७२
११-१२. '.........मध्यदेश विन (नि)र्गतभट्टपुत्रनारायणस्य पौत्राय भट्टपुत्र चक्रपाणि–त्राय भट्टपुत्रदण्डपाणि–कौसी (कौशि) क सगोत्राय त्रि आर्कय प्र (वराय)' —ए० इ०, २५, पृ० १६३

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

कौशिक ब्राह्मण विद्वान् तथा प्रभावशाली परिवार से सम्बन्धित था। इसका संकेत उपाधि भट्ट या भट्टपुत्र[1] से मिलता है। दानग्रहीता स्वयं, दानग्रहीता के पिता तथा पितामह को भट्टपुत्र उपाधिधारी ब्राह्मण कहा जाता था।[2] उपर्युक्त तथ्यों से स्पष्ट ज्ञात होता है कि उड़ीसा में आने वाले मध्यदेशीय कौशिक ब्राह्मण त्रिप्रवर से सम्बन्धित थे। खिञ्जिङ्ग (उड्देश) के भञ्ज शासक ने मध्यदेश के कौशिक परिवार के भट्टपुत्र दण्डपाणि को दान दिया था, जिससे ज्ञात होता है कि वह धार्मिक ब्राह्मण परिवार से सम्बन्धित था तथा उसके गृह के लोग दान आदि धार्मिक तथा यजमानी कृत्य किया करते थे। भूमिदान स्वीकार करना भी पौरोहित्य कृत्य कहा जायगा, क्योंकि यह किसी धार्मिक या याज्ञिक अवसर पर ब्राह्मण को पूजा आदि जैसे श्रम करने पर दक्षिणा के रूप में अर्पित किया जाता था। मध्यदेश के कौशिक ब्राह्मणों को उड़ीसा में भञ्ज शासक शत्रुभञ्ज के समय भट्टपुत्र कहा जाता था। भट्टपुत्र उपाधि व्यवहार में विशेष रूप से प्रचलित थी, जिसको ध्यान में रखकर पुत्र, पिता तथा पितामह के नाम के साथ प्रयोग किया जाता था। इसके अतिरिक्त यह भी ज्ञात होता है कि दानग्रहीता, दानग्रहीता का पिता तथा पितामह सभी लोग विद्वान् थे या विद्वान् के पुत्र थे। उपरिर्वाणित भट्टपुत्र से आभास मिलता है कि मध्यदेश के कौशिक ब्राह्मण वर्तमान उड़ीसा में समझे जाते थे। उनकी उपाधि भट्टपुत्र उनके विद्वत्ता तथा पाण्डित्य का परिचायक है। इसके अतिरिक्त यह भी सम्भाव्य है कि यह भट्टपुत्र उपाधि परम्परागत रूप से कौशिक ब्राह्मण परिवार में प्रयुक्त हो गयी थी।

उपर्युक्त दानपत्र पर आधारित तथ्यों से ज्ञात होता है कि लगभग दशम शताब्दी के पूर्वार्द्ध में मध्यदेश से कौशिकगोत्र के ब्राह्मणों का बहिर्गमन हुआ तथा उनका प्रसार उड़ीसा में खिञ्जिग के शासक शत्रुभञ्ज के समय में हुआ। शत्रुभञ्ज के केसरी दानपत्र के अतिरिक्त दक्षिण कोसल के सोमवंशीय नरेश महाभवगुप्त द्वितीय का कटक दानपत्र भी ध्यातव्य है, जिससे ज्ञात होता है कि दक्षिण कोसल (रामपुर, संभलपुर, बिलासपुर तथा उड़ीसा का पश्चिमी भाग) में भी मध्यदेश से कौशिक ब्राह्मणों का प्रसार एकादश शताब्दी के पूर्वार्द्ध में हुआ।

कासील्ली भट्टग्राम

कोसल (दक्षिणी कोसल–रायपुर, संभलपुर, बिलासपुर तथा उड़ीसा का

१-२. ए० इ०, २५ पृ० १६३

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America, HHFA(USA)

पश्चिमी भाग) के सोमवंशीय महाभवगुप्त द्वितीय के कटक दानपत्र के आधार पर ज्ञात होता है कि लगभग एकादश शताब्दी के पूर्वार्द्ध में कासील्ली भट्टग्राम से कौशिक गोत्र के ब्राह्मण विनिर्गत हुए [1] तथा उन्होंने गोवा [2] ग्राम में निवास बनाया। कटक दानपत्र से ही ज्ञात होता है कि कौशिक केन्द्र कासीली भट्टग्राम विद्वान् ब्राह्मणों का ग्राम था जो मध्यदेश के श्रावस्ती मण्डल में[3] स्थित है। सम्भवतः श्रावस्ती के निकटवर्ती अन्य भट्टग्रामों की तरह कासीली भट्ट-ग्राम भी है। अति प्राचीन काल से ही श्रावस्ती विश्रुत स्थान माना गया है। निस्सन्देह विख्यात स्थान श्रावस्ती के निकटवर्ती कासीली भट्टग्राम के भी विद्वान् ब्राह्मणों का ग्राम दशम शताब्दी के उत्तराद्धं में था, जहाँ से कौशिक ब्राह्मण बहिर्गत होने के पश्चात् सीनगोवा-ग्राम में आये।

सीनगोवा ग्राम

मध्यदेशीय श्रावस्ती के कासील्ली भट्टग्राम से विनिर्गत कौशिक हुए ब्राह्मणों का वास्तव्य सीनगोवा ग्राम कोसल में ही स्थित बताया गया है। कोसल के देवीभोग विषय[4] का यह ग्राम है। कोसल (दक्षिण कोसल) के देवी-भोग विषयान्तर्गत सीनगोवा ग्राम में मध्यदेश के कासीली (श्रावस्ती मण्डल) भट्ट-ग्राम के छन्दोगशाखा तथा त्रिप्रवर से सम्बन्धित कौशिक गोत्रीय ब्राह्मण रहते थे।[5] उनके त्रिप्रवर के ऋषियों के नाम विश्वामित्र, देवरात तथा औदल[6] का उल्लेख हुआ है। कौशिक गोत्र के ब्राह्मण का सम्बन्ध कौथुम [7] चरण से था।

कौशिक ब्राह्मण सामन्त तथा जागीरदार हुआ करते थे। सीनगोवा ग्राम के कौशिक ब्राह्मण राच्छो को राणक[8] की उपाधि मिली थी। राणक

१-२. 'श्रावस्तिमण्डले कासील्लीभट्टग्रामविनिर्गताय कोसले देवीभोग-विषयीय सीनगोवा-ग्राम-वास्तव्याय कौशिक-गोत्राय········ ।' —महाभवगुप्त द्वितीय का कटक ताम्रपत्र, ए० इ०, ३, पृ० ३५६

३-४. ए० इ०, ३, पृ० ३५६

५-७. '·········श्रावस्तिमण्डले कासील्लीभट्टाग्राम विनिर्गताय कोसले देवी-भोगविषयीय सीनगोवा ग्रामवास्तव्याय कौशिकगोत्राय। विश्वामित्र-देवरात-औदल-प्रवराय कौथुम-चरणाय छन्दोग-शाखाध्यायिने भट्ट-परमेश्वर-पौत्राय भट्टवसिष्ठसुताय राणक श्री राच्छो नाम्ने' —वही।

८. ए० इ०, ३,पृ० ३५६

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

उपाधिधारी व्यक्ति और उसके परिवार को राज्य में सम्मानित स्थान प्राप्त था। कौशिक ब्राह्मण राणक राच्छो को सोमवंशीय नरेश महाभवगुप्त द्वितीय ने ग्राम दान दिया।[1] कौथुम चरण तथा छंदोगशाखानुयायी मध्यदेश के कौशिक ब्राह्मण भट्ट[2] उपाधिधारी हुआ करते थे। सीनगोवा ग्राम के ब्राह्मण पितामह परमेश्वर और पिता वशिष्ठ भट्ट उपाधिधारी थे[3]। उपर्युक्त तथ्यों से ज्ञात होता है कि मध्यदेश के श्रावस्ती मण्डल के कासील्ली भट्टग्राम सामवेदीय कौशिक ब्राह्मणों का केन्द्र था तथा उनका सम्बन्ध कौथुम चरण और त्रिप्रवर (विश्वामित्र, देवरात तथा औदल) से था। कौशिक ब्राह्मणों के पास कृषि करने के लिए भूमि हुआ करती थी। उन्हें जागीरदार तथा सामन्त के रूप में उल्लेख किया गया है। कौशिक ब्राह्मण राच्छो को राणक कहा गया है। इससे संकेत मिलता है कि वह एक प्रभावशाली जागीरदार तथा सामन्त था, जिसका विशिष्ट प्रभाव कोसल के सोमवंशीय नरेश महाभवगुप्त द्वितीय के राज्य में था। उक्त राणक उपाधि से स्पष्ट ज्ञात होता है कि जागीरदार तथा सामन्त के रूप में राज्य स्तर का स्थान कौशिक ब्राह्मणों को प्राप्त था। इसके अतिरिक्त यह भी सम्भाव्य है कि वे अपनी जागीर में कृषि आदि करवाते थे, कृषि उनके व्यवसाय का द्योतक है। उक्त कोसल से तात्पर्य दक्षिण कोसल (अथवा महाकोसल) से है जिसके अन्तर्गत पूर्वमध्ययुग में रायपुर सम्भलपुर तथा विलासपुर जनपद था। कृषि के अतिरिक्त कौशिक ब्राह्मण दानग्रहीता हुआ करते थे। दानग्रहीता का नाम राणक राच्छो था। ऐसा प्रतीत होता है कि कौशिक गोत्रीय ब्राह्मण परिवार में दान-दक्षिणा ग्रहण करने की परम्परा थी। इससे संकेत मिलता है कि पुरोहिती कृत्य ब्राह्मणों द्वारा किया जाता था, जो उनके व्यवसाय का द्योतक है। उपरिर्वणित कौशिक ब्राह्मणों के भट्ट उपाधि से ज्ञात होता है कि वे विशिष्ट विद्वान् हुआ करते थे। पितामह तथा पिता को भट्ट उपाधिधारी कौशिक ब्राह्मण कहा गया है। यह उपाधि परम्परागत हो गई थी। भट्ट उपाधि उनके पाण्डित्य का परिचायक है। ऐसा सम्भाव्य है कि कौशिक ब्राह्मणों के विद्वत्ता का प्रभाव दक्षिण कोसल से सोमवंशीय नरेश. महाभवगुप्त द्वितीय के समय में था। उपर्युक्त महाभवगुप्त द्वितीय के कटक ताम्रपत्र के आधार पर यह कहा जा सकता है कि एकादश शताब्दी के पूर्वार्द्ध में मध्यदेश के श्रावस्ती मण्डल के कासील्ली भट्टग्राम से त्रिप्रवर से सम्बधित कौथुम चरण तथा छंदोगशाखा के कौशिक गोत्रीय ब्राह्मण बहिर्गत होने के पश्चात् दक्षिण कोसल में

---

१. ए० इ०, ३, पृ० ३५६

२-३. वही ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

अपना विशिष्ट प्रभाव रखे। उपरिवर्णित सोमवंश के महाभवगुप्त द्वितीय के कटक ताम्रपत्र के अतिरिक्त एकादश शताब्दी के उत्तरार्द्ध में भी श्रावस्ती से कौशिक ब्राह्मणों के बहिर्गमन तथा रतनपुर विलासपुर मध्यप्रदेश में प्रसार का उल्लेख हुआ है। इस सम्बन्ध में रतनपुर के कलचुरि नरेश पृथ्वीदेव प्रथम का रायपुर दानपत्र (क० व० ८२१=१०६९ ई०) ध्यातव्य है।

श्रावस्ती :

रतनपुर (बिलासपुर-कोसलदेश) के कलचुरि पृथ्वीदेव प्रथम के रायपुर दानपत्र से ज्ञात होता है कि श्रावस्ती से छन्दोग शाखानुयायी कौशिक ब्राह्मणों का बहिर्गमन[1] एकादश शताब्दी के उत्तरार्द्ध में हुआ था। कौशिक ब्राह्मण का त्रिप्रवर था।[2] श्रावस्ती के सामवेदीय ब्राह्मणों के त्रिप्रवर के ऋषियों के नाम का उल्लेख नहीं हुआ है किन्तु श्रावस्ती मण्डल के कौशिक ब्राह्मणों के त्रिप्रवर के ऋषियों का नाम विश्वामित्र, देवरात तथा औदल था जिसके सम्बन्ध में सूचना दक्षिण कोसल के सोमवंशीय नरेश महाभवगुप्त द्वितीय के कटक ताम्रपत्र से मिलती है।[3] ऐसा सम्भाव्य है कि उपरिवर्णित रायपुर दानपत्र (क० व० ८२१=१०६९ ई०) के कौशिक ब्राह्मणों के त्रिप्रवर के ऋषियों के नाम विश्वामित्र, देवरात तथा औदल था। रतनपुर के कलचुरि शासक पृथ्वीदेव ने श्रावस्ती के विश्रुत कौशिक परिवार से सम्बन्धित ब्राह्मण गुरु[4] को उत्तरायण संक्रान्ति के अवसर पर अपर मण्डल का असौठा ग्राम[5] दान में दिया था। उपरिवर्णित तथ्यों से ज्ञात होता है कि एकादश शताब्दी के पूर्वार्द्ध में सुप्रसिद्ध ऐतिहासिक नगरी श्रावस्ती सामवेद के छन्दोग शाखा के अनुयायी तथा त्रिप्रवर से सम्बन्धित कौशिक ब्राह्मणों का केन्द्र था। रतनपुर (कोसलदेश का विलासपुर) में उनका विशिष्ट प्रभाव था जिसका संकेत रायपुर दानपत्र से मिलता है। श्रावस्ती ब्राह्मण को दानग्रहीता स्वीकार किया गया जो श्रावस्ती के कौशिक ब्राह्मणों के प्रभाव का द्योतक है। दानग्रहीता कौशिक ब्राह्मण था। इससे संकेत मिलता है कि रतनपुर में श्रावस्ती के सामवेदीय ब्राह्मण परिवार के लोग पौरोहित्य कृत्यों के कारण

---

१. 'अपरे असौठाग्रामः ब्राह्मण-जोगूकाय महने सुताय भद्रमा(ण)लनप्त्रे श्रावस्ति विनिर्गताय कौसि (शि) क-गोत्राय त्रिः प्रवराय छन्दोग सा (शा) खिने–' –पृथ्वीदेव का रायपुर दानपत्र, मिराशी, कार्पस, ४/२, पृ० ४००

२. मिराशी, कार्पस, ४/२, पृ० ४००

३. ए० इ०, ३, पृ० ३५७

४-५. कार्पस, ४/२, पृ० ४००

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

दान-दक्षिणा आदि प्राप्त करते थे। पुरोहिती कार्य भी उनके व्यवसाय का द्योतक है। कलचुरि पृथ्वीदेव प्रथम के रायपुर दानपत्र के आधार पर यह कहा जा सकता है कि श्रावस्ती के त्रिप्रवर से सम्बन्धित सामवेदीय कौशिक ब्राह्मणों का बहिर्गमन एकादश शताब्दी के पूर्वार्द्ध तथा उनका प्रसार और प्रभाव रतनपुर (कोसल) में एकादश शताब्दी के उत्तरार्द्ध में हुआ।

रतनपुरी के कलचुरि पृथ्वीदेव प्रथम के रायपुर दानपत्र के अतिरिक्त कौशिक ब्राह्मणों का थानेश्वर से देशान्तरगमन और मालवा में प्रसार एकादश शताब्दी के पूर्वार्द्ध में हुआ था, जिसकी पुष्टि परमार भोजदेव के बेतमा (वि० सं० १०७६=१०१९ ई०) से होती है।

स्थाण्वीश्वर (थानेश्वर)

एकादश शताब्दी के पूर्वार्द्ध के प्रथम भाग में कौशिक ब्राह्मणों को स्थाण्वीश्वर या थानेश्वर[1] से बहिर्गत होना पड़ा था जिसका तादात्म्य मध्य-देशांतर्गत कुरुक्षेत्र के थानेश्वर से स्थापित किया जाता है।[2] प्राचीन स्थाण्वीश्वर वर्तमान थानेश्वर है।[3] लगभग एकादश शताब्दी के पूर्वार्द्ध के प्रथम भाग में महमूद गजनवी का भयंकर आक्रमण थानेश्वर[4] (स्थाण्वीश्वर) पर हुआ था जिसके कारण ऐसा संभाव्य है कि वहाँ से कौशिक ब्राह्मणों को देशान्तरगमन करने के पश्चात् अपनी सुरक्षा तथा जीविका के लिए मालवा में परमार भोज के समय आना पड़ा। ऐसा कहा जाता है कि महमूद को सूचना मिली थी कि थानेश्वर के हाथी सिंहली नस्ल के होते हैं तथा सैनिक दृष्टि से विशेष उपयोगी होते हैं।[5] इसके अतिरिक्त उसे पता था कि थानेश्वर के विख्यात मन्दिर की मूर्ति भारतवासियों के लिए विशेष रूप से पूज्य है।[6] १०११ ई० में महमूद गजनी से थानेश्वर जैसी विशिष्ट नगरी को लूटने के दृष्टिकोण से आक्रमण किया

---

१. भोजदेव का बेतमा दानपत्र, ए० इ०, १८, पृ० ३२३

२. डे, एन० एल०–'द जियोग्राफिल डिक्शनरी आफ एन्शियेंट इंडिया', पृ० १९१–९४

३. वही, पृ० २६०

४. मजूमदार और पुसालकर, द स्ट्रगिल फार इंपायर, पृ० १०–११

५-६. वही।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

था।[1] शाही नरेश आनन्दपाल ने उसकी सेना को आगे बढ़ने के लिए सुरक्षित मार्ग दिया।[2] सुल्तान को आगे रास्ते में एक नदी के किनारे देरा के राजा राम के विरोध का सामना करना पड़ा। देरा का शासक राम थानेश्वर जैसी पवित्र नगरी की रक्षा करना अपना परमपुनीत कर्तव्य समझता था।[3] युद्ध में हिन्दुओं को हार खानी पड़ी। युद्ध के मैदान से हिन्दू सेना की भगदड़ तथा मुस्लिम सेना की विजय से महमूद पुनः आगे बढ़ने को उद्यत हुआ[4] तथा इस प्रकार की स्थिति से अवगत होकर तत्कालीन दिल्ली का शासक अपने राज्यान्तर्गत थानेश्वर को सुरक्षित रखने के उद्देश्य से हिस्दुस्तान के अन्य अनेक शक्तिशाली राजाओं को निमन्त्रित किया।[5] इस बात पर विशेष जोर दिया गया था कि यदि मुस्लिम आक्रान्ताओं से थानेश्वर की रक्षा न की गई तो सम्पूर्ण भारत का पतन होगा किन्तु हिन्दू राजाओं के एकत्र होने के पूर्व ही महमूद ने थानेश्वर की ओर बढ़कर मुस्लिम सेना की सहायता से उस भव्य नगर में बड़ी निर्दयता से लूटपाट किया तथा अनेक देवालयों की मूर्तियों को तोड़ने के पश्चात् प्रमुख मूर्ति को उठाकर गजनी ले गया।[6] ऐसी स्थिति में थानेश्वर के कौशिक ब्राह्मण अपने धर्म की सुरक्षा तथा जीविका के निमित्त बहिर्गत हुए होंगे तथा उन्हें मालवा में राज्याश्रय मिला होगा। परमार भोजदेव के बेतमा दानपत्र से ज्ञात होता है कि स्थाण्वीश्वर के कौशिक ब्राह्मणों के पूर्वजों का आद्यस्थान विशाल ग्राम[7] था, जिसका तादात्म्य वैशाली (बिहार) से स्थापित किया जाता है, किन्तु निश्चित रूप से नहीं कहा जा सकता।

थानेश्वर से बहिर्गत हुए कौशिक ब्राह्मण माध्यन्दिन शाखानुयायी[8] थे जिनका त्रिप्रवर[9] था। कौशिक ब्राह्मणों के त्रिप्रवर के ऋषियों के नाम अघमर्षण, विश्वामित्र तथा कौशिक थे।[10]

स्थाण्वीश्वर के कौशिक ब्राह्मणों का प्रभाव और प्रसार एकादश शताब्दी के पूर्वार्द्ध में (१०१९ ई०) मालवा में स्थापित हो रहा था। मालवा में स्थाण्वीश्वर के शुक्ल यजुर्वेदीय माध्यन्दिन शाखा के कौशिक परिवार से सम्बन्धित ब्राह्मण भट्ट[11] तथा पण्डित[12] उपाधिधारी होते थे। इस सम्बन्ध में ब्राह्मण ठट्ठसिक (पिता) को भट्ट तथा पुत्रदेल्ह को पण्डित उपाधि[13] मिली थी। कौशिक बाह्मण पण्डित देल्ह

१-६. मजूमदार और पुसालकर (सम्पादक), द स्ट्रगिल फार इंपायर, पृ० १०–११

७. ए० इ०, १८, पृ० ३२३

८-१३. '— — —विशालग्राम-विनिर्गत-पूर्व्व (जा) य। स्थाण्वीश्वरादागताय। स्व हस्तोयं श्री भोजदेवस्य। कौशिक सगोत्राय। अघमर्षण विश्वमित्र कौसिकेति (त्रिः) प्रवराय। माध्यन्दिनशाखाय। भट्ट ठट्ठसिकसुताय। पण्डित देल्हाय। कोंकण ब्रहणविजय— — —।' ए० इ०, १८, पृ० ३२३

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

को कोंकण विजयोत्सव के अवसर पर बड़ी श्रद्धा तथा निष्ठा के साथ तत्कालीन परमार भोज ने ग्राम दान में दिया था।[1] उपर्युक्त तथ्यों से ज्ञात होता है कि माध्यन्दिनशाखा तथा त्रिप्रवर से सम्बन्धित कौशिक ब्राह्मणों का केन्द्र स्थाण्वीश्वर था तथा उनकी ख्याति मालवा में भी हो गई। मालवा में कौशिक ब्राह्मणों की भट्ट तथा पण्डित उपाधियों से इस बात का संकेत मिलता है कि विभिन्न प्रकार के विषयों के विद्वान् होते थे तथा उनके पांडित्य का प्रभाव विशेष रूप से था। भट्ट उपाधिधारी ब्राह्मण को विशिष्ट विद्वान् समझा जाता था। भट्ट उपाधि वर्तमान काल के प्रोफेसर या अन्य विद्वत्तासूचक उपाधि के सदृश थी। कौशिक ब्राह्मण पण्डित देल्ह परमार भोज का दानग्रहीता था जिससे आभास होता है कि उक्त ब्राह्मण परिवार में याज्ञिक तथा धार्मिक कृत्य हुआ करते थे तथा उनका सम्बन्ध यजमानों से होने के कारण भूमिदान तथा ग्रामदान लेते थे। दान-दक्षिणा आदि ग्रहण करना पौरोहित्य कृत्य समझा जाता है जो उनके व्यवसाय तथा जीविका का द्योतक प्रतीत होता है।

उपरिवर्णित वेत्मा दानपत्र के आधार पर यह कहा जा सकता है कि लगभग दशम शताब्दी के उत्तरार्द्ध में वर्तमान यजुर्वेदीय कौशिक ब्राह्मणों का केन्द्र स्थाण्वीश्वर (थानेश्वर) था जहाँ से बहिर्गत होने के पश्चात् उनको मालवा के ब्राह्मण धर्मावलम्बी परमार भोज के समय (१०१८-१९ ई०) विशेष मर्यादित ढंग से सम्मान प्रदान किया गया था। ऐसा कहा जा सकता है कि कौशिक ब्राह्मणों का प्रसार और प्रभाव बाद में बढ़ता गया।

---

१. ए० इ०, १८, पृ० ३२२

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

दूसरा अध्याय

नामकरण का सांस्कृतिक परिवेश

भारत के सांस्कृतिक इतिहास में व्यक्तिगत नामों ने एक महत्त्वपूर्ण भूमिका प्रस्तुत की है। सामान्यतः नामों से वंश, धर्म, जाति और व्यक्ति के सांस्कृतिक लक्षण की सूचना मिलती है।[1]

नामों के दो बड़े जत्थों—मनुष्य-नाम तथा स्थान-नाम का महत्त्व मानव-जीवन में सदा रहता है। वस्तुतः दोनों नाम मनुष्य की भाषा के अंग हैं तथा इनसे मनुष्य के अतीत के इतिहास और उसकी संस्कृति पर प्रकाश पड़ता है। पश्चिम के देशों में स्थानीय नामों का सुसम्बद्ध अध्ययन किया गया है, जिनसे जातियों की भाषा, फैलाव और रहन-सहन पर अत्यधिक प्रकाश पड़ता है। भारत के स्थान-नामों का अध्ययन भी अधिक महत्वपूर्ण तथा रुचिकर सिद्ध होगा, क्योंकि मुंडारी भाषा, द्रविड़ भाषा, आर्य भाषा और म्लेच्छ परिवारों की भाषाओं ने स्थान-नामों की रचना में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा की है। प्रस्तुत अध्ययन में केवल पूर्वमध्ययुगीन उत्तरभारत के ब्राह्मणों के वैयक्तिक नामों की चर्चा की जायेगी। साहित्यिक साक्ष्यों से ज्ञात होता है कि मनुष्य-नामों का इतिहास वैदिक युग से शुरू होता है। विकास तथा परिवर्तन की दृष्टि से इनके निम्न-लिखित प्रमुख सोपान विचारणीय हैं :—

१– ऋग्वेदीय नाम।
२– उत्तरवैदिक और ब्राह्मणकालीन नाम।
३– बौद्ध-पालि-साहित्य और पाणिनिकालीन नाम।
४– मौर्य, शुंग और कुषाणकालीन प्राकृत नाम।

---

१. संकालिया, एच० डी०, 'कल्चरल सिग्निफिकेन्स आफ द पर्सनल एण्ड द प्लेस नेम्स फ्राम वाकाटक इन्स्क्रिप्शन्स'—डेकन कालेज, रिसर्च बुलेटिन, भाग १८, पृ० १७३ (१९५७)

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

५– गुप्तकालीन और संस्कृत-साहित्यगत नाम।

६– संस्कृत, प्राकृत और अपभ्रंश साहित्य में प्रयुक्त मध्यकालीन नाम।

७– वर्तमानकालीन नाम।

भारतीय मनुष्य-नामों का विवेचात्मक अध्ययन हर युग के सांस्कृतिक इतिहास का एक महत्त्वपूर्ण अंग रहा है। भाषा, धार्मिक तथा सामाजिक विश्वासों और परम्पराओं के अनुसार माता-पिता बालक का नामकरण करते है। प्रत्येक मनुष्य के लिए नाम अधिक प्रिय शब्द बन जाता है। जीवन के सभी क्षेत्रों में वह सर्वाधिक व्यवहार में आने वाला शब्द होता है। वैयक्तिक नामों में इस प्रकार की जातीय और वैयक्तिक सुरुचि, आस्था और संस्कृति की छाप पायी जाती है।

प्रस्तुत प्रकरण में पूर्व मध्ययुगीन आभिलेखिक साक्ष्यों की सहायता से उक्त तथ्यों को ध्यान में रखते हुए उत्तर भारत के ब्राह्मण पविरारों में नामकरण का विशेष महत्त्व दर्शाया गया है।

(अ) नामकरण संस्कार

मनुष्य के अनुसार नामकरण में किसी विशेष नियम का अनुकरण नहीं होना चाहिए।[1] साधारणतः नाम रखने में दो बातें ध्यातव्य हैं—

१—ब्राह्मण का नाम मंगलसूचक, क्षत्रिय का नाम शक्ति का, वैश्य का नाम लक्ष्मी का और शूद्र का नाम नीचता का द्योतक होना चाहिए।[2]

२—ब्राह्मण के नाम के साथ उपपद 'शर्मा' अपेक्षितहै जो प्रसन्नता या आशीर्वाद का द्योतक है, राजा के नाम के साथ रक्षण सम्बन्धित, वैश्य के साथ धन सम्बन्वित और शूद्र के साथ सेवा कार्य से सम्बन्धित उपपद होने चाहिए।[1] जातियों के विकास में यह उपपद एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है।

भारत में नामकरण की एक मान्य पद्धति रही है, जिसे नामकरण संस्कार कहा जाता है। बालक का नामकरण निम्नलिखित पद्धतियों से

---

१. काणे, पांडुरंग वामन, हि० आ० ध०, २, पृ० २५०

२. मङ्गल्यं ब्राह्मणस्य स्यात्क्षत्रियस्य बलान्वितम्।
वैश्यस्य धनसंयुक्तं शूद्रस्य तु जुगुप्सितम्॥
—मनुस्मृति, अ० २, श्लो० ३१

१. मनुस्मृति, अ० २, श्लोक ३२

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

होता है[1] :—

१. बालक का नाम किसी विशेष राशि पर रखा जाता है।

२. कुछ जातियों में पिता की बहन के द्वारा जैसे गुजरात में।

३. बालक के जन्म के कुछ दिन पश्चात् नामकरण।

४. पुरोहित द्वारा नामकरण।

यद्यपि उक्त तथ्य आधुनिक प्रतीत होता है, किन्तु इनकी जड़ें ऋग्वेद काल तक चली गयीं हैं।[2] म०म० डा० पान्डुरङ्ग वामन काणे के मतानुसार उपर्युक्त पद्धतियों में क्रमशः विकास होता गया। यह विकास तत्कालीन साहित्यिक ग्रन्थों में उपलब्ध होता है। यद्यपि इन साहित्यिक स्रोतों का समय निश्चित नहीं किया जा सकता और न उनका प्राप्ति-स्थान ही पूर्णतः ज्ञात है, तथापि ये ग्रन्थ अत्यन्त महत्त्वपूर्ण हैं।[3] काणे के अनुसार साहित्यिक ग्रन्थों में उपलब्ध नामकरण-पद्धति को चार विविध कालों में बाँटा जा सकता है, जो निम्नलिखित[4] हैं :—

१. **वैदिक-काल—** इसके अन्तर्गत ऋग्वेद से लेकर ब्राह्मण ग्रन्थों तथा उपनिषदों के साक्ष्य आते हैं।

२. **सूत्र-काल—** इस काल में विभिन्न गृह्य-सूत्रों की रचना हुई, जिनमें जात-कर्म, नामकरण, विवाह इत्यादि संस्कारों का विवेचन है।

३. **स्मृति-काल—** इस काल में स्मृतियों और धर्मशास्त्र की रचना हुई। स्मृतियाँ मानव-जीवन के विविध पक्षों का विशदीकरण करती हैं।

४. **स्मृत्युत्तर काल**

यह काल स्मृति-काल के बाद का है, जो १३०० ई० के लगभग समाप्त होता है।

शास्त्रों में वर्णित नामों के आधार पर पूर्वमध्ययुगीन उत्तरभारत के ब्राह्मणों के नाम रखे जाते थे अथवा नहीं, यह विचारणीय है। ये नाम धार्मिक प्रवृत्तियों पर भी प्रकाश डालते हैं। इस दृष्टि से विचार करने के लिए राजवंशों के दानपत्रों में उल्लिखित ब्राह्मणों के नाम ध्यातव्य हैं।

---

१. संकालिया, एच० डी०, 'स्टडीज इन द हिस्टारिकल एण्ड कल्चरल जियोग्राफी एण्ड एथनोग्राफी आफ गुजरात'—पृ० १०२

२. इंडियन हिस्टारिकल क्वार्टरली, १४, पृ० २२४-५५ (१९३८)

३. संकालिया, एच० डी०,– स्ट० हि० कं० जि० ए० गु०, पृ० १००

४. वही, पृ० १००-१

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

गुर्जर देश

त्रैकूटक सङ्गम सिंह तथा कलचुरिकालीन ब्राह्मणों के नाम (५वीं तथा ६ठीं शती)

त्रैकूटक, सङ्गम सिंह तथा कलचुरिकालीन दानपत्रों पर आधारित गुर्जर-देशीय ब्राह्मण-नामों से सम्बन्धित अधोलिखित सूची ध्यातव्य है :—

नाम का प्रथम भाग— नण्ण, नाग, अनन्त, प्रजापति, शिव, भाणु (भानु), भव, बोध, बाप।

उक्त सूची से विदित होता है कि गुर्जर देश के ब्राह्मण परिवार में देवताओं के नाम को आधार बनाकर नामकरण किया जाता था। विष्णु से सम्बन्धित नाम की श्रेणी के अन्तर्गत उक्त नण्ण[1], प्रजापति तथा अनन्त ब्राह्मण के नाम आते हैं। इसके अतिरिक्त शिवपरक नाम शिव, नाग तथा भव हैं। ऐसा विदित होता है कि तत्कालीन ब्राह्मणों में विष्णु तथा शिव का महत्त्व था। इस प्रकार इन दोनों देवताओं का प्रभाव विशेष रूप से था।

नक्षत्रयी या नाक्षत्रिक नामों में केवल भाणु (भानु) या सूर्य मिला है। इसके अतिरिक्त सम्बन्धसूचक बप्प नाम भी मिला है। बप्प का तात्पर्य है बाप या पिता। गुर्जर देश में सम्भवतः पिता को बाप कहा जाता था। आज भी उत्तर भारत के अधिकांश गाँवों में पिता के लिए बाप शब्द प्रयुक्त होता है। गुर्जरदेशीय ब्राह्मणों के अधिकांश नाम शुद्ध संस्कृत भाषा में उल्लिखित हैं और कुछ नाम प्राकृत भाषा में भी हैं। शुद्ध संस्कृत भाषा से सम्बन्धित नाम हैं—नाग, अनन्त, प्रजापति, शिव, भव, तथा बोध।

इसके अतिरिक्त प्राकृत नाम भी ध्यातव्य हैं— नण्ण, भाणु, बप्पा। 'ण' से समाप्त होनेवाले देशी या प्राकृत नामों का प्रचलन गुर्जरदेशीय ब्राह्मण परिवारों में था।

उपर्युक्त तथ्यों की सहायता से यह कहा जा सकता है कि गुर्जरदेश के ब्राह्मणों में शुद्ध संस्कृत भाषा प्रचलित थी तथा प्राकृत भी कतिपय परिवारों में प्रभाव रखती थी।

त्रैकूटक संगमसिंह, तथा कलचुरिकालीन नामों की सूची यहाँ सुविधा के लिए दी जा रही है।

---

१. नन्न नारायण का मन्दिर बंगाल में धर्मपाल के समय में था, जिसका पुजारी लाट (गुजरात) द्विज था।—खालिमपुर दानपत्र, ए० इ०, ४ पृ० २४८

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

ब्राह्मण नाम	राजा का नाम	समय तथा अभिलेख प्राप्ति का स्थान	संदर्भ
नण्ण स्वामी	धरसेन	क० व० २०७=४५७ ई० पर्दी	कार्पस, ४,पृ०२४
नाग शर्मा	व्याघ्रसेन (त्रैकूटक)	क०व० २४७=४९० ई० सूरत	वही, पृ० २७
अनन्तदत्त	संगमसिंह	क०व० २९२=५४२ ई० सुनाओकला	वही, पृ० ३५
प्रजापति	,,	,,	वही।
शिवदेव	,,	,,	वही।
भाणुदेव	,,	,,	वही।
भवरूचि	,,	,,	वही।
अनन्तस्वामी	शंकरगण (कलचुरि)	छठीं शती उत्तरार्ध का अन्तिम भाग, संखेड़ा	वही, पृ० ४६
बोधस्वामी	बुद्धराज (कलचुरी)	क०व० ३६०=६१० ई० वडनेर	वही, पृ० ५०
बप्पस्वामी	,,	क०व० ३६२=६११ ई० सर्सवनी	वही, पृ० ५५

गुर्जरकालीन नाम (७ वीं तथा ८ वीं शताब्दी)

जुजरात के अधिकांश ब्राह्मण परिवारों में भिन्न-भिन्न प्रकार के नाम रखे जाते थे जिनके सम्बन्ध में सूचनायें तत्कालीन गुर्जरकालीन दानपत्रों पर आधारित निम्मलिखित सूची से मिलती हैं—

नाम का प्रथम भाग—भट्टि, गोप, विशाख, अग्नि, द्रोण, वत्र, तापि, दत्त, भागि, पितृ, कर्क, आवूक, वाट, शैल, घोष, महादेव, वाव, महीधर, धर, नन्दि, रामिल, धर्म, इन्द्र, आदित्य, ईश्वर, धर, दाम, भद्र, वायु, रुद्र, पूर्ण, सूर्य, दत्त, देब, नारायण, षष्ठ, आचड आदि।

गुर्जरकालीन ब्राह्मण परिवारों में नाम-चयन क आधार नक्षत्रयी या नाक्षत्रिक देवताओं के नाम को बनाया जाता था। उपर्युक्त सूची से विदित होता है कि इस प्रकार की श्रेणी के अन्तर्गत अग्रलिखित नाम आते हैं—

Digitization by Hindu Heritage Foundation of America. HHFA(USA)

नक्षत्रयी नाम– आदित्य, रुद्र, अग्नि, विशाख, इन्द्र, वायु, कर्क तथा सूर्य। आदित्य, अग्नि, इन्द्र, रुद्र तथा वायु नक्षत्र देवताओं के नाम हैं।

गुर्जरदेश के अधिकांश ब्राह्मणों के नाम देवताओं के नाम से प्रारम्भ किये जाते थे, जो निम्नलिखित हैं—

देवतापरक नाम– धर्म, नन्दि, दत्त, राम, देव, नारायण, दामोदर, रुद्र, गोविन्द, ईश्वर, महादेव।

उक्त नामों से ज्ञात होता है कि यम, विष्णु(कृष्ण),शिव तथा राम जैसे विशिष्ट देवताओं का प्रभाव गुर्जर ब्राह्मणों में था। यम से सम्बन्धित ब्राह्मण नाम धर्म परक है। दत्त, दामोदर, गोविन्द, राम, ईश्वर और नारायण नाम विष्णुपरक प्रतीत होते हैं। देव, महादेव, नन्दि तथा रुद्र को शिव नाभ कहा जा सकता है। ऐसा ज्ञात होता है कि गुर्जर ब्राह्मण पौराणिक देवताओं के उपासक थे। गुर्जरदेशोंय ब्राह्मणों के कतिपय परिवारों में गोत्र तथा पूर्वज के नाम को भी नामकरण में आधार रूप में स्वीकार किया जाता था–यथा, द्रोण, पितृ आदि।

जातिपरक या जातीय नामों का प्रचलन गुर्जरकालीन ब्राह्मणों में था। इस प्रकार के निम्न नाम ध्यातव्य हैं–दाम और धन आदि से सम्बन्धित नाम जो वैश्य जाति का प्रतिनिधित्व करते हैं। इससे यह संकेत मिलता है कि गुर्जर ब्राह्मणों के नाम-चयन में उदार तथा विस्तृत दृष्टिकोण रहता था।

नदी परक नाम–यह नाम गुर्जरकालीन ब्राह्मणों में प्रयुक्त होता था। एक ब्राह्मण का नाम तापि था, जो संभवतः ताप्ती नदी के नाम पर रखा गया होगा। उस समय वाद्य से सम्बन्धित नाम भी प्रचलित थे, यथा–घोष,दुन्दुभि। कुछ कतिपय ब्राह्मणों के नाम पहाड़ आदि शुरू से किये जाते थे, यथा-शैल।

ब्राह्मण परिवारों में भट्टिनाम भी प्रयुक्त होनेवाली उपाधि मानी जाती है। कुछ ब्राह्मणों के ऐसे भी नाम हैं, जिनका अर्थ स्पष्ट नहीं होता, यथा— आवूक, वाट, चष्ट, आचड।

इस प्रकार के नाम शक क्षत्रपों के नामों की श्रेणी की अन्तर्गत आते हैं। ऐसा प्रतीन होता है कि विदेशी भाषाओं का प्रभाव गुर्जरकालीन ब्राह्मणों पर था।

इन नामों के अनुशीलन से ज्ञात होता है कि गुर्जर राजाओं के समय में गुजरात के ब्राह्मणों में शुद्ध संस्कृत भाषा बोली जाती थी या इस भाषा का विशेष प्रभाव था। अधिकांश ब्राह्मणों के नाम शुद्ध संस्कृत भाषा से लिये गये हैं। साथ ही

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

इन ब्राह्मण-नामों के परिशीलन से यह भी ज्ञात होता है कि ब्राह्मणों पर शैव और वैष्णव धर्म का प्रभाव अधिक था, क्योंकि प्रायः इनसे सम्बन्धित देवताओं के के नामों में से ही ब्राह्मण-नामों का चयन किया जाता था।

गुर्जरकालीन ब्राह्मण-नामों की सूची (६००-७५० ई०)

दद्द द्वितीय (क० व० ३८०–६२९ ई०) के कैरा दानपत्र में ब्राह्मणों के इन नामों का उल्लेख हुआ है—[1] भट्टि, गोपादित्य, भट्टिगण, विशाख, अग्निशर्मा, द्रोण, भट्टिदामन, वत्र, द्वितीयशर्मा, तापिशर्मा, दत्रस्वामी, भागिस्वामी, पितृशर्मा, भट्टि, द्रोड़, कर्क, आवूक, वाटशर्मा, शैल, घोष, महादेव, वाव, घर, विशाख, नन्दि, रामिल, धर्मधर, इन्द्राशर्मा, आदित्यरवि तापिशूर, इन्द्रशूर, ईश्वर, घर, दामधर, ईश्वर, मद्र, वायुशर्मा, द्रोणस्वामी, रुद्रादित्य, पूर्णस्वामी। इसके अतिरिक निम्नलिखित सूची द्रष्टव्य है—

ब्राह्मण-नाम	राजा का नाम	समय	अभिलेख प्राप्ति-स्थान	सन्दर्भ
सूर्य	दद्द द्वितीय	क०व० ३९२= ६४२ ई०	संखेड़ा	कार्पस,४/२.पृ०७७
दत्त	जयभट्ट तृ०	क०ब० ४५६= ७०६ ई०	नवससि	वही, पृ० ८६
देवस्वामी	गुर्जर			
नारायण	जयभट्ट तृ०	क०व० ४६०= ७१० ई०	अजनेरी	वही, पृ० ९३
चष्टस्वामी				
आचड	,, च०	क०व० ४८६= ७३६ ई०	प्रिन्स आफ वेल्स	वही, पृ० १०५
आदित्यनाथ	,,	क०व० ४८६= ७३६ ई०	,,	वही।
दुन्दुभी	दद्द तृ०	क०व०४२७= ६७७ ई०	,,	वही, पृ० ६२१

राष्ट्रकूटकालीन ब्राह्मण-नाम— (९०० ई०)

राष्ट्रकूटों के दानपत्रों (नवम शताब्दी) से सूचना मिलती है कि गुर्जर-

१. मिराशी, कार्पस, ४/१, पृ० ६१

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

देशीय ब्राह्मण-परिवारों में अधोलिखित व्यक्तिगत नाम प्रयुक्त होते थे–

नाम का प्रथम भाग– सोम, सर्वदेव, नाहर, महेश्वर, द्रोण, शर्मा, वप्पुक, गोव, नैव, मौल्ला, अण्ह, नासेन, लिम्ब, आदित्य, योग, अग्नि, नाग, नाण, रेवा, नीव, ईश्वर, वप्प, शिव, देव, सिंह, नन्न, भातृ, नैना, लाल्ल, जज्जुक, दत्त, समवौरा, नाग, दामोदर, राणप, प्रभाकर, सिद्ध, वेन्नप, त्रिविक्रम, नेम, भौमिक, भट्ट।

उक्त सूची से विदित होता है कि राष्ट्रकूट कालीन ब्राह्मणों के नामों में देवताओं के नाम प्रचलित थे। विष्णु तथा शिव से सम्बन्धित नाम प्रायः नाम चयन के आधार बनाये जाते थे। इनसे सम्बन्धित निम्नलिखित नाम ध्यातव्य हैं-

देवतापरक नाम– सर्वदेव,महेश्वर, नाग,ईश्वर, शिव,देव, नन्न(नारायण), दामोदर, त्रिविक्रम, वित्थल (=विट्ठल. विष्णु का नाम है, जो महाराष्ट्र में प्रचलित है)।[1]

विष्णुपरक नाम की श्रेणी के अन्तर्गत-गन्न (नारायण), वित्थल(= विट्ठल), दामोदर तथा त्रिविक्रम ब्राह्मण-नाम हैं। इसके अतिरिक्त योग, -सर्वदेव, महेश्वर नाग, ईश्वर तथा देव–शिव के नाम प्रतीत होते हैं। ऐसा लगता है कि तत्कालीन ब्राह्मण परिवारों में शिव तथा विष्णु की उपासना की जाती थी। यह सम्भव है कि इन देवताओं को धारण करने वाले ब्राह्मण अपने नाम वाले देवता के उपासक न हों, किन्तु यह कहा जा सकता है कि ब्राह्मण उक्त देवताओं से प्रभावित होकर नाम-चयन करते थे।

राष्ट्रकूट ब्राह्मणों के नाक्षत्रिक या नक्षत्रयी नाम होते थे। सूची से अवगत होता है कि ब्राह्मणों में नाक्षत्रिक देवताओ के नामों का प्रारम्भ किये जाने का प्रचलन था। जैसे — आदित्य , अग्नि , रेव (रेवती ?) , भानु , सोम ।

यदा-कदा राष्ट्रकूटकालीन ब्राह्मणों के नाम सम्बन्धसूचक हुआ करते थे, यथा–मातृ. बप्प (बाप या पिता ?), बप्पुक ।

क्षत्रियपरक नामों का प्रचलन तत्कालील ब्राह्मण परिवारों में था। एक ब्राह्मण का नाम सिंह से शूरु हुआ है। इससे ज्ञात होता है कि ब्राह्मणों में नामकरण करते समय संकुचित दृष्टिकोण व्याप्त नहीं था।

राष्ट्रकूटों के समय में ब्राह्मणों के अधिकांश नाम ऐसे हैं, जो शुद्ध संस्कृत भाषा में नहीं हैं तथा उनका निश्चित रूप से अर्थ स्पष्ट नहीं होता।

---

१. संकालिया, स्ट० हि० क० जि० ए० गु०, पृ० ११७

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

संभवत: वे किसी बाहरी, यथा कन्नड़ या अन्य भाषा में हैं या वे देशी नामों की श्रेणी के अन्तर्गत रखे जा सकते हैं। इस प्रकार के अधोलिखित नाम विचारणीय हैं—

वप्पुक, लाल्ल, गोव, जज्जुक, नेव, समबौरा, अण्ह, सोभा (शोभा ?), नासेन, सगुल (सगुन या सगुण ?), लिम्ब, राणप, नाण, सिद्धप, भौला, वेन्नप नीवा, भोमिक, नन्न या नण्ण, नैना।

देशी नामों का वर्गों में विभाजन : यथा—'क' से समाप्त होने वाले नाम—वप्पुक, जज्जुक, मोभिक।

'ण' या 'न' से समाप्त होनेवाले नाम—नाण, नण्ण, नासेन, नन्न, नैना।

'प' से समाप्त होने वाले नाम— राणप, सिद्धप, वेनप, बप्प।

'ब' से समाप्त होने वाला नाम—लिम्ब।

'भ' से समाप्त होने वाला नाम— सोभा (शोभा ?)

'र' से समाप्त होनेवाला नाम— समकौरा, नाहर।

'ल' से समाप्त होनेवाला नाम — वित्थल, सगुल (सगुण या सगुन ?), भौला (भोला ?), लाल्ल।

'व' से समाप्त होनेवाला नाम— गोव, नेव, नीवा।

'ह' से समाप्त होनेवाला नाम— अण्ह।

उक्त नाम देशी या प्राकृत भाषा के नाम प्रतीत होते हैं। इन नामों के देखने से यह भी शंका होती है कि इनमें विदेशी भाषाओं के तत्त्व भी हो सकते हैं। यह भी सम्भव है कि शकों या क्षत्रपों की भाषा का भी प्रभाव पड़ा हो ?

इस प्रकार राष्ट्रकूटकालीन ब्राह्मणों के विभिन्न प्रकार के नामों से सम्बन्धित तथ्यों पर विचार करने करने से वह अवगत होता है कि उनमें दो प्रकार की भाषा प्रचलित थी यथा—(१) शुद्ध संस्कृत भषा, (२) देशी या प्राकृत (कन्नड़ भाषा ?)। प्राकृत नामों का नृवंश विद्या की दृष्टि से अध्ययन भी विशेष महत्वपूर्ण प्रतीत होता है।

राष्ट्रकूटकालीन ब्राह्मण नामों की सूची

गोविन्दराज (शक सं० ७३५—८१३ ई०) के तोर्खेद दानपत्र में निम्नलिखित राष्ट्रकूटकालीन ब्राह्मणों का उल्लेख हुआ है। आदित्य, योग, अग्निशर्मा, नेवरेब, नाग, नाणसर, खेसमा, भौला, नीवादित्य, ईश्वर बप्पस्वामी, गोवशर्मा, शिवादित्य, देवभट्ट, सिंह. नन्न, मातृशूर, सहेश्वर, नैना, लाल्ल, जज्जुक, दत्त,

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

अग्निशर्मा, नेमादित्य, समवौरा, जज्जुक । इसके अतिरिक्त अधोसूची भी द्रष्टव्य है—

ब्राह्मण का नाम	राजा का नाम	समय	अभिलेख प्राप्ति-स्थान	सन्दर्भ
आदित्य	गोविन्द राज	श० सं० ७३५= ८१३ ई०	तोर्खेद	ए० इ०, ३, पृ० ५५–५६
आदित्यचीह	,,	,,	,,	,,
सोभा	,,	,,	,,	,,
अग्निशर्मा	,,	,,	,,	,,
रेवा	,,	,,	,,	,,
नागकुमार	सुवर्णवर्ष	श०सं० ७४६ = ८२५ ई०	ब्रह्मनपल्ली	वही, २३, पृ० ८४
दामोदर	,,	,,	,,	,,
सगुलदीक्षित	बुद्धवर्ष	,,	संजन	वही, १४, पृ० १५०
रेवा	,,	,,	,,	,,
राणपभट्ट	इन्द्रराज	श०सं० ८३६= ९१५ ई०	,,	,,
प्रभाकर भट्ट	,,	,,	,,	,,
सिद्धपभट्ट	,,	,,	,,	,,
वेन्नपभट्ट	,,	,,	,,	,,
त्रिविक्रमभट्ट	,,	,,	,,	,,
नेमादित्य	,,	,,	,,	,,
भोमिक	गोविन्दराज	श०सं० ७३८= ८१० ई०	,,	वही, १६, पृ० २५४
भट्टजय	,,	,,	,,	,,

चालुक्यकालीन ब्राह्मणों के नाम

प्रारम्भिक तथा परवर्ती चालुक्यों के दानपत्रों (७वीं शदी, १२वीं शदी) से विदित होता है कि गुजरात के ब्राह्मण-परिवारों में निम्नलिखित व्यक्तिगत नाम प्रचलित थे—

नाम का प्रथम भाग— किक्कक, श्री, भागिक्क, वल्ल, गोभि, लुला,

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

मातृ, उया, सामन्त, माधव, प्रीति, भाभा, त्रिविक्रम, बालण, नण्ग, विष्णु कांचल, वेणी, गोविन्दलि, जानक, देल्हण, दामोदर।

उक्त सूची से ज्ञात होता है कि चालुक्यों के समय ब्राह्मणों के नाम देवताओं के नाम से प्रारम्भ किये जाते थे, यथा–विष्णुपरक नाम–त्रिविक्रम, नण्ण (नारायण ?),गोविन्दलि (गोविन्द ?,) श्री, माधव, विणु, दामोदर। ऐसा लगता है कि ये विष्णु से प्रभावित थे या इनमें विष्णु या वैष्णव धर्म का प्रभाव किसी न किसी रूप में था।

कहीं-कहीं सामन्तवादी नाम का प्रयोग भी होता था, जो कुछ ब्राह्मण-परिवारों में ही प्रचलित था, जैसे—सामान्त।

चालुक्यकालीन ब्राह्मणों के प्राकृत या देशी नामों का भी उल्लेख दानपत्रों में किया गया है। इन नामों का निश्चित रूप से अर्थ स्पष्ट नहीं होता; यथा—किक्कक, वल्ल, भौगिक्क, तुला, गोमि, उया, नण्ण, भाभा, कांचल, बालण, गोविन्दलि।

इससे स्पष्ट है कि इन नामों में द्रविण भाषाओं का प्रभाव भी स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है।

उक्त-ब्राह्मण नाम देशी भाषाओं से लिये गये हैं, जिन पर दक्षिणी भाषाओं का स्पष्ट प्रभाव है। इससे प्रतीत होता है कि ब्राह्मणों में सम्भवतः बोलचाल की भाषा प्राकृत थी (लोकप्रचलित देशी भाषा)। प्राकृत-नामों को अधोलिखित श्रेणियों में रखा जा सकता है—

'क' से समाप्त होने वाले नाम—किक्कक, भोगिक।
'ण' से समाप्त होने वाले नाम—नण्ण, बालण।
'भ' से समाप्त होने वाला नाम—भाभा।
'म' से समाप्त होने वाला नाम—गोमि।
'ल' या 'लि' से समाप्त होने वाले नाम—कांचल, गोविन्दलि, वल्ल, लुल्ला।
'य' से समाप्त होनेवाला नाम—उया।

उपर्युक्त तथ्यों से ज्ञात होता है कि चालुक्यकालीन ब्राह्मण-परिवारों में शुद्ध संस्कृत भाषा का प्रभाव कम था, जबकि प्राकृत का प्रभाव विशेष रूप से था। साथ ही तेलगू, कन्नड़ प्रभृति द्रविड़ भाषाओं का तथा उनकी बोलियों का प्रभाव भी इन पर परिलक्षित होता है। साथ ही इन नामों पर वैष्णव प्रभाव भी ध्यातव्य है।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

चालुक्यकालीन ब्राह्मण-नामों की सूची

ब्राह्मण का नाम	राजा का नाम	समय	अभिलेख प्राप्ति-स्थान	सन्दर्भ
किक्ककस्वामी	शीलादित्य (चालुक्य)	क०व० ४८१ = ६७१ ई०	नवसारी	कार्पस,४/१, पृ० १२५
भोगिक्कस्वामी	,,	,,	,,	,,
मातृस्थविट	,,	,,	,,	,,
सामन्तस्वामी	,,	,,	,,	,,
प्रीतिशर्मा	जयसिंह (चालुक्य)	क०व० ४३६ = ६८५ ई०	नासिक	वही, पृ० १३०
त्रिविक्रम	,,	,,	,,	,,
नण्णस्वामी	शीलादित्य चालुक्य	क०व०४४३ = ६९३ई०	सूरत	वही, पृ०१३४
मातृश्वर	,,	,,	,,	,,
कांचल	पुलकेशिराज (चालुक्य)	क०व० ४९० = ७३७ ई०	नवसारी	वही,पृ० १४१
गोविन्दलि	,,	,,	,,	,,
श्रीधर	भीमद्वितीय	वि०सं०१२७३	श्रीधर की देव-पाट की प्रशस्ति	ए०इ०२,पृ० ४४०-४२
वल्ल	मूलराज	,,	,,	,,
लुला	कुमारपाल	,,	,,	,,
उयाभट्ट	,,	,,	,,	,,
माधव	,,	,,	,,	,,
भाभा	,,	,,	,,	,,
बालण	कुमार पाल	वि०सं०१२०८ ११५१ ई०	,,	ए०इ०१, पृ० ३०१
विष्णु	,,	,,	,,	,,
वेणि	,,	,,	,,	,,
जानक	भीमदेव	वि०सं०११२० = १०६३ ई०	पलनपुर	वही, २१. पृ० १७८
देल्हण	जयसिंह	क०व० ९१८ = ११६२ ई०	जबलपुर	कार्पस, ४, पृ० ३२९

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

सैन्धव राजवंशीय ब्राह्मणों के नाम :

उत्तरी काठियावाड़ (गुर्जरदेश) के ब्राह्मण-नामों का उल्लेख सैन्धव दानपत्रों में (९वीं शताब्दी) मे मिलता है । इन दानपत्रों पर आधारित नामों में प्राप्त नामों के निम्नलिखित प्रथम भाग विचारणीय हैं—

शिव, भट्ट, शङ्खधर, कुलचन्द्र, रुद्र, माधव, सागर, कल्याण, गुहेश्वर ।

सैन्धव शासकों के समय ब्राह्मण-परिवारों में नाम-चयन का आधार शिव तथा विष्णु के नाम थे । उक्त सूची में उल्लिखित विष्णु से सम्बन्धित ब्राह्मण नाम शङ्खधर तथा माधव है । शिव-नामों की श्रेणी में शिव, रुद्र और गुहेश्वर उल्लेखनीय हैं । इससे ज्ञात होता है कि ब्राह्मणों में प्रायः वैष्णव और शैव मतावलम्बी होते थे ।

7146

कतिपय ब्राह्मण-परिवारों में नामों का प्रारम्भ भट्ट शब्द से होता था । भट्ट शब्द विशिष्ट विद्वान् के तात्पर्य का बोधक है । इससे ब्राह्मणों के विद्याव्यसन तथा उनकी अध्ययनशीलता द्योतित होती है ।

ब्राह्मण-नाम का आधार नदी या सागर हुआ करता था । इससे यह भी संकेत मिलता है कि ब्राह्मण गम्भीर और उदार दृष्टि रखते थे ।

सैन्ध कालीन ब्राह्मणों का नाम-चयन शुभ, मङ्गल तथा कल्याण की भावना को ध्यान में रखकर किया जाता था । यथा — कुलचन्द्र, कल्याण, मङ्गल इत्यादि ।

उक्त सभी नामों के अनुशीलन से ज्ञात होता है कि ब्राह्मणों की बोल-चाल की भाषा शुद्ध संस्कृत थी । ब्राह्मणों के नाम विशुद्ध संस्कृत भाषा से लिए गये हैं । इससे उनका संस्कृत प्रेम भी व्यक्त होता है ।

देवतापरक नामों से उनके धार्मिक विश्वास का संकेत मिलता है । ऐसा प्रतीत होता है कि उनकी आस्था पौराणिक देवता शिव तथा विष्णु में सर्वाधिक रूप से रहा करती थी ।

सैन्धवराजवंशीय उत्तरी काठियावाड़ के ब्राह्मण-नामों की सूची

ब्राह्मण का नाम	राजा का नाम	समय	अभिलेख प्राप्ति-स्थान	सन्दर्भ
शिवरुद्र	राणक	गु०सं०५५५—८७४ई०		ए०इ०,२६,पृ०२१६
शङ्खधर	"	"		"
रुद्र	अग्गुक तृ०	गु०सं०५६७—८८६ई०		वही, पृ० २२१

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

सागर	,,	,,	,,
गुहेश्वर	,,	गु०सं०५१५—८३४-३५ई०	वही, पृ० २०६
कुलचन्द्र	,,	,,	,,
माधव	अगुक द्वि०	गु०सं०५१३—८३२ई०	वही, पृ० २ १

मैत्रककालीन ब्राह्मणों के नाम

वल्लभी के मैत्रक राजओं के दानपत्रों से ब्राह्मणों के व्यक्तिगत नामों के सम्वन्ध में भी सूचना मिलती है।

नाम का प्रथम भाग—अणहक, अग्नि, आखंडल, ईश्वर, कुमार, गंग, गुहत्रात, धंचक, चट्ट, चमस, चुनुक, तट्ट, दामोदर, देव, दत्त, धम्मिल, धनपति, नारायण, नण्ण, पिट्टलेश्वर, प्रशन्दत, बप्प, बाव, बुध, भट्टि, महेश्वर, माधव, मदन, मित्र, मातृ, यज्ञ, रोव्ध, रोध, वत्र, विष्णु, विश्वदत्त, विशारुद, शं र, स्येन, श्रीधर, सग्गल, सांव, संग, स्कन्द, सष्ठि।

इस सूची से यह भी ज्ञात होता है कि वलभी के मैत्रक राजाओं के काल में ब्राह्मणों में अनेक प्रकार के नाम रखने की परम्परा थी।

कुछ ऐसे नाम भी मिले हैं, जिन्हें नाक्षत्रिक कहा जाता है। यथा—आदित्य, भानु, अग्नि, मित्र, चन्द्र, विशाख।

नक्षत्र-नाम के रखने की परम्परा गुजरात में रही है। इस तथ्य की पुष्टि गुर्जर तथा चालुक्य अभिलेखों से होती है।

नक्षत्र-नामों के अतिरिक्त ब्राह्मणों के पौराणिक देवतापरक नाम मैत्रक अभिलेखों में मिलते हैं, जो अधोलिखित हैं—

ईश्वर, गुहत्रात, चन्द्र, दामोदर, दत्त, देव, नारायण, पिट्टलेश्वर, बाव, बुद्ध, मदन, माधव, महेश्वर, मातृ, मित्र, यज्ञ, रुद्र, विष्णु, विश्वदत्त, शंकर, श्रीधर, साम्ब, स्कन्द, सष्ठि।

उपरिलिखित देवतापरक नामों से ज्ञात होता है कि मैत्रककाल में शिव तथा विष्णु से सम्बन्धित देवतापरक नाम कम हैं, जब कि राष्ट्रकूटों के अभिलेखों में अधिक संख्या में इस प्रकार के नाम मिलते हैं।

पौराणिक देवताओं के नामों के साथ-साथ, अभिलेखों में ब्राह्मणों के कुछ ऐसे नाम भी मिले हैं, जो क्षत्रिय या वैश्य-नाम की तरह जान पड़ते हैं, जैसे—

(क) वैश्यनाम—दाम, धनति।

(ख) क्षत्रियनाम—सिंह।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

उक्त सूची से विदित होता है कि मैत्रककालीन ब्राह्मणों में नामकरण का क्षेत्र संकुचित नहीं था।

इसके अतिरिक्त मैत्रक अभिलेखों में कुछ अन्य प्रकार के नाम मिले हैं और कुछ नाम जो शुद्ध संस्कृत रूप में नहीं जान पड़ते हैं। वे नाम निम्नलिखित हैं—

(क) अन्य नाम	(ख) शुद्ध संस्कृत रहित नाम
किक्कक	किक्कक
गुहिल	गिल्लक
नदुल	गोगड
नण्ण	सग्गड
वत्रभट्टि	

स्पष्ट रूप से इन पर भी द्रविड़ प्रभाव परिलक्षित होता है, जो दक्षिण भारतीय बोलियों में प्रचलित है। इन नामों से यह भी ज्ञात होता है कि इन ब्राह्मणों का सम्पर्क सम्भवतः पश्चिमी गुजरात के शक तथा अन्य विदेशी तत्त्वों से रहा हो। यहाँ एक जगह 'बप्प' ब्राह्मण के नाम का उल्लेख किया गया है। इस बप्प के सम्बन्ध में डा॰ सुनीति कुमार चटर्जी का मत है कि इसी से बाप 'पिता' बना है। यह शब्द भी गुजराती प्रतीत होता है।

मैत्रककालीन अभिलेखों के आधार पर उपरिवर्णित ब्राह्मणों के नामों के अवलोकन से एक तथ्य निकलता है कि इनके नामों के दो भाग हैं—

१. संस्कृत नाम।
२. प्राकृत नाम।

(१) **संस्कृत नाम—** पौराणिक देवताओं तथा नक्षत्रों इत्यादि के आधार पर संस्कृत नाम मैत्रकयुग के ब्राह्मणों के मिलते हैं, यथा—

अग्नि, ईश्वर, दामोदर, देव, दत्त, धनपति नारायण, पिट्टलेश्वर (=विट्ट-लेश्वर), बुध, महेश्वर, माधव, मदन, मित्र, मातृ, यज्ञ, विष्णु, विश्वदत्त, बिशाख, शंकर, श्रीधर, स्कन्द।

इस तरह के नामों की परम्परा अत्यन्त प्राचीन युग से पायी जाती है।

(२) **प्राकृत नाम—** प्राकृत नाम भी मैत्रक अभिलेखों में मिलते हैं, जिनमें से कुछ इस प्रकार है—

अणहक, घंचक, चट्ट, तट्ट, धम्मिल, नण्ण, बप्प, रोटघ, रोघ, सग्गल सष्ठि—इत्यादि नाम ऐसे हैं, जो वास्तव में प्राकृत जान पड़ते हैं।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

'क' से समाप्त होने वाले नाम—अणहक ।

'ग' से समाप्त होनेवाले नाम—गंग ।

'घ' से समाप्त होनेवाले नाम—रोटघ, रोघ ।

'ट' से समाप्त होनेवाले नाम—चट्ट, तट्ट ।

'ठ' से समाप्त होनेवाले नाम—सष्ठि ।

'ण' से समाप्त होने वाले नाम—नण्ण ।

'त' से समाप्त होनेवाले नाम—प्रभन्दत ।

'प' से समाप्त होनेवाले नाम—बप्प ।

'ल' से समाप्त होनेवाले नाम—सग्गल ।

'व' से समाप्त होनेवाले नाम—बाव ।

मैत्रक अभिलेखों में उल्लिखित ब्राह्मणों के नामों को देखने से इस बात का भी परिज्ञान होता है कि मैत्रककालीन ब्राह्मणों में बिना उपपद के भी नाम रखने की परम्परा थी, जिसकी पुष्टि निम्नलिखित नामों से हो जाती है—

अणहक, धंचक, चट्ट, चमस, चनुक, तट्ट प्रभन्दत, प्रकाश, बप्प, बाव, माधव, रुद्र, रोध, विशाख, श्येन, शंकर, संगक ।

इस प्रकार के बिना उपपदधारी ब्राह्मणों के नामों के देखने से यह संकेत मिलता है कि ब्राह्मणों के नामकरण में उपपद रखना आवश्यक नहीं माना जाता था ।

इसके अतिरिक्त मैत्रक अभिलेख में केवल एक ही जगह एक ब्राह्मण के के दो नाम प्रकाश तथा सग्गल दीक्षित मिले हैं । सम्भव है कि इस प्रकार की परम्परा कुछ ब्राह्मण-परिवारों के बीच रही हो । इस प्रकार के दो नाम रखने की परम्परा वैदिक युग में थी । वैदिक काल में एक व्यक्ति के दो नाम होते थे । उनमें से एक नाम गुह्य होता था, जो केवल माता-पिता ही जानते थे । वैदिक साहित्य में एक व्यक्ति के दो नामों का उल्लेख मिलता है । उसमें से एक नाम उसका अपना होता था और दूसरा या तो उसका गोत्र-नाम होता था या कभी-कभी पैतृक या मातृक होता था, किन्तु इस प्रकार का उदाहरण मातृक युग में एक ही अभिलेख में मिलता है ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

मैत्रककालीन ब्राह्मण-नामों की सूची

ब्राह्मण का नाम	समय	राजा का नाम	अभिलेख प्राप्ति का स्थान	सन्दर्भ
आखण्डलमित्र	लगभग ७६६-६७ई०	शिलादित्य तृ०	मलिय	का० इ० इ० ३ पृ० १७८
विष्णु	"	"	"	"
रुद्रभूति	५७१-७२ई०	धरसेन द्वि०	"	वही ३, पृ० १६६
गंग	५२५ई०	ध्रुवसेन प्रथम	—	ए० इ० ३१, पृ० ३०१
गंगदेव	"	"	—	"
चुनुक	"	"	—	"
रुद्र	व० सं० २५२	धरसेन द्वि०	—	वही ३१, पृ० ३०३
बप्प	—	ध्रुवसेन तृ०	—	वही १, पृ० ८८
भट्टि	—	"	—	"
विश्वदत्त		ध्रुवसेन प्र०	—	वही १९, पृ ३०४-१५
देव	व०सं० २१०	वल्लभी अभि०	—	वही १९, पृ० १२६
शान्ति	"	ध्रुवसेन	—	वही १७ पृ० १०८
माधव	व०सं० २०७	ध्रुवसेन प्र०	—	वही १७, पृ० १४
रोटर्घमित्र	व०सं० २०६	ध्रुवसेन	कोथिवाड	वही १७, पृ० १०९
प्रभन्दत्त	६१०-११ ई०	शिलादित्य प्र०	भद्रेणियक	वही २१, पृ० ११८
रुद्र	"	"	"	वही २१, पृ० ११८
विष्णुयश	व०सं० ३०४	धरसेन तृ०	भावनगर	"
मित्रयश	"	"	"	"
सांग्गल याप्रकाश	६६६-६७ ई०	शिलादित्य तृ०	जेसर	वही २१, पृ० २१०
शाम्बदत्त	"	"	"	"
क्षेत्र	"	"	"	वही।
धञ्चक	"	"	"	वही।
चट्ट	"	"	"	वही।
तट्ट	"	"	"	वही।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

ब्राह्मण-नाम	राजा का नाम	समय	अभिलेख प्राप्ति-स्थान	सन्दर्भ
अग्निस्वामी	६३९-४० ई०	ध्रुवसेन द्वि०	नोगव	ए०इ० भाग ८, पृ० १७३
कुमारस्वामी	"	"	"	वही ।
(अगस्तिका अग्रहार के चतुर्वेदी)	"	"	"	" पृ० १९४
संगरवि	"	"	"	"
महेश्वर	"	"	"	वही ।
स्कन्दभट्ट	"	"	"	गही ।
वत्रभट्टि	"	"	"	वही ।
दत्तस्वामी	६४०-४१ ई०	"	"	वही, ८, पृ० १९८
बुधस्वामी	"	"	"	"
कुमारस्वामी	"	"	"	"
हुधस्वामी	"	"	"	"
धम्मिल	५२७ ई०	"	गनेशगड	वही, पृ० ३२०
नन्न	५२९ ई०	" प्रथम	भावनगर	वही, १५, पृ० २५७
साम्बदत्त	६७५-७६ ई०	शिलादित्य तृ०	जेसर	वही, २२, पृ० ११९
अणहक	"	"	"	"
शंकर	"	"	"	"
संगक	"	"	"	"
चमस	"	"	"	"
बपस्वामी	५७४ ई०	सिंहदिप (सामन्त) पलितन	पलितन	वही, ११, पृ० १९
रोध	५७१ ई०	धरसेन द्वि०	"	वही, ११ पृ० १९
श्येन	"	"	"	"
कुमारशर्मा	५२८ ई०	ध्रुवसेन प्र०	"	वही, ११, पृ० १०७
जरमज्जि	"	"	"	वही ।
विष्णुशर्मा	५२९ ई०	"	पलितन	वही पृ० ११०

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

ब्राह्मण का नाम	समय	राजा का नाम	अभिलेख प्राप्ति का स्थान	सन्दर्भ
विशाख	५२९ ई०	ध्रुवसेन प्र०	पलितन	ए० ई० ११,पृ० ११०
स्कन्द	,,	,,	,,	वही, पृ० ११३
भट्टि	६३९ ई०	शिलादित्य द्वि०	लुनसदि	वही ४. पृ० ८०
ईश्वर	,,	,,	,,	,,
धनपति	,,	,,	,,	,,
चतुर्वेदीय समुदाय	,,	,,	,,	,,
वाव	,,	,,	,,	,,
द्रोण	गु०सं०२८६	शिलादित्य प्रथम	नवलखि	वही, ११, पृ० १७९

इसी अभिलेख में इनके अतिरिक्त निम्नलिखित ब्राह्मणों का उल्लेख किया गया है—

इन्नवसु, वत्स, षष्टि, गुहिलामहिसूर्य, दिन्नभट्टि, लुद्रक, आदित्यवसु, द्विद्रोण, द्रोण, कुमार शर्म्म, भट्टि, आदित्यरवि, गणर्क, उज्झक, गोढ्यक, खन्द, शर्म्म, भद्र, आदित्य, द्विआदित्य, बप्पटक, मतृशर्म्मा, ईश्वर, बोप्पस्वामि द्विबप्पटक, गोप, दाम द्विभद्र, खोक्खक, केशव, गोवशर्मा, अग्निशर्मा, द्विगोप नावुक, कुमार, भद्र, सीह, नहक, गिंजक, गोगाक, संगम।

राजस्थान

जोधखपुर के दधिय ब्राह्मणों के नाम—

राजस्थान के दधिमती माता-अभिलेख (गु० सं० २८९ = ६०८ ई०) में उल्लिखित जोधपुर के दधिया ब्राह्मणों के निम्नांकित नाम विचार्य हैं—ना मका प्रथम भाग—अविघ्न, अविगहक, कटंक, बालादित्य, मातुल्य, बप्पक, यश, पुर्णमुख, मझहीहा, सोमनक, विष्णु, अचिलकदे, । यक्ष, सुवक, फूफ्क, लंगक, गण, निम्ब, शूरक, ढूलक, घनियक, अचिन्तित, इस सूची से विदित होता है कि दधिया ब्राह्मणों के नाम सम्बन्ध सूचक होते थे, यथा—मातुल्य (मातुल्य:?), फूफक (फूफक पिता की बहन के पति), बप्पक (बाप-पिता) ब्राह्मणों के कुछ नामों से यश तथा शौर्य का प्रदर्शन होता है। इस प्रकार के यश आदि से आरम्भ होने वाले ब्राह्मण ये हैं—यश, शूर। दधिमती-माता अभिलेख में उल्लिखित नामों से विदित होता है कि दधिया ब्राह्मणों में 'अ' से प्रारम्भ होनेवाले नामों का प्रचलन था। यथा—अविघ्न, अचिन्तित

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

अविगहक, अचिलकदे। इन नामों के अतिरिक्त अधिकांश ब्राह्मणों के नाम 'क' से समाप्त होते हैं, जो ये हैं कटक, अविगहक, फूफक, बप्पक, लंगक, सोमनक, शूरक, सुवक, घनियक। असुर नाम का प्रयोग भी दधिया ब्राह्मण परिवार में किया जाता है, जैसे—यक्ष।

भाषा की दृष्टि से विचार करने पर अवगत होता है कि दधिया ब्राह्मणों के अधिकांश देशी नाम जो अपभ्रंश या संस्कृत भाषा के आधार पर गढ़े हुए कहे जा सकते हैं, साथ ही इनका कोई युक्तिसंगत अर्थ भी प्रतीत नहीं होता। इनमें से कुछ हैं—मझहीहा, लंगक, सोमनक, निम्ब, अचिलदे, ढूलण, सुवक, घनियक अविगहक।

मध्यदेश

वर्द्धन तथा प्रतिहार कालीन ब्राह्मण-नाम

पूर्व मध्ययुग के प्रारम्भिक भाग में वर्द्धन राजाओं का प्रभाव मध्यदेश में था तथा तत्पश्चात् यहाँ प्रतीहारों का राज्य स्थापित हुआ। इस प्रदेश के ब्राह्मण परिवारों प्रचलित व्यक्तिगत नामों (नाम का प्रथम भाग) के सम्बन्ध में सूचनार्थ उक्त राजवंशों के दानपत्र द्रष्टव्य हैं। दानपत्रों में निम्नांकित नामों का उल्लेख हुआ है—

नाम का प्रथम भाग— वागरथ, काचर, वात, वासुदेव, शिव, विष्णु, बाल, देद, भद्र, शांति, सूर्य, धर्म, जात, दिवाकर, वैश्वानर, तारा, कुलद्वीप, अच्युत, श्री, दामोदर, बहुरूप, आनन्द, वसु, ईश्वर, घृति, महादेव, ईशान, केशव। इस सूची से विदित होता है कि वर्द्धनों तथा प्रतीहारों के समय में ब्राह्मण–नामों के चयन में देवताओं के नाम को आधार माना जाता था। इस प्रकार के ये नाम विचारणीय हैं–वात (पवन देव), वासुदेव, शिव , विष्णु, श्री, ईश्वर, महादेव , केशव , वसु, ईशान (शिव, रुद्र), बहुरूप, अच्युत, दामोदर, वैश्वानर शिव से सम्बन्धित नामों की श्रेणी में उक्त ब्राह्मणों के नाम शिव, महादेव, बहुरूप, वसु, ईशान आदि आते हैं और विष्णुपरक नाम श्री, केशव, अच्युत, वासुदेव, तथा विष्णु कहे जा सकते हैं। ऐसा विदित होता है कि वर्द्धन तथा प्रतीहारों के काल में ब्राह्मणों का विश्वास शिव तथा विष्णु में अधिक था कुछ ब्राह्मण परिवारों में ग्रहों के नाम को आधार बनाकर नाम-चयन या नामकरण किया जाता था। इस प्रकार के ये ब्राह्मण-नाम ध्यातव्य हैं–दिवाकर, तारा, सूर्य। इन नामों से अवगत होता है कि तत्कालीन ब्राह्मण ग्रहों तथा इनके कार्य-कलापों आदि से सुपरिचित

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

होते थे । कतिपय ब्राह्मण परिवारों में गोत्रकारों के नामों को भी नाम चयन में आधार बनाया जाता था । इस सन्दर्भ में गोत्रपरक नाम द्रष्टव्य हैं वामरथ (एक गोत्रकार) । ब्राह्मण–परिवारों में कुछ विशेष भावनाओं से प्रभावित होकर शुभकारी या सुन्दर वाचक ब्राह्मण-नाम होथे थे । यथा—भद्र, शान्ति, आनन्द भद्र । से अर्थ भला, सुखद अथवा शुभ (या भाग्यवान) होता है । ब्राह्मण परिवार में मृत्यु के देवता यम अर्थात् धर्म नाम से भी ब्राह्मण नाम मिलते हैं । इससे विदित होता है कि ब्राह्मण स्वर्ग तथा नरक को दृष्टि में रखकर नामकरण करते थे ।

उक्त नामों के अनुशीलन से विदित होता है कि ब्राह्मण-परिवारों में शुद्ध संस्कृत भाषा प्रचलित थी क्योंकि सर्वाधिक ब्राह्मण संस्कृत भाषा में ही उल्लिखित हैं । इसके साथ ही उक्त देवतापरक नामों से यह आभास होता है कि वे शिव तथा विष्णु के भक्त होते थे या दूसरे शब्दों में उन पर शैव तथा वैष्णव धर्म का किसी न किसी रूप में प्रभाव था ।

वर्द्धन और प्रतिहार कालीन ब्राह्मण-नामों की सूची

ब्राह्मण नाम	राजा का नाम	समय	अभिलेख प्राप्ति स्थान	संदर्भ
वामरथ	हर्ष	७ वीं शती पूर्वार्ध	मधुवन	ए०इ० १, पृ० ७२
वात	,,	,,	,,	वही, पृ० ९३
शिव	,,	,,	,,	वही ।
बाल	,,	,,	बांसखेरा	वही, ४, पृ० २११
भद्र	,,	,,	,,	वही ।
सूर्य	,,	,,	,,	वही ।
वैश्वानर	,,	,,	कुदस्फोक (गविधुमत)	वही १, पृ० १८२
श्री	,,	,,	,,	वही ।
बहुरूप	,,	,,	,,	वही ।
धृति	,,	,,	,,	वही ।
काचर	भोजदेव	वि०सं०८९३= ८३६ ई०	बराह	वही, १९, पृ० १८
वासुदेव	भोजदेव प्र०	७०६ ई०	दौलतपुर	वही, ५, पृ० २१२

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

विष्णु	,,	,,	,,	वही।
देव	हरिराज	वि०सं१०४०=९८३ ई०	भारत कला-भवन	वही,३१,पृ०३१२
शान्ति	,,	,,	,,	,,
धर्म	,,	,,	,,	,,
दिवाकर	प्रतिहार भोज	९०२ ई०	अहर	वही,१९,पृ०६०
हारा	,,	,,	,,	,,
अच्युत	,,	,,	,,	,,
दामोदर	,,	,,	,,	,,
आनन्द	,	,,	,,	,,
ईश्वर	,,	,,	,,	,,
महादेव	,,	,,	,,	,,
केशव	,,	,,	,,	,,
ईशान	,,	,,	,;	,,

सरयू के कलचुरिकालीन ब्राह्मण-नाम

सोढ़देव के कहला दानपत्र (वि० सं० ११३५=१०७७ ई०) से प्रमाणित होता है कि सरयूपार कलचुरि राजाओं के शासनकाल में निम्नांकित ब्राह्मण-नाम (व्यक्तिगत नाम या नाम का प्रथम भाग) हुआ करते थे—

नाम का प्रथम भाग—नीम्बो, बृहस्पति, च्छांन्दी (छी), माढ, राम, मह मन्द, गौतम, जालू, श्री, माहिल, भास्कर, भोगू, देव, सीधू, वाह्यट, सुन्दर, माल्हे, शिव, गदाधर, जासू, दान्दू, लिहुयण, गोविन्द, संकर। उक्त सूची से अवगत होता है कि कलचुरिकालीन ब्राह्मणों के नाम देवताओं के नाम से प्रारम्भ किये जाते यथा—राम, श्री, देव, गदाधर, शिव, गोविन्द तथा संकर (शंकर)। इनको विष्णु तथा शिवपरक नामों की श्रेणी के अन्तर्गत रखा जा सकता है। राम, श्री, गदाधर, गदाधर विष्णु से सम्बद्ध नाम हैं, जबकि देव, शिव तथा शंकर शिव से सम्बन्धित नाम हैं। ब्राह्मण-परिवारों में नाक्षत्रिक देवताओं के नाम को भी नाम चयन में आधार बनाया जाता था। इस प्रकार अधोलिखित नाम ध्यातव्य है—भास्कर, बृहस्पति।

ब्राह्मण ऋषियों के नाम को भी नाम-चयन का आधार बनाते थे, यथा—गौतम। ब्राह्मण नाम-चयन सौन्दर्य की दृष्टि से यदा-कदा किया ही करते थे। एक ब्राह्मण-नाम 'सुन्दर' से प्रारम्भ होता है।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

उक्त नामों की सूची से अवगत होता है कि कलचुरिकालीन परिवारों में ब्राह्मण अधिकांशतः प्राकृत या देशी नामों को नाम-चयन का आधार बनाते थे। इस प्रकार के प्राकृत (देशी) नाम ध्यातव्य हैं, यथा नीम्बों, माहिल, च्छांच्छी (छी), भोगू, वाह्यट सीधू, माल्हे, जाखू, दान्दू, तिहुयण, माढ, जालू आदि ।

'ख' से समाप्त होने वाला नाम—जाखू ।
'ग' से समाप्त होने वाला नाम—भोगू ।
'छ' से समाप्त होने वाला नाम—च्छांच्छी ।
'ट' से समाप्त होने वाला नाम—वाह्यट ।
'ढ' से समाप्त होने वाला नाम—माढ
'ढ' से समाप्त होने वाला नाम—हितुयण ।
'द' से समाप्त होने वाला नाम-दान्दू ।
'ध' से समाप्त होने वाला नाम—सीधू ।
'ब' से समाप्त होने वाला नाम—नीम्बो ।
'ल' से समाप्त होने वाला नाम—जालू, माहिल ।

उपर्युक्त तथ्यों से यह विदित होता है कि ब्राह्मण-परिवारों में शुद्ध संस्कृत नाम तथा प्राकृत या देशी नामों का प्रचलन था। इनमें भी प्रचुरता देशी नामों की थी। विष्णु, शिव तथा नक्षत्रादिक नाम शुद्ध संस्कृत भाषा के हैं, जबकि अन्य देशी भाषा या प्राकृत भाषा के अन्तर्गत आते हैं। इससे ज्ञात होता है कि ब्राह्मण परिवारों में संस्कृत तथा प्राकृत का प्रभाव था ।

इससे एक अत्यन्त महत्वपूर्ण तथ्य का संकेत मिलता है। कलचुरिकालीन ब्राह्मणों की संस्कृति के दो रूप हैं, यथा– (१ पारम्परिक संस्कृत (२)अपभ्रंश संस्कृत। भाषा में उल्लिखित नामों से कलचुरि ब्राह्मणों की शुद्ध संस्कृत का पता चलता है। सम्भवतः इनमें वेदों का अध्यापन किया जाता था। वेदों का पठन-पाठन इनका प्रमुख कर्तव्य था। देशी नामों से संकेत मिलता है कि अधिकांश कलचुरि ब्राह्मणों ने स्वाध्याय तथा अध्यापन की प्रवृत्ति त्याग दी थी और तत्पश्चात् भूमिकर्षण आदि में लग गये थे। कलचुरिकालीन भूमिग्रहीता ब्राह्मण स्वाध्याय के अतिरिक्त भूमि से भी अपनी जीविका चलाने ७.. भूमिकर्षण के कारण उनको अशिक्षित लोगों के वातावरण में रहना पड़ा। इस सम्पर्क का उनके नामों तथा संस्कृति पर भी विशेष प्रभाव पड़ा। उक्त तथ्यों के साक्ष्य में यह कहना अनुचित न होगा कि ब्राह्मणों के नामों पर स्वाध्याय से संस्कृत प्रभाव तथा कृषि से अपभ्रंश प्रभाव पड़ा ।

Digitization by Hindu Heritage Foundation of America. HHFA(USA)

इसके अतिरिक्त उनके शुद्ध संस्कृत नामों से यह भी अवगत होता है कि बिष्णु, शिव तथा नक्षत्रादिक देवताओं का किसी न किसी रूप में प्रभाव था या तत्कालीन ब्राह्मण इन देवताओं में विश्वास एवं आस्था रखते थे।

सरयूपार के कलचुरिकालीन ब्राह्मण-नामों की सूची

राजा सोढ़देव (वि सं० ११३५=१०३१) के दानपत्र में सरयूपार के कलचुरिकालीन ब्राह्मणों के नामों की सूची इस प्रकार दी गई है—[1]

नीम्बो वृहस्पति च्छांच्छी (छी), राम, गौतम, श्री, भास्कर, देवेश्वर, वाह्यट, देवधर. माल्हे, गदाधर, दान्दू, बृहस्पति, माढ, महानन्द, जालू, माहिल, भास्कर, भोगू, सीधू, सुन्दर, शिवदास, जाखू, तिहुयण. जाखू, गोविन्द, भास्कर, संकरदेव।

गहडवाल कालीन ब्राह्मणों के नाम

गहडवाल कालीन दानपत्रों में मध्यदेश के ब्राह्मणों के निम्नांकित नाम मिलते हैं, यथा—

अनिरुद्ध, आनन्द, अन्ते, अन्तपाणि, अणंकार, आल्लेहक, आल्हे, आढले, इन्द्र, उहील, कल्थे, काकू, काहुले, कुमार, कानूकाय, गुण, गोहड, गूजा, गुणेश्वर, यादूक, चल्हण, जस, जयन्त, जान्ता, जगद्धर, जागू, जितेस, जय, जयपाल, टालहे, टुलाईच, तिहुल, तिङ्गुल, दायी, ददह्, देव, दादे, दुष्टा, देवनाथ, देववर, देवपाल, नरसिंह, पद्म, पुरवास, पुन्ता, पुरास, पुरुषोत्तम, प्रह्राज, पेवलह, प्रह्लाद, पाग, मीथा, बालादित्य, ब्रह्म, भारत, भूपत. भूपति, मदन, मंगल, महा, मदनु, महि, मेमे, मितुकाय, मधुसूदन, महाराज, याज्ञवल्क्य, राज्यधर, रिसिक, राहिहीयक, रवि, लोक, लोहड, लाहुल, लालूकाय, वाराह, वस्णेश्वर वंश, वाछा; वावन. विद्याधर, वील्हकाय, वामन, वील्ह, विष्णु, वेद, व्यास, विश्वामित्र, श्रीधर, श्रीलयन्त, श्रीचन्द्र, श्रीनासेन, शील, स्वामी, सोपाल, सीले, सेत हाले, हृषिकेष।

उपरिवर्णित सूची में ब्राह्मणों के अनेक प्रकार के नाम ज्ञात होते हैं। नामों की उक्त सूची से यह स्पष्ट हो जाता है कि गहडवाल कालीन ब्राह्मणों का नामकरण किस प्रकार होता था। तत्कालीन ब्राह्मणों के नामों से ज्ञात होता है कि उस युग में नामकरण देवताओं के नाम के अधार पर होता था। इनमें कुछ नाम ये हैं—अनिरुद्ध, इन्द्र, कुमार, दामोदर, नरसिंह, पुरुषोत्तम, मधुसूदन, राम, वाराह, वामन, विष्णु, श्रीधर, हृषिकेष आदि। इन देवताओं के नाम के आधार पर यह

---

१. मिराशी, कार्पस, ४ पृ० ३९०–९१

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

माना जा सकता है कि ग्यारहवी शताब्दी में ब्राह्मण देवताओं के नाम के आधार पर अपना नामकरण करते थे। यह भी सम्भव है कि ये पौराणिक देवता उनके वंश के देवता हों। तथापि यह पूर्ण सम्भव नहीं है कि देवता के आधार पर अपना नामकरण करने वाला व्यक्ति अपने नाम वाले देवता का ही पूजक रहा हो। इन तथ्यों से यह सुविदित हो जाता है कि गहडवाल कालीन ब्राह्मणों के नाम तत्कालीन नामकरण की परम्परा के अनुसार ही रखे जाते थे। उनका किसी देवी, देवता, नक्षत्र या गोत्र के आधार पर नामकर यह सिद्ध नहीं करता कि वह ब्राह्मण अपने नाम वाले देवता या नक्षत्र का ही पूजक था। इन देवता से सम्बन्धित कुछ ऐसे भी नाम पाये जाते हैं, जो क्षत्रियों के लिए प्रयुक्त होते हैं—भूपति, महीधर, राज्यधर आदि नाम क्षत्रिय-नाम की श्रेणी में रखे जा सकते हैं। इन नामों से इस बात का ज्ञात होता है कि ब्राह्मणों में नामकरण का क्षेत्र संकुचित नहीं था। सम्भवतः इस प्रकार के नाम रखना गर्व की बातसमझी जाती थी। वैदिककाल में एक व्यक्ति के दो नाम होते थे उनमें से एक नाम गुह्य होता था जिसे केवल माता-पिता ही जानते थे। कभी-कभी तीन या चार नामों का उल्लेख भी पाया जाता है। वैदिक साहित्य में एक व्यक्ति के दो नामों का उल्लेख मिलता है, उसमें से एक नाम उसका अपना होता था दूसरा या तो उसका गोत्रनाम होता था या कभी-कभी पैतृक या मातृक होता था। वैदिक कालीन नामकरण की पद्धति का प्रयोग गहडवाल ब्राह्मणों में नहीं पाया जाता। गहडवाल युग में पौराणिक देवताओं के आधार पर नामकरण की पद्धति का अधिक प्रचलन था। पौराणिक देवताओं में विष्णु का स्थान प्रमुख था। विष्णु के नाम के आधार पर, इससे सम्बन्धित विभिन्न नाम रखे जाते थे, जैसे—अनिरुद्ध, वाराह, दामोदर, नरसिंह, पद्मनाभ, वामन, श्रीधर आदि। इसी प्रकार अनेक नाम विष्णु के विभिन्न अवतारों को ध्यान में रखकर भी रखे जाते थे। सबसे पहले श्रीधर नाम का उल्लेख सम्भवतः इन्हीं अभिलेखों में प्राप्त होता है। यह विष्णु का नाम है और महाराष्ट्र में इस नाम का अत्यधिक प्रचलन है।

नक्षत्र-नाम का अभाव गहडवालों के अभिलेखों में हैं, जबकि इनमें पौराणिक देवताओं वाले नामों की विशेष रूप से अधिकता है। परन्तु चालुक्यों तथा गुर्जरों के अभिलेखों में नक्षत्र-नाम बहुतायत से पाये जाते हैं। साथ ही गुर्जर तथा चालुक्यों के अभिलेखों में कुछ नाम ऐसे भी हैं, जो नदियों के नाम के आधार पर रखे गये हैं। उदाहरणार्थ इन अभिलेखों में 'तापी' नाम का उल्लेख आता है। यह नाम निश्चित रूप से गुजरात में सूरत के निकट से बहनेवाली ताप्ती

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

या तापी नदी के आधार पर रखा गया है, किन्तु गहड़वाल कालीन ब्राह्मणों में नदियों के आधार पर नामकरण की इस पद्धति का सर्वथा अभाव प्रतीत होता है। इस प्रकार के किसी भी नाम का उल्लेख गहड़वाल अभिलेखों में नहीं होता है। अतः यह स्पष्ट हो जाता है कि नामकरण की यह प्रवृत्ति उस समय प्रचलित नहीं रही होगी।

गहड़वाल ताम्रपत्रों में ब्राह्मणों के देवतापरक नामों के अतिरिक्त ऐसे भी अनेक नाम मिले हैं, जिनका अर्थ समझना कठिन है, ये नाम निम्न हैं— उहिल, कुल्हे, दादे, नाने, मेमे, माल्हे. सेत, हाले आदि।

उपर्युक्त तथ्यों से विदित होता है कि इन नामों में आधे से अधिक नाम देशी शब्दों पर आधृत हैं। अधिकांश नामों को प्रमुख रूप से दो भागों में विभाजित किया जा सकता है–एक संस्कृत नाम, दूसरा प्राकृत तथा तदभव या देशी शब्दों पर आधृत।

देवताओं तथा नक्षत्रों इत्यादि के आधार पर प्रायः संस्कृत नाम रखे गये हैं। इस प्रकार के नामों की संख्या कम है, जो निम्नलिखित है–अनन्त, अनिरुद्ध, इन्द्र, देवराम, दामोदर, देवधर, नरसिंह, पद्मनाभ, पुरुषोत्तम, प्रह्लाद, भूपति, महीधर, मदनपाल, मंगल, रविधर, वाराहस्वामी, वरुणेश्वर, विश्वामित्र श्रीधर आदि।

इस प्रकार के नामों की परम्परा अत्यन्त प्राचीन है। प्राकृत तथा तद्भव (देशी) शब्दों पर आधृत नाम भी गहड़वाल अभिलेखों में अधिक संख्या में प्राप्त होते हैं– आल्हेक, आढले, कुल्ये, गोठ, घादुक, जान्ता, टालहे, दुल्हाइच, तिहुल तिडगुल, दुण्टा, दादे, पारा, मेमे, माल्हे, जाहुल, लालूकाय, लोहड, वाछा, साहुल, सेत, सोपाल।

ये नाम ऐसे हैं जो वास्तविक रूप से प्राकृत तथा देशज प्रतीत होते हैं।
'क' से समाप्त होनेवाले नाम–आल्हेक, राहिहीयक, काकू, रिसिक, घादूक।
'ग' से से समाप्त होनेवाले नाम– गुगा, पाग, जागू।
'च' से समाप्त होने वाला नाम– टुल्टाइच।
'छ' से समाप्त होने वाला नाम– बाछा।
'ज' से समाप्त होने वाले नाम– प्रहराज, महाराज।
'ण' से समाप्त होने वाले नाम– अंतपाणि, चल्हण।
'त' से समाप्त होने वाले नाम – जान्ता, सेत, पुन्ता।
'ट' से समाप्त होने वाला नाम– टुण्टा,
'ठ' से समाप्त होने वाला नाम– गोठ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

'थ' से समाप्त होने वाला नाम– पिथा (तु० पिता ?)

'द' से समाप्त होने वाला नाम–दादे ।

'न' से समाप्त होने वाले नाम–नाने, मदनु ।

'म' से समाप्त होने वाला नाम–मेमे ।

'य' से समाप्त होने वाले नाम–कल्ये, वालादित्य, कुल्ये, मितुकाय, कानुकाय, वील्हकाय ।

'र' से समाप्त होनेवाले नाम–कुमार, गुणेश्वर, महाकर, वंशधर,

'ल' से समाप्त होनेवाले नाम – उहिल. शील, काहुल, सीले, जयपाल, सोयाल, तिहुल हाले, तिडगुल, देबयाल, लाड्गुल ।

'ह' से समाप्त होनेवाले नाम– कुल्हे, वील्ह, टाल्हे, ददह, तेवलह ।

'स' से समाप्त होनेवाले नाम– खोनस, पुरास, जानेस, नानेस, मुखांस, आदि ।

गहडवाल ब्राह्मणों के नामों के विश्लेषण करने पर कुछ ऐसे भी नाम मिले हैं, जो संस्कृत नामों के अपभ्रष्ट रूप हैं—उदाहरणार्थ : अणन्ते, अन्नत, जागू, जगद्धर, प्रहराज, प्रहलाद, पुरास, पुरुषोत्तम, मदनू, मदन, वाछा, वत्स

गहडवाल पुत्र के ब्राह्मणों के नामों की कुछ बिशेषतायें हैं। कभी-कभी ब्राह्मण-नामों में प्राकृत अपभ्रंश तथा संस्कृत नाम प्राप्त होते हैं। इनसे सम्बन्धित अनेक उदाहरण गहड़वाल राजाओं के ताम्रपत्रों में मिलते हैं। उदाहरण के लिए जागूशर्मा के पितामह और नागानन्द के पुत्र पुरवास या पुरास का संस्कृत नाम पुरुषोत्तम था। उसके पिता वल्हि का संस्कृत नाम या तो विष्णुशर्मा या देवशर्मा था। गोविन्दचन्द के प्रतिष्ठित पुरोहित का जागूशर्मा या जागूक नाम सम्भवतः याज्ञवल्क्य शर्मा का प्राकृत संक्षिप्त रूप था। उसके लड़का का नाम कहीं-कहीं पर प्रहराजशर्मा और पहराज शर्मा पाया जाता है किन्तु संभवतः उसका पूरा नाम प्रह्लाद शर्मा था। उपरिलिखित नामों के अलावा आल्हेक, टुल्टाई शर्मा, चाछा, वाछा नानेशर्मा, हाले, राहीहीयक, मदनु इत्यादि नाम भी ताम्रपत्रों में संभवतः इसी प्राकृत अपभ्रंश तथा देशज रूप में प्रयुक्त हुए हैं। उक्त सन्दर्भों से इन ब्राह्मणों की संस्कृति की दो धाराएं दिखाई पड़ती हैं–प्रथम पारम्परिक संस्कृति तथा दूसरी परिवर्तित या अपभ्रंश संस्कृति ।

ये ब्राह्मण वेदों का अध्ययन-अध्यापन किया करते थे। वास्तव में इनका प्रमुख कर्तव्य वेदों का पठन–पाठन था। स्वाध्यायजन्य संस्कृति इनके संस्कृत नामों से भी संकेतित होती है। इन अभिलेखों के देखने से इस बात का पता

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

चलता है कि ये स्वाध्यायरत ब्राह्मण क्रमशः अध्यापन-वृत्ति का परित्याग कर भूमिकर्षण से जीविका बिताने लगे थे। भूमिदानग्रहीता ब्राह्मण स्वाध्याय के अलावा भूमि से अपना निर्वाह करते थे। गांवों में भूमिदान प्राप्त करने के ब्राह्मणों को कृषि कार्य करना स्वाभाविक था। इसका परिणाय यह हुआ कि कुछ ब्राह्मणों का ध्यान स्वाध्याय की ओर से हटकर उनका झुकाव भूमिकर्षण की ओर होने लगा। इस प्रकार यह देखा जाता है कि अशिक्षितों के सम्पर्क का उनके नामों पर भी प्रभाव पड़ा। पुत्र भी पिता के पश्चात् यह कार्य (भूमिकर्षण) करने लगा और उनके नाम पर भी यही प्रभाव पड़ा। इससे स्पष्ट है कि सम्भवतः ब्राह्मणों के नामों पर स्वाध्याय से संस्कृत प्रभाव तथा भूमिकर्षण वृत्ति से देशज संस्कृति का प्रभाव पड़ा।

उपरिवर्णित बातों से स्पष्ट है कि इन ब्राह्मणों में नामकरण देवताओं के नाम पर होता था। यह तथ्य ब्राह्मणों के धार्मिक विश्वास का द्योतक है। यह कहना उचित नहीं जान पड़ता कि किसी देवता के नाम वाला व्यक्ति उसी देवता का पूजक था। सम्भवतः ऐसा नहीं था। तथापि यह निश्चयपूर्वक कहा जा सकता है कि इन नामों के पीछे उनका धार्मिक विश्वास अवश्य था। अनिरुद्ध, नरसिंह, वारोहस्वामी जैसे नाम यह नहीं प्रकट करते हैं कि वे उनके पारिवारिक देवता थे। यह सोचना भी उचित नहीं जान पड़ता कि गोत्र के अनुसार नामकरण होता था। यह सम्भव है कि ये ब्राह्मण किसी भी देवता के पूजक रहे होंगे। यह बात भी स्वीकार्य हो सकती है कि ये नाम तत्कालीन समाज में देवताओं के अस्तित्त्व तथा प्रभुत्व को प्रकट करते हैं। वस्तुतः गहडवाल राजाओं के ताम्रपत्रों से ब्राह्मणों की धार्मिक परिस्थितियों का पूरा तथा उचित ज्ञान हो जाता है। ब्राह्मणों के नाम गहडवालकालीन नामकरण–पद्धति के द्योतक हैं। देवी-देवताओं वाले नाम उनके धार्मिक विश्वास पर प्रकाश डालते हैं।

इसके साथ ही उस समय प्राकृत तथा देशज भाषाओं से लिए गये शब्दों से नामकरण की पद्धति का प्रचलन अधिक था। भूमिदान से भूमिकर्षण आवश्यक हो गया था। इसका परिणाम यह हुआ कि भूमिकर्षण का प्रभाव नामों पर भी पड़ा। इसी कारण प्राकृत अपभ्रंश नामों की नामकरण–पद्धति ने विशेष रूप से जोर पकड़ा। यही कारण है कि प्राकृत तथा देशज नामों का अधिक संख्या में उल्लेख मिलता है।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

ब्राह्मण का नाम	राजा का नाम	अभिलेख प्राप्ति-स्थान	समय	सन्दर्भ
श्री ब्रह्म	जयचन्द्र	लखनऊ	वि०सं० १२३७	ए० इ०, १४, पृ० २९५
श्री गोत्रानन्द	”	”	”	”
श्री सर्वानन्द	”	”	”	”
श्री नरसिंह	विजयचन्द्र	”	वि०सं० १२२१	वही, ३४ पृ० २२५
श्री भरत	”	”	”	”
सुरानन्द	”	”	”	”
वरुणेश्वर	चन्द्रदेव	चन्द्रावती	११४८	९, पृ० ३०५
वराहस्वामी	”	”	”	”
अणरुद्ध	”	”	”	”
वील्हकाय	गोविन्दचन्द्रदेव	बनारस	वि०सं० ११६२	वही, पृ० ३६०
पुरवास	”	”	”	”
नागानन्द	”	”	”	”
जागूशर्मन	”	”	वि०सं० ११९६	वही, २, पृ० ३६२
वील्हा	”	”	”	”
पुरास	”	”	”	”
गोवर्द्धन	”	इलाहाबाद	वि०सं० ११७१	वही, ३३, पृ० १८०
किशव (केशव)	”	”	”	”
माल्हण	”	”	”	”
राल्हणशर्मन	”	”	वि०सं० ११९६	वही, ३५, पृ० २०८
[illegible] ण	”	”	”	”
भीम	”	”	”	”
श्री लक्ष्मीधर	विजयचन्द्र	”	वि०सं० १२१७	वही, ३५, पृ० २१०
गंगाधर	”	”	”	”
माल्हण	”	”	”	”
विग्रहिक	जयचन्द्र		वि० सं० १२३२	ए० इ० ३५, पृ० २१५
रविधर	”	”	”	”
मालाधर	”	”	”	”
गंगाधर	”	”	”	”
रविधर	”	”	वि०सं० १२३३	वही, ३५, पृ० २१६

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

मालाधर	जयचन्द्र	इलाहाबाद	वि०सं० १२३३	,,
गंगाधर	,,	,,	,,	,,
रविधर	,,	,,	,,	वही,३५,पृ० २१८
मालाधर	,,	,,	,,	,,
गंगाधर	,,	,,	,,	,,
रविधर	,,	,,	,,	वही,३५,पृ० २१९
मालाधर	,,	,,	,,	,,
गंगाधर	,,	,,	,,	,,
रविधर	,,	,,	,,	वही,३५,पृ० २२०
मालाधर	,,	,,	,,	,,
गंगाधर	,,	,,	,,	,,
अंतपाणिशर्मन्	गोविन्दचन्ददेव	राजघाट	वि०सं० ११९७	वही २६, पृ० २७३
माँसु	,,	,,	,,	,,
जतनायिव	,,	,,	,,	,,
कुमारशर्मन्	,,	मदनवन	वि०सं०११८४	वही१९, पृ० २९४
वाछा	,,	,,	,,	,,
शीलशर्मन्	,,	,,	,,	,,
तिङ्गुल	,,	,,	,,	,,
वामन	,,	,,	,,	,,
जागूशर्मन्	,,	कमौलि	,,	वही २६, पृ० ७३
वील्हा	,,	,,	,,	,
टुल्टाईच	गोविन्दचन्द्र	दोनवुजुर्ज	वि०सं० ११७६	ए०इ०, २८,पृ०२२८
पन्त	,,	,,	,,	,,
नरसिंह	,,	,,	,,	,,
माल्हे	गोविन्दचन्द्रदेव	छतरपुर	वि०सं० ११७२	वही२८, पृ० २२६
लाहुल	,,	,,	,,	,,
साहुल	,,	,,	,,	,,
दायीं	,,	—	वि०सं ११७१	वही,८, पृ० १५३
महाकर	,,	—	,,	,,
काकू	,,	—	,,	,,
खोनशर्मन्	गोविन्दचन्द्र	—	वि०सं० ११८७	वही,८, पृ० १५४
भट्टपंडित	,,	—	,,	,,
रविधर	,,	—	,,	,,

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

ब्राह्मण-नाम	राजा का नाम	अभिलेख प्राप्ति-स्थान	समय	सन्दर्भ
भट्ट	,,	—	,,	,,
गोहड	,,	—	,,	,,
भट्टपंडित	,,	—	,,	,,
मंगल	,,	—	,,	,,
दामोदरशर्मन्	गोविन्दचन्द्र युवराज महा-पुत्र	—	वि॰सं॰ ११९०	वही८, पृ॰ १५६
मदनपाल	,,	—	,,	,,
लोकपाल	,,	—	,,	,,
गणपाल	,,	—	,,	,,
दामोदरशर्मन्	,,	—	वि॰सं॰ १२०३	ए॰इ॰८, पृ॰ १५८
मदनपाल	,,	—	,,	,,
लोकपाल	,,	—	,,	,,
गणपाल	,,	—	,,	,,
दामोदरशर्मन्	गोविन्दचन्द्र	—	वि॰सं॰ १२०७	वही, ८, पृ॰ १५९
मदनपाल	गोविन्दचन्द्र	—	वि॰सं॰ १२०७	ए॰इ॰८, पृ॰१५९
लोकपाल	,,	गगहा	वि॰सं॰ ११९९	वही, १३, पृ॰ २१९
श्रीधर	,,	,,	,,	,,
भूपत	,,	,,	,,	,,
देवशर्मा	,,	,,	,,	,,
जशर्मा	,,	,,	,,	,,
महीधर	,,	,,	,,	,,
नानेशर्मन्	गोविन्दचन्द्रदेव	—	वि॰सं॰ ११८६	वही, १३, पृ २९७
श्रीचन्द्र	,,	—	,,	,,
जयन्त	,,	—	,,	,,
श्रीधर	,,	लार	वि॰सं॰ १२०२	वही, ७, पृ॰ ९९
माधव	,,	,,	,,	,,
उद्धरण	,,	,,	,,	,,
राहीहीयक	हरिश्चन्द्र	मछलीशहर	वि॰सं॰ १२५३	वही, १०, पृ॰ ९९
तदनुम	,,	,,	,,	,,

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

सोपाल	हरिश्चन्द्र	मछलीशहर	वि०सं० १२५३	ए०इ०,१०,पृ० ९९
जयपालशर्मन	गोविन्दचन्द्र एवं उसकी माँ राल्हणदेवी	पाली	वि०सं० ११८९	वही, ५, पृ० ११४
श्री	"	"	"	"
इन्द्रादित्य	"	"	"	"
पेथलह	"	"	"	"
वंशधरशर्मन	गोविन्दचन्द्र	मछलीशहर	वि०सं १२०१	वही, ५, पृ० ११६
पद्मनाभ	"	"	"	"
भरत	"	"	"	"
अनन्तशर्मन	गोविन्दचन्द्र उसकी माता गोसलदेवी	बनगावन	विसं० १२०८	ए०इ०,५, पृ० १०१
कुल्हे	"	"	"	"
जागूशर्मन	गोविन्दचन्द्र	—	वि०सं ११८२	वही, ४, पृ० १०१
वील्हा	"	—	"	"
पुरुषोत्तम	"	—	"	"
जागूशर्मन	"	—	वि०सं० ११७१	वही, ४, पृ० १०३
विल्हा	"	—	"	"
पुरास	"	—	"	"
जागू	"	—	वि०सं० ११७२	वही, ४, पृ० १०४
पुरुषोत्तम	"	—	"	"
विल्हा	"	—	"	"
जागू	"	—	वि०सं० ११७४	वही, ४ पृ० १०६
विल्हा	"	—	"	"
जागू	"	—	वि०सं० ११७५	वही, ४, पृ० १०७
पुरास	"	—	"	"
जागूशर्मन	गोविन्दचन्द्र और उसकी रानी नयणकेलिदेवी	—	वि०सं० ११७६	वही, ४, पृ० १०८
विल्हा	"	—	"	"
पुरास	"	—	"	"

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

ब्राह्मण-नाम	राजा का नाम	अभिलेख प्राप्ति-स्थान	समय	सन्दर्भ
व्यास	गोविन्दचन्द्र	—	वि०सं० ११७८	वही, ४, पृ० ११०
विल्हा	"	—	"	"
पुरास	"	—	"	"
जटे	"	—	वि०सं० ११९०	वही, ४, पृ० १११
ताल्हे	"	—	"	"
उह्लिल	"	—	"	"
जागूशर्मन	"	—	वि०सं० ११९८	वही, ४, पृ० ११४
विल्हा	गोविन्दचन्द्र	—	वि०सं० ११९८	ए०इ ४, पृ० ११४
पुरुषोत्तम	"	—	"	वही, पृ० ११४
महाराज	"	—	वि०सं० १२००	वही, पृ० ११६
जागू	"	—	"	"
वील्हा	"	—	"	"
प्रहराज	विजयचन्द्र एवं युवराज जयचन्द्र	—	वि०सं० १२२४	ए०इ०४, पृ० १२०
प्रहलाद	जयचन्द्र	—	वि०सं० १२२६	वही, पृ० १२१
जागू	"	—	"	"
वेदशर्मन	"	—	"	"
प्रहराज	जयचन्द्र	—	वि०सं० १२२८	वही, पृ० १२३
जागू	"	—	"	"
विल्हा	"	—	"	"
प्रहराज	"	—गया	वि०सं० १२३०	वही, ३५, पृ० २३८
जागू	"	—	"	"
विल्हा	"	—	वि०सं० १२३१	" ४, पृ० १२६
प्रहराज	"	—	"	५
विश्वामित्र	"	—	"	"
माधव	"	—	"	"
रामू	"	—	"	"
हर्ष	"	—	"	"
कुलधर	"	—	"	"
वंशधर	"	—	"	"

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

ब्राह्मण नाम	राजा का नाम	अभिलेख प्राप्ति स्थान	समय	संदर्भ
सहारुण	”	—	”	”
सेवादित्य	”	—	”	”
महेश्वर	”	—	”	”
प्रहराज	जयचन्द्र	—	वि०सं० १२३२	ए०इ०,४, पृ० १२७
याज्ञवल्क्य	जयचन्द्र	—	”	”
विष्णुशर्मन्	”	—	”	”
प्रहराज	”	—	” १२३३	” पृ० १२९
रिसिक	”	—	”	”
मिट्ठक	”	—	”	”
पाग	”	—	”	”
विश्वामित्र	”	—	”	”
नरसिंह	”	—	”	”
सेठ	”	—	”	”
मधुसूदन	”	—	”	”
लालुक	”	—	”	”
देवनाग	”	—	”	”
कानुक	”	—	”	”
डल्हू	”	—	”	”
वाज	”	—	”	वही, ४, पृ० १३२

बुन्देलखण्ड (जेजाकभुक्ति)

चंदेलकालीन बुन्देल खण्डी (जुझौतिया) ब्राह्मण-नाम

चन्देल शासकों के समय के अभिलेखों पर विभिन्न प्रकार के ब्राह्मण-नाम मिलते हैं, जिनके आधार पर यह संकेत मिलता है कि तत्कालीन ब्राह्मण समाज में नामकरण प्रणाली का आधार क्या था। साथ ही नाम के आधार पर भी विदित होता है कि उन ब्राह्मणों पर किस प्रकार की भाषा, संस्कृति तथा धार्मिक विश्वास का प्रभाव था।

नाम का प्रथम भाग— सामन्त, पापे, सहण, रण, कुले, गयाधर, सिहड नौग्रहण, सोमे, श्रीपाल, सहारण, देवढ, नारायण, देव, वामन, केशव, परशु-

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

राम, पाणिनि, नादूक, सोमक, सहजू, किकूल, जय, अभि, हरि, जगदेव, देवषभू, श्रीधर, सठेल, विद्यावर, सुभराज, रतन, वील्हे, छिगल, कपिल, ऋषि, रावण, रामचन्द्र, वासुकि, नाग, महराज शिव. यश, केशव, तीकव, तिहुण, बलहवा, बोधाने, विष्णु, देव, लोहड, नीम्ब, तीवक, धान्धे, गोविन्द, सीरी, कुलधर, कील्हण, अजय, सोम, नरसिंह, आनन्द, लाखू, देल्हण, पाल्हे, तीकम, देल्हू, लक्ष्मी, सहजे, पापा, रीसू, वाछ, प्रवणाह, गंगा, गाल्हण, कान्दू, आल्हण, धेल्हण, पुरुषोत्तम, अवसर, गौतम, वाहुल, विमला, पाल्हू, देल्हा, धरणी, जगधर, वाल्हू, रिसिक, जगे, वाछू, जाल्हे, नाग, लाहड, वाल्हे, दायी, दामोदर, मही, नाग, पद्म, पाल्हू, वाल्हण, चजुर्भुज, भास्कर, गाल्हे, रिषि (=ऋषि ?), आल्हण, देहल, देवव्रत, वासुदेव, राम, देल्ह, आल्हू, रील्हू, नाट, गंगा, नाहिल, देऊ, गोल्हे, वामदेव, पीथुक, माल्हू, विश्वरूप, दिवाकर, कीर्ति, सांगम, भामुक, सूल्हण, लाले, भाव, भास्कर, वाल्हू, तीकम, वील्हू, पाल्हू, राम, उल्हे, शुभंकर. लाहड, जाल्हू, महेश्वर, गाबू, माघ, वत्स, जैत, ऋषि, दामर, सोनड, रासल, माला, वाल्हे, शुभ, देल्ह, आल्ही, माल्हण, साल्हण, श्रीधर, माढ़, रील्हू, गोपति, पीथू, राल्हे, लाखण, जयाणंद, आनन्द, पूजन, गोसे, वाल्हण, गोधण, गल्हे सीले, साल्हे, श्रीपाल, वाठु, शतानन्द, कुमार, साल्हण, बाऊ, स्वल्हण, सांतट, हिरा, कुंडल, उत्तरा, साभू, देल्हण, रैवे, वेद, सोटे, हिरण्य, रावव, हृषिकेश, रामा, गदाधर, कृष्ण, गामे, यश, अजौ, माल्हू, जगसीह, धरणी, रुद्र, छीतू. चक्र, आम, थानू, गांगू. सीधन, रासल, निम्बरथ, वेदू, सहारण, देदे, सूपट, राजे, उदय, श्रीकर, दिनकर, विष्णु, मनु, कनादित्य, वाछ, महादेव, पदुमे, आभट, गैलोलिक, आल्हण, राल्हू, वत्सराज, स्वाभू, रुद्र, जाहड, देदि, धर्माणद, सीऊं, माघ, शकुन, आल्हू. साल्हण, वाछू, जार्गाष, वील्हण, महेश्वर, माल्हू, जयद्रथ, दाऊ, सहिल, लाले, गोल्हे, भद्र, ब्रह्म, जय, रतन, आल्हण, असधरु, धर्म, देद सीले, कूल्हण, ब्राह्मण, देकु, बहुधर।

उक्त सूची से अवगत होता है कि बुन्देलखंडी ब्राह्मण परिवारों में नाम-चयन का आधार नक्षत्र तथा इनके देवताओं के नाम हुआ करते थे। यथा—सोम भास्कर, दिनकर, उत्तरा, नौग्रहण (?) इत्यादि।

नक्षत्रपरक नामों के अतिरिक्त ब्राह्मणों के देवतापरक नाम उक्त चन्देल शिलालेखों में मिलते हैं, यथा—श्री, नारायण, देव, वामन, केशव, जगदेव, हरि, विद्या, गोविन्द, नरसिंह, लक्ष्मी, पुरुषोत्तम, विष्णु, दामोदर, पद्मनाभ, चतुर्भुज, देव, वासुदेव, राम, वामदेव, विश्वरूप, महेश्वर. रुद्र, चक्रस्वामी,

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

महादेव, मद्र, ब्रह्म, धर्म, कृष्ण, गदाधर, हृषिकेश, कुमार, माधव, नागदेव, राघव, रामचन्द्र ।

उक्त देवतापरक नामों के विश्लेशण से स्पष्ट हो जाता है कि चन्देल-कालीन ब्राह्मणों के नामों के आधर पर देवताओं के नाम थे, जिनमें अधिकांश विष्णु, शिव तथा राम से सम्बन्धित थे । उक्त नामों में कुछ देवीपरक नाम जैसे–विद्या, श्री से शुरू होने वाले भी हैं । इसके अतिरिक्त अन्य विभिन्न प्रकार के देवताओं के नामों का भी उल्लेख मिलता है । इससे यह निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि चन्देल ब्राह्मणों में प्राचीन देवताओं के प्रति विशेष निष्ठा थी । इससे उनके धार्मिक विश्वास का भी परिज्ञान होता है ।

देवतापरक नामों के अतिरिक्त ब्राह्मण परिवारों में क्षत्रिय नाम रखने की प्रथा थी, जिसकी पुष्टि चन्देल अभिलेखों से होती है । इनमें से कुछ नाम हैं— सामन्त, रणपाल, अजय, धरणीधर, जगधर, महीधर ।

इससे यह भी स्पष्ट हो जाता हु कि चंदेल ब्राह्मणों में नाम रखने का कोई निश्चित तथा स्थिर नियम नहीं था । ब्राह्मणों के नामकरण का क्षेत्र संकुचित नहीं था । उनका दृष्टिकोंण विशाल और उदारवादी था ।

चन्देलकालीन ब्राह्मणों के क्षत्रियपरक नामों के अतिरिक्त ब्राह्मणों के कुछ ऐसे नाम भी मिलने हैं, जिनमें गोत्र प्रवर्तक ऋषियों के नाम सम्मिलित हैं, यथा– गौतम, मनु, वत्स, ऋषि, कपिण, पाणिनि आदि । उक्त नामों से विदित होता है कि चंदेल ब्राह्मण अपने गोत्र या ऋषियों के प्रति अधिक आस्था रखते थे । यह भी सम्भव है कि उनके समक्ष अपने गोत्र-प्रवर्तक पूर्वज ऋषियों का आदर्श था, जिसे वे अपने जीवन और व्यवहार द्वारा पाने या पूरा करने का प्रयत्न करते थे । ऋषि या गोत्रपरक नामों के अतिरिक्त कुछ ब्राह्मणों के नाम रामायण कालीन या महाभारत कालीन नामों के समान भी हैं, जैसे— ज्ञतानन्द, परशु-राम, जयद्रथ, कृष्ण, रावण और रामचन्द्र आदि । इन रामायण या महाभारत कालीन नामों से ज्ञात हो जाता है कि ब्राह्मण लोनों पर रामायण या महा-भारत का प्रभाव किसी न किसी रूप में था या ये ग्रन्थ उस समय अधिक प्रचलित थे । रायायण या महाभारत कालीन नामों के अतिरिक्त ऐसे भी नाम मिले हैं जिन्हें मंगलसूचक या मंगलपरक कहा जा सकता है, जैसे— शकुन, शुभ, आनन्द । इस मंगलदायक नामों से यह जान पड़ता है कि ब्राह्मणों के समाज में मांगलिक नाम रखते समय शकुन आदि का ध्यान रखा जाता था । चन्देल शिलालेखों में इन नामों के अतिरिक्त कुछ ऐसे भी नाम मिले हैं, जो नाग पूजा से उनके सम्बन्ध को इंगित करते हैं, जैसे—वासुकि, नागदेव,

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

नाग आदि । उक्त सर्पपरक नामों का प्रचलन ब्राह्मणों के परिवारों में था । इससे इनकी तत्कालीन नागपूजा प्रवृत्ति का पता चलता है । पहले भी वासुकि या नागदेव की पूजा होती थी । आज भी नागपंचमी के अवसर पर नाग-देवता की पूजा की जाती हैं । इससे यह स्पष्ट है कि ब्राह्मणों में नाग या नाग देवता की पूजा बारहवीं शताब्दी के आसपास भी की जाती थी । नाग तथा वासुकि का अनेकशः उल्लेख पुराणों में भी हुआ है ।

पूर्वोक्त नागदेवतापरक नामों के अतिरिक्त कुछ स्त्रीपरक (विमला, लक्ष्मी, नदीपरक (यथा-गंगा), वेदपरक (यथा-वेद), नामों का उल्लेख चंदेल अभिलेखों में मिलता है । अभिलेखों से पता चलता है कि उपरिवर्णित नामों के अतिरिक्त तत्कालीन बुन्देलखन्डी ब्राह्मण परिवारों में विजय, यश, जप आदि का ध्यान रखकर नाम रखा जाता था । जैसे—यश, अजय आदि । इससे तत्कालीन ब्राह्मणों के गौरव तथा मर्यादा का ज्ञान होता हैं ।

उपपदरहित नाम

चंदेलकाल के कुछ ब्राह्मण ऐसे भी थे, जो विना उपपद (नामान्त) के थे । इनमें से कुछ नाम निम्नलिखित सूची में संकेतित हैं—

सठेल, पापे, देवढ, वील्हे, छिगल, सिलड, केशव, यश, तीकव, नौग्रहग, नादूके, वलहवा, विष्णु, सहारण, सोमक, बोधाने, लोहड, किक्कन, पीथू, तीवक, धांधे, अभि, केशव, वामन, दामर, देवषभू, ऋषि, सीरी, सोनड, रासल, वाल्हे, देल्ह, आल्ही, माल्हण, माढू, रील्हू, राल्हे, देउ, लाखण, जयाण्द आनन्द, पजून, वाल्हण, गोधरण, नारायण, गल्हे, सीले पीथन, कूके, साल्हे, वीटु, बाऊ, स्वल्हण, सांतट, कुंडण, साभू, देल्हण, रैथे, सोटे, राघव, रामा, कृष्ण, गामे, अजो, माल्हू, रुद्र, छीतू, थानू, गांगू, साधिन, रासल, वेदू, देदे, सूपट, राजे, मनु, वाछ, पदुमे, आभट, राल्हू, स्वांभू, जाहड, देदि, सीउ, माघ, वाछू जार्गाष, कील्हण, दाउ, सहिल, लाले, गोल्हे, ब्रह्म, रतन, आल्हण ताल्हू, देद, हरि, सीले, कुल्हण, सहजे, पाया, रीसू, पवणाह, कान्दू, अगसर गौतम, थेल्हण वहुल, पाल्हू, वाल्हू ।

उपर्युक्त नामों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि चन्देलकालीन ब्राह्मण के नामों के साथ उपपदों का प्रयोग आवश्यक नहीं था ।

भाषा का प्रभाव

पूर्वोक्त नामों से सुस्पष्ट हो जाता है कि इस नामकरण पद्धति पर प्राकृत तथा देशज संस्कृति का विशेष प्रभाव पड़ा था । कुछ इस प्रकार के नाम भी हैं,

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

जिनसे यह विदित होता है कि ब्राह्मणों की नामकरण पद्धति पर देशी तत्त्वों का प्रभाव था ।

संस्कृत का नाम—सामन्त, श्रीपाल, देव, केशव, नौग्रहण, नारायण, वामन, परशुराम, पाणिनि, हरि, श्रीधर, कपिल, रणपाल, रतन, केशव, गोविन्द, वामन, नरसिंह, लक्ष्मीधर, गौतम, रणधीर, नागशर्मन, पद्मनाग, भास्कर, वासुदेव; गंगाधर, विश्वरूप, कीर्तिधर, देवेश्वर, माघ, वत्स, जय, जगदेव, विद्याधर, ऋषि, विद्याधर, यशोधर, विष्णु, कुशधर, अजयपाल, आनन्द, पुरुषोत्तम, विमलादित्य, सोमराज, महीधर, चतुर्भुज, देवव्रत, रामचन्द्र, वामदेव, दिवाकर, जयशर्मन, महेश्वर, देवभाग, ऋषि, शुभादित्य, हिरादित्य, हृषिकेश, रुद्र, देवहर, महादेव, देवव्रत, सोम, गंगा, विमला, दामोदर, रुद्र, महेश्व, धर्मधर, कुंडल, देवधर, वेदशर्मन, कृष्ण, देननाभ, विष्णु, शुभंकर, आमदेव, केशव, कुलधर, आनन्द, अवसर, गौतम, जगधर, पद्मनाभ, शकुनादित्य, भद्रेश्वर, निम्बरथ, आदि ।

प्राकृत नाम—पापे, कुले, सोमे, सहारण, सहण, देवढ, नादूक, सोमक, सठेल, सुभराज, वील्हे, तीवब, बलहवा, लौहड, तीवक, सीरी, कील्हण, लाखू, पाल्हे, देल्हू, पापा, वाछ, गाल्हण, आल्हण, पील्हू, जगे, जाल्हे, पीथू, दाथी, वाल्हण, देहल, नाट, पीथूक, सुल्हण, किक्कन, सठेल, रतन, छिगल, पापे, तिहुणपाल, बोधाने, नीम्वदेव, धांधे, सीरी, तीवक, देल्हण तीकम, सहजे, रीसू, पवणाह, कान्दू, धूल्हण, रिसिक, वाछू लाहड, वाल्हे, पाल्हू, रिषि; आल्हू, देऊ, सांगम, वाल्हू, दामर, उदयनाम, उल्हे, जैतनभ, वाल्हे, माढू; राल्हे, पूजन, गल्हे; बलहवा । लाख । पापा । माव । बाऊ । साभू । अजौ । रासल । नंनु । वील्हू । जाल्ह । सोनड । आल्ही । रील्हू । लाखण । वाल्हण । कूके । तीम्बर । तीवक । पाल्हे । पवणाह । जार्गाषि । वीठु । सांतट । रैथे । थानू । तीकव । वेदू । राजे । गैलोलिक । देवसदी । सीऊ । सहिल । ताल्हू । बहुधर । रासल । देदे । पदुमे । राल्हू । देदि । वाछू । गोल्हे । देद आदि

उपरिवर्णित ब्राह्मणों के नामों से ज्ञात होता है कि उन पर संस्कृत भाषा के साथ ही प्राकृत भाषाओं — महाराष्ट्री, शौरसेनी, मागधी और पैशाची तथा देशज संस्कृति का प्रभाव किसी न किसी सीमा तक अवश्य था । चन्देल राजाओं की राज्य-सभा में संस्कृत के भद्र ब्राह्मण कवियों का सम्मान था । उन कवियों में गदाधर, माधव और राम के नाम उल्लेखनीय हैं । इस सन्दर्भ में यह भी ध्यातव्य है कि चन्देलकालीन ब्राह्मणों की बोलचाल की भाषा प्राकृत, अपभ्रन्श और देशज भाषायें भी थीं । ज्ञात होता है कि ब्राह्मणों के परिवारों में

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

संस्कृत की प्रमुखता तो थी ही किन्तु प्राकृत भाषाओं—मराठी, मागधी, शौरसेनी और पैशाची तथा अपभ्रन्श आदि का भी प्रभाव था।

चंदेल ब्राह्मणों के प्राकृत नामों में कुछ ऐसे भी नाम हैं, जो संस्कृत के तत्सम शब्दों के तद्भव या विकृत (अपभ्रष्ट) रूप हैं, यथा—

अपभ्रंश रूप	शुद्ध संस्कृत	अपभ्रंश रूप	शुद्ध संस्कृत
पापें	पाप	सहण	सहज
कुले	कुल	गयाधर	गजाधर या गदाधर
सोमे	सोम	नादूक	नाद
सोमक	सोम	सठेल	सठ
सुभराज	शुभराज	रतन	रत्न
बोधने	बोध	धांवे	धन्धा
सीरी	श्री	लाखू	लक्ष्य
सहजे	सहज	पाया	पाप
रिसिक	ऋषि	रिषि	ऋषि
नाट	नट	देऊ	देव
सांगम	संगम	शुभंकर	शुभकर
दामर	दामोदर	लाखण	लक्षण
गोधण	गोधन	अजौ	अज
बेदू	बेद	राजे	राज
पदुमे	पद्म	स्वांभू	स्वायम्भू
धर्माणंद	धर्मानन्द	दाउ	देव
साभू	शुभ	जगे	जग

उपरिवर्णित प्राकृत नामों के अतिरिक्त कुछ ब्राह्मणों के ऐसे नाम हैं, जिनका अर्थ स्पष्ट नहीं होता, यथा—

देवढ, पवणाह, कील्हण, कान्द, तीकब, कान्दू, तीकव, आल्हण, देल्हण, थेल्हण, यान्हे, पाल्ह, तीकम, वाल्हू, देल्हू, वाल्हू, बाछ, वाछू, जाल्हे, राखल, लाहड, आल्ही, पीथू, माढू, वाल्हे, दायी, पजून, पाल्हू, गोसे, वाल्हण, दे ल, देल्ह, आल्हू, नाहिल, गोल्हे, भाभूक, सूल्हण, लाले, वाल्हू, तीकम, उल्हे, लाइड, जाल्हू, गागू, जैतनाभ, कूके, सीले, साल्हे, बाउ, वीठु, स्वल्हण, सांतट, साभू, छीतू, सीधन, सूपट, देवे, देदे, आभट, गेलोलिक, राल्हू, जाहड, देदि, गोल्हे, ताल्हू, देक, आदि।

इन नामों के नामकरण की पद्धति के परिशीलन से स्पष्ट हो जाता है कि कुछ चन्देल ब्राह्मण परिवारों से ब्राह्मण संस्कृति तथा संस्कृत भाषा का ह्रास हो

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

गया था। यह भी संभावना की जा सकती है कि इनका सम्पर्क कृषि कार्य से हो गया था, जहाँ अशिक्षित तथा निम्न वर्ग के लोग रहा करते थे। यह भी सम्भव है कि इन ब्राह्मणों पर भी अशिक्षित वातावरण का प्रभाव पड़ा है और वे ब्राह्मण संस्कार से सम्बन्धित शास्त्रपरम्परा पर आधारित नामकरण प्रणाली का परित्याग कर साधारण या निम्नकोटि के लोगों का नाम रखने लगे। इनमें से कुछ नाम विदेशी भी रहे हों तो आश्चर्य नहीं। नामकरण की पद्धति का विशदीकरण निम्नलिखित विवरण से हो जाता है—

'प' से समाप्त होने वाला नाम—पापे, पापा।

'ण' से समाप्त होने वाले नाम—सहण, सहारण, कील्हण, देल्हण, गाल्हण, आल्हण, घेल्हण, वाल्हण, सूल्हण, साल्हण, लाखन, वाल्हण, गोधरण।

'ल' से समाप्त होने वाला नाम—कुले, सठल, छींबल, तिहुणपाल, देहल, नाहिल, लाले, रासल, सीले, सहले।

'र' से समाप्त होने वाले नाम—गयाधर, सीरी, शुभंकर, दामदर।

'म' से समाप्त होने वाले नाम—सोमे, तीकम।

'ढ' से समाप्त होने वाले नाम—देवढ, माढू।

'क' से समाप्त होने वाले नाम—नादूक, सोमक, रिसिक, पीथूक, भाभूक, कूके, ताविक।

'न' से समाप्त होने वाले नाम—किक्कन, रतन, बोधाने, पूजन, पीथन।

'ध' से समाप्त होने वाले नाम—सुभराध, सहजे।

'ह' से समाप्त होने वाले नाम—वील्हे, पाल्हे, देल्हू, पवणाह, पाल्हू, वल्हे, गाल्हे, देल्ह, आल्हू, रील्हू, मोल्हू, वाल्हू, वील्हू, पाल्हू, उल्हे, जाल्हे, देल्ह, आल्ही, रील्हू, राल्हे, गल्हे।

'व' से समाप्त होने वाला नाम—तीवक, बलहवा, नीम्बदेव, तीकव, आभदेव।

'म' से समाप्त होने वाले नाम—तीकम, सांगम।

'ख' से समाप्त होने वाले नाम—लाखू।

'स' से समाप्त होने वाले नाम—रीसू, गोसे।

'छ' से समाप्त होने वाले नाम—वाछ, वाछू।

'ग' से समाप्त होने वाले नाम—जगे, गागू।

'ड' से समाप्त होने वाले नाम—लाहड, सोमड, लोहड।

'द' से समाप्त होने वाला नाम—कान्दू।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

'ट' से समाप्त होने वाला नाम—नाट।

'थ' से समाप्त होने वाला नाम—पीथू।

'ष' से समाप्त होने वाला नाम—रिषि।

परमर्दिदेव (व० सं० १२२३) के सेम्रा दानपत्र के अनुसार निम्नलिखित ब्राह्मणों की सूची ध्यातव्य है[1]—

अजै, ऊहड, अजौ, दशदेव, अजयपाल, कोल्हण, अवसर, गौतम, असवर, वीठुक, अणतपाल, वसुपाल, अभिनन्द, धर्मानन्द, आनन्द, नरसिंह आभट, लोलिक, आल्हण, धेल्हण, आल्हू, साल्हण, आमदेव, तीकव, उत्तरादित्य, साभू, ऊहड, अजै, कदू, महिदस्वामिन, कमलासन, गोठ, कामेथेडू, कनादित्य, कनखामि, जैते, कान्दू, आल्हण, कपिलेश्वर, प्रभाकर, किल्हण. अजयपाल, किर्तिधर, देवनाम, किठण, महुल, कोका, वासुदेव, कृष्ण, गामे, कृष्णशर्मन, अग्नि, कूके, पथिम, कुलधर, सीरी, कुलादित्य, आल्हण कुले, माधव, कूल्हण, सीले, कुमारशर्म, देऊ, कुन्डल, हिरादित्य, गदाधर रिसिक, गागे जागू, गागू, सुभङ्कर, गाल्हण, कान्दू, गल्हे, आनन्द, मामें, कृष्ण, गङ्गाधर, पवणाह, गांगू, गोविन्द, गासल, जयशर्मा, गौतम, अवसर, गयाधर, धरणीधर, गोघण, नारायण, गोहण, द्विवीकय, गोल्हे, हरिशर्मा, गोपति, गोसे, वासुदेव, गोठ, कमलासन, गोविन्द, वामन, चक्रस्वामी, केशव, चन्द्रादित्य, विद्याधर, चतुर्भुज, दामोदर, चौभुज, सूपट, छीतू, जाडु, देवदत्त, जगधर, धरणीधर, जागर्षि, कील्हण, जगसीह, धरणीधर, जगे, वाछू, जाहड, मधुसूदन, जाहुल, द्विमनोरथ, जौत, कनसामि, जौतनाम, देवनाम, जाल्हण, महिधर, जाल्हे, गोविन्द, जाल्हू, रिसिकेश, जयद्रथ, दाऊ, जयाणांद, लाखण, जय, शर्मा, गासल, जयसीह, जागर्षि, ताल्हू, आल्हण, गागू, देल्हू, तीकव, लाखू, तील्हू, सलखणे, थानू, गांगू, थेडू, कामे, दामर, दाल्हू, दामोदर, महिधर, दाउ, जयद्रथ, दायी, गङ्गाधर, देद, नामदेव, देदे, हरि, देदि, धर्मणंद, देल्ह, शुभादित्य, देल्ह, तीकव, देल्हण, द्विपाल्हेक, देल्हू, आल्हू, देऊ, कुमारशर्मा, देवदत्त, माल्हे, देवघन, श्रीकर, देवधर, गंगाधर देवहर, उदयनाभ, देवनाभ, जौतनाम, देवर्षि, गयाधर, देवशर्म, केशव, देवव्रत, वासुदेव, देवेश्वर, वावण, देवीय, धान्वे, तीकव, धानू, नीलकन्ठ, धरणिधर, गयाधर, धर्मधर, जयद्रथ, धर्मानन्द, अभिनन्द, धर्मानन्द, देदि, धेल्हण, आल्हण, देवेन्द्र, वामनस्वामी, देवढ, सहारण, नाग, धरणीधर, नाहिल, देऊक, नामदेव, त्रिलोचन, नरसिंह, आनन्द, नरेत्त, देवशर्मन, नाट, गंगाधर, नाटे, श्रीधर, नीलकंठ, धानू, नीम्बदेद, लोहड, निम्बरथ, पद्माकर, विद्याधर, पद्मनाभ, दामोदर, पद्मस्वामी, धरणीधर, पंदुमे, महादेव, पूंजन, महिदस्वामी, पाल्हण, सोमे, पाल्हू, वाल्हण, पाणिनि,

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

गंगाधर, पापा, रिसू, पराशर, वेद, परशुराम, लक्ष्मीधर, परिणाह, गंगाधर, पीथन, बहुलदेव, पीथू, लाहड, पीठूक, वसू, प्रभाकर, कपिलेश्वर, पृथ्वीधर, सुज, पुरुषोत्तम, हरि, बहुधर, आमदेव, बाहुल, नारायण, बहुलदेव, पीयन, बोधाने, विष्णु, ब्रह्म, यजधर, भामू, ब्रह्म, भद्रेश्वर, गोल्हे, भानिक, गासल, भाष्कर, गाल्हे, भवणसामि, देल्हल, भयलि लाखू, भोगादित्य, रिषि, माधव, माढू, रील्हू, मधुक, श्रीधर, मधुसूदन, वछराज, माग, शकुनादित्य, महादेव, पदुमे, महाणन्द, सर्वधर महाराज, अजयपाल, महासाण, बल्हेक, महाशर्म, महसू, मीलू, महेश्वर, गागू, महिधर, दामोदर, महिलू, सजाहड, महिदस्वामि, कदू, महीपाल, वामदेव, मालाधर, रत्नेश्वर माल्हा, पीथू, माल्हण पीथन, माल्हे, देवदत्त, माल्हू, गोविन्द, मनादित्य, वाछिउ, मनोरथ, जाहुल, मनु, मीलू, महसू, यज्ञधर, ब्रह्म, यशोदेव, अजौ, यशोधर, श्रीधर, राघव, रिसिक्शि, रैधे, देल्हण, राजे, सूपट, राल्हू, आल्हण, राम, श्रीधर, रामचन्द्र, वासुदेव, रासल, सोनड, रत्नेश्वर, मालाधर, रावण, ब्रह्म, रील्हे, वराह, रीसड, विश्वरूप, रिषि, जाल्हे, रिसिक, नारायण, रीसू, पापा, रुद्र, छीतू, लाहड, पीथू, लखण, गाल्ह, लाखण, चौजयाणंद, लखणादित्य, देऊ, लाखू, तीकव, लक्ष्मीधर, सहजे, लाले, सहिल, लोहड नीम्बदेव, लोकिक, आभट, वामनस्वामी, केशव, विद्याधर, शूभराज विद्याधर, पाल्हू, विद्याधर, सीहड, विद्याधर, वाल्हू विद्याधर, चन्द्रादित्य, विद्याधर, पद्माकर, विद्याधर, नागशर्मन, विद्याधर, सीले, विद्याधर, वाछू, विद्याधर, केशव शकुनादित्य, माघ, शुभादित्य, देल्ह, शिवादित्य, सोमेश्वर, शूभाकर, शल्हू, शुभंकर, हरि-शुभंकर, शतानन्द, गागू, शुभंकर, भास्कर, शुभंकर, देवेश्वर, शर्मादित्य, राहाल, श्रीधर, राम, श्रीधर, रील्हू, सुरोत्तम, लक्ष्मीधर, सहारण, गयाधर, सलखण, तील्हू, साल्हण, आल्ही, साल्हण, वाऊ, साल्हण, आल्हू, साल्हे सीले, सांगम, कीर्तिधर, सांतर, सूल्हण, हाल, सर्वधर, महाणद, सीधन, लाहड, सिहड, विद्याधर, सीलण, सीले, सीरी, कुलधर, सीरी, लाहड, सीऊ, रुद्र, सील, वाछ, सोमदत्त, निवास, सोमदेव, माल्हू, सोमेदेव, श्रीधर सोमराज, अजयपाल, सोमे, हिरण्य, सोमे, केशव, सोमेश्वर, शिवादित्य, सोमेश्वर, भागू, सोमेश्वर, लाहड, सोनड, रासल, सोटे, द्विगंगाधर, हाल, शर्मादित्य, हरि, शुभंकर, हरि, माधव, हरि, हरि, हरि, हरिदत्त, सीरी, हरिधर, गंगाधर, हरिशर्मा, गोल्हे, हरिशर्मा, जयशर्मन, हिरादित्य कुंटण, हिरण्य, सोमे।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

ब्राह्मण का नाम	राजा का नाम	समय	अभिलेख प्राप्ति का स्थान	सन्दर्भ
कुलेशशर्मा	त्रिलोक्यवर्मन	वि०सं० १२६४	तेहरि	ए०इ० ३१, पृ०७३
गयाधर	,,	,,	,,	,,
केशवशर्मा	मदनवर्मन	वि०सं० ११९२	,,	३२, पृ० १२३
वामनस्वामि	,,	,,	,,	,,
किक्कन	देवेन्द्रवर्मदेव	,, ११०८	,,	,, २०,पृ० १२८
सोमेश्वर	,,	,,	,,	,,
केशवशर्मा	परमर्दिदेव	,, १२३३	पचर	,, १०, पृ० ४८
तीकव	,,	,,	,,	,,
किक्कम	,,	वि०सं० ११०८	चरखरी	वही, ३०,पृ० १२७
सोमेश्वर	देववर्मदेव	,,	,,	,,
गयाधर	त्रिलोक्यवर्मन	वि०सं० १२६४	तेहरि	ए०इ० ३२, पृ० ७३
कुलेशर्मन	,,	,,	,,	,,
छिगल	परमर्दिदेव	वि०सं०१२३०	महोबा	ए०इ०४, पृ० १६८
वील्हे	,,	,,	,,	,,
तिहूणपाल	,,	,,	पचर	,, १०, पृ० ४८
वलहवा	,,	,,	,,	,,
तीकव	,,	,,	,,	,,
हणपाल	,,	,,	,,	,,
तीकम	,,	,,	सेम्रा	,, ४, पृ० १५८
देवषभू	विरवर्मदेव	,, १३११	चरखारी	३०, पृ० १३३
जगदेव	,,	,,	,,	,,
नौग्रहण	त्रैलोक्यवर्मन	,, १२६३	तेहरी	,, ३१, पृ० ७६
सीहड	,,	,,	,,	,,
नारायणशर्मा	मदनवर्मन	,, ११९२	,,	,,३२, पृ० १२२
देवेन्द्र	,,	,,	,,	,,
नादूक	,,	,,	,,	,,
पापे	त्रैलोक्यवर्मन	,, १२६१	गर्ग	,, १६, पृ० २७५
सामन्त शर्मन्	,,	,,	,,	,,
यशः	,,	,,१२३०	महोबा	वही १६, पृ० १३
वील्हे	,,	,,	,,	,,

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

ब्राह्मण-नाम	राजा का नाम	समय	अभिलेख प्राप्ति-स्थान	सन्दर्भ
रणपाल	"	" १२६१	गर्ग	" १६, पृ० २७५
सहणपाल	"	"	"	"
रतनशर्मा	परमर्दिदेव	" १२३०	महोबा	"
वील्हे	"	"	"	"
वलहवा	परमर्दिदेव	" १२३३	पचर	" ४, पृ० १६८
तिहुणपाल	"	"	"	"
सामन्तशर्मन	त्रैलोक्यवर्मन	" १२६१	गर्ग	" १६, पृ० २७५
पापे	"	"	"	"
सहणपाल	"	"	"	"
रणपाल	"	"	"	"
सीहड	"	" १२६४	तेहरी	" ३१ ८६
नौग्रहण	"	"	"	"
सोमेशर्मन्	"	"	"	" ३२ १२२
श्रीपाल	"	"	"	"
सहारण	मदनवर्मन	" ११९२	"	" ३८
देवढ	"	"	"	"
सोमेक	"	"	"	"
श्रीपाल	"	"	"	"
सहजूशर्मा	"	"	"	"
श्रीपाल	"	"	"	"
सहारण	"	"	"	" १२५
श्रीपाल	"	"	"	"
सोमेश्वर	देवेन्द्रवर्मदेव	११०८	चरखारी	" ३० १२८
जयस्वामी	"	"	"	"
सठेल	हम्मीरदेववर्मन	१३४६	"	" २० १३६
सुभराज	"	"	"	"
विद्याधर	"	"	"	"
हरिपाल	वीरवर्मदेव	वि०सं० १३११	"	" ४ १६३

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

मध्यप्रदेश

कलचुरिकालीन त्रिपुरी के ब्राह्मण-नाम

त्रिपुरी (मध्यप्रदेश के जबलपुर का निकटवर्ती राज्य) में कलचुरियों का शासनकाल द्वादश शताब्दी माना जाता है। त्रिपुरी के ब्राह्मण-नामों के सम्बन्ध में जानकारी कलचुरियों के दानपत्रों से होती है। इन पर आधारित अधोलिखित सूची में उल्लिखित ब्राह्मणों के नाम ध्यातव्य हैं।

नाम के प्रथम भाग—सोढ, आस्तक, नारायण, छील्तू. महा, वामन, सूल्हण, सीलण, मह. जनार्दन, चतुर्भुज, माल्हण, स्कन्द, गया, माधव, मधुसूदन, त्रिलोचन, गोठे, पृथ्वी, गंगा, दामर, धरणी, च्छीतपई, पैथे, शशि, सीया, पिथन, सोम, देल्हण पांडु, पुरुषोत्तम, दामोदर, चीथु, दिवाकर, हरि, शान्ति, राम, नागो, माल्हू, केशव, भव, सीलू, आल, विश्व।

उक्त सूची से विदित होता है कि कलचुरिकालीन ब्राह्मण-परिवारों में देवताओं के नाम से नाम प्रारम्भ किये जाते थे। यथा—जनार्दन, त्रिलोचन, स्कन्द, दामोदर, मधुसूदन, हरि, पुरुषोत्तम, नागो (नाग), राम, भव, केशव, नारायण, चतुर्भुज, वामन, माधव। देवतापरक नामों को देखने से विदित होता है कि कलचुरिकालीन ब्राह्मण-परिवारों में विष्णु और शिव के नामों को चयन का आधार बनाया जाता था। इससे यह भी परिलक्षित होता है कि ब्राह्मणों के ऊपर विष्णु तथा शिव का प्रभाव विशेष रूप से था। विष्णु से सम्बन्धित ब्राह्मणों के नाम जनार्दन, मधुसूदन, पुरुषोत्तम, राम, केशव, चतुर्भुज, दामोदर, हरि, नारायण, बामन, और माधव उल्लेखनीय हैं। नाम की श्रेणी के अन्तर्गत ब्राह्मण-नाम स्कन्द, (=शिवपुत्र, षडानन, कार्तिकेय), त्रिलोचन, नागो (नाग) और भव आते हैं।

ग्रहों के देवताओं के नामों से कलचुरिकालीन ब्राह्मणों के नाम प्रारम्भ किये जाते थे। इस प्रकार के नामों को नक्षत्रयी या नाक्षत्रिक नामों की श्रेणी के अन्तर्गत रक्खा जा सकता है। यथा— शशि, दिवाकर। ब्राह्मण–परिवारों में नदीपरक नाम प्रयुक्त होता था, यथा— गंगा। धार्मिक प्रवृत्ति के होने के कारण तीर्थ आदि स्थान से सम्बन्धित ब्राह्मण-नाम होते थे, तथा — गया (मगध)। ब्राह्मण नामों में ग्रह-नामों का भी महत्त्व था। इस प्रकार की श्रेणी में पृथ्वी और धरणी से प्रारम्भ होने वाले ब्राह्मण-नाम ध्यातव्य हैं।

ब्राह्मण-परिवारों में देशी भाषा के नामों के प्रचलन का, जिन्हें प्राकृत नाम दिया जा सकता है, भी अस्तित्व मिलता है। इस प्रकार

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

के अधिकांश नामों का निश्चित अर्थ भी ज्ञात नहीं होता । इनमें कुछ नाम हैं—सोढ, सीआ, दामर, छील्तू, देल्हण, पैथे, सूल्हण, नागो, पिथन, आल, मह, चौथु, आस्तक, माल्हण, माल्हू, सीलण, महसोग, सील्, चछीतपई, गोठे । उक्त प्राकृत नामों को निम्नांकित श्रेणी के अन्तर्गत विभाजित किया जा सकता है, यथा—

'आ' से समाप्त होने वाला नाम— सीआ ।

'ई' से समाप्त होने वाला नाम— चछीतपई ।

'क' से समाप्त होने वाला नाम— आस्तक ।

'ग' से समाप्त होने वाला नाम— नागो ।

'ठ' से समाप्त होने वाला नाम— गोठे ।

'ढ' से समाप्त होने वाला नाम— सोढ ।

'ण' या 'न' से समाप्त होने वाले नाम— सूल्हण, सीलण, देल्हण, माल्हण, महसोण, पिथन ।

'त' से समाप्त होने वाला नाम— छीतू ।

थ' से समाप्त होने वाले नाम— चौथु, पैथे ।

'ल' से समाप्त होने वाले नाम – आल, सील् ।

'र' से समाप्त होने वाला नाम— दामर ।

'ह' से समाप्त होने वाले नाम— माल्ह, मह ।

प्राकृत भाषा के नामों के अतिरिक्त अधिकांश ब्राह्मणों के नाम विशुद्ध संस्कृत भाषा में हैं, यथा– जनार्दन, स्कन्द, मधुसूदन, पृथ्वी, दिवाकर, चतुर्भुज, धरणी, राम, त्रिलोचन, शशि, केशव, गंगा, सोम, आस्तक, हरि, पुरुषोत्तम, महादित्य, दामोदर, भव, विश्वरूप, बामन, माधव, पाण्डु, शान्ति ।

उपर्युक्त नामों के अध्ययन से ज्ञात होता है कि कलचुरि ब्राह्मणों में विशुद्ध संस्कृत भाषा और प्राकृत का प्रभाव तथा प्रसार था ।

कलचुरि-कालीन त्रिपुरी के ब्राह्मण नामों की सूची

ब्राह्मण का नाम	राजा का नाम	अभिलेख	समय	प्राप्ति-स्थान	सन्दर्भ
सोढ	विजयसिंह	क०व०९३२=११८०ई०		कुम्भी	कार्पस, ४/२, पृ० ६४७
छीतू	,,	,,		,,	,,
सूल्हण	,,	,,		,,	,,
जनार्दन	,,	,,		,,	,,
स्कन्द	,,	,,		,,	,,

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

ब्राह्मण-नाम	राजा का नाम	समय	अभिलेख प्राप्ति-स्थान	सन्दर्भ
मधुसूदन	जयसिंह	क०व०९२६=११७४ई०	जबलपुर	वही, ४/१, पृ० ३३६
पृथ्वी	गयाकर्ण	क०व०९०२=११५०ई०	तिवर	,, पृ० ३०७
धरणी	,,	,,	,,	,,
धरणी	,,	,,	,,	,,
पृथ्वीधर	नरसिंह	क०व०९०७=११५५ई०	मेरूघाट	वही, पृ० ३१७
शशिधर	,,	,,	,,	,,
सोमेश्वर	लक्ष्मणराज		कारातलाई	वही, २, पृ० १७
पुरुषोत्तम	विजयसिंह	क०व० ९४४=११९६ई०	रीवा	कार्पस, ४/१, पृ० ३५३
दिवाकर	,,	,,	,,	,,
रामचन्द्र	,,	,,	,,	,,
केशव	जयसिंह	क०व०९२८=११७७ई०	तिवर	वही, पृ ३४५
आलदेव	,,	,,	,,	,,
आस्तक	,,	,,	,,	,,
महादित्य	,,	क०व०९२६	रीवा	वही, पृ० ३४८
सीलण	,,	,,	,,	,,
चतुर्भुज	,,	,,	,,	,,
गयाधर	,,	,,	,,	,,
त्रिलोचन	,,	,,	,,	,,
गंगा	यशःकर्ण	क०व०८२२=११७१ई०	खैरा	,, पृ० २८९
च्छीतपई	,,	,,	,,	,,
सीआ	,,	,,	,,	,,
देल्हण	जयसिंह	क०व०९१८=११६६ई०	जबलपुर	ए०इ० २१, पृ० ९३
दामोदर	,,	,,	,,	,,
हरिशर्मा	यशःकर्ण		जबलपुर	कार्पस, ४/२, पृ० ६३४
नागो	,,		,,	,,
भवनाग	,,		,,	,,
विश्वरूप	यशः कर्ण	क०व० ७९३=१०४२ई०	बनारस	कार्पस, ४/१, पृ० २४४
नारायण	,,	,,	,,	,,
वामन	,,	,,	,,	,,
मह	,,	,,	,,	,,

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

माल्हण	विजयसिंह ”			गोपालपुर कार्पस, ४/२, पृ० ६५६
राम	”	वि०सं० १२५३–११९६ई०	रीवा	वही, ४/१, पृ० ३६१
महसोण	”	”	”	”
माधव	”	”	”	”
गोठेशर्मा	”	”	”	”
दामरशर्मा	”	”	”	”
पैथे	”	”	”	”
पिथन	”	”	”	”
पांड	”	”	”	”
चौथु	”	”	”	”
शान्ति	कर्णदेव	”	गोहरवा	ए०इ०, ११, पृ० १४५
माल्हू	”	”	”	”
सीलू	”	”	”	”

कामरूप

वर्माकालीन ब्राह्मण-नाम

वर्मा नरेश भगदत्त के परिवार में उत्पन्न भास्करमर्मा ने कामरूप में लगभग ६३६ ई० से ६४५ ई० तक शासन किया। वह ब्राह्मण धर्मावलम्बी था। उसने निधनपुर ताम्रपत्र का नवीनीकरण किया था जिसको पहले मूलरूप से उसके प्रपितामह के पिता महाभूतिशर्मा या पुष्पभूति वर्मा ने ब्राह्मणों के नाम जारी किया था। निधनपुर दानपत्र में २०५ ब्राह्मणों के नाम का उल्लेख किया गया है। वास्तव में यह बड़ा ही आश्चर्य का विषय लगता है कि कामरूप जैसे प्रदेश में इतना पूर्व यानी भास्करवर्मा के प्रपितामह के पिता के समय (५वीं शताब्दी पूर्वार्ध या उत्तरार्ध) में विभिन्न प्रकार के ब्राह्मणों के अस्तित्त्व की सूचना मिलती है जिनके अधिकांश नाम शुद्ध संस्कृत भाषा से लिए गये हैं। नामों के अध्ययन से इस बात का संकेत मिलता है कि कामरूप में लगभग ५वीं शताब्दी पूर्वार्द्ध तथा चौथी शताब्दी उत्तरार्द्ध में ब्राह्मणोंदय हो चुका था। निधनपुर दानपत्र में उल्लिखित ब्राह्मण नामों का सांस्कृतिक दृष्टि से अध्ययन महत्त्वपूर्ण प्रतीत होता है। भास्करवर्मा के दुबी दानपत्र में भी पराशर गोत्रीय

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

ब्राह्मणों के नामों का उल्लेख किया गया है। भास्करवर्मा के निधनपुर तथा दुबी दानपत्र में वर्णित विभिन्न प्रकार के ब्राह्मण-नामों से सम्बन्धित निम्नांकित सूची ध्यातव्य है–[1]

अर्क, अंग, केशव, कृष्ण, अप. ईश्वर, कर्क, खण्ड, अद्भुत, उदय, कलि, गंगा, अनन्त, उग्र, कीर्ति, गति, आद्रि, कुष्माण्ड, कोशि, गायत्री, गोपेन्द्र, नर, मधु, शुभ, गोपाल, नारायण, मंत्र. शनैश्चर, गणेश्वर, नरेश, मित्र, शंकर, गौरि, नन्दि, मधु. शिव, गोमि, नागदत्त, मन, श्राद्ध. गोवर्द्धन नन्दन, मेघ, श्रेय, घोष, प्रवर, माधव, शक्ति, चक्र, प्रमोद, यज्ञ, शुक्र, चन्द्र, साधारण, जनार्दन, पद, यश, सोम, जटा, पराशर, रवि, सुदर्शन, प्रभाकर, रुद्र, सूद्दि, तेज, प्रकाश, साधु तोष, प्रजापलित, ऋषि, सर्पिनी, बप्प, वकुल, सनातन, दाम, बुध, वृद्धि, सुचरित, देव, बृहस्पति, वरुन, सुनयन, दुर्गेश्वर, भानु, वसु सुयोग, दिव्येश्वर, भास्कर, वेद, सुदर्शन, दिवाकर, भूयस्कर, वाजि, सवितृ, दक्ष, भव, विष्णु, संत, घृति, महि, वीर, शाश्वत, ध्रुव, भृगु, विश्व सुप्रतिष्ठित, महीधार, सरस, नन्द, मनोरथ, शूद्र, हर्ष।

उपरिवर्णित सूची से ज्ञात होता है कि कामरूप के ब्राह्मणों के परिवारों में नक्षत्रों, विष्णु, शिव तथा अन्य देवताओं के नाम, जातिपरक नाम, यज्ञपरक नाम, वेदपरक नाम, सौन्दर्य तथा यशपरक नाम धारण किये जाते थे।

कामरूप ब्राह्मण नाम के आधार

१. (अ) नक्षत्रों तथा इनके देवताओं के नाम।
(ब) ग्रहों या दिन-नामों को आधार मान कर।
२. विष्णु, शिव तथा अन्य देवताओं के नाम।
३. जातिसूचक नाम।
४. यज्ञीय नाम।
५. वैदिक नाम।
६. सौन्दर्य तथा यशपरक नाम (सुखात्मक भाव प्रकट करनेवाले नाम)।
७. ऋषिपरक नाम।
८. अन्य नाम।

---

१. ए० इ०, १९, पृ० ११९-२०
वही, पृ० २४६-४६
वही, ३०, पृ० ३०४

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

निधनपुर दानपत्र से ज्ञात होता है कि लगभग षष्ठ शताब्दी से लेकर सप्तम शताब्दी पूर्वार्ध तक कामरूप में ब्राह्मणों के नाम अधिकांश नक्षत्रों तथा इनके देवताओं के नामों के आधार पर रखे जाते थे। दानपत्र से प्राप्त निम्नांकित नक्षत्रीय देवतापरक नाम ध्यातव्य हैं—

ब्राह्मण-नाम	नक्षत्र और देवता	ब्राह्मण-नाम	नक्षत्र और देवता
आद्रि	आर्द्रा	भानु	पुनर्वसु
आप	पूर्वाषाढ़	भास्कर	पुनर्वसु
वर्क		मित्र	अनुराधा
चन्द्र		तोष	त्वष्टा
दिवाकर		रविं	चित्रा
प्रजापलित	रोहिणी	रुद्र	आर्द्रा
बृहस्पति	पुष्य	वसु	धनिष्ठा/श्रीवष्ठा
वसन	शतभिषा	सोम	मृगशिरा
सर्प	आश्लेषा	सवितृ	हस्त

ब्राह्मण-नाम आद्रि, आर्द्रा नक्षत्र नाम से बना है। आप नाम पड़ने का कारण है पूर्वाषाढ़ के देवता आप में विश्वास। वस्तुतः आप से ही 'आप' शब्द ब्राह्मण-नाम के रूप में अंगीकार किया गया है। चन्द्र ग्रहपरक नामों की श्रेणी में माना जाता है। दिवाकर या भानु या भास्कर पुनर्वसु का देवता है, जिसके नाम पर ब्राह्मण-नाम रखा जाता था। रोहिणी नक्षत्र के देवता प्रजापलित के नाम पर ब्राह्मण नाम बना है। पुष्य नक्षत्र के देवता बृहस्पति के नाम परब्राह्मण-नाम रखा जाता था। कहीं पर ब्राह्मण-नाम मित्र और रुद्र आया है। ऐसा ज्ञात होता है कि अनुराधा नक्षत्र के देवता मित्र तथा आर्द्रा के देवता रुद्र के नाम पर नामकरण हुआ है। ब्राह्मण-नाम तुष्टि का छः बार उल्लेख छः ब्राह्मणों के सन्दर्भ में आया है। यह नाम भी नक्षत्रीय हो सकता है। तुष्टिनाम त्वष्टा से बना प्रतीत होता है। चित्रा नक्षत्र का देवता त्वष्टा है। ब्राह्मण–नाम वसु, वरुण. सोम, सर्प तथा सवितृ नाक्षत्रिक नाम हैं क्योंकि वसु धनिष्ठा या श्रीयष्ठा नक्षत्र का देव है. वरुण शतभिषा का देवता है। जब कि सवितृ हस्त नक्षत्र का देव है। कुछ नामों को दिन परक या ग्रहों से सम्बन्धित कुछ परिवारों के ब्राह्मण-नामों के ग्रह परक नामों की श्रेणी में रखा जा सकता है—यथा, बुद्ध, शनि, रवि, बृहस्पति, शुक्र। ज्ञात होता है कि ब्राह्मणों के नामों को दिन या ग्रह-नामों के आधार पर चयन किया जाता था। उपरिवर्णित ब्राह्मण-नामों के नामकरण के आधार पर ग्रहों के नाम भी हो सकते हैं। बृहस्पति, शुक्र तथा शनि को ग्रहों की श्रेणी में रखा जाता है। इनको हिन्दू परिवारों में देवता समझा जाता है।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

नक्षत्रों तथा ग्रहों से सम्बन्धित नामों के अतिरिक्त कामरूप के अधिकांश ब्राह्मण-नाम ऐसे मिले हैं जो देवतापरक नामों की श्रेणी में रखे जाते हैं। इन नामों का चयन कुछ वैदिक तथा पौराणिक देवताओं के नामों के आधार पर किया गया था। विष्णु, शिव तथा अन्य देवताओं से सम्बन्धित प्रचलित निम्नांकित ब्राह्मण-नामों का अध्ययन आवश्यक हैं। अनन्त, गोपाल, माधव, ईश्वर, गौरि (गौरी), विष्णु, केशव, गोवर्द्धन, शंकर, कलि (काली जी), जनार्दन शिव, कृष्ण, देव, शक्ति, गायत्री, नारायण, प्रद्युम्न, गोपेन्द्र, नाग, दुर्वा (दुर्गा)। उपर्युक्त नामों में कुछ ऐसे नाम हैं जो विष्णु से सम्बन्धित हैं। कुछ नामों का सम्बन्ध शिव से है जिसे शैव या शिवपरक नामों की श्रेणी में रखा जाता है तथा कुछ नाम देवीपरक हैं। उपरिवर्णित ब्राह्मण-नाम अनन्त तथा ईश्वर के नाम को आधार बनाकर रखे गये थे। ऐसा प्रतीत होता है कि उनके परिवारों में अनन्त भगवान् तथा ईश्वर की आराधना की जाती थी। उत्तर प्रदेश में अनन्त भगवान की पूजा भाद्रपद मास में की जाती है। ब्राह्मण नाम केशव, कृष्ण, गोपेन्द्र, गोपाल, जनार्दन देव, नारायण, माधव विष्णु नाम भगवान विष्णु के नाम के आधार पर रखे गये थे। ज्ञात होता है कि ब्राह्मणों के पारिवारिक या देवता विष्णु थे। कामरूप के कुछ ब्राह्मण-परिवारों में नामों का चयन शिव-नामों के आधार पर किया जाता था। उक्त सूची में कुछ शिव-परक नामों का उल्लेख है, जैसे—शंकर और शिव। भगवान् शिव या शंकर की पत्नी गौरी के नाम से भी ब्राह्मणनाम गौरि का उल्लेख किया गया है। एक ब्राह्मण का नाम गायत्री था। ऐसा प्रतीत होता है परिवार में गौरी या पार्वती की कुलदेवी के रूप में आराधना की जाती थी। कुछ परिवारों में गायत्री मंत्र का पठन-पाठन किया जाता था, जिसकी प्रेरणा से ब्राह्मणनाम गायत्री पड़ा। यह भी ध्यातव्य है कि दानपत्र में एक स्थान पर कलि (कालीजी) शक्ति तथा दुर्ग (दुर्गा) नाम के ब्राह्मणों का उल्लेख किया गया है। सम्भवतः उनके परिवारों में काली शक्ति तथा दुर्गा आदि में ब्राह्मणों की विशेष निष्ठा तथा श्रद्धा थी।

उस युग में कामरूप शक्ति उपासना का केन्द्र माना जाता था। इससे ब्राह्मणों का सम्पर्क था। सम्भवतः इसका भी प्रभाव ब्राह्मणों के नामों पर अवश्य पड़ा होगा।

ब्राह्मणों के नाम नाग-नाम से भी प्रारम्भ होते हैं। नाग देवता की आराधना कामरूप में अति प्राचीन काल से की जाती थी। यह इस तथ्य से भी प्रमाणित होता है कि नागदेवता को मानने वाले लोग नागालैण्ड (कामरूप) में

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

निवास करते हैं। ज्ञात होता है कि कुछ ब्राह्मण-परिवारों में नाग की पूजा देव समझ कर की जाती थी। नागदेवता में अपनी श्रद्धा और भक्ति को प्रकट करने के लिए स्मरणार्थ ब्राह्मण-नाम नाग को ही चयन किया जाता था। कामरूप में कुछ ब्राह्मणों के नामों को जातिपरक नामों की श्रेणी में रखा जा सकता है। इस सम्बन्ध में निम्नांकित नाम ध्यातव्य हैं—नरेन्द्र, वृद्धि, शूद्र, महीधर, दाम। उपरिवर्णित नरेन्द्र तथा महीधर क्षत्रिय नाम और वृद्धि वैश्य नाम हैं। शूद्र शूद्र-नामों की श्रेणी में आता है। ऐसा ज्ञात होता है कि कामरूप के ब्राह्मणों में क्षत्रिय् वैश्य और शूद्रपरक नामों को भी अपना लिया जाता था, जिससे उन ब्राह्मणों के उदार दृष्टिकोण का पता चलता है।

वर्माकालीन ब्राह्मण-परिवारों में नामों का चयन याज्ञिक नामों को दृष्टि में रखकर किया जाता था। यथा— यज्ञ निधनपुर तथा दुबीदानपत्र), यग, मेध, वाजि। ज्ञात है कि कामरूप में विभिन्न स्थानों में यज्ञादिक कृत्य पूर्वमध्ययुग में हुआ करते थे। निधनपुर दानपत्र भी यज्ञ तथा हवनादिक कृत्यों के लिए जारी किया गया था। निधनपुर दानपत्र से ज्ञात है कि कामरूप में ५वीं शताब्दी उत्तरार्द्ध या ६ठीं शताब्दी पूर्वार्द्ध में ही अधिकांश ब्राह्मणों का विस्तार हो गया था। वे ब्राह्मण भिन्न-भिन्न गोत्र तथा वेद से सम्बन्धित थे। जहाँ ब्राह्मण और ब्राह्मण धर्म का बोलबाला रहता है वहाँ यज्ञादिक कृत्य होते हैं तथा इनको ब्राह्मण सम्पादित करते हैं। ठीक यही बात कामरूप के ब्राह्मणों के साथ भी हो सकती है। याज्ञिक कृत्यों के कारण कुछ ब्राह्मणों के नाम यज्ञ या यग (यज्ञ) से बने। कुछ ब्राह्मणों का नाम मेध और वाजि इसलिए पड़ा कि सम्भवतः कामरूप में पहले नरमेध तथा वाजपेय यज्ञ को ब्राह्मण कराते थे।

यज्ञीय नामों के अतिरिक्त कुछ ब्राह्मणों के नाम वेद तथा शाखा नामों के आधार पर रखे जाते थे। निधनपुर दानपत्र में विभिन्न वेद और शाखा से सम्बन्धित ब्राह्मणों का उल्लेख किया गया है। इससे संकेत मिलता है कि कामरूप में उन दिनों यानी महाभूतिवर्मा तथा भास्कर वर्मा के समय वेद तथा शाखाओं का अध्ययन विधिवत् होता था। संभवतः वैदिक शाखा से सम्पर्क के कारण ब्राह्मणों के नाम इससे सम्बन्धित बनने लगे। निम्नांकित वेद से सम्बन्धित नाम द्रष्टव्य हैं— वेद, वाजि।

उपरिवर्णित नामों के अतिरिक्त ब्राह्मणों के कुछ ऐसे नाम हैं जिनको सुखात्मक भाव प्रकट करने वाले या सुन्दर लगने वाले या आनन्दित करने वाले कहे जा सकते हैं। यथा—शुभ, सुयोग, सुदर्शन सुनयन, सुप्रतिष्ठित, हर्ष तथा मनोरम। सुखात्मक नामों के अतिरिक्त कुछ ब्राह्मण-नामों को यश तथा प्रतिष्ठा

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

करने वाले नामों की श्रेणी में रखा जा सकता है। दानपत्र में यशपरक नाम निम्नांकित हैं—श्रेय (निधनपुर तथा दुबी दानपत्र), यश, उदय, वीर (वीरता)। निधनपुर दानपत्र में बाप नामक ब्राह्मण-नाम का उल्लेख किया गया है। बाप से ही बाप (पिता) बना है।

कामरूप के ब्राह्मण-नामों के चयन में गोत्रों तथा ऋषियों के नाम को आधार बनाया जाता था—कौशि (कौशिक), साधु, पराशर, संत, भृगु, ऋषि, ध्रुव आदि। कामरूप के ब्राह्मण-परिवारों में ऋषियों, महर्षियों तथा सन्यासियों के प्रति ब्राह्मणों की विशेष आस्था तथा श्रद्धा थी। सम्भवतः इसी भावना से प्रेरित होकर ऋषिपरक नामों को महत्त्व प्रदान किया जाता था।

निधनपुर दानपत्र में अन्य विभिन्न प्रकार के निम्नांकित नाम विचारणीय हैं— कूष्माण्ड (तुमड़ी), खंड, गोमि, जोहन आदि।

उपर्युक्त तथ्यों से ज्ञात होता है कि कामरूप में ब्राह्मणों के अधिकांश नाम संस्कृत भाषा से सम्बन्धित हैं तथा कुछ नाम ऐसे भी हैं जिनको अपभ्रष्ट या अपभ्रंश भाषा के अन्तर्गत लिया जा सकता है। इस आधार पर यह कहा जा सकता है कि अधिकांश ब्राह्मण कामरूप में संस्कृत-भाषा-भाषी थे तथा उनका परिवार सभ्य तथा सुशिक्षित समझा जाता था, किन्तु अपभ्रंश या अपभ्रष्ट संस्कृत से सम्बन्धित ब्राह्मण-नामों से कुछ अशिक्षित ब्राह्मणों के अस्तित्त्व का संकेत मिलता है, किन्तु निम्नांकित अपभ्रंश संस्कृत भाषा से सम्बन्धित ब्राह्मण-नाम ध्यातव्य हैं।

अपभ्रंश या अपभ्रष्ट संस्कृत भाषा के ब्राह्मण नाम	**शुद्ध संस्कृत**
अप	आपः
आद्रि	आर्द्रा
कलि	काली
कौशि	कौशिक
गौरि	गौरी
यग	यज्ञ
वरुन	वरुण
विधुष	विधुर

उपरिवर्णित तथ्यों से विदित होता है कि लगभग पंचम शताब्दी उत्तरार्ध या षष्ठ शताब्दी पूर्वार्द्ध से सप्तम शताब्दी पूर्वार्द्ध तक कामरूप के ब्राह्मणों के

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

नाक्षत्रिक या नक्षत्रयी, देवतापरक नाम, जातिसूचक नाम, ऋषिपरक नाम, वेदादि नाम, यज्ञीय नाम, यज्ञपरक नाम तथा सुखात्मक भाव को प्रगट करनेवाले नाम सम्बन्ध को बताने वाले हुआ करते थे।

नामों का अध्ययन करते समय यह ज्ञात होता है कि कामरूप के सभ्य तथा सुशिक्षित ब्राह्मण के अधिकांश नाम शुद्ध संस्कृत भाषा से सम्बन्धित थे। इससे संकेत मिलता है कि कामरूप के ब्राह्मण-परिवारों में लगभग ५ वीं शताब्दी उत्तरार्द्ध या इसके भी पूर्व संस्कृत भाषा का प्रभाव तथा प्रसार हुआ। यहाँ यह प्रश्न उठता है कि इस प्रकार की उन्नतिशील सभ्यता तथा संस्कृति से युक्त ब्राह्मण क्या कामरूप या बाहर से आये। ब्राह्मणो को वैदिक शाखाओं से सम्बन्धित बतलाया गया है, जिससे संकेत मिलता है कि वहाँ के ब्राह्मण-परिवारों में वेद की शाखाओं का अध्ययन तथा अध्यापन विधिवत् होता था। कामरूप के ब्राह्मणों का धार्मिक विश्वास उनके नामों से ज्ञात होता है। वे नक्षत्रों तथा ग्रहों को देवता समझते थे। सम्भवतः वे इनकी गतिविधि से भी सुपरिचित थे। इसके अतिरिक्त पुराण-महाभारत-कालीन तथा रामायण कालीन देवता से वे पूर्ण अवगत थे। याज्ञिक नामों से ज्ञात होता है कि कामरूप में ब्राह्मण याज्ञिक कृत्यों द्वारा यज्ञों आदि को विधिवत् सम्पादित करते या करा थे। ज्ञात होता है कि उनका अटूट विश्वास यज्ञों में था। सम्भवतः ७ वीं शताब्दी पूर्वार्द्ध तथा इसके पहले ब्राह्मणों द्वारा यज्ञों पर विशेष जोर दिया जाता था। नामों के अध्ययन से संकेत मिलता है कि कामरूप के ब्राह्मण-परिवारों में शुद्ध संस्कृत भाषा प्रचलित थी। यत्रतत्र किन्हीं परिवार में ब्राह्मण-नाम अपभ्रष्ट या अपभ्रंश संस्कृत भाषा में मिलते हैं।

कामरूप के पालकालीन ब्राह्मण-नाम

लगभग नवम शताब्दी से एकादश शताब्दी पूर्वार्द्ध तक कामरूप के ब्राह्मण-नामों के सम्बन्ध में सूचनायें पाल दानपत्रों से मिलती हैं। निम्नांकित ब्राह्मण-नामों का सांस्कृतिक दृष्टि से अध्ययन विशेष महत्त्वपूर्ण है—

नाम का प्रथम भाग—उम्मीद, जनार्दन, युधिष्ठिर, इन्दोक, जेज्जट, राम, गर्ग, देव, वसु (वसुदेव), गोविन्द, देतोमा, विष्णु, गविष्ठिर, भरत, शषर, चूड़ामणि, महाबाहु, शम्भु, जय (जयदेव), मालाधर, श्रीकंठ, श्रीधर।

पाल दानपत्रों पर आधारित उक्त सूची से ज्ञात होता है कि कामरूप में ब्राह्मणों के नाक्षत्रिक या नक्षत्रयी नाम होते थे। सोम और वसु से प्रारम्भ होने वाले नाम नाक्षत्रिक नाम हैं। वसु, धनिष्ठा नक्षत्र का तथा रोहिणी नक्षत्र का देव है। ऐसा प्रतीत होता है कि पाल, ब्राह्मणों का विश्वास नक्षत्र

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

देवताओं में था। ऐसा सम्भाव्य है कि नाक्षत्रिक देवताओं को ध्यान में रखते हुए नाम रखा जाता था। पाल दानपत्रों में नाक्षत्रिक नामों की अपेक्षा देवता तथा पौराणिक नामों से प्रारम्भ होने वाले नाम अधिक मिलते हैं।

देवतापरक नाम—गोविन्द,[1] विष्णु,[2] जनार्दन,[3] श्रीकंठ,[4] देव,[5] श्रीधर,[6] राम,[7] शम्भु[8]।

ऐसा ज्ञात होता है कि ब्राह्मणों के नाम देवताओं के नामों के आधार पर रखे जाते थे। देवताओं में विष्णु तथा शिव का प्रमुख स्थान माना जाता है। विष्णु तथा शिव में असीम आस्था तथा विश्वास की भावना से ब्राह्मण नामकरण किया करते थे। गोविन्द और जनार्दन ब्राह्मण-नाम ध्यातव्य हैं। यह नाम महाभारत काल में कृष्ण के लिये प्रयोग किया जाता था। महाभारत युद्ध में कामरूप के भगदत्त (म्लेक्ष नरेश) का सम्बन्ध था। सम्भवतः महाभारतकालीन नाम (भगदत्त) कामरूप में किसी न किसी रूप में प्रचलित था। नामदेव तथा श्रीधर विष्णु को कहा जाता है। कृष्ण भी विष्णु का अवतार है। राम को विष्णु-अवतार माना जाता है। पाल ब्राह्मण-समाज में नामकरण वैष्णव-नामों के आधार पर किया जाता था। विष्णु के अतिरिक्त शिव-नामों के आधार पर भी ब्राह्मणों के नाम रखे जाते थे। इस सन्दर्भ में उपर्विर्णित ब्राह्मण श्रीकंठ और शम्भुनाम भी विशेष रूप से ध्यातव्य हैं। शिव असुरों के देवता हैं। कामरूप में असुरों का प्रभाव प्राचीन काल से माना जाता है। भगदत्त तथा उसी पंक्ति से सम्बन्धित पुष्पभूतिवर्मा, भास्कर वर्मा, तथा अन्य असुर या म्लेक्ष नरेश जाने जाते हैं। असुरों के देवता शिव का महत्त्व उन दिनों संभवतः था। कामरूप में शिव-नाम या शिव का महत्त्व ब्राह्मण-परिवारों में हो जाना स्वाभाविक है। ज्ञात होता है कि पालकालीन ब्राह्मण-परिवारों में गोविन्द, जनार्दन, देव, राम, श्रीकंठ तथा शम्भु कुल देवता या विशिष्ट देव के रूप में समझे जाते थे तथा इन्हीं आराध्य देवों के नामों को आधार बना-

---

१. कामरूप शासनावलि, पृ० ५१
२. वही, पृ० १३७
३. वही, पृ० ५१
४. ए० इ०, ३०, पृ० २०८
५. कामरूप शासनावलि०, पृ० ९९
६. ए० इ०, २, पृ० ३५२-५३
७. कामरूप शासनावलि, पृ० १३७
८. ए० इ, २९, पृ० १५६

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

कर ब्राह्मण-नामों का चयन किया जाता था। देवतापारक नामों के अतिरिक्त कुछ ऐसे भी पाल ब्राह्मणों के नाम मिलते हैं, जो महाभारतकालीन नामों से सम्बन्धित हैं।

राम के भाई भरत या आर्यों के विस्तार में दुष्यन्त के लड़के भरत का नाम आता है[1] सम्भव है कि भरत ब्राह्मण-नाम विष्णु-अवतार राम के भाई भरत के महान् चरित्र में विश्वास की भावना को प्रकट करने के लिए पड़ा हो। इसके अतिरिक्त महाभारत या भारत युद्ध के नाम के कारण भरत हो सकता है। इससे पाल ब्राह्मणों में प्रचलित धार्मिक प्रवृत्ति का पता चलता है। धर्मराज युधिष्ठिर[2] के नाम पर उक्त युधिष्ठिर ब्राह्मण-नाम का प्रयोग हुआ है। स्पष्ट रूप से कामरूप के ब्राह्मणों की धार्मिक प्रवृत्ति तथा दृष्टि का ध्यान उक्त नामों से होता है।

जातिसूचक शबर[3] ब्राह्मण नाम ध्यातव्य है। ज्ञात होता है कि शबर ब्राह्मण-परिवारों से सम्बन्धित लोग कामरूप में निवास करनेवाली जंगली जातियों तथा शबर से सम्बन्धित थे या उनको इस सम्बन्ध में जानकारी थी। शबर, निषाद तथा अन्य जातियों का अस्तित्त्व महाभारत युग में कामरूप में भी था। सम्भवतः इस प्रकार की जानकारी के कारण ब्राह्मण-नाम शबर हो जाना आश्चर्य नहीं है।

ब्राह्मण-नामों के आधार ऋषियों, महर्षियों तथा गोत्रों के नाम हुआ करते थे। दानपत्र में उल्लिखित एक परिवार से सम्बन्धित ब्राह्मण-नाम गर्ग[4] ध्यातव्य है। शुक्लयजुर्वेदीय ब्राह्मणों को गर्ग गोत्र से सम्बन्धित माना गया, किन्तु उक्त ब्राह्मण वर्ग का सम्बन्ध शांडिल्य ब्राह्मण-परिवार से था। पाल ब्राह्मण-परिवारों में विजय सूचक नाम का प्रयोग होता था। जय से प्रारम्भ होने वाले नाम का उल्लेख दानपत्र में किया गया है। [5]विजयसूचक नाम के अतिरिक्त

---

१. ए० इ०, २, पृ० ३२८-२३

२. वही।

३. कामरूप शासनावलि, पृ० १२३

३. ए० इ०, २९, पृ० १५६ वही, ३२, पृ० २९

५ कामरूप शासनावलि, पृ० ५१

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

ब्राह्मणों के क्षत्रियपरक नाम होते थे। एक स्थान पर ब्राह्मण-नाम-महाबाहु[1] का उल्लेख है। महाबाहु नाम बलशालीनता, वीरता तथा शक्ति का द्योतक है। इससे उक्त ब्राह्मण-परिवार के विस्तृत दृष्टिकोण का पता चलता है।

उक्त सूची में उल्लिखित ब्राह्मण-नामों में कुछ नाम ऐसे हैं, जो संस्कृत भाषा के शब्द न होकर अपभ्रंश या अपभ्रष्ट संस्कृत या प्राकृत या देशी नामों की श्रेणी में रखे जाते हैं।

ब्राह्मण अपभ्रंश-नाम	शुद्ध संस्कृत-नाम
उम्मोक[1]	उन्मुक्त
इन्दोक[2]	इन्दू
गविष्ठिर[4]	युधिष्ठिर
देतोमा[5]	देवता
जेज्जर[6]	ज्येष्ठ

उक्त तथ्यों से ज्ञात होता है कि कामरूप के ब्राह्मण-परिवारों में नामकरण का आधार नक्षत्र तथा देवतापरक नाम थे। महाभारतकालीन नाम जातिसूचक नाम, विजय सूचक नाम तथा क्षत्रियपरक नाम होते थे। दानपत्रों से प्राप्त उक्त नाम शुद्ध संस्कृत भाषा का है।

अपभ्रष्ट या अपभ्रंश सस्कृत भाषा में ब्राह्मण के नाम हुआ करते थे। कुछ ब्राह्मण-परिवारों में शुद्ध संस्कृत (आर्य भाषा) का प्रभाव तथा प्रसार था। दानपत्रों में वर्णित ब्राह्मण-नामों के साथ गोत्र, वेद तथा शाखा आदि का उल्लेख किया गया है जिससे उनके सुशिक्षित तथा सभ्य परिवार की संस्कृति का पता चलता है, किन्तु पूर्णरूपेण यह कहना कि ब्राह्मण-परिवारों में सभी नाम शुद्ध संस्कृत भाषा में है, ऐसी बात नहीं। उपरिवर्णित कुछ ब्राह्मण अपभ्रंश या अपभ्रष्ट संस्कृत नामों से पता चलता है कि कुछ ब्राह्मण-परिवारों में शुद्ध संस्कृत भाषा का प्रभाव नहीं था। उस परिवार

---

१. ए० इ०, ३०, पृ० २०८
२. वही।
३. कामरूप शासनावलि, पृ० ६४
४. ए० इ०, ३२, पृ०, २०१
५. वही, २०, पृ० १५६
६. वही।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

में अशिक्षित होने के कारण अशुद्ध संस्कृत भाषा में ब्राह्मण-नाम प्रयुक्त किये जाने लगे। सम्भवतः पाल ब्राह्मण-परिवारों में अपभ्रंश या अपभ्रष्ट संस्कृत भाषा में नाम होने का कारण कृषि तथा अशिक्षा थी। पाल नरेशों ने ब्राह्मणों के नाम भूमिदान किया था। पालदानपत्रों से संकेत मिलता है कि ब्राह्मण-परिवारों में वैदिक अध्ययन तथा यज्ञादिक कृत्य किये जाते थे। जो परिवार इन कार्यों में लगा रहा, वहाँ तो शुद्ध संस्कृत भाषा का प्रचार रहा, जिसके कारण शुद्ध संस्कृत भाषा में ब्राह्मण-नामों को पुकारा जाता था तथा वे ब्राह्मण संस्कृत भाषा, वैदिक अध्ययन तथा अध्यापन से दूर हो गये. जो कृषि आदि की ओर झुक गये। कृषि में प्रायः अशिक्षित लोगों के साथ रहने के कारण देशी या अपभ्रंश या अपभ्रष्ट संस्कृत भाषा के प्रचलित शब्द किसी न किसी रूप में व्याप्त रहते हैं। सम्भवतः अशिक्षित वातावरण में होने के कारण ब्राह्मणों के कुछ नाम अपभ्रंश संस्कृत भाषा में मिले हैं।

उक्त तथ्यों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि कामरूप में लगभग नवम शताब्दी से लेकर एकादश शताब्दी पूर्वार्द्ध तक शासन करने वाले पाल राजाओं के दानपत्रों से ज्ञात हुआ है कि कामरूप के ब्राह्मणों के नक्षत्रयी, देवतापरक नाम, क्षत्रियपरक, विजय तथा जातिसूचक नाम होते थे। अधिकांश नामों का सम्बन्ध वैदिक और पौराणिक देवी देवताओं से था। ऐसा विदित होता है कि ब्राह्मणों के परिवारों में देवता की कुलदेवी या कुलदेवता के रूप में आराधना की जाती थी। इससे पाल ब्राह्मणों की धार्मिक प्रवृत्ति दृष्टिगोचर होती है। नामकरण के आधार पर उनके धार्मिक विश्वासों के अतिरिक्त उनकी प्रचलित संस्कृत भाषा तथा अपभ्रष्ट संस्कृत भाषा का भी पता चलता है।

उपरिर्वणित नामों में कुछ ऐसे भी नाम हैं, जो पूर्व भारत के अन्य देशों में बंगाल तथा उड़ीसा में नामान्त के रूप में प्रयोग किये जाते थे। पाल दानपत्रों में उल्लिखित ब्राह्मण-नाम वसु और सोम ध्यातव्य हैं। इस प्रकार के नाम का सन्दर्भ इन्द्रपाल के ताम्रशासन में मिलता है।[1]

बंग देश

लोकनाथकालीन ब्राह्मण-नाम का अध्ययन

(लोकनाथ के तिप्परा दानपत्र पर आधारित)

ब्राह्मणों के नाम का अध्ययन

पूर्वी बंग देश में समतट के निकट तिप्परा जनपद में लगभग ७वीं शताब्दी

---

१. कामरूप शासनवालि, पृ० १३७

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

में लोकनाथ का शासन था। वह लगभग ४० ब्राह्मण-परिवारों से सम्बन्धित था। १०० ब्राह्मणों के नाम दानपत्र जारी किया था। तिप्परा दानपत्र में वर्णित ब्राह्मण नामान्तों तथा भास्कर वर्मा के निधनपुर दानपत्र में उल्लिखित ब्राह्मणों के नामान्तों में काफी समता दृष्टिगोचर होती है। नामान्तों का उल्लेख आगे इससे सम्बन्धित अध्याय में विस्तृत रूप से किया गया है। भास्करवर्मा का समय सातवीं शताब्दी के मध्य तक माना जाता है। उन दिनों भास्करवर्मा का कामरूप, बंगाल तथा उड़ीसा में प्रभावशाली शासन था। कामरूप के ब्राह्मण-नामों (निधनपुर दानपत्र) तथा तिप्परा दानपत्र में उल्लिखित ब्राह्मण-नामों में कुछ थोड़े अन्तर के साथ समता प्रतीत होती है। तिप्परा दानपत्र से पूर्वीबंगाल के ब्राह्मण-नामों के सम्बन्ध में सूचनाएं मिलती हैं।

तिप्परा दानपत्र प्राप्त में निम्नांकित ब्राह्मण-नाम[1] ध्यातव्य हैं :—
अतिथि, अनन्त, अमर, अण्दसूरी, अप, अण्द, अर्घ, अदु, आनन्द, उदय, उग्र, उश, केशव, केन, कक, कृष्ण, कान्दुग्ध, खलिश, खन्य, क्षिर (खीर), गदा, गोवर्द्धन, गुण, गोविन्द, गौह, गुप्त, चन्द्र, चित्रा, जन जष, जनार्दन, तोण, दर्धिट, दुधु, दैत्य, दाम, दैव, धनन्कर, धननन्द, पूर्णदाम, प्रति, पितृ, प्रदोष, प्र न, प्रशन्त, प्रकाश, प्रिय, पिच, परशल, बुद्धदत्त, भानु, भण्ड, भव, भद्र, भिसट, भास्कर, ब्रह्म, मेघ, मनोज, मनोरथ, माद्र, महेश, महासक, मर्कट, महाराजा, मधु, यज्ञ, लड्डू, विदग्ध, बप्प, वेद, विदेश, तिर्पा, विष्णु, वामन, विजय, शुभ, शिव, शंकर स्कन्द, हरिप्प, सुजात, सुतोष, संतोष, सांतु, सदेश, शाक, स्वामी, सुधाम।

उपर्युक्त सूची से ज्ञात होता है कि पूर्वी बंगाल में ब्राह्मणों के नामों का चयन नक्षत्रों, देवताओं, भोजन करने वाली वस्तु तथा ऐतिहासिक पात्रों के नामों के आधार पर किया जाता था। कुछ शुभकारी और मंगलकारी नाम भी हैं। प्रादेशिक नामों से भी ब्राह्मण-नाम शुरू होते थे। शोक तथा त्रास से सम्बन्धित नामों का प्रयोग किया जाता था। सम्बन्धसूचक नामों का भी प्रचलन यत्र-तत्र ब्राह्मण-परिवारों में था।

तिप्परा दानपत्र में उल्लिखित नक्षत्रयी नाम[2] अधोलिखित हैं—पूर्वाषाढ़ के देवता के नाम पर ब्राह्मण नाम-अप, राशि और नक्षत्रपरकनाम-कर्क (कक), चन्द्र, चित्रा, दैत (दैत्य-राक्षस-मूल नक्षत्र), बृहस्पति, भानु, भास्कर। ज्ञात होता है कि

१-२. ए० इ०, १५, पृ० ३०७

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

पाल ब्राह्मण राशि-नामों से नामकरण रखते थे। तिप्परा दानपत्र में कक (कर्क) ब्राह्मण-नाम का उल्लेख किया गया है। चन्द्र, दैत्य (राक्षस), भानु, भास्कर तथा चित्रा नक्षत्रों और इनके देवताओं के नामों के समान हैं। लोकनाथ के समय पूर्वी बंगाल में पाल ब्राह्मणों का नक्षत्रों तथा देवताओं में विश्वास था, जिससे वे प्रेरित होकर उन्हीं के नामों को आधार बना कर बच्चों का नाम रखा करते थे। नक्षत्रयी नामों के अतिरिक्त देवतापरक नामों का प्रयोग पूर्वी बंगाल के ब्राह्मण किया करते थे। तिप्परा दानपत्र में उल्लिखित देवताओं के नामों से सम्बन्धित ब्राह्मण-नाम[1] ध्यातव्य हैं—अनन्त, उस (उषा), केशव, कृष्ण, गोवर्द्धन गोविन्द, जनार्दन, देव, धर्म, ब्रह्म, लिंग (शिव लिंग), विष्णु वामन, शिव, शंकर, स्कन्द, हरि। ज्ञात होता है कि पूर्वी बंगाल के ब्राह्मणों का विश्वास विष्णु तथा शिव में अधिक था और उनके नाम विष्णु और शिव से सम्बन्धित थे। ब्राह्मण वैदिक तथा पौराणिक देवी-देवताओं के सम्बन्ध में पूरी जानकारी रखते थे। श्रद्धाभिभूत होकर उनके नामों से सम्बन्धित बच्चों के नाम रखने की परम्परा थी। महासामन्त ब्राह्मण प्रदोश शर्मा ने सुत्वुग जंगल प्रदेश (अटवी भूखंड) में अनन्त नारायण मूर्ति की स्थापना की तथा ब्राह्मणों के रहने की व्यवस्था की। ज्ञात होता है कि ब्राह्मण विष्णु मन्दिर में पूजा किया करते थे। तिप्परा दानपत्र के प्रथम श्लोक में शंकर की आराधना की गयी है।[2] ऐसा सम्भाव्य है कि लोकनाथ का परिवार शिव को मानता था। दानग्रहीता ब्राह्मणों या पूर्वी बंगाल के ब्राह्मण-परिवारों में शिव का भी प्रभाव था। ऐतिहासिक पात्रों से सम्बन्धित निम्नांकित ब्राह्मण-नाम विचारणीय हैं—

अण्डसूरी (आदिसूर), धनन्कर (धन्वतरि?), धननन्द, सुजाता, सन्तु (शान्तनु), सुधाम (सुदामा)।

उक्त नाम अपभ्रष्ट या देशी भाषा के हैं।

प्रादेशिक नामों से भी सम्बन्धित ब्राह्मण-नाम होते थे। निम्नांकित देशपरक नाम भी ध्यातव्य हैं—सदेश (स्वदेश), गौड (गौड़ से सम्बन्धित), मार्द (मद्रदेश), लड़ (लाट देश)। वे शुभकारी, मंगलकारी तथा कल्याणकारी भावना से प्रेरित होकर ब्राह्मण-नामों का चयन करते थे। इस प्रकार के निम्नांकित नाम विचार्य हैं[3]—

आनन्द, गण, जय, प्रकाश, प्रिय, भद्र, मनोज, मनोरथ, मधु, विजय शुभ, हरिष (हर्ष)। ज्ञात होता है कि ब्राह्मण-परिवारों में आनन्द, यश तथा विजय आदि की दृष्टि से नामों को रखते थे।

१-३ ए० इ०, १५, पृ० ३०७

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America, HHFA(USA)

तिप्परा दानपत्र में उपलब्ध कुछ नामों को सम्बन्ध सूचक नामों[२] की श्रेणी में रखा जा सकता है, जो अधोलिखित हैं—पितृ, बप्प । सम्बन्धसूचक नामों के अतिरिक्त पूर्वी बंगाल के ब्राह्मण खाद्य पदार्थों के नामों के आधार पर नामों का चयन किया करते थे। इनसे सम्बन्धित निम्नांकित नाम[3] ध्यातव्य हैं—क्षीर (खीर), ददि (दधि), दधु (दुग्ध) ।

उपर्युक्त तथ्यों से विदित होता है कि पूर्वी बंगाल में सातवीं शताब्दी तक ब्राह्मण के परिवारों में शुद्ध संस्कृत और अपभ्रष्ट या अपभ्रंश भाषा से सम्बन्धित ब्राह्मण-नाम होते थे। तिप्परा दानपत्र में वर्णित नामों से ब्राह्मणों के धार्मिक विश्वास, शैक्षणिक स्तर तथा व्यवहार में प्रचलित भाषा आदि के सम्बन्ध में तथ्यों पर प्रकाश मिलता है ।

उक्त नामों को देखने से ज्ञात होता है कि पूर्वी बंगाल के ब्राह्मण-परिवारों में नक्षत्रों और वैदिक तथा पौराणिक देवी-देवताओं के प्रति उनकी अधिक श्रद्धा तथा निष्ठा थी। धार्मिक भावना मे प्रेरित होकर वे नामकरण करते थे। अधिकांश परिवारों में विष्णु और शिव की आराधना की जाती थी। उदाहरणार्थ—महासामन्त ब्राह्मण प्रदोशवर्मा ने आनन्द रामायण मन्दिर की स्थापना की थी तथा आराधना की थी।[1] वहां ब्राह्मणों के रहने की भी व्यवस्था कराई थी। तिप्परा दानपत्र के प्रथम श्लोक में शिव की आराधना का भी उल्लेख है।[2] संभवतः लोग शिव की आराधना ब्रह्मचर्यपूर्वक किया करते थे ।

अपभ्रंश संस्कृत भाषा से सम्बन्धित नाम अधोलिखित हैं—

अपभ्रष्ट संस्कृत नाम[3]	**शुद्ध संस्कृत नाम**
अण्डसूरी	आदिसूर
उश	उषा
कक	कर्क
खीर	क्षीर
ददि	दधि
दुधु	दुग्ध
धनन्कर	धन्वन्तरि (वैद्य?)
धननन्द	धनानन्द

१-३ ए० इ०, १५, पृ० ३०७

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

प्रान	प्राण
प्रशन्त	प्रशान्त
भण्ड	भाण्ड
हरिष	हर्ष
सान्तु	शान्तनु (शान्त ?)

उक्त अपभ्रष्ट संस्कृत भाषा से सम्बन्धित नामों के आधार पर ज्ञात होता है कि कुछ ब्राह्मण-परिवारों में अशिक्षित वातावरण था। स्पष्ट है कि सम्भवतः कुछ भूमिदानग्रहीता ब्राह्मण अशिक्षित लोगों के साथ कृषि आदि करते थे तथा उनके साथ रहने से वेदाध्ययन आदि को छोड़कर कृषि कर्म में लग जाने से अशिक्षित लोगों की भाषा का प्रयोग करने लगे, जिससे उनके नाम अपभ्रंश (या अपभ्रष्ट) भाषा में होने लगे, जो अशिक्षित लोगों की भाषा थी।

उक्त अपभ्रंश भाषा में उल्लिखित ब्राह्मण-नामों को देखकर यह नहीं कहा जा सकता कि अधिकांश ब्राह्मण अशिक्षित वातावरण में रहा करते थे, क्योंकि शुद्ध संस्कृत भाषा के ब्राह्मण-नामों का उल्लेख तिप्परा दानपत्र में अधिक किया गया है। ऐसा प्रतीत होता है कि पूर्वी बंगाल में लगभग ७ वीं शताब्दी तक ब्राह्मणों की बोलचाल तथा लिखने-पढ़ने की भाषा शुद्ध संस्कृत में ही प्रचलित थी। अधिकांश ब्राह्मण-नामों के पूर्व भट्ट उपाधि का प्रयोग किया जाता था। इससे उनकी विद्वता का प्रदर्शन होता है।

देवकालीन ब्राह्मण-नाम

पुण्ड्रवर्द्धन भुक्ति में स्थित समतट मंडल (तिप्परा, नोवाखाली और चित्तगांव) के ब्राह्मण-नामों (द्वादश शदी उत्तरार्द्ध तथा त्रयोदश शदी पूर्वार्द्ध) के सम्बन्ध में जानकारी देववंशीय शासक दामोदर देव के मैहर दानपत्र पर आधारित अधोलिखित सूची से मिलती[1] है—

नाम का प्रथम भाग— कापडीक, शान्कोक, सुडोक, कालेमिक, तारा, पान्डोक, देडक, केशव, ब्रह्मोक, शिरोक, पाण्डुक, शन्कोक, प्रजापति, नाथोक, जनोक, विश्वरूप, माधोक, श्री। उक्त सूची से अवगत होता है कि देवकालीन ब्राह्मण-परिवारों में विष्णु से सम्बन्धित नामों का प्रयोग किया जाता था।

---

१. ए० इ०, २७, पृ० १८८-१८९

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

यथा-केशव, प्रजापति, श्री तथा माधोक (माधव ?)। ब्राह्मण-परिवार में ब्रह्मा नाम प्रयुक्त होता था। इससे सम्बन्धित एक नाम ब्रह्मलोक (ब्रह्मा ?) का उल्लेख हुआ है। देव राजाओं के शासनकाल में ब्राह्मण-परिवारों में प्राकृत नाम प्रयुक्त होते थे—यथा—कापाडीक, शान्कोक, सुडोक कालेमिक, पान्डोक, देडक, ब्रह्मोक, शिरोक, पाण्डुक, शन्कोक, नाथोक, माधोक।

उक्त सभी प्राकृत नाम 'क' से समाप्त होनेवाले ब्राह्मण नाम हैं। इससे संकेत मिलता है कि ब्राह्मण-परिवारों में क से समाप्त होनेवाले नामों का प्रचलन था। संस्कृत भाषा में कम नाम मिले हैं। इससे परिलक्षित होता है कि स्वाध्याय संस्कृति तथा संस्कृतजन्य संस्कृति को छोड़कर ब्राह्मण प्राकृतजन्य संस्कृति (गंवारू लोगों की सभ्यता तथा संस्कृति) अपना रहे थे।

उक्त प्राकृत नामों में कुछ ऐसे भी नाम प्रतीत होते हैं, जो शुद्ध संस्कृत के अपभ्रष्ट रूप हैं। यथा –

अपभ्रष्ट संस्कृत	**विशुद्ध सस्कृत**
पान्डोक	पाण्डु
ब्रह्मोक	ब्रह्मा
शिरोक	शिर
पाण्डुक	पाण्डु
नाथोक	नाथ
माधोक	माधव

मैहर दानपत्र से विदित होता है कि 'क' से समाप्त होने वाले ब्राह्मण-नामों का प्रचलन कासरकोण, पूर्वग्राम तथा दिण्डिसा में था।[1] बंगदेश की कुल पंजिकाओं से ज्ञात होता है कि उक्त तीन, चार ग्राम राढ़ा के ५६ ग्रामों में से हैं।

पालकालीन ब्राह्मण-नाम

बंगदेश के पाल शासकों का काल लगभग नवम शताब्दी से लेकर एकादश शताब्दी के पूर्वार्ध तक माना जाता है। पाल राजाओं के दानपत्रों से तत्कालीन ब्राह्मण-नामों के सम्बन्ध में सूचनाएं मिलती हैं। यहाँ उनके नाम का प्रथम भाग दिया जा रहा है—

अज, अंगद, अनुकूल, आर्कदेव, केदार, कृष्ण, खोदुल, गर्ग, गुरव, धान्तुक, घन्टिश, जयन्त, तपोनिधि, तुंग, दिवाकर, पशुपति, प्रभाकर, प्रहास, मित्र,

---

१. ए० इ०, २७, पृ० १८८-८९

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

मनोरथ, मधुसूदन, त्याग, योगी, राम, विश्व, विवेक, वीर, विष्णु, शियम्वा, साहिल, सोम, दृषि। उक्त सूची से ज्ञात होता है कि पाल ब्राह्मणों के नाम नक्षत्रों, देवताओं, प्राचीन ऋषियों तथा रामायण में वर्णित पात्रों के नाम पर रखे जाते थे। यज्ञपरक नामों तथा तीर्थपरक नामों का भी उल्लेख दानपत्रों में किया गया है। ब्राह्मणों के निम्नांकित नाम नक्षत्रीय या नाक्षत्रिक नामों की श्रेणी में दृष्टिगत होते हैं—मित्र, सोम, दिवाकर, प्रभाकर, आर्क (सूर्य-अर्क)। ज्ञात होता है कि पाल ब्राह्मण-परिवार में नक्षत्रों तथा उनके देवी-देवताओं के नामों के आधार पर नामकरण किया जाता था। उक्त नामों से संकेत मिलता है कि नाम का प्रथम भाग मित्र और सोम आदि से शुरू होता था।

नाक्षत्रिक नामों के अतिरिक्त ब्राह्मणों के परिवारों में हिन्दू देवी-देवताओं के नामों का आधार भी नामों के चयन के लिये लिया जाता था। निम्नलिखित देवतापरक नाम ध्यातव्य है—राम,[१] कृष्ण,[२] पशुपति,[३] मधुसूदन,[४] विष्णु,[५] शियम्वा (शिवाम्ब)।

ज्ञात होता है कि पाल ब्राह्मण-परिवारों में विष्णु और शिव में अटूट श्रद्धा तथा विश्वास था, जिससे प्रेरित होकर वे इनके नाम पर बच्चे या पुरुष का नाम रखते थे। नामकरण में सदा धार्मिक भावना छिपी रहती है। पाल दानपत्रों में उट्टंकित कुछ ब्राह्मण-नाम ऋषियों और महात्माओं के नामों के समान हैं। इससे यह भी विदित होता है कि ये राजा प्राचीन ऋषियों तथा गुरुओं में आस्था रखकर उनके नाम पर अपने बच्चों के नामों का चयन किया करते थे। ऋषिपरक पाल ब्राह्मण-नाम इस प्रकार हैं—

गर्ग,[६] योगी[७] हृषि[८] (ऋषि), गुरु या[९] गुरव,

ऋषियों तथा महर्षियों के नामों के अतिरिक्त पाल ब्राह्मण रामायण-

---

१. ए० इ०, २, पृ० १८१-८३
२. वही, १४, पृ० ३२६
३. वही, १३, पृ० २९०
४. वही, १४, पृ० ३२६
५. वही, २९, पृ० ७-८
६. वही, २, पृ० १६१-६२
७. वही, २९, पृ० ५५-५६
८. वही, पृ० १२, वही, १४, पृ० ३२६.
९. वही, २, पृ० १६१-६३

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

कालीन नामों पर अपने बच्चों के नामों का चयन करते थे। निम्नांकित रामायण कालीन ब्राह्मण-नाम विचारणीय है—अज (राम के पितामह),[1] अंगद,[2] राम[3]।

रामायण में वर्णित नामों के अतिरिक्त पाल ब्राह्मणों के कुछ ऐसे भी नाम रखे जाते थे, जिनसे जय, विजय, वीरता तथा यश आदि का बोध होता है। जैसे—जय,[4] वीर,[5] सुचरित[6]। इससे ज्ञात होता है कि नामों का चयन करते समय ब्राह्मणों के अन्दर जय तथा वीरता की भावना व्याप्त थी। पाल ब्राह्मणों के तीर्थपरक नाम हुआ करते थे। तीर्थों के नामों से शुरू होनेवाले ब्राह्मण-नामों का उल्लेख दानपत्रों में किया गया है। इसके पीछे भी उन तीर्थों तथा वहाँ के देवताओं के प्रति उनका धार्मिक विश्वास दृष्टिगत होता है। जैसे—

केदार (केदारनाथ),[7] प्रहास (प्रभास-सोमेश्वरनाथ)[8]। इससे ज्ञात होता है कि पाल ब्राह्मणों के परिवारों में तीर्थ केदारनाथ तथा प्रभास काठियावाड़) में स्थित सोमेश्वर नाथ के मन्दिर को विशेष महत्त्वपूर्ण समझा जाता था। उपरिवर्णित तथ्यों के आधार पर ज्ञात होता है कि पाल ब्राह्मणों के नामों के चयन के आधार नक्षत्रों, देवताओं, ऋषियों और महर्षियों, रामायण के पात्रों तथा तीर्थों आदि के नाम होते थे।

ज्ञात होता है कि पाल ब्राह्मण-नाम शुद्ध संस्कृत और अपभ्रष्ट संस्कृत भाषा में हैं। अधिकांश नाम शुद्ध संस्कृत भाषा के हैं तथा थोड़े नाम अपभ्रष्ट संस्कृत से सम्बन्धित हैं—

अपभ्रष्ट संस्कृत नाम	शुद्ध संस्कृत नाम
गुरव[9]	गुरु

१. वही, १३, पृ २९०
२. वही।
३. वही, २, पृ० १६१-६३
४. ए० इ०, २९, पृ० १२
५. वही, १५, पृ० २७९
६. वही, १३, पृ० २९०
७. वही, २, पृ० १६१-६३
८. ए० इ०, १३, पृ० २९०
९. ए० इ०, २, पृ० १६१-६३

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

जयन्त[1]	जय
प्रहास[2]	प्रभास
विहेक[3]	विवेक
शियम्ब[4]	शिव तथा अम्बा
हृषि[5]	ऋषि

उपरिवर्णित तथ्यों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि पाल ब्राह्मणों में शुद्ध संस्कृत भाषा का प्रभाव तथा प्रसार था। कुछ परिवार ऐसे भी थे जहाँ ब्राह्मण अपभ्रंश संस्कृत भाषा का प्रयोग करते थे। उपर्युक्त नामों से सम्बन्धित तथ्यों से ज्ञात होता है कि लगभग नवम शताब्दी से लेकर एकादश शताब्दी के पूर्वार्ध तक बंगदेश के पाल ब्राह्मण नक्षत्रों, देवताओं, ऋषियों, रामायण के पात्रों आदि के नामों के आधार पर नामों का चयन शुद्ध संस्कृत तथा यत्र-तत्र अपभ्रंश संस्कृत भाषा में करते थे।

पालकालीन ब्राह्मण-नामों की सूची

ब्राह्मण-नाम	राजा का नाम	समय	अभिलेख प्राप्ति-स्थान	सन्दर्भ
कृष्णादित्य	महिपाल	९८८ ई०	बांगढ़	ए०इ०, १४ पृ० ३२६
मधुसूदन	”	”	”	”
हृषीकेश	”	”	”	”
वामन	”	”	”	”
खोदुलदेव	विग्रहपाल तृ०	१०५५ई०	आमगाच्छी	१५, पृ० २९७-९८
अर्कदेव	”	”	”	”
पद्मावन	”	”	”	”
जीवधर देव	महिपाल	—	वेलवा	” २९, पृ० ७
धीरेश्वर	”	—	”	”
विष्णुदेव	”	—	”	”

१. वही, २९, पृ० १८
२. वही, १३, पृ० २९०
३. वही, १८, पृ० ३०६
४. वही, १५, पृ० २९०
५. वही, १४, पृ० ३२६; वही, २९, पृ० १२

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America: HHFA(USA)

ब्राह्मण-नाम	राजा का नाम	समय	अभिलेख प्राप्ति-स्थान	सन्दर्भ
विहेकरात	देवपालदेव	१०४६ ई०	मुंगेर	१८, पृ० ३०६
वराहरात	,,	,,	,,	,,
विश्वरात	,,	,,	,,	,,
गुरवमिश्र	नारायणपाल	८५४ ई०	बादल	ए इ० २, पृ० १६१-६३
केदार	,,	,,	,,	,,
सोमेश्वर	,,	,,	,,	,,
दर्भपाणि	,,	,,	,,	,,
गर्ग	,,	,,	,,	,,
वीरदेव	,,	,,	,,	,,
अनुकुल	नयपालदेव	१०३८ ई०	इर्दा	२२, पृ० १५६
प्रभाकर	,,	,,	,,	,,
दिवाकर	,,	,,	,,	,,
धान्तुक	विग्रहपाल तृ०	१०५५ ई०	बनगांव	ए० इ०, २९, पृ० ५५
तुंग	,,	,,	,,	,,
योग	,,	,,	,,	,,
जयनन्ददेव	विग्रहपाल तृ०	१०५० ई०	,,	११
श्रीपतिदेव	,,	,,	,,	,,
हृषिकेश देव	,,	,,	,,	,,
मित्रकरदेव	,,	,,	,,	,,
पशुपति	जयपाल देव	–	–	१३, पृ० २९०
मनोरथ	,,	–	–	,,
तपोनिधि	,,	–	–	,,
कार्तिकेय	,,	–	–	,,
प्रहास	,,	–	–	,,

सेनकालीन ब्राह्मण-नाम

सेन राजाओं का पूर्वी और समुद्र तट के बंगाल में लगभग दशम शताब्दी उत्तरार्द्ध से लेकर त्रयोदश शताब्दी पूर्वार्द्ध तक शासन था। इनके दानपत्रों से पूर्वी बंगाल के ब्राह्मण-नामों (नामों का प्रथम भाग) की सूचियों में विभिन्न प्रकार के नाम संकलित हैं,– अनिरुद्ध, अनन्त, ईश्वर, उदय, ओवासु, कुबेर, कुमार, कृष्ण, गोविन्द, गोस्वामी, गर्भेश्वर, जगद्धर, जयदेव, देव, दामोदर, नारायण, परासर, पृथ्वी, पद्मनाभ, भास्कर, भद्र,

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

महदेव, मार्कण्ड, रहस, रत्न, रघु, राम, लक्ष्मी, व्यास, वत्स, वनमाली, वाराह, विप्र, विश्व, शंकर, श्रीनिवास, हलायुध । इससे ज्ञात होता होता है कि सेनकालीन ब्राह्मण-परिवारों में नाम-चयन करने में नक्षत्रों, देवताओं, पूर्वजों, ऋषियों तथा जातियों के नामों को आधार बनाया जाता था । सेनदान पत्र में एक जगह नक्षत्रयी नाम से ब्राह्मण-नाम भास्कर[1] का उल्लेख किया गया है । ज्ञात होता है कि नाक्षत्रिक नामों का प्रचलन कम था । निम्नांकित ब्राह्मण-नामों को देवतापरक नामों की श्रेणी में रखा जा सकता है—अनिरुद्ध, अनन्त, ईश्वर, कुमार, कृष्ण, गोविन्द, जगद्धर, देव, दामोदर, नारायण, नरसिंह, मार्कण्ड, राम, शंकर, श्रीनिवास । देवताओं के नामों से शुरू होनेवाले विभिन्न प्रकार के ब्राह्मण-नाम हुआ करते थे । अधिकांश नाम विष्णु तथा शिव के नामों से सम्बन्धित होते थे । ब्राह्मण-परिवारों में शिव तथा विष्णु को आराध्यदेव मानकर पूजा की जाती थी । उपरिवर्णित नामों को देखकर कहा जा सकता है कि देवी या देवता, कुल देवी तथा कुलदेव या पारिवारिक देव हुआ करते थे। इनके नामों को आधार बनाकर ब्राह्मण नामों का चयन किया जाता था। सेन ब्राह्मणों के नामों का चयन पूर्वजों के नामों को आधार बनाकर भी किया था । ऋषियों तथा पूर्वजों के नामों पर आधारित ब्राह्मण-नाम हैं-पराशर,[2] व्यास,[3] रघु,[4] वत्स,[5] । पूर्वजों के नामों से शुरू होनेवाले नामों से संकेत मिलता है कि उक्त परिवारों में गोत्र प्रवर्तक ऋषियों, आदर्श चरित्र नायकों तथा महापुरुषों के प्रति विशेष आस्था रहती थी । दानपत्र में वर्णित नामों में कुछ नाम जाति या किसी समुदाय विशेष से सम्बन्धित हैं । निम्नांकित जातिपरक नाम ध्यातव्य है—विप्र,[6] वनमाली[7] (माली जाति) । सेन ब्राह्मण परिवारों में यत्र तत्र ग्रह नामों के आधार पर नामकरण किया जाता । इस प्रकार से सम्बन्धित ब्राह्मण-नाम है—पृथ्वी[8] ।

१. इ० बं०, ३, पृ० ६३
१. इ० बं०, ३, पृ० १३७
२. वही, पृ० ९७
३. वही, पृ० ८७
४. वही, २९, पृ० ९
५. वही ।
६. वही, पृ० १३७
७. ए० इ०, २२, पृ० २१९

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

अमूल्य पदार्थ या आभूषणों के नामों से भी ब्राह्मण-नाम रखे जाते थे। ज्ञात होता है कि ब्राह्मण धन प्राप्ति की आकांक्षा से इस प्रकार के नामों का प्रयोग किया करते थे। उदाहरणार्थ—

कुबेर (धन का देवता)[1], रत्न[2], लक्ष्मी[3]।

उपरिवर्णित नामों के अतिरिक्त कुछ नाम ऐसे भी हैं, जो अपभ्रष्ट या अपभ्रंश संस्कृत भाषा में उल्लिखित हैं। अपभ्रष्ट संस्कृत भाषा के निम्नांकित नाम ध्यातव्य हैं—

अपभ्रंश संस्कृत ब्राह्मण-नाम	**शुद्ध संस्कृत नाम**
ओवास[4]	आवास या वसु
गवर्म[5]	गर्भ
मार्क्कण्ड[6]	मार्कण्डेय
रहस[7]	रहस्य

उक्त सभी नामों को विचार करने से ज्ञात होता है कि लगभग एकादश शताब्दी से लेकर त्रयोदश शताब्दी पूर्वार्ध के प्रथम भाग तक ब्राह्मण-परिवारों में प्रयुक्त भाषा शुद्ध संस्कृत थी। संभव है इसी कारण उनके अधिकांश नाम संस्कृत भाषा से लिये गये हैं। कुछ ब्राह्मण-परिवारों में अपभ्रष्ट संस्कृत भाषा का प्रभाव होने के कारण अशुद्ध देशी या प्राकृत नामों का प्रयोग भी हुआ है।

सेनकालीन ब्राह्मण-नामों की सूची

ब्राह्मण नाम	राजा का नाम	समय	अभिलेख प्राप्ति स्थान	सन्दर्भ
वंगोक	लक्ष्मणसेन	१३वीं शताब्दी पूर्वार्ध	–	ए०इ०, १७, पृ० ३५६
पितामह	”	”	–	”
शुरिशर्मा	”	”	–	”

१. ए० इ०, २१, पृ० २१९
२. इ० बं०, ३, पृ० ६३
३. वही, पृ० ७४, वही, पृ० १४७
४. वही, पृ० ७४
५. वही, पृ० १३७
६. वही, पृ० १०२
७. वही, पृ० ६३

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

गोविन्ददेव	,,	—	मधैनगर	इ० बं० ३, पृ० ११२
कुमारदेव	,,	—	,,	,,
रामदेव	,,	—	,,	,,
दामोदरदेव	,,	—	,,	,,
रघुदेव	,,	—	अनुलिया	,, पृ० ८७
देवदासदेव	,,	—	,,	,,
शंकरदेव	,,	—	,,	,,
विप्रदासदेव	,,	—	,,	,,
वत्स	विजयसेन	—	मलसूरल	ए० इ०, २३, पृ० १६०
वासुदेव	वल्लालसेन	—	नैहति	इ० बं०, ३, पृ० ७४-७५
लक्ष्मीधरदेव	,,	—	,,	,,
भद्रेश्वरदेव	,,	—	,,	,,
वराहदेव	,,	—	,,	,,
ईश्वरदेव	लक्ष्मणसेन	—	तरपंडिघी	इ० बं०, ३, पृ० १०२
मार्कण्डेयदेव	,,	—	,,	,,
हुताशनदेव	,,	—	,,	,,
लक्ष्मीधरदेव	,,	—	,,	,,
निव्वोकशर्मा	ईश्वरघोष	—	रामगंज	,, पृ० १५३
वासुदेव	,,	—	,,	,,
पद्मनाभ	लक्ष्मणसेन	—	इंडियाआफिस	ए० इ०, २६, पृ० ९
महादेव	,,	—	,,	,,
जयदेव	,,	—	,,	,,
बुद्धदेव	,,	—	,,	,,
उदयकरदेव	विजयसेन	—	बैरकपुर	ए इ० ३, पृ० ६३
भास्करदेव	,,	—	,,	,,
रहस्करदेव	,,	—	,,	,,
रत्नाकरदेव	,,	—	,,	,,
व्यासदेव	लक्ष्मणसेन	—	गोविन्दपुर	,, पृ० ९६
चहलदेव	,,	—	,,	,,
गोस्वामिदेव	,,	—	,,	,,

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

ब्राह्मण का नाम	राजा का नाम	समय	अभिलेख प्राप्ति का स्थान	सन्दर्भ
कृष्णदेव	लक्ष्मणसेन		सुन्दरबन	,, पृ० १७९
नरसिंहधरदेव	,,	—	,,	,,
जगद्धरदेव	,,	—	,,	,,
ईश्वरदेव	केशवसेन	,,	,,	,,
वनमालिदेव	,,	—	,,	,,
गर्भेश्वरदेव	,,	—	,,	,,
पराशरदेव	,,	—	,,	,,
हलायुद्ध	विश्वरूपसेन	—	कलकत्ता साहित्य परिषद्	,, पृ० ३
देवधर	,,	—	,,	,,
लक्ष्मीधर	,,	—	,,	,,
कुबेरदेव	लक्ष्मणसेन	—	शक्तिपुर	ए०इ०२१,पृ० २१८-१९
अनन्तदेव	,,	—	,,	,,
पृथ्वीवर	,,	—	,,	,,
अनिरुद्धदेव	,,	—	,,	,,
भवदेव	पालसामन्त हरिवर्मदेव	—	भुवनेश्वर	इ० बं०, ३, पृ० ३३
गोवर्द्धन	,,	—	,,	,,
आदिदेव	,,	—	,,	,,
बुद्ध	,,	—	,,	,,
स्फुरित	,,	—	,,	,,
रथांग	,,	—	,,	,,
अट्टहास	,,	—	,,	,,

—:o:—

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

तीसरा अध्याय

नामान्त

भारतीय जातियों के अध्ययन में नामान्त एक विशिष्ट स्थान रखता है। इससे जातीय तथा परिवारिक नाम, आमुष्यायण या भिन्न-भिन्न सामुदायिक जन-संबंधी विशेषताओं के संकेत मिलते हैं। नामान्तों का अध्ययन न केवल सामाजिक स्थिति अपितु सांस्कृतिक दृष्टि से भी विशेष महत्त्वपूर्ण माना जाता है।

नामान्त का प्रयोग उपपद, शर्मा या आमुष्यायण के अर्थ में होता है। प्राचीन साहित्य और अभिलेखों के पर्यालोचन से ज्ञात होता है कि ऐसे नामान्तों का प्रयोग भारतवर्ष में अत्यन्त प्राचीन काल से होता आया है। पाणिनि की अष्टाध्यायी से कुछ नामों और नामान्तों की सूचना मिलती है।[1] परन्तु नामान्तों का सर्वप्रथम उल्लेख पारस्कर गृह्यसूत्र में हुआ है।[2] इसके अनुसार ब्राह्मणों का नामान्त शर्मा, क्षत्रियों का वर्मा, वैश्यों का गुप्त तथा शूद्रों के लिए भृत्य और दास नामान्त का विधान है।[3] बौधायन गृह्यसूत्र में भी ऐसे उल्लेख मिलते हैं।[4] मनु और पतंजलि ने भी नामान्तों का उल्लेख किया है। मनु के अनुसार ब्राह्मण नाम के साथ 'शर्मा' उपपद होना चाहिए, जो प्रसन्नता या आशीर्वाद का द्योतक है। राजा के नाम के साथ रक्षण से संबंधित, वैश्य के साथ धन से संबन्धित तथा शूद्र के साथ सेवा से सम्बन्धित उपपद होना चाहिए।[5] महाभाष्य में क्षत्रिय नाम

---

१. संकालिया, हंसमुख धीरजलाल—स्टडीज इन दी हिस्टारिकल एण्ड कल्चरल ज्योग्राफी एण्ड एथनोग्राफी आफ गुजरात, पृ० १००
अग्रवाल, वासुदेवशरण : पाणिनिकालीन भारतवर्ष, पृ० १८०-९६

२. शर्मब्राह्मणस्य वर्मक्षत्रियस्य गुप्तेति वैश्यस्य—पारस्कर, १/१७

३. अथाप्युदाहरन्ति शर्मान्तं ब्राह्मणस्य, वर्मान्तं क्षत्रियस्य,
गुप्तान्तं वैश्यस्य, भृत्यदासान्तं शूद्रस्य दासान्तमेव वा।

४. बौधायन गृह्यशेष सूत्र, १/११/१० वही।

५. शर्मवद् ब्राह्मणस्याद्राज्ञो रक्षासमन्वितम्।
वैश्यस्य पुष्टिसंयुक्तं शूद्रस्य प्रेष्यसंयुतम्॥ — मनुस्मृति, २/३२

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America, HHFA(USA)

इन्द्रवर्मा तथा वैश्य नाम इन्द्रपालित का उल्लेख हुआ है ।[1] यमस्मृति में यह कहा गया है कि ब्राह्मणों के नामान्त शर्मा अथवा देव, क्षत्रियों के नामान्त वर्मा या त्रात और वैश्यों के भूति और दत्त तथा शूद्रों के नामान्त दास होने चाहिए ।[2] पुराणों और अन्य परवर्ती ग्रन्थों में भी यही निर्देश मिलता है । विष्णु-पुराण के अनुसार ब्राह्मणों के पुकारने वाले नाम के बाद शर्मा और क्षत्रियों के नाम के बाद वर्मा जोड़ना चाहिए ।[3] इसी प्रकार पुकारने के लिए वैश्य नाम में गुप्त और शूद्र के नाम में दास नामान्तों का प्रयोग प्रशस्त कहा गया है । इस विषय में यह ध्यातव्य है कि सम्भवतः नामान्त सम्बन्धी नियमों का दृढ़तापूर्वक कभी भी पालन नहीं किया जाता था । यद्यपि एक वर्ण के लिए निर्दिष्ट उपपद दूसरे वर्णों के नामों के साथ प्रयुक्त होते रहे; तथापि पूर्वमध्यकालीन ब्राह्मण नामान्तों के अध्ययन से अनेक महत्त्वपूर्ण तथ्य स्पष्ट होते हैं, जिनका विवेचन इस अध्याय में किया गया है ।

नामान्तों के अध्ययन के लिए प्रवराध्याय[4], नागरोत्पत्ति[5], ब्राह्मणोत्पत्ति-मार्तण्ड[6] तथा नागर पुष्पांजलि[7] नामक ग्रन्थ उल्लेखनीय हैं । यद्यपि इनमें केवल नागर ब्राह्मणों के नामान्तों का ही उल्लेख है, तथापि इन नामान्तों का अन्य ब्राह्मण भी प्रयोग करते थे । यह ग्रन्थ न केवल नागर ब्राह्मणों के अध्ययन में अपितु अन्य ब्राह्मणों के नामान्तों के प्रसंग में भी उपयोगी है । इन ग्रन्थों में नागर ब्राह्मणों के निम्नलिखित नामान्त बताये गये हैं—

(1) प्रवराध्याय में दत्त, गुप्त, नन्द, घोष, शर्मा, दास, वर्मा, नागदत्त

---

१. महाभाष्य, भाग ३, पृ० ४१६, पाणिनि, ८/२/८३

२. यमः । शर्मा देवश्च विप्रस्य वर्मा त्राता च भूभुजः भूतिर्दत्तश्च वैश्यस्य दासः शूद्रस्य कारयेत—अपरार्क, पृ० ७२

३. शर्मेति ब्राह्मणस्योक्तं वर्मेति क्षत्रसंश्रयम् ।
गुप्तदासाह्वयं नाम प्रशस्तं वैश्यशूद्रयोः ॥ — विष्णुपुराण, ३/१०/९

४. दत्त-गुप्तौ नन्द-घोषौ शर्मा-दासौ च वर्मा च ।
नागदत्तास त्रात भूतौ मित्र देवौ भवस तथा ॥—प्रवराध्याय वि० सं० १७८८, वैशाख सुदी ८, भंडारकर, देव रामकृष्ण, फारेन एलीमेन्ट्स इन दि हिन्दू पापुलेसन, पृ० ५७

५. पंचोली, गंगाशंकर—नागरोत्पत्ति (गुजराती), पृ० १२५

६. शर्मा, हरिकृष्ण—ब्राह्मणोत्पत्ति मार्तण्ड, पृ० २६२

७. नागर पुष्पाञ्जलि, १९०७-१९२२ ई०

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

त्रात, भूत, मित्र, देव तथा भव उपपद निर्दिष्ट हैं ।[1] इस ग्रन्थ में मित्र उपपद का प्रयोग केवल शार्करक्ष तथा गांगायन गोत्र के नागर ब्राह्मणों के लिए करने का विधान है । [2] (II) नागरोत्पत्ति में चौदह उपपदों का उल्लेख है—भुति, भव; नागदत्त, मित्र, देव, वर्मा, गुप्त, नन्द, घोष, शर्मा, दास, दाम, त्रात तथा दत्त ।[3] (III) इस विषय में ब्राह्मणोत्पत्तिमार्तण्ड की सूचना अति विस्तृत है । ग्रन्थ में 'शर्मन्' के अतिरिक्त गोत्र, प्रवर, वेद, शाखा, देवी, गण, देवता तथा भागज का उल्लेख भी किया गया है ।[4] निम्नलिखित तालिका द्रष्टव्य है—

संख्या	अवटंक	गोत्र	प्रवर	वेद	शाखा	देवी	गण	देवता	भागत	शर्मा
१.	दवे पंचक	प्रौक्षण	वशिष्ठ शक्ति पाराशर	य०	मा०	भागरी	खोखली	हाट-केश्वर	झाला-पाटण	शर्म
२.	दवे		कापिष्ठला			,,	,,	,,	७	गो०२२
३.	मेतात-लखा	अलु-भाण	वशिष्ठ कौण्डिन्य मैत्रावरुण	य०	मा०	,,	,,	,, ,,	झाला-पाटण	दत्त
४	पंडया-भूधर	भार-द्वाज	भार-द्वाज आंगिरस बार्हस्पत्य	ऋ०	आ०	,,	,,	,,		त्रात
५.		शार्ङ्ग-राक्ष	भृगु च्यव-तन आप्नवा-नौदम्बर जन्मदग्नि	ऋ०	आ०	,,	,,	,,		मित्र
६.	बास-मोढ़ासाके	गौतम	गौतम आंगिरस औतक्ष्य	य०	मा०	,,	,,	,,	१०	दत्त
७	जानि	गार्ग्य	आंगिरस भारद्वाज बार्हस्पत्य			,,	,,	,,	५	शर्म
८.	त्रवाडि	कौण्डिन्य	वसिष्ठ कौण्डिन्य	सा०	कौ०	,,	,,	,,		दत्त

१-२. फारेन एलीमेन्ट्स इन दि हिन्दू पापुलेशन पृ० ७५

३. द्र०, पूर्व पृष्ठ की टिप्पणी ६

४. शास्त्री, हरिकृष्ण—ब्राह्मणोत्पत्ति मार्तण्ड, पृ० २६२

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

(IV) नागर पुष्पांजलि में नागर ब्राह्मणों के उपपदों के साथ वेद, शाखा, गोत्र तथा प्रवर का विवरण भी दिया गया है ।[1]

संख्या	शर्मा	गोत्र	प्रवर	वेद
१.	दत्त	अलम्बायन	वसिष्ठ, मैत्रावरुण, कौण्डिन्य	यजु०
२.	,,	अलुभयन	,, ,, ,,	,,
३.	,,	कौण्डिन्य	,, ,, ,,	,,
४.	,,	परासर	,, शक्ति पराशर	अथर्व०
५.	,,	जातुकर्ण	,, ,, ,,	यजु०
६.	,,	उपमन्यु	आंगिरस, औतथ्य, गौतम	साम०
७.	,,	अग्निवेश्य	आंगिरस, बार्हस्पत्य, भरद्वाज	,,
८.	,,	मौनेय	,, ,, ,,	,,
९.	,,	संग्यवस	सैन्य, गार्ग्य	यजु०
१०.	,,	मातृकायन	आंगिरस, पौरुकुत्स, त्रसदस्य	,,
११.	,,	गंगानस	अंगिरस, सांकृत्य, गौरवित	ऋक्०
१२.	,,	सांकृत्य	,, ,, ,,	,,
१३.	,,	ऐतिकायन	भृगु, च्यवन, आप्नुवान, और्व, जमदग्नि कश्यप, अवत्सर, नैध्रुव	साम०
१४.	,,	कात्यायन	भृगु, च्यवन, आप्नुवान, और्व जमदग्नि	यजु०
१५.	,,	कौशल	,, ,, ,, ,, ,,	,,
१६.	,,	पाणिनि	,, ,, ,, ,, ,,	ऋक्०
१७.	,,	वत्स	,, ,, ,, ,, ,,	,,
१८.	,,	वत्स्य	,, ,, ,, ,, ,,	,,
१९.	,,	अत्रि	अत्रि, अर्चनन, श्यवाश्व	यजु०
२०.	,,	आत्रेय	,, ,, ,,	,,

१. वसु, नागेन्द्रनाथ—दि सोशल हिस्टरी आफ कामरूप, भाग-३, पृ० ११८-२१

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

२१.	दत्त	उदल	कश्यप, आवत्सर, नैध्रुव	ऋक्०
२२.	,,	औदल	,, ,, ,,	,,
२३.	,,	कश्यप	,, ,, ,,	,,
२४.	,,	कौशिकेय	,, ,, ,,	यजु०
२५.	,,	संगकायन	अंगिरस, बार्हस्पत्य, भरद्वाज, गार्ग्य	ऋक्०
२६.	,,	उपमन्यु	वसिष्ठ, इन्द्रप्रमद, सत्यगार्ग्य,मरद्वसु	साम०
२७.	,,	सांख्यायन	,, ,, ,, ,,	,,
२८.	,,	नागदत्त	कपिष्ठल, वसिष्ठ,कपिष्ठल	ऋक्०
२९.	नन्द	गौतम	अंगिरस,औतथ्य,गौतम	यजु०
३०.	,,	गोपाल	वसिष्ठ,शक्ति पराशर	ऋक्०
३१.	दास	वाज्जप	अत्रि,गविस्थिर,पूर्वतिथि	ऋक्०
३२.	,,	दर्भ्य	अंगिरस,अम्बरीष,यौवनाश्व	अथर्व०
३३.	,,	पिप्पलाद	शांडिल्य,असित,देवल	अथर्व०
३४.	,,	लक्ष्मण	कश्यप,अवत्सर,नैध्रुव	यजु०
३५.	,,	बतसपाल	,, ,, ,,	यजु०
३६.	,,	गोपाल	वसिष्ठ,शक्ति,पराशर	ऋक्०
३७.	,,	पिप्पलायन	कश्यप,असित,देवल	अथर्व०
३८.	शर्मा	औक्षनस	वसिष्ठ,शक्ति,पराशर	यजु०
३९.	,,	शांडिल्य	शांडिल्य,असित,देवल	अथर्व०
४०.	मित्र	शर्कराक्ष	भृगु,च्यवन,आप्नुवान,और्व,जमदग्नि	ऋक्०
४१.	,,	गंगायन	शांडिल्य,असित,देवल,अग्नेयस,वसिष्ठ	यजु०
४२.	,,	लौकक्ष	कश्यप,अवत्सर,नैध्रुव	यजु०
४३.	त्रात	भारद्वाज	अंगिरस,बार्हस्पत्य,भारद्वाज	ऋक्०तथा साम०
४४.	,,	आत्रेय	आत्रेय,अत्रि,आर्च्य	साम०
४५.	भव	गार्ग्य	अंगिरस, बार्हस्पत्य,भारद्वाज	यजु०
४६.	,,	संकायन	गार्ग्य	ऋक्०
४७.	,,	गालव	विश्वाहित्र,देवरात,ओदल	,,
४८.	गुप्त	गौरिश्रवस	वसिष्ठ	अथर्व०
४९.	,,	छान्दोग्य	अत्रि,अर्चनन,श्यवश्य	यजु०
५०.	,,	कौण्डिन्य	कौण्डिन्य,मैत्रावरुण,असित	साम०
५१.	भूति	भारद्वाज	अगिरस,बार्हस्पत्य,भारद्वाज	ऋक्०
५२.	,,	बराह	अगिरस,बार्हस्पत्य,भारद्वाज	साम०

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

संख्या	शर्मा	गोत्र	प्रवर	वेद
५३.	देव	सांख्यायन	अत्रि,गविष्ठिर,पूर्वतिथि	साम०
५४.	,,	वृहदत्रेय	अत्रि,अर्चनन,श्यवश्य	ऋक्०
५५	,,	कौशिक	विश्वामित्र,देवरात,ओदल	ऋक्०
५६.	,,	पाणिनि	विश्वामित्र,अघमर्षण,मधुछंदस	अथर्व०
५७.	घोष	दर्भायन	कश्यप,आवत्सर,नैध्रुव	ऋक्०
५८.	,,	दर्भस	कश्यप,असित,देवल	अथर्व०
५९.	,,	सांख्यायन		

अभिलेखों के अध्ययन से ज्ञात होता है कि इन ग्रन्थों में उल्लिखित उपपदों का प्रयोग नागर ब्राह्मण ही नहीं अपितु अन्य ब्राह्मण भी करते थे। वास्तव में गुर्जर देश ही नहीं समस्त उत्तर भारत के ब्राह्मणों द्वारा इनमें से अधिकांश उपपदो का प्रयोग किया जाता था।

गुर्जर देश

त्रैकूटककालीन नामान्त

त्रैकूटक नरेशों (पांचवीं शताब्दी उत्तरार्द्ध) के दानपत्रों में गुर्जर देश के निम्नलिखित ब्राह्मण नामान्त मिलते हैं—(१) स्वामी (२) शर्मा।

स्वामी—धरसेन के पर्दी दानपत्र (क० व० २०७=४७५ ई०) से ज्ञात होता है कि स्वामी[1] नामान्तधारी ब्राह्मणों का केन्द्र कापुर था। यह ग्राम सूरत जिलान्तर्गत व्यारा नगर के दक्षिण-पश्चिम तीन मील की दूरी पर स्थित है।[2]

शर्मा— व्याघ्रसेन के सूरत दानपत्र (क० व० २४१=४९० ई०) से विदित होता है कि भरद्वाज गोत्र के ब्राह्मण शर्मा नामान्त का प्रयोग करते थे।[3]

संगम सिंह कालीन नामान्त

महासामन्त संगम सिंह के सुनाओ कलादानपत्र (क० व० २९२=५४१ ई०) में भरुकच्छ के ब्राह्मणों के दत्त, देव तथा शर्मा नामान्त मिलते हैं।

दत्त— सुनाओ कला दानपत्र में भरुकच्छ के दत्त नामान्त के ब्राह्मणों का

१. 'कायुरवास्तव्यब्राह्मणनण्णस्वामिन'–मिराशी, कार्पस, ४/१, पृ० २४

२. मिराशी, कार्पस ४/१, पृ० २४

३. वही। (भरद्वाज) सगोत्रब्राह्मणनागशर्मणे-पृ० २७.

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

छंदगि गोत्र तथा छंदोगचरण बताया गया है।[1]

देव— लौकाक्षी तथा लोहायन गोत्र के ब्राह्मण भरुकच्छ में देव उपपदधारी थे।[2] इनका सम्बन्ध अध्वर्यु चरण से था।[3]

शर्मा— शर्मा उपपद का प्रयोग भरुकच्छ निवासी गालव गोत्र के भरुकच्छ के ब्राह्मण-परिवार में किया जाता था, जिसका सम्बन्ध छंगोग चरण से था।[4]

कलचुरिकालीन ब्राह्मण-नामान्त

आरम्भिक कलचुरि दानपत्रों [५५०–६२५ ई०] में गुर्जर देश के स्वामी तथा सेन ब्राह्मण नामान्त मिलते हैं।

स्वामी– शंकरगण के एमोन दानपत्र [क० व० ३४७=५९७ ई०] से विदित होता है कि गौतम गोत्र के ब्राह्मण परिवार में स्वामी उपपद का प्रचलन था।[5] गौतम परिवार का सम्बन्ध तैत्तिरीयशाखा से था।[5] इससे सम्बन्धित ब्राह्मण कल्लिवन[6] में रहते थे। कल्लिवन का तादात्म्य वर्तमान कल्वन से स्थापित किया जाता है जो नासिक जिला के कल्वनतालुका में स्थित है।[7] कौत्स गोत्र के ब्राह्मण-परिवार में भी स्वामी नामान्त का प्रयोग होता था।[8] इस परिवार के ब्राह्मण वाजसनेय शाखा से सम्बन्धित थे।[9] इनका निवास पाषाणिह्रद में था।[10] यह स्थान बड़ोदा जनपदान्तर्गत संखेड़ा से चौदह मील उत्तर है।[11] बुद्धराज के बडनेर दानपत्र [क० व० ३६०=६१० ई०] से ज्ञात होता है कि यह उपपद काश्यप गोत्र ब्राह्मण-परिवार में भी प्रयोग किया जाता था[12]

१, भारुकच्छकछंदोगिसगोत्रछंदोगसब्रह्मचारिब्राह्मणान्तदत्त'–वही. ४/१. पृ०३५
मानवप्रवराध्याय में छंदोगि गोत्र का उल्लेख हुआ है।
–ब्रफ, ब्रा०सि०गो०प्र०, पृ०१४२ से उद्धृत।

२-४. लौकाक्षिसगोत्राध्वर्यु सब्रह्मचारि शिवदेव तथा लोहायनसगोत्राध्वर्यु सब्रह्मचारिभाणुदेव। कार्पस, ४/१, पृ० ३५

५-७. कल्लिवनवास्तव्यगौतमसगोत्रतैत्यिरीयसब्रह्मचरिब्राह्मणस्वामिण।
–कार्पस, भाग-४, खंड-१, पृ० ४१.

८. वही, पृ० ४०

९-११. पाषाणिह्रदवास्तव्यकौत्ससगोत्रवाजिसनेयसब्रह्मचारिणे भट्टिकनन्तस्वामिने
–सखंडदानपत्र, वही, पृ० ४६.

१२ वही, पृ० ४५.

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

जिसका सम्बन्ध वाजसनेय माध्यन्दिन शाखा से था।[1] इस परिवार के ब्राह्मणों का निवास स्थान वटनगर था।[2] राष्ट्रकूट नरेश गोविन्द तृतीय के वानी डिंडोरी दानपत्र[3] के अनुसार वटनगरविषय नाशिक में स्थित है। पाराशर गोत्रीय ब्राह्मण परिवार में प्रचलित नामान्त स्वामी पाराशर गोत्रीय ब्राह्मण परिवार में प्रचलित नामान्त स्वामी का उल्लेख बुद्धराज के ससंवनी दानपत्र (क० व० ३६१ = ६१० ई०) में हुआ है।[4] इस परिवार के ब्राह्मण को वाजसनेय कण्व शाखा से सम्बन्धित बताया गया है।[5]

सेन—आरम्भिक कलचुरिकालीन तरलस्वामी के मन्कनी दानपत्र (क० व० ३४६=५९४ ई०) से ज्ञात होता है कि जातुकर्ण गोत्र के ब्राह्मण–परिवार में सेन उपपद का प्रयोग किया जाता था,[6] जिसका सम्बन्ध वाजसनेय शाखा से था।[7]

गुर्जरकालीन नामान्त

गुर्जर नरेशों के दानपत्रों (क. व० ६०० = ७५ ई०) में अनुलिखित गुजरात के ब्राह्मणों के आदित्य, धर, नाग, शर्मा, शूर तथा स्वामी नामान्त मिलते हैं।[8]

आदित्य—दद्दतृतीय के कैरा दानपत्र (क० व० ३८० = ६२८ ई० से विदित होता है कि ऋग्वेदीय आश्वलायन चरण से सम्बन्धित वत्स गोत्र के ब्राह्मण–परिवार में आदित्य उपपद का प्रयोग किया जाता था।[9] इस परिवार के ब्राह्मण शिरीषपद्रक (अक्रूरेश्वर विषय) में रहा करते थे।[10] इनके मूल स्थान जम्बूसर का उल्लेख भी उक्त दानपत्र में हुआ है।[11] चौलिगोत्र के ब्राह्मण भी इस नामान्त का प्रयोग करते थे, जिनका सम्बन्ध

१-३ वटनगर वास्तव्यकाश्यपसगोत्रवाजसनेय माध्यन्दिन (स)ब्रह्मचारिब्राह्मण बोधस्वामिने—वही, पृ. ५०.

४. कार्पस, ४/१, पृ० ४८.

५-६. डेभकवास्तव्यपाराशरसगोत्रवाजसनेयकण्वसब्रह्मचारिब्राह्मणभट्टपुत्रबप्प स्वामिने—वही, पृ० ५५.

७. जेष्ठसेनब्राह्मणजातूकर्णसगोत्रवाजि(ज) सनेयस ब्रह्मचारिणे—वही, पृ० १६३

८. प्रसंगवश यह उल्लेखनीय है कि गुर्जर दानपत्रों में ब्राह्मणों के कुछ ऐसे नाम भी मिलते हैं, जिनका गुर्जर देश अथवा अन्यत्र नामान्त के रूप में सामान्यतः प्रयोग होता था। यथा—दत्त, ईश्वर, भट्ट, धर, नन्ति, घोष वही।

९-११. कार्पस, ४/१, पृ० ६२.

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

पिप्पलाद चरण से था।[1]इस परिवार के ब्राह्मण भरुकच्छ से वहिर्गत हुए थे।[2] कैरा दानपत्र में इनके वास्तव्य भेरज्जिका का उल्लेख किया गया।[3] दद्दतृतीय के प्रिन्स आफ वेल्स संग्रहालय दानपत्र (क०व०४२७=६७७ई०) से ज्ञात होता है कि ऋग्वेदीय भरद्वाज गोत्र के चतुर्वेदी ब्राह्मण-परिवार में भी इस उपपद को धारण किया जाता था।[4]इस परिवार के ब्राह्मणों का मूल स्थान श्रावस्ती था।[5]

धर— दद्दद्वितीय के कैरा दानपत्र (क०व ३८५ = ६३३ई०) से विदित होता है कि लक्ष्मण गोत्र के ब्राह्मण-परिवार में धर नामान्त प्रचलित था।[6] इस परिवार के ब्राह्मणों का स्थान जंबूसर था।[7] एक दूसरे कैरा दानपत्र (क० व० ४२७=६२८ई०) से ज्ञात होता है कि इस उपपद का प्रयोग हारित गोत्र के ब्राह्मण-परिवार में भी किया जाता था।[8] इस गोत्र के ब्राह्मणों का आद्यस्थान जंबूसर था जहाँ से वहिर्गत होने के पश्चात् वे शिरीषपद्रक में रहा करते थे।[9] इसी दानपत्र से यह भी विदित होता है कि सामवेदीय कौथुम चरण से सम्बन्धित भारद्वाज गोत्र के ब्राह्मण-परिवार में धर नामान्त का प्रयोग किया जाता था।[10]

नाग— जयभट्ट चतुर्थ के प्रिन्स आफ वेल्स सग्रहालय दानपत्र (क०व०४८६ =७३४ई०) से सूचना मिलती है कि नाग उपपद का प्रयोग कौण्डिन्य गोत्र के ब्राह्मण-परिवार में किया जाता था।[11] इस परिवार के बाह्मणों का सम्बन्ध शुक्लयजुर्वेद की माध्यन्दिन शाखा से था।[12]इनका बहिर्गमन लोहिकक्षपकथाहार से हुआ था।[13]।

शर्मा— कैरा दानपत्र से ज्ञात होता है कि दद्दद्वितीय के समय (छठी शताब्दी पूर्वार्द्ध) बत्स, दौण्डकीय, कौण्डिन्य, भरद्वाज तथा चौलि गोत्र के ब्राह्मण-परिवार में शर्मा उपपद को नाम के साथ जोड़ा जाता था। आश्वलायन चरण का अध्येता एक शर्मा उपपदधारी ब्राह्मण वत्स गोत्र से सम्बन्धित था।[14] इसका परिवार जंबूसर से बहिर्गत होने के पश्चात् शिरीषपद्रक (अक्रूरेश्वर विषय)

---

१. कार्पस ४/१, पृ० ४८

२-३. वही।

४-५. वही, ४/२, पृ०६२१.

६-१०. वही, ४/१, पृ० ७०.

११-१२. लोहिकक्षपकथाहारविनिर्गततत्त्रैविद्यसाम (मा) न्यकौण्डिन्यसगोत्रवाजि (मा) ध्यन्दिनस (ब्र) ह्मचारिहेटावुक (ब्रा) ह्मणादित्यनाग— कार्पस, ४/१, पृ० १०६

१३-१४. वही, पृ० ६२

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

में रहता था।[1] यहाँ शुक्ल-यजुर्वेद तथा कण्व चरण से सम्बन्धित दौण्डकीय गोत्र के ब्राह्मण-परिवार में इस उपपद को परम्परागत रूप से धारण किया जाता था।[2] कौण्डिन्यगोत्र के ब्राह्मण परिवार में भी नाम के साथ शर्मा नामान्त जोड़ने की परम्परा थी[3] सामवेद के कौथुम चरण का अध्येता शर्मा उपपदधारी ब्राह्मण भरद्वाज परिवार से सम्बन्धित था।[4] इस परिवार के भी ब्राह्मण शिरीष-पद्रक के निवासी थे,[5] जो जंबूसर से निर्गत हुए थे।[6] भेरज्जिक के चौलिगोत्रीय ब्राह्मण-परिवार में इस उपपद का प्रयोग किया जाता था।[7] इस परिवार के ब्राह्मणों का मूल स्थान भरुकच्छ था।[8]

शूर—शिरीषपद्रक में सामवेद तथा कौथुम चरण से सम्बन्धित भरद्वाज गोत्र के ब्राह्मण शूर उपपद का परम्परागत रूप से प्रयोग करते थे।[9] इनका आद्य-स्थान जंबूसर था।[10]

स्वामी—कैरा दानपत्र से प्रमाणित होता है कि स्वामी उपपद का प्रचलन दौण्डकीय गोत्र के ब्राह्मण-परिवार में था, जिसका सम्बन्ध कण्व चरण से था।[11] इस परिवार के ब्राह्मण जंबूसर से निर्गत होकर शिरीषपद्रक में रहने लगे थे।[12] जयभट्ट तृयीय के नवसारी दानपत्र (क०व० ४५६=७०४ई०) से ज्ञात होता है कि माध्यन्दिन शाखानुयायी प्रगायन गोत्र के ब्राह्मण-परिवार में स्वामी[13] उपपद को धारण किया जाता था। इस[14] परिवार के चतुर्वेदी ब्राह्मण श्रद्धिकाग्रहार[15] में रहते थे। उनका मूलस्थान गिरिनगर था।[16] ब्रह्मपुरी के चतुर्वेदी समुदाय से संबंधित शाण्डिल्य गोत्र के ब्राह्मणों में भी स्वामी[17] उपपद का प्रयोग किया जाता था। इस परिवार का सम्बन्ध कौथुम शाखा से था।[18]

सेन्द्रककालीन नामान्त

स्वामी—सेन्द्रक नरेश अल्लशक्ति के बगुमुरा दानपत्र (क व० ४०६=६५६ ई०) से विदित होता है कि शुक्ल-यजुर्वेदीय भारद्वाज गोत्र के ब्राह्मण-परिवार में स्वामी उपपद का प्रयोग किया जाता था। इसमें स्वामी नामान्तधारी

१-३. कार्पस, ४/१,

४-८. वही।

९-१२. वही।

१३-१७. वही, पृ० ८६

१८. ब्रह्मपुरीनिवास्येतच्चातुर्व्विद्यसामान्यसा[ण्डि]ल्यसगोत्रछंदोग। कौथुमस—ब्रह्मचारिब्राह्मणचष्टस्वामी —अजनेरी दानपत्र, वही, पृ० ९३

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

ब्राह्मण को माध्यन्दिन शाखा का अध्येता बताया गया है। इससे सम्बन्धित परिवार के ब्राह्मण विजय-अनिरुद्धपुरी में रहा करते थे।[१]

राष्ट्रकूटकालीन नामान्त

राष्ट्रकूट नरेशों के दानपत्रों (नवम शताब्दी पूर्वार्द्ध) में गुर्जर देश के आदित्य, कुमार तथा शर्मा ब्राह्मण नामान्त मिलते हैं।

आदित्य—तोर्खेद दानपत्र (शक सं० ७३५ = ८१३ई०) से विदित होता है कि गोविन्द राज के समय गुजरात के गौतम[2], आनेयस[3], लावायन[4] तथा कौश[5] गोत्रों के ब्राह्मण-परिवारों में आदित्य उपपद का प्रयोग किया जाता था।

कुमार—कर्क सुवर्णवर्ष के ब्राह्मणपल्लि दानपत्र (शक सं० ७४६ = ८२४ई०) से ज्ञात होता है[6] कि वाजसनेय शाखानुयायी कौण्डिन्य गोत्र के ब्राह्मण-परिवार में कुमार उपपद धारण किया जाता था। इस परिवार के लोग कड्डिभर में रहते थे।[7]

शर्मा—तोर्खेद दानपत्र से ज्ञात होता है कि शर्मा उपपद का प्रचलन गुर्जर देश के मुद्गल[8], वार्षेणेय[9] तथा अग्नेयस[१०] गोत्र के ब्राह्मण-परिवारों में था।

उक्त दानपत्र में कुछ ब्राह्मणों के ऐसे भी नामों का उल्लेख हुआ है जो अन्यत्र नामान्त के रूप में प्रयुक्त हुए हैं। यथा—सोम, शर्मा, आदित्य, ईश्वर, दत्त तथा नाग।[११]

चालुक्यकालीन नामान्त

आरम्भिक चालुक्य दानपत्रों में गुर्जर देश के अनुलिखित ब्राह्मण नामान्त इल्ल, ईश्वर, शर्मा तथा स्वामी आदि मिलते हैं।

इल्ल—पुलकेशिराज के नवसारी दानपत्र (क०व० ४९० = ७३४ ई०) से ज्ञात होता है कि तैत्तिरीय शाखा से सम्बन्धित वत्स गोत्र के ब्राह्मण-परिवार में दो पीढ़ियों तक इन उपपदों का प्रचलन था।[१२] इससे सम्बंधित ब्राह्मण बनवासी[१३] से बहिर्गत हुए थे, जो कन्नड़ प्रदेश के उत्तरी भाग में स्थित है।[१४]

---

१. विजयानिरुद्धपुरीवास्तव्यभारद्वाजसगोत्रवाजि(ज)सनेय (मा)ध्यन्दिनसब्रह्मचारिणे बप्पस्वामिने — कार्पस, ४/१, पृ० १२०

२-५. ए० इ०, ३, पृ० ५६

६. ए० इ०, २२, पृ० ८४

७-११. ए० इ०, २२, पृ० ४८

१२-१३. कार्पस, ४/१, पृ० १४१

१४. वही, पृ० १३९

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

ईश्वर— श्रीशीलादित्य के सूरत दानपत्र (क० व० ४४३ = ७३८ई०) से विदित होता है कि शाण्डिल्य गोत्र के ब्राह्मण-परिवार में ईश्वर[1] उपपद का प्रयोग किया जाता था। इस परिवार के ब्राह्मणों का सम्बन्ध कार्मणेय के चतुर्वेदी समुदाय से था।[2]

शर्मा— जयसिंह के नासिक दानपत्र (क०व०४३६ = ६८४ ई०) से विदित होता है कि वाजसनेय शाखानुयायी भरद्वाज गोत्र के ब्राह्मण-परिवार में शर्मा[3] उपपद का प्रयोग किया जाता था। इस परिवार के ब्राह्मण नासिक्य[4] में रहा करते थे। नासिक्य का तादात्म्य नासिक से स्थापित किया जाता है।[5]

स्वामी— शीलादित्य के नवसारी दानपत्र (क०व० ४२१ = ६७१ ई०) से सूचना मिलती है कि अध्वर्यु चरण से सम्बन्धित काश्यप गोत्र के ब्राह्मण-परिवार में चार पीढ़ियों तक स्वामी उपपद प्रचलित था।[6] स्वामी नामान्तधारी ब्राह्मण का निवास स्थान नवसारिका (सूरत) में था।[7] कार्मणेय के चतुर्वेदी समुदाय से सम्बन्धित यजुर्वेदीय शाण्डिल्य गोत्र के परिवार में भी इस उपपद को धारण किया जाता था।[8]

मैत्रककालीन वल्लभी नामान्त—

वल्लभी के मैत्रक दानपत्रों (छठीं शताब्दी से लेकर सातवीं शताब्दी) से गुर्जर देश में प्रचलित इल्ल, गुह, घोष, देव, दत्त, भूति, भट्ट, भट्टि, पत्ति, त्रात, मित्र, यश, रवि, वसु, शर्मा तथा स्वामी ब्राह्मण नामान्तों का ज्ञान होता है।

इल्ल— ध्रुवसेन प्रथम के गनेशगद दानपत्र (गु० स० २०७ = ५२७ई०) से ज्ञात होता है कि वाजसनेय शाखानुयायी दर्भ गोत्र के ब्राह्मण-परिवार में इल्ल

१. कार्पस, ४/१, पृ० १३४

२. नासिक्यवास्तव्या(व्य)वाजसनेयभरद्वाजसगोत्राया(य)(प्रि) (प्री) तिशर्म्म- —कार्पस, वही, पृ० १३०

३. वही।

४-५ वही, पृ० १२९

६-७. 'नवसारिकाव(वा)स्तव्यकाश्यपसगोत्रगोमिस्वामिनः पुत्र स्वा(सा)मन्त स्वामी। तस्य पुत्राय मात्रिस्थविर (:) तस्यानुजभ्राता किक्कस्वामिनः भोगिक्कस्वामिने अध्वर्यु(स)ब्रह्मचारिणे—वही, पृ० १२५

८. कार्म्मणेयचातुर्व्विद्यशालासामान्यशाण्डिल्यसगोत्राध्वर्य्यु काण्वसब्रह्मचारिणे ब्राह्मण नण्णस्वामि —वही, पृ० १३४

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

उपपद का प्रयोग किया जाता था।[1] इस परिवार के ब्राह्मणों का निवास-स्थान हरियानक[2] (हस्तवप्रहरणी) में था।

गुह— सामवेदी भारद्वाज गोत्र के ब्राह्मण-परिवार में गुह नामान्त धारण किया जाता था।[3]

घोष— कौशरवस[4] गोत्रीय ब्राह्मण-नाम में घोष[5] उपपद जोड़ा जाता था। इस गोत्र के ब्राह्मणों का सम्बन्ध अथर्ववेद से था।[6]

देव—ध्रुवसेन प्रथम के दानपत्र (व०सं० २०६ = ५२५ ई०) से विदित होता है कि शुक्ल-यजुर्वेदीय शाण्डिल्य गोत्र के ब्राह्मण-कुल में देव नामान्त प्रचलित था।[7] उनका वास्तव्य काशहृद (अहमदाबाद से १२ मील उत्तर-पश्चिम) सूचित है।

दत्त—ध्रुवसेन प्रथम के बन्तिया दानपत्र (व०सं० २५७ = ५७६ ई०) से विदित होता है कि कृष्ण-यजुर्वेदीय ब्राह्मण-परिवार में दत्त[8] नामान्त का प्रचलन था। इसी नरेश के एक दूसरे दानपत्र[9] से ज्ञात होता है भारद्वाज गोत्रीय ब्राह्मण परिवार में परम्परागत रूप से दत्त नामान्त धारण किया जाता था। इस गोत्र के ब्राह्मणों का वास्तव्य अभिलेख में स्पष्ट नहीं है। केवल '— — — नगर' पठ्य है। यह स्थान नगरक अथवा वड्नगर अथवा आनन्दनगर (आनर्त्तपुर) हो सकता है। प्रसंगवश यह उल्लेखनीय है कि यही सभी स्थान नागर ब्राह्मणों के आदि केन्द्र माने जाते हैं। शीलादित्य तृतीय के जेसर दानपत्र (व० सं० ३५७ = ६७६ ई०) से विदित होता है कि शुक्ल-यजुर्वेदीय कौशिक गोत्र के चतुर्वेदी ब्राह्मण-परिवार भी दत्त[10] उपपद का प्रयोग करते थे। इस गोत्र के ब्राह्मण पुष्यसाम्बपुर से बहिर्गत हुए थे।[11] दत्त नामान्तधारी ब्राह्मणों के वास्तव्य

१-२. ए० इ० ३, पृ० ३२०

३. स्टडीज इन दि हिस्टारिकल एण्ड कल्चरल ज्योग्रफी एण्ड इथ्नोग्रैफी आफ गुजरात, पृ० १२२

४-६. वही।

१. स्टडीज द हिस्टारिकल एण्ड कल्चरल ज्लोग्राफी एण्ड एथेनोग्राफी आफ गुजरात, पृ० १२२

२-३. मैत्रायणिकसब्रह्मचारिशाण्डिल्यसगोत्रब्राह्मणदेवदत्ताय—
ए०इ० ३१, पृ० १८०.

४. स्टडीज इन द हि० क० ज्यो० एथे० गु०, पृ० १२०

५. पुष्यसाम्बपुरविनिर्गत-तच-चातुर्विद्य सामान्य कौशिक-सगोत्र-वाजसनेयि-स ब्र (ब्र) ह्मचारिब्राह्मण—साम्बदत्त —ए०इ०, २२, पृ० ११९,

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

बल्लभी का उल्लेख एक दूसरे जेसर दानपत्र (व०सं० ३४७ = ६६६ ई०) में किया गया है।[1] इस दानपत्र में अध्वर्यु चरण के अध्येता दत्त नामान्तधारी ब्राह्मण का उल्लेख है।[2]

इस उपपद का प्रयोग गार्ग्य गोत्रीय त्रिवेदी ब्राह्मण भी करते थे। इस परिवार के अध्वर्य्यु ब्राह्मणों का मूलस्थान आनन्दपुर[3] था जहाँ से वे निर्गत होकर वलभी[4] (मैत्रक राज्य) में आये थे।

भूति—ध्रुवसेन द्वितीय के मलीय ताम्रपत्र से विदित होता है कि वाजसनेय कण्व शाखा के अनुयायी वत्स गोत्र के ब्राह्मण-परिवार में भूति[5] उपपद धारण किया जाता था। इस परिवार के ब्राह्मणों का वास्तव्य उन्नत था।[6]

भट—ध्रुवसेन तृतीय के वलभी दानपत्र (व०सं० ३३४=३५३ ई०) से ज्ञात होता है कि कौशिक गोत्र के ब्राह्मण-परिवार में भट[7] (भट्ट) उपपद का प्रचलन था। इस परिवार के चतुर्वेदी ब्राह्मणों का सम्बन्ध वाजसनेय शाखा से था।[8] उनका निवास-स्थान महिछक था।[9]

भट्टि—शीलादित्य प्रथम के नवलाखी दानपत्र (व०सं० २८६=६०५ ई०) से विदित होता है कि गुर्जर देश में भट्टि उपपद का प्रयोग करने वाले भट्टि ब्राह्मण काठियावाड़ के गुहिल प्रान्तवासी थे।[10] उक्त दानपत्र में इस प्रकार के ब्राह्मणों को संगपुरी (जूनागढ़) में वहिर्गत हुआ बताया गया है।[11]

पत्ति— शीलादित्य द्वितीय के लुनसदी दानपत्र से सूचना मिलती है कि डौण्डव्य गोत्र के चतुर्वेदी ब्राह्मण-परिवार में पत्ति उपपद का प्रचलन था। इस परिवार के ब्राह्मणों का सम्बन्ध वाजसनेय चरण से था और वे द्वीप से विनिर्गत हुए थे।[12]

---

१. ए० इ०, २२ पृ० २१०.

२. ए०इ० २२, पृ० २१०.

३-४. आनन्दपुर-विनिर्गत-वल्लभ-वास्तव्य—त्रैविद्य सामान्य-गार्ग्य-सगोत्र-अध्वर्यु-ब्राह्मण-किक्ककपुत्रब्राह्मणभगोपदत्त—इ०ए०, भाग-११, पृ० ३०९.

५-६. 'उन्नतनिवासी (सि) वाजसनेयी (यि) कण्ववत्ससगोत्र-ब्राह्मण-रुद्रभूतये' —फलीट, जान पेन्थफुल—कार्पस, ३, पृ० १६६.

७-९. ए०इ० १, पृ०८८.

१०-११. ए०इ० ११, पृ० १७४-७९.

१२. द्वीपविनिर्ग्गततत्चातुर्व्विद्यसामान्यडौण्डव्यसगोत्रवाजसनेयिसब्रह्मचारि-ब्राह्मण-धनपति'—ए०इ०४, पृ० ८०.

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

त्रात— ध्रुवसेन प्रथम के ववदीय जोगिया दानपत्र (व०व० २२१= ५४१ई०) में बताया गया है कि आनन्दपुर में त्रात[1] नामान्तधारी ब्राह्मण रहते थे। उनका सम्बन्ध छन्दोग चरण[2] से था। एक दूसरे मैत्रक दानपत्र से ज्ञात होता है कि सामवेदी भारद्वाज गोत्र के ब्राह्मण-परिवार में भी उक्त उपपद प्रचलित था।[3]

मित्र— ध्रुवसेन के काठियावाड़ दानपत्र (व०सं० २०६=५२५ ई०) से विदित होता है कि व्रजगण गोत्र के मित्र उपपदधारी ब्राह्मण सिंहपुर (काठियावाड़) के पूर्व सिहोर में रहते थे।[4] इनका सम्बन्ध छन्दोगचरण से था।[5] शीलादित्य सप्तम के अलिन दानपत्र से ज्ञात होता है कि इस उपपद को शार्कराक्षि गोत्र के चतुर्वेदी ब्राह्मण-परिवार में भी धारण किया जाता था।[6] वे आनन्दपुर में निवास करते थे। इनका सम्बन्ध बह्वृच् चरण से था[7]

यश— ध्रुवसेन तृतीय के भावनगर दानपत्र (व०सं० ३०४=६२३ ई०) से प्रमाणित होता है कि यश उपपद का प्रचलन आत्रेय गोत्र के ब्राह्मण-परिवार में दो पीढ़ियों तक होता रहा। इस परिवार के ब्राह्मणों को अथर्वण बताया गया है।[8] उनके निवास स्थान हस्तवप्र (सुराष्ट्र विषय) का भी उक्त दानपत्र में उल्लेख हुआ है।[9]

रवि— नवलाखी दानपत्र से ज्ञात होता है कि ब्राह्मण रवि उपपद का भी प्रयोग करते थे।[10] इस प्रकार के परिवार का आगमन संगपुरी (जूनागढ़) से हुआ था।[11] ध्रुवसेन द्वितीय के नोगवा दानपत्र (गु० सं० ३२०=६३९ ई०) से विदित होता है कि रवि नामान्त का प्रयोग कौशिक गोत्र के परिवार में किया

१-२. आनन्दपुर-वास्तव्य-ब्राह्मण-स्कन्दत्रात-गुहत्रातभ्यां छंदोग-सब्रह्मचारिभ्यां
—वियना ओरियंटल जर्नल, भाग ७, पृ० २९९.

३. स्ट० हि० क०जि०ए०गु०, पृ० १२२.

४-५. सिंहपुरवास्तव्य-ब्राह्मण-रोटघमित्राय व्रजगणस-गोत्राय (च) छंदोगस-ब्रह्मचारिणे-ए०इ० १७, पृ० १०९.

६-७. श्रीमद् आनन्दपुरवास्तव्य-तच्चतुर्विद्यसामान्य श (अ) र्कराक्षिसगोत्र (त्र) बह्वृचसब्रह्मचारि भट्टआखण्डलमित्राय—कार्पस, ३, पृ० १७९.

८-१०. हस्तवप्रवास्तव्यात्रेयसगोत्राथर्व्वणसब्रह्मचारिणेब्राह्मणविष्णुयशःपुत्र ब्राह्मणमित्रयशसे सुराष्ट्राविषये हस्तवप्राहारे —ए०इ०, २१, पृ० १८३

११-१२. वही, ११, पृ० १७९.

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

जाता था। इनका बहिर्गमन जंबूसर से हुआ था।[1]

वसु— नवलाखी दानपत्र से विदित होता है कि वल्लभी के ब्राह्मण अन्य उपपदों के अतिरिक्त वसु नामान्त का भी प्रयोग करते थे।[2] इन ब्राह्मणों का भी बहिर्गमन संगपुरी (जूनागढ़) से ही हुआ था।[3]

शर्मा— ध्रुवसेन के समय आत्रेय, शाण्डिल्य तथा जाबाल गोत्रों के ब्राह्मण-परिवारों में शर्मा उपपद प्रचलित था।[4] शर्मा नामान्तधारी आत्रेय ब्राह्मण नगरक में निवास करते थे और इनका सम्बन्ध वाजसनेय चरण से था।[5] छंदोग चरण से सम्बंधित शाण्डिल्य गोत्र के ब्राह्मण-परिवार में भी इस उपपद का प्रयोग किया जाता था।[6] इसके अतिरिक्त शुक्ल यजुर्वेदीय शाण्डिल्य ब्राह्मण-परिवार में भी यह नामान्त धारण किया जाता था।[7] वाजसनेय चरण से सम्बंधित जाबाल गोत्र के ब्राह्मण-परिवार में भी उक्त उपपद प्रयुक्त होते थे। इनके वास्तव्य सिंहपुर का उल्लेख पलितन दानपत्र (व०सं०२१० = ३२९ ई०) में भी हुआ है।[8]

स्वामी—सिंहादित्य (धरसेन द्वितीय के समय का सामन्त) के पालिताना दानपत्र व० सं० २५५=७७४ ई०) से विदित होता है कि कृष्ण यजुर्वेदीय कृष्णात्रेय गोत्र के ब्राह्मण-परिवार में स्वामी[9] उपपद का प्रयोग किया जाता था। इस परिवार के ब्राह्मण एलापद्र[10] में रहते थे। धरसेन द्वितीय के नोगवा दानपत्र (गु० सं० ३२१=६४० ई०) से मालूम होता है कि पराशर गोत्र के एक ब्राह्मण-परिवार में यह उपपद दो पीढ़ियों तक प्रचलित रहा।[11] इन ब्राह्मणों को वाजसेनेय शाखानुयायी बताया गया है,[12] और वे अयनकाग्रहार (दशपुर) में निवास करते थे। उनके आद्यस्थान उदुम्बरगह्वर का भी दानपत्र में उल्लेख किया गया है।[13] स्वामी नामान्तधारी ब्राह्मणों का उल्लेख नवलाखी दानपत्र में भी हुआ है। वे संगपुरी से आये थे।[14]

१-२. ए०इ०, ११, पृ० १७९

३-४. नगरकवास्तव्यब्राह्मणशान्तिशर्म्मणे आत्रेयसगोत्राय वाजि-
ए०इ०१७, पृ० १०८,

५. वही, ११, पृ० १०८

६. वही, ३१, पृ० ३०१.

७-८. वही, ११, पृ० ११०.

९-१०. एलापत्रवास्तव्य ब्राह्मण बप्पस्वामिने मैत्रायाणिकसब्रह्मचारिणे कृष्णात्रेय-
सगोत्राय-ए०इ० १९, पृ० १८.

११-१४. उदुम्बरगह्वरविनिर्गताय (।)नकाग्र(।)हारनिवासिदशपुरत्रैविद्यसामान्य
पाराशरससगोत्रमाध्यन्दिनवाजसनेय सब्रह्मचारिब्रह्मणबुधस्वामि पुत्र
ब्राह्मणदत्तस्वामि—वही, पृ० १९८

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

त्रिपुरी

कलचुरिकालीन नामान्त

कलचुरि वंश का शासन दक्षिण-मध्यदेश में जबलपुर के निकट था। कलचुरि दानपत्रों में अनेक ब्राह्मण नामान्तों का परिचय मिलता है।

आदित्य—जयसिंह के रीवा दानपत्र (क० व० ९२६=११७५ ई०) से ज्ञात होता है कि कौशिक गोत्र[1] के ब्राह्मण-परिवार में आदित्य उपपद का प्रयोग किया जाता था।

ईश्वर—लक्ष्मण राज के कारीतलाई पाषाण अभिलेख से विदित होता है कि भारद्वाज गोत्र के वैष्णव संप्रदायानुयायी परिवार में ईश्वर उपपद का प्रयोग होता था।[2] भेड़ाघाट प्रस्तर अभिलेख (क० व० ९०७=११५५ ई०) से ज्ञात होता है कि मौन्य गोत्र[3] के ब्राह्मण परिवार में ईश्वर नामान्त का प्रचलन था। इसके अतिरिक्त विश्वामित्र[4] गोत्र के ब्राह्मण भी ईश्वर उपपदधारी थे।

कर—विजयसिंह के रीवा प्रस्तर (क० व० ९४४=११९३ ई०) अभिलेख में कर नामान्तधारी कृष्णात्रेय गोत्रीय ब्राह्मणों के उल्लेख हैं।[5]

दत्त—विजयसिंह के एक अन्य रीवा दानपत्र (वि० व० १२५३=११९६ ई०) से ज्ञात होता है कि दत्त[6] नामान्त भी ब्राह्मण-परिवारों में प्रयुक्त होता था।

देव—जयसिंह के तेवर प्रस्तर अभिलेख [क० व० ९२८=११७७ ई०] में कात्यायन गोत्रीय ब्राह्मणों को देव नामान्तधारी बताया गया है।[7] इस परिवार के लोग सीखा ग्राम [मालवक] के निवासी थे।

धर—कलचुरि दानपत्रों से ज्ञात होता है कि त्रिपुरी में सर्वाधिक धर उपपदधारी ब्राह्मण थे। यशःकर्णदेव के खैरा दानपत्र से विदित होता है कि काण्व गोत्र के बहवृच शाखानुयायी ब्राह्मण-परिवार में धर उपपद को धारण

---

१. कार्पस, ४/१, पृ० ३४१-४२
२. ए०इ०, २, पृ० १७८
३. कार्पस, ४/१, पृ० ३१७
४. ए०इ० २५, पृ० ३१५
५. कार्पस, ४/१, पृ० ३५३
६. वही, पृ० ३६१
७. वही, पृ० ३४४

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

किया जाता था।[1] नरसिंह के भेड़ाघाट पाषाण अभिलेख[2] (क० व० ९०७ = ११५६ई०) तथा गयाकर्ण के तेवर प्रस्तर अभिलेख[3] (चेदिव०९०२ = ११५१ई०) से ज्ञात होता है कि मौन्य गोत्र के ब्राह्मण-परिवारों में घर उपपद का प्रयोग परम्परागत रूप से किया जाता था। भेड़ाघाट अभिलेख में घर नामान्तधारी ब्राह्मणों के पाण्डित्य तथा यश का वर्णन करते हुए उनका उल्लेख प्रशस्तिकार के रूप में भी किया गया है।[4]

शर्मा—विजयसिंह के रीवा दानपत्र (वि० व० १२५३ = ११९६ ई०) से ज्ञात होता है कि त्रिपुरी में कौशिल्ल [कौशिक] गोत्र के ब्राह्मण शर्मा उपपद परम्परागत रूप से धारण करते थे।[5] विजय सिंह के कुंभी दानपत्र में छंदोग शाखानुयायी सावर्णिगोत्र के एक ब्राह्मण शर्मा नामान्तधारी का उल्लेख है।[6] इनके अतिरिक्त विदर्भी कौण्डिन्य गोत्र के शर्मा उपपदधारी ब्राह्मण का उल्लेख कर्णदेव के गोहरवा दानपत्र (१०४७ ई०) में हुआ है।[7]

त्रिपुरी-ब्राह्मण-नामान्त-सूची

उपपद	गोत्र	वेद	शाखा	चरण	वास्तव्य	विनिर्गत	संदर्भ
आदित्य	कौशिक						मिराशी, कार्पस, ४/१पृ० ३४१-४२
ईश्वर	भारद्वाज				कारीतलाई		ए०इ०, २,पृ०१७८
„	विश्वामित्र						वही,२५,पृ०३१५
„	मौन्य						कार्पस,४/१,पृ०३१७
कर	कृष्णात्रेय						वही, पृ० ३५३
दत्त	कौशिल्ल						वही, पृ० ३६१
देव	भारद्वाज				कारीतलाई (जबलपुर)		ए०इ०,२,पृ०१८८

१. ए०इ०, १२, पृ० २१३
२. कार्पस, ३/१, पृ० ३१७
३. वही, पृ० ३०७
४. वही, पृ० ३१७
५. वही, ४/१, पृ० ३६१
६. वही, ४/२, पृ० ६४७
७. वही, ४/१, पृ० २५९, ए०इ० ११, पृ० १४५

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHRA(USA)

उपपद	गोत्र	वेद	शाखा	चरण	वास्तव्य	विनिर्गत	सन्दर्भ
देव	कात्यायन				सीखाग्राम मालवक (जबलपुर)		कार्पस४,/१,पृ०३४५
धर	काण्व						वही, पृ० २८९
,,	मौन्य						वही,पृ० ३१७
,,	कौशिक						वही, पृ० ३४२
,,	कृष्णात्रेय				काशी		वही, पृ० ३५३
,,	कौशिल्ल						वही,पृ० ३६१
नाभ	काश्यप	वाजसनेय					वही, ४/२,पृ० ६३४
शर्मा	विदर्भी				(जबलपुर)		ए०इ०,२, पृ०१७५
,,	कौण्डिन्य						वही, पृ० २५९
,,	सावर्ण						कार्पस,४/२पृ०६४९

जेजाकभुक्ति

चन्देलकालीन नामान्त— बुन्देलखण्ड (जेजाकभुक्ति) के ब्राह्मण-परिवारों में आदित्य, ईश्वर, दत्त, देव, धर, नन्द, पाल शर्मा तथा स्वामी उपपद का प्रयोग किया जाता था। इनका उल्लेख चन्देल राजाओं (११५०-१२५० ई०) के दान-पत्रों में हुआ है।

आदित्य— परमर्दिदेव के सेमरा दानपत्र (वि०सं० १२२३–११६६ ई०) से ज्ञात होता है कि कश्यप[1] तथा शाण्डिल्य[2] गोत्र के ब्राह्मण आदित्य नामान्त का प्रयोग करते थे। उनका सम्बन्ध ऋग्वेद चरण से था। इनके अतिरिक्त यजुर्वेदीय सांकृत्य गोत्र के परिवार में भी इस उपपद का प्रयोग होता था।[3]

ईश्वर— उसी दानपत्र में कश्यप[4] भारद्वाज[5], तथा अत्रि[6] गोत्र के ईश्वर नामान्त ब्राह्मणों का उल्लेख हुआ है।

दत्त—सेमरा दानपत्र से ज्ञात होता है कि ऋग्वेदीय कश्यप तथा यजुर्वेदीय परासर और भार्गव गोत्र के ब्राह्मण दत्त उपपद धारी थे।[7]

१-२. ए०इ० ४, पृ० १६१, वही, ४, पृ० १६३, वही, पृ० १५९

३. वही, पृ० १६४

४. वही, पृ० १६२

५-६. वही, पृ० १६६

७. वही, पृ० १५९, १६३

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

धर—सेमरा दानपत्र में धर उपपद धारी ब्राह्मणों का उल्लेख हुआ है। ऋग्वेदीय भारद्वाज, सांकृत्य, कृष्णात्रेय, शांडिल्य, गौतम, भार्गव, परासर, पाणिनि, गार्ग्य, धौम्य, कश्यप तथा कुत्स गोत्र के ब्राह्मण-परिवारों के धर नामान्त प्रचलित था।[1] इसके अतिरिक्त यजुर्वेदीय भारद्वाज, गौतम, वसिष्ठ, भार्गव, परासर, कश्यप तथा कौत्स ब्राह्मणों द्वारा धर नामान्त का प्रयोग किया जाता था।[2]

नन्दः— यजुर्वेदीय चन्द्रात्रेय तथा गौतम गोत्र के ब्राह्मण नन्द उपपद का प्रयोग नामों के साथ किया करते थे।[3]

पाल—चन्देल त्रैलोक्यवर्मा के गर्र दानपत्र (वि०सं० १२६१ = १२०४ ई०) से ज्ञात होता है कि भरद्वाज गोत्र के ब्राह्मण-परिवार में पाल उपपद का प्रयोग होता था।[4] चरखारी दानपत्र (वि० सं० १३११ = १२५४ ई०) से विदित होता है कि काश्यप गोत्रीय ब्राह्मण-परिवार में भी पाल नामान्तों का प्रयोग किया जाता था।[5]

शर्मा— सेमरा दानपत्र से विदित होता है कि यजुर्वेदीय सांकृत्य, उपमन्यु, गौतम, पराशर तथा काश्यप गोत्र के ब्राह्मण शर्मा उपपद का प्रयोग करते थे।[6] इसके अतिरिक्त ऋग्वेदीय उपमन्यु, गौतम, शांडिल्य तथा वत्स गोत्र के ब्राह्मण शर्मा नामान्तधारी थे।[7]

स्वामी— ऋग्वेदीय कृष्णात्रेय तथा गौतम गोत्र के ब्राह्मण स्वामी उपपद धारण करते थे।[8] यजुर्वेदीय गौतम गोत्र के ब्राह्मण भी स्वामी नामान्तधारी थे।[9]

---

१. ए०इ०, ३, पृ० १६६

२. ए०इ०, ४, पृ० १५९

३. वही, पृ० १६३-६७

४. वही, पृ० २७४

५. वही, २०, पृ० १३३

६-७. ए०इ०, ४, पृ० १५९-१६७

८. वही, २०, पृ० १२७; ४, पृ० १४५

९. वही, ४, पृ० १६

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

उपपद	गोत्र	वेद	शाखा	चरण	वास्तव्य	विनिर्गत	सन्दर्भ
आदित्य	कश्यप			ऋ०			ए० इ०, ४, पृ० १५८
"	शाण्डिल्य			"			वही,पृ०१६४
"	माहुल			यजु०			वही,पृ०१६४
"	सांकृत्य			"			वही,पृ०१६४
"	जीवन्तायन			"			वही,पृ०१६६
"	कौत्स			"			वही,पृ०१६७
"	भारद्वाज			"			वही,पृ०१६७
"	गार्ग्य			"			वही, १६८
ईश्वर	कृष्णात्रेय	बह्वृच्				कुम्भटोभट्ट ग्राम (म०प्र०)	वही,२०, पृ० १२७-१२८
"	भारद्वाज			ऋ०			ए०इ०, ४, पृ० १६२
"	शाण्डिल्य						वही,पृ०१६३
"	पराशर						वही,पृ०१६५
"	सांकृत्य			यजु०			वही,पृ०१६६
"	विष्णुवृद्धि			"			वही,पृ०१६७
ईश्वर	वसिष्ठ			"			वही,पृ०१६८
कर	वसिष्ठ			ऋ०			वही,पृ० १५९
"	भार्गव						वही,पृ०१६१
"	कौण्डिन्य			यजु०			वही,पृ०१६४
"	कश्यप			"			वही,पृ०१६५
"	पराशर			"			वही,पृ०१६५
"	भारद्वाज			"			वही,पृ०१६६
"	कौशिक			"			वही,पृ०१६८
कंठ	वशिष्ठ			"			वही,पृ०१६४
केश	दाढर्यच्युत			ऋ०			वही,पृ०१६२
चन्द्र	वशिष्ठ			"			वही,पृ०१६२
दत्त	कश्यप			"			वही,पृ०१५९
"	"			"			वही,पृ०१६१
"	पराशर			यजु०			वही पृ०१६३
"	भार्गव			"			वही,पृ०१६५

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

उपपद	गोत्र	वेद	शाखा	चरण	वास्तव्य	विनिर्गत	संदर्भ
देव	कश्यप			,,			ए०इ०,२०,पृ० १३३
,,	गौतम			ऋ०			ए०इ०,४,पृ० १५८
,,	वत्स			,,			वही,पृ०१६०
,,	वत्स			यजु०			वही,पृ०१६५,६८
,,	शांडिल्य			,,			वही,पृ०१६१
देव	भार्गव			यजु०			वही,पृ०१६१
,,	गौतम			,,			वही
,,	दाढ्यंच्युत			,,			वही,पृ०१६२
,,	चन्द्रात्रेय			,,			वही,पृ० १६२
,,	वसिष्ठ			,,			वही, १६२
,,	कौशिक			,,			वही, १६२
,,	,,			यजु०			वही, पृ० १६५
,,	दर्भि			,,			वही, पृ० १६७
धर	वत्स	वाजसनेय		,,			वही,३१,पृ०७३
,,	,,			,,			वही,४, पृ०१६४
,,	,,			,,			वही,पृ० १६५, १६६, १६७
,,	भारद्वाज			यजु०			ए०इ०,२०,पृ० १३७
,,	,,			ऋ०			ए०इ०, ४, पृ० १६३
,,	,,			यजु०			वही
,,	,,			,,			वही,पृ० १६७ १६८, १६९
धर	सांकृत्य			ऋ०			वही, पृ०१५८
,,	,,			यजु०			वही, पृ० १५८
,,	कृष्णात्रेय			ऋक्०			वही पृ०१५८, १५९, १६०
,,	शांडिल्य			,,			वही,पृ०१५८,

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

”	गौतम	”		वही पृ० १५९
”	”	यजु०		वही, पृ० १६७
”	वसिष्ठ	ऋ०		वही,पृ० १५९, १६०
”	”	यजु०		वही, पृ० १६२, १६४
”	भार्गव	ऋ०		वही,पृ० १५९, १६१
”	”	यजु०		वही, पृ० १६७
धर	पराशर	ऋक्०		ए० इ० ४; पृ० १५९, १६०
”	”	यजु०		वही, पृ० १६४
”	पाणिनि	ऋक्०		वही, पृ० १६१
”	”			वही, पृ० १६२
”	गार्ग्य	”		वही, पृ० १६१
”	धौम्य	”		वही, पृ० १६२
”	कश्यप	”		वही, पृ० १६२
”	”	यजु०		वही, पृ० १६४ १६७; १६८
”	कौत्स	वाजसनेय	गाटलिपुत्र	वही, ३२, पृ० १२५
”	कुत्स	ऋक्०		वही ४,पृ०१६३
नन्द	चन्द्रात्रेय	यजु०		वही, पृ० १६३
”	गौतम	”		वही, पृ० १६७
नाभ	कौशिक	”		वही, पृ० १६८
पाल	कौत्स		”	वही, ३२,पृ० २६ २७
”	काश्यप			वही,२०,पृ०१३३
”	भारद्वाज		मुताउष	वही,१०,पृ०४० वही,१६,पृ० २७४
”	त्रैकायन	ऋक्०		ए०इ०,४,पृ०१५८' १६१
”	कौसिक			वही, पृ० १६३

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

उपपद	गोत्र	वेद	शाखा	चरण	वास्तव्य	विनिर्गत	संदर्भ
शर्मा	शांकृत्य	वाजसनेय				फोडिब भट्टाग्रहार	वही, १६, पृ० १०
,,	,,	यजु०					वही, ४, पृ० १६७
,,	उपमन्यु	ऋक्०					वही, पृ० १५८
,,	,,	यजु०					वही, पृ० १६८
,,	,,	,,					वही, पृ० १६९
,,	गौतम	ऋक्०					वही, पृ० १५९
शर्मा	,,	यजु०					ए० इ०, ४, पृ० १६६
,,	पराशर	,,					वही, पृ० १६९, १६४
,,	काश्यप	,,					वही, पृ० १६८
,,	शांडिल्य	ऋक्०					वही, पृ० १६०
,,	वत्स	छांदोग					वही, पृ० १६७ १३०
स्वामी	गौतम	,,					वही ३२, पृ० १२२
,,	कृष्णात्रेय	वह्वृच्				कुम्भटोभट्ट ग्राम (मध्यदेश)	वही, २०, पृ० १२७
,,	गौतम	ऋक्०					वही ४, पृ० १५९
,,	,,	ऋक्०					वही, पृ० १६०
,,	,,	यजु०					वही, ४, पृ० १६५

मालवा

परमारकालीन नामान्त

परमारों के दानपत्रों में मालवा के अनेक ब्राह्मण उपपदों का उल्लेख मिलता है।

आदित्य– वाक्पत्तिमुंज के गोनरी दानपत्र (वि०सं० १०३८—९८७ ई०) से ज्ञात होता है कि सामवेदीय वत्स[1] तथा शांडिल्य[2] ब्राह्मण आदित्य उपपद-धारी थे। इसी दानपत्र में यजुर्वेदीय मौद्गल्य गोत्रीय ब्राह्मणों के आदित्य नामान्त का उल्लेख हुआ है।[3] इसके अतिरिक्त उक्त दानपत्र से विदित होता

१-३. ए० इ०, २३ पृ० १०९

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

कि ऋग्वेदीय वराह गोत्र के ब्राह्मण भी आदित्य नामान्तधारी थे।[१] मुंज के नरवल दानपत्र से ज्ञात होता है आदित्य उपपदधारी ब्राह्मण श्रवणभद्र में रहते थे।[1] भोज के तिलकवाडा (वि० सं० ११०३—१०४६ ई०) से ज्ञात होता है कि वहां के आदित्य उपपदधारी ब्राह्मण-परिवार का आगमन कन्नौज से हुआ था।[२] देवपाल के मान्धाता दानपत्र (वि० सं० १२८२ = १२२५ ई०) से ज्ञात होता है कि ऋग्वेदीय पवित्र गोत्र के ब्राह्मण उपपदधारी थे तथा वे आश्रमस्थान से बहिर्गत हुए थे।[3]

ईश्वर– मालवा में ऋग्वेदीय पवित्र[४] तथा भार्गव[5] गोत्र के ब्राह्मण मुख्य नामों के साथ ईश्वर उपपद का प्रयोग करते थे। आश्रमस्थान से बहिर्गत होने वाले ईश्वर नामान्तधारी पवित्र ब्राह्मण थे। आश्वलायन शाखानुयायी भार्गव गोत्र के ब्राह्मणों का आद्यस्थान मथुरा था। सामवेदीय कात्यायन[६] तथा भारद्वाज[7] गोत्र के ब्राह्मण ईश्वर नामान्त का प्रयोग करते थे और वे मालवा में फैले हुए थे। मथुरा के निकटवर्ती स्थान महावन से निर्गत होनेवाले सामवेदीय कात्यायन गोत्र के ब्राह्मण थे। मालवा में टकारी के कौथुम तथा मथुरा के राणायनीय शाखानुयायी भारद्वाज ब्राह्मणों का प्रसार हुआ था। सरयूपार प्रदेशान्तर्गत श्रावस्ती के निकट टकारी ग्राम भारद्वाज ब्राह्मणों का एक प्रमुख केन्द्र था। माध्यन्दिनशाखानुयायी शांडिल्यगोत्र के ब्राह्मण भी ईश्वर उपपदधारी थे।[8]

कंठ– मांधाता दानपत्र से ज्ञात होता है कि आश्वलायन शाखानुयायी पवित्र गोत्र के ब्राह्मण कंठ उपपद का प्रयोग करते थे।[९]

देव– मान्धाता दानपत्र से ज्ञात होता है कि मालवा में सरयूपार के टकारी ग्राम के आश्वलायन शाखा से सम्बन्धित गौतम गोत्र के ब्राह्मण अपने

---

१. ए०इ०, ८, पृ० ७८
२. वही, २१, पृ० १५९
३. वही, ९, पृ० १०९
४. वही, पृ०११०
५. वही, पृ०१११
६-७. वही, पृ०११०
८. वही, पृ०११२
९. महावनस्थान विनिर्गताय पवित्रगोत्राय– – –आश्वलायन शाखाध्यायिने दी सिंह-कंठ पौत्राय शु मधुकंठ-पुत्राय शु चन्द्रकंठ शर्म्मणे। ए० इ०, ८, पृ० ११०

Digitization by Hindu-Heritage Foundation of America. HHFA(USA)

नामों के साथ देव उपपद जोड़ते थे ।[1] मध्यदेश के देव उपपदधारी यजुर्वेदीय शांडिल्य[2] तथा काश्यप[3] ब्राह्मणों का विस्तार मालवा में हुआ था । यजुर्वेदीय ब्राह्मणों के अतिरिक्त सामवेदीय वत्स[4] तथा शांडिल्य[5] गोत्र के ब्राह्मण भी देव नामान्त को धारण करते थे ।

धर– परमारों के युग में धर नामान्तधारी ब्राह्मण आश्वलायन शाखा के कश्यप तथा पवित्र गोत्रीय[6] तथा शांखायन शाखानुयायी गौतम थे ।[7] कश्यप ब्राह्मणों का आद्यस्थान मुतावथु स्थान था । गौतम ब्राह्मण डिण्डवक स्थान से बहिर्गत हुए थे ।

मालवा में धर उपपद धारण करने वाले यजुर्वेदीय[8] कात्यायन, पराशर[9] कश्यप,[10] वसिष्ठ[11] तथा मुद्गल[12] गोत्र के ब्राह्मण थे । धर नामान्तधारी माध्यन्दिन शाखानुयायी कात्यायन गोत्र के ब्राह्मण मध्यदेशान्तर्गत श्रृङ्गपुर के बहिर्गत हुए थे । धर नामान्तधारी पराशर गोत्रीय ब्राह्मण मूलतः आश्रमस्थानवासी थे । मुतावथु के काश्यप ब्राह्मण-परिवार में भी धर नामान्त जोड़ने की परम्परा थी । मध्यदेशीय माध्यन्दिन शाखानुयायी काश्यप ब्राह्मण मालवा में धर उपपद का प्रयोग करते थे । मध्यदेश से दक्षिण मध्यदेश (मालवा) में आने वाले धर नामान्तधारी ब्राह्मण मुद्गल गोत्र के थे । परमार नरेशों के समय धर नामान्त सामवेदीय ब्राह्मण-परिवारों में भी प्रचलित था । गोनरी दानपत्र से विदित होता है कि मालवा में मथुरा के निकटवर्ती स्थान महावन से निर्गत होकर आनेवाले कात्यायन[13] गोत्र के ब्राह्मण धर उपपदधारी थे ।

---

१. वही, पृ० ११२

२. वही, पृ० ११०

३. वही, पृ० ११२

४. वही, २३, पृ० १०९

५. वही, पृ० ११०

६. वही, ९, पृ० ११२

७-८. वही, पृ० ११०

९. वही, २०, पृ० १०६

१०. वही, पृ० १११

११-१३. ए० इ०, २० पृ० १११

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

सामवेदीय माहुल[1] गोत्र के ब्राह्मण धर उपपद का प्रयोग करते थे। वे खजुंरिका से बहिर्गत हुये थे। इसके अतिरिक्त विख्यात केन्द्र टकारी के कौथुम शाखानुयायी भारद्वाज[2] गोत्र के ब्राह्मण धर उपपदधारी थे, जिनका प्रभाव और प्रसार मालवा में था। पूर्वमध्ययुग में भारद्वाज ब्राह्मणों का केन्द्र टकारी सुप्रसिद्ध स्थान माना जाता था। मथुरा के भारद्वाज ब्राह्मण भी सम्मानित दृष्टि से देखे जाते थे। गोनरी दानपत्र से ज्ञात होता है कि राणायनीय भारद्वाज ब्राह्मणों का आद्यस्थान मथुरा था जहाँ से वे बहिर्गत होकर मालवा में आये थे।[3] मान्धाता दानपत्र से ज्ञात होता है कि कौथुम शाखानुयायी गौतम[4] गोत्र के ब्राह्मण धर उपपदधारी थे। उनका बहिर्गमन महावन से हुआ था।

नन्द— गोनरी दानपत्र से विदित होता है कि सांकृत्य[5] गोत्र के ब्राह्मण नन्द नामान्त का प्रयोग परम्परागत रूप से करते थे। उनका सम्बन्ध ऋग्वेदीय बह्वृच शाखा से था। वे मगध देश के कणोप ग्राम[6] से बहिर्गत हुए थे। कणोप-ग्राम का तादात्म्य बिहार के शाहाबाद जिले में बक्सर के पास गंगा नदी के तट पर स्थित कनोप ग्राम से स्थापित किया जाता है।[7] इसके अतिरिक्त वत्स[8] गोत्रीय ब्राह्मण नन्द उपपदधारी थे। वे भी बह्वृच् शाखानुयायी थे। उनका बहिर्गमन श्रवणभद्र से हुआ था। श्रवणभद्र कन्नौज के निकट है। सामवेदीय कौथुम शाखा के अनुयायी वत्सगोत्र के ब्राह्मण जो टकारी से बहिर्गत हुए थे, नन्द उपपद धारण करते थे।[9]

पाल— मान्धाता दानपत्र से विदित होता है कि परासर ब्राह्मण पाल उपपद का प्रयोग करते थे।[10] उनका सम्बन्ध कौथुम शाखा से था और वे हस्तिनापुर से बहिर्गत हुए थे।[11]

१-२. ए०इ०, ९, पृ० ११०
३. वही, पृ० १११
४. वही, पृ० ११२
५. मगधदेशान्तः पाति कणोपाभट्टग्राम विनिर्गत सांस्कृत्यसगोत्रतृ (ति) प्रवरब (ब) ह्वृच्शाखिने वा (ब्र)ह्मणसर्व्वानन्दाय पंडित दीक्षि(त)लाकानन्द ए० इ० २३, पृ० ११४
६. वही, पृ० १०१
७. वही, पृ० ११०
८. वही, पृ० ११०
९-११. वही।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation-of-America. HHFA(USA)

शर्मा— वास्त्य,[1] कात्यायन[2] ,भारद्वाज[3] , वसिष्ठ[4] , काश्यप[5] तथा कुत्स[6] गोत्र के ब्राह्मण शर्मा उपपद का प्रयोग करते थे । मान्धाता दानपत्र से ज्ञात होता है कि आश्वलायन शाखानुयायी वसिष्ठ तथा काश्यप गोत्र के ब्राह्मण मथुरा से आये थे । उनके परिवार में शर्मा उपपद परम्परागत रूप से प्रयुक्त होता था । यजुर्वेदीय वत्स्य, कात्यायन तथा भारद्वाज गोत्र के ब्राह्मणों को भी शर्मा उपपदधारी बताया गया है । वाजसनेय शाखानुयायी वत्स गोत्र के ब्राह्मण श्रवणभद्र से बहिर्गत हुए थे । टकारी के भारद्वाज ब्राह्मण भी शर्मा उपपद का प्रयोग करते थे । मध्यदेश के श्रृंगपुरवासी कात्यायन ब्राह्मण शर्मा नामान्तधारी थे । सरस्वती क्षेत्र के कठ शाखानुयायी (कृष्ण यजुर्वेदीय) कुत्स गोत्र के ब्राह्मण शर्मा उपपद का प्रयोग करते थे[7] ।

सिंह—कौथुम शाखानुयायी वत्स गोत्र के ब्राह्मण भी इस उपपद को धारण करते थे, जिनके पूर्वजों का मूल केन्द्र उक्त प्रदेश (मध्यदेश) में स्थित प्रख्यात केन्द्र टकारी था ।[8]

परमार ब्राह्मण नामान्त सूची

उपपद	गोत्र	वेद	शाखा	चरण	वास्तव्य	विनिर्गत	संदर्भ
आदित्य	शांडिल्य		छंदोग			चौरम्ब	ए०इ ,२३,पृ०१०९
,,	मौद्गल्य		बाजिमाध्यन्दिन			खडुपल्लि-का ग्राम	वही, पृ० १०९
,,	भार्गव		छंदोग			दर्दुरिका	वही, पृ० १०९
,,	वाराह		बह्वृच्			शावथिकादपुर (मध्यदेश)	वही, पृ० १०९
,,	वत्स		छंदोग			राजकीय मध्यदेश	वही, पृ० १०९

---

१. ए०इ० २३ पृ० २१८

२. वही, २०, पृ० १०६

३. वही, ९, पृ० १११

४-७. वही ।

८. ए०इ० ९, पृ० १११

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

आदित्य	पवित्र	आश्वलायन	आश्रम-स्थान	ए०इ०, पृ० १०९
ईश्वर	,,	,,	,,	वही, पृ० ११०
,,	कात्यायन	सामदेव	महावन	वही, पृ० ११०
,,	भारद्वाज	कौथुम	टकारी	वही, पृ० ११०
,,	,,	राणायनीय	मथुरा	वही, पृ० ११०
,,	भार्गव	आश्वलायन	,,	वही, पृ० १११
,,	शांडिल्य	माध्यन्दिन	मध्यदेश	वही, पृ० ११२
कंठ	पवित्र	आश्वलायन	आश्रम-स्थान	वही, पृ० ११०
देव	वत्स	छंदोग	अविवा-(अशुरेसमंडल)	वही, २३,पृ०१०९
,,	शांडिल्य	कौथुम	सोपुर	वही, पृ० ११०
,,	,,	माध्यन्दिन	मध्यदेश	ए० इ० ९, पृ० ११२
,,	काश्यप	,,	,,	वही, पृ० ११२
,,	भारद्वाज	,,	,,	वही, पृ० ११२
,,	गौतम	आश्वलायन	टकारी	वही।
धर	कात्यायन	माध्यन्दिन	श्रृंगपुर	वही, २० पृ०१०६
,,	,,	साम० मध्यदेश	महावन	वही, ९ पृ० ११०
,,	माहुल	छंदोग	खर्जुरिका	वही, २३,पृ०११०
,,	पराशर	वाजिमा-ध्यन्दिन	आश्रम-स्थान	वही, ९ पृ० ११०
,,	पवित्र	आश्वलायन		वही, पृ० ११०
,,	भारद्वाज	कौथुम	टकारी	तत्रैव, पृ० १११
,,	,,	राणायनीय	मथुरा	वही, पृ० ११२
,,	कश्यप	आश्वलायन	मुतावथु स्थान	वही, पृ० ११२
,,	,,	माध्यन्दिन	,,	वही।
,,	वसिष्ठ	,,	मथुरा	वही।
,,	काश्यप	,,	,,	वही।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

उपपद	गोत्र	वेद	शाखा	चरण	वास्तव्य विनिर्गत	सन्दर्भ
"	"		"		मध्यदेश	ए०इ०,९,पृ० ११२
"	गौतम		शांखायन		डिडवक स्थान	वही
"	"		कौथुम		महावन स्थान	वही
"	मुद्गल		माध्यन्दिन		मध्यदेश	वही, ९, पृ० ११२
नन्द	सांस्कृत्य	बहृ-वृच	आश्वलायन		कणोप (मगधदेश)	वही, २३, पृ० ११४
"	वत्स		बहृवृच्		श्रवणभद्र (कन्नौज के निकट)	वही, पृ० ११०
"	"		कौथुम		टकारी	ए०इ०, ९पृ० ११२
"	पराशर		"		हस्तिनापुर	वही, पृ० ११२
शर्मा	वत्स्य		वाजसनेय		श्रवणभद्र	वही, २३,पृ० २१८
"	कात्यायन		माध्यन्दिन	श्रृंगपुर मध्यदेश		वही, १० पृ० १०६
"	"		साम		महावन	वही, ९, पृ० ११०
"	भारद्वाज		माध्यन्दिन		टकारी	वही, पृ० ११०
"	"				त्रिपुरीस्थान	वही
"	वसिष्ठ		आश्वलायन		मथुरा	वही, पृ० १११
"	काश्यप		"		"	वही
"	"		"		मुतावथु स्थान	वही
"	कुत्स		कठ		सरस्वती	वही
सिह	काश्यप		छंदोग		मधुपालिका	वही, २३, पृ० ११०
"	ओदल		माध्यन्दिन		महावनस्थान	वही, ९, पृ० ११८

डाहल मण्डल (मध्यप्रदेश)

परिव्राजककालीन ब्राह्मण नामान्त

डाहल मंडल (जबलपुर) के परिव्राजक नरेशों (छठीं शताब्दी पूर्वार्द्ध) के दानपत्रों में अनुलिखित गंग, भद्र, दत्त, देव, यज्ञ तथा स्वामी उपपद धारी ब्राह्मणों का उल्लेख हुआ है ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

गंग– महाराज हस्तिन के जबलपुर दानपत्र (गु०व० १७० = ४८९ ई०) से ज्ञात होता है कि ब्राह्मण परिवार में गंग उपपद का प्रयोग किया जाता था। गंग[1] उपपदधारी ब्राह्मण का उल्लेख दानग्रहीता के रूप में किया गया है। प्रसंगवश यह यहाँ उल्लेखनीय है कि गंग या गांगुली या गांगोपाध्याय जैसे पारिवारिक नामों या उपनामों अथवा उपपदों से सम्बन्धित बंगाली ब्राह्मण आजकल भी मिलते हैं।

दत्त– कुछ ब्राह्मण-परिवारों में नाम के साथ उक्त उपपद[2] का उल्लेख किया गया है।

भद्र– उक्त दानपत्र में भद्र[3] उपपदधारी ब्राह्मण का उल्लेख किया गया है। ऐसा प्रतीत होता है कि इस ब्राह्मण-परिवार में भद्र उपपद का प्रचलन था।

देव– महाराजा हस्तिन के समय ब्राह्मण-परिवारों में देव[4] उपपद को धारण किया जाता था।

स्वामी– परिव्राजक संक्षोभ के समय (गु० सं० १९९ = ५१८ ई०) भरद्वाज गोत्रीय ब्राह्मण–परिवार में नाम के साथ स्वामी[5] उपपद जोड़ा जाता था। स्वामी नामान्तधारी ब्राह्मण माध्यंदिन वाजसनेय शाखा (वाजसनेय-माध्यंदिन) का छात्र था।[6] जबलपुर दानपत्र से अवगत होता है कि महाराजा हस्तिन के समय ब्राह्मण–परिवारों में स्वामी नामान्त का प्रयोग किया जाता था।[7] इसी नरेश के एक दूसरे दानपत्र से ज्ञात होता है कि पराशर गोत्रीय ब्राह्मण प्रायः दो उपपदो का प्रयोग नामों के साथ किया करते थे।[8] नाम के साथ प्रथम उपपद यज्ञ तथा दूसरा स्वामी लगा हुआ है। सम्भवतः स्वामी पारिवारिक उपपद या उपनाम है या सम्मानित स्थान देने के लिए उनको या उन परिवार के

---

१. ए० इ० १८, पृ० २६६

२-३. वही

४. वही, पृ० २६६

५. भारद्वाज सगोत्राय माध्यंदिन वाजि (ज) सनेय सब्र (ह्म) चारिणे ब्राह्मण भानुस्वामिने बेतुल दानपत्र, वही ८ पृ० २८७

६. वही।

७. द्रष्टव्य उपर्युक्त टि० सं०

८. नवग्राम दानपत्र, ए० इ० २१, पृ० १२६

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

ब्राह्मणों को स्वामी कहा जाता था। उपमन्यु गोत्र के सामवेदीय ब्राह्मण-परिवार में भी इस उपपद का प्रचलन था।[1]

यज्ञ– महाराजा हस्ती के नवग्राम दानपत्र (गु० व० १९४ = ५१७ ई०) से विदित होता है कि शुक्ल यजुर्वेदीय पराशरगोत्र के ब्राह्मण यज्ञ[2] उपपद को धारण करते थे। उनके नाम में यज्ञ के साथ ही स्वामी[3] जुड़ा हुआ है। सम्भवतः दो-दो उपपद लगाने की प्रथा प्रचलित थी। ऐसा प्रतीत होता है कि ये यज्ञ अनुष्ठान या यज्ञीय कृत्यों को करने वाले ब्राह्मण थे जो परम्परागत रूप से इस उपपद का प्रयोग करने लगे थे।

मध्यदेश

मध्यदेश के ब्राह्मण नामान्तों का ज्ञान तत्कालीन प्रमुख राजवंशों के दानपत्रों से मिलता है। पूर्व-मध्यदेश का राजनीतिक केन्द्र पश्चिम (सम्पूर्ण उत्तर प्रदेश) था। इस युग में राजनीतिक सत्ता का केन्द्र पाटलिपुत्र (मगध) के स्थान पर कान्यकुब्ज हो गया था। इस प्रदेश में शासन करनेवाले वंशों में मौखरि, वर्द्धन, वर्मन, आयुध, प्रतिहार तथा गहडवाल प्रमुख थे। मध्यदेश के दक्षिणी भाग में चाहमान, त्रिपुरी के कलचुरि, जेजाक भुक्ति के चदेल और मालवा के परमारों का प्रभुत्व रहा।

वर्द्धनकालीन नामान्त

वर्द्धनों के युग में पश्चिम मध्यदेश में प्रचलित ब्राह्मण नामान्तों का उल्लेख कुदरकोट(गनीधुमत),मधुवन, तथा बांसखेड़ा दानपत्रों(सातवीं शताब्दी पूर्वार्द्ध) में प्राप्त होता है।

कीर्ति– हर्षयुगीन कुदरकोठ पाषाण अभिलेख से ज्ञात होता है कि सामवेदीय कुहल गोत्र के ब्राह्मण कीर्ति[4] उपपद का प्रयोग करते थे। इनका सम्वन्ध छंदोग चरण[5] से था।

चन्द्र– हर्ष के बांसखेड़ा दानपत्र में चन्द्र नामान्तधारी भारद्वाज ब्राह्मण

---

१. औपमन्यव सगोत्रेभ्यस छंदोग-कौथुमसब्रह्म चारिभ्यो निम्य ब्राह्मणेभ्यः गोविंदस्वामी। गोमिकस्वामि देवस्वामिभ्यः—मझगांवां दानपत्र, कार्पस, ३, पृ० १०८

२. वही

३-४. छंदोग चरणे कुहलसगोत्रः कुलदीपकीर्तिपुत्रः वैश्वानर कीर्तिः—ए०इ०, १, पृ० १८२

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

का उल्लेख है, जो बह्वृच् चरण से सम्बन्धित थे[1]

गुप्त– गवीधुमत से प्राप्त अभिलेख से विदित होता है कि ऋग्वेदीय गालव गोत्र के परिवारों में गुप्त नामान्त रखने की परम्परा थी।[2]

दत्त—कुदरकोट प्रस्तर से ज्ञात होता है कि ऋग्वेदीय सांकृत्य गोत्र के ब्राह्मण दत्त उपपद का प्रयोग करते थे।[3] नागर पुष्पांजलि में भी ऋग्वेदीय सांकृत्य गोत्रीय ब्राह्मणों को दत्त नामान्तधारी बताया गया है।[4]

देव– विष्णुवृद्ध गोत्र बह्वृच् चरण से सम्बन्धित ब्राह्मणों में देव उपपद हर्ष के मधुवन दानपत्र से प्राप्त होता है। विष्णुवृद्ध गोत्रीय ब्राह्मण शिवदेव के नाम में स्वामी शब्द जुड़ा हुआ है।[5] संभवतः कुछ परिवारों में दो नामान्त रखने की परम्परा थी। अथवा यह शब्द उपाधि के रूप में प्रयुक्त हुआ है।

धर– गवीधुमत अभिलेख से प्रमाणित होता है कि ऋग्वेदीय वसिष्ठ गोत्र के ब्राह्मणों में धर नामान्त प्रचलित था।[6]

सोम– कुदरकोट पाषाण अभिलेख से ज्ञात होता है कि अध्वर्यु चरण के अध्येता वत्स गोत्रीय ब्राह्मण सोम नामान्त का प्रयोग किया करते थे।[7]

स्वामी– मधुबन ताम्रपत्र से ज्ञात होता है कि सामवेदीय सावर्णि गोत्र के ब्राह्मण स्वामी उपपद का प्रयोग किया करते थे।[8] इनका सम्बन्ध छंदोग चरण से था।[9] गवीधुमत अभिलेख के अनुसार अध्वर्यु चरण के अध्येता औपमन्यव (उपमन्यु) गोत्र के ब्राह्मण-परिवार में स्वामी उपपद का प्रयोग किया जाता था।[10]

---

१. वही, ४, पृ० २११
२-३. ए० ई० १, पृ० १८२
४. वसु— सो० हि० का०, भाग-३, पृ० ११८
५. ए०इ०, १, पृ० ७३
६-७. द्रष्टव्य, ए० इ० १, पृ० १८२
८-९. सावर्णि सगोत्रच्छन्दोगसब्रह्मचारिभट्टवातस्वामि—वही, पृ० ७३
१०. ए०इ०, १, पृ० १८२

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

वर्द्धनकालीन नामान्त सूची

उपपद	गोत्र	वेद	शाखा	चरण	वास्तव्य	विनिर्गत	संदर्भ
कीर्त्ति	मुहल			छंदोग			ए०इ०,१,पृ० १८२
चन्द्र	भारद्वाज			बह्‌वृच			वही,४,पृ०२११
गुप्त	गालव			छंदोग			वही,पृ० १८२
दत्त	सांकृत्य			बह्‌वृच्			वही,१,पृ०१८३
देव	विष्णुबृद्ध			„			वही,पृ० ७३
धर	वसिष्ठ			छंदोग			वही, पृ० १८२
सोम	वत्स			अध्वर्यु			वही, पृ० १८२
स्वामी	औपमन्यव (उपमन्यु)			„			वही

कल्चुरी काल के ब्राह्मण नामान्त—

कलचुरि सोढदेव के कहला दानपत्र (वि० सं० ११३५=१०७९ ई०) से ज्ञात होता है कि सरयूपार के ब्राह्मण-परिवारों में ईश्वर, देव, दास, धर, नन्द तथा सिंह उपपद का प्रयोग किया जाता था।

ईश्वर—कुशिक (कौशिक) गोत्रीय ब्राह्मण ईश्वर उपपद का प्रयोग करते थे।[1] वे निखती ग्राम (गोरखपुर) में धुरियापार परगना का एक ग्राम में माध्यन्दिन शाखा के अनुयायी थे।[2]

देव—कृष्णात्रेय गोत्र के ब्राह्मण-परिवार में देव उपपद का प्रयोग होता था।[3] उनकी यजुः शाखा थी।[4] वे टीकरी ग्राम (धुरियापार परगना) के निवासी थे।[5]

दास—बह्‌वृच् शाखानुयायी भारद्वाज ब्राह्मण-परिवार में दास नामान्त का प्रयोग नामों के साथ किया जाता था। यह परिवार कहला ग्राम (धुरियापाल-परगना) में निवास करता था।[6]

१-२. निखतीग्रामीय दीक्षितदेवस्व (श्व) रपुत्रकुसि (शि) कगोत्रत्रिप्रवरमाध्यंदिनसा (शा) खि-कार्पस, ४, पृ० ३९०

३-५. टीकरिकीयम (भा) स्करपुत्रकृष्णात्रगोत्रपंचप्रवरयजुः सा (शा) खि (ब्रा) ह्‌मणसंकर, देवेभ्यः। कार्पस, ४, पृ० ३९१

६. कहल्लीयभट्टसुन्दरपुत्रमारदा (द्वा) जगोत्रत्रिप्रवरब (ब) ह्‌वृचसा (शा) खि भट्टसि (शि) वदाद—वही।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

धर—पराशर गोत्र के ब्राह्मण-परिवार में धर नामान्त का प्रयोग होता था।[1] उनका सम्बन्ध हस्तिग्राम के ऋग्वेदीय ब्राह्मणों से था।[2]

नन्द—शांडिल्य ब्राह्मण-परिवार में नन्द[3] नामान्त का प्रयोग होता था। इस परिवार का आद्य स्थान कुलांच (श्रावस्ती) के छंदोग शाखानुयायी ब्राह्मणों से था।[4]

सीह—कहला दानपत्र में सीह नामान्त का उल्लेख किया गया है, जो सिंह का तद्भव रूप है।[5] भारद्वाज गोत्रीय ब्राह्मण-परिवार में सीह (सिंह) नामान्त का प्रयोग किया जाता था। वे कहला ग्राम के बह्वृच शाखानुयायी ब्राह्मण थे।[6]

प्रतिहारकालीन नामान्त

प्रतिहारों के समय (८००—१०५० ई०) ब्राह्मण दत्त, देव, शिव तथा स्वामी उपपद का प्रयोग करते थे।

दत्त—भोजकालीन आहार पाषाण अभिलेख (हर्ष सं० २५९ = ८६५ ई०) से ज्ञात होता है कि उत्कृष्ट चतुर्वेदी समुदाय के भारद्वाज गोत्रीय ब्राह्मण दत्त[7] नामान्त का प्रयोग करते थे। वे तत्तानन्दपुर के ऋग्वेदीय ब्राह्मण थे।[8]

देव—देव नामान्तधारी ब्राह्मणों का उल्लेख प्रतिहार शासक भोज के दौलतपुर दानपत्र (हर्ष सं० १००=७०६ ई०) तथा मदनपाल के रक्षक्षली दानपत्र (शक १११८) में किया गया है। कश्यप गोत्र के ब्राह्मण देव नामान्त-धारी होते थे।[9] वे ऋग्वेदीय आश्वलायन शाखानुयायी थे।[10] वार्द्धानस गोत्र

१-२. हस्तिग्रमीयदीक्षितश्रीधरपुत्रपारास) (श) रगोत्रत्रिप्रवरमाध्यंदिन सा (शा) खि।—कार्पस, ४/२, पृ० ३९०

३-४. कुला चा (ची) य महानन्दपुत्रश्री सा (शा) ण्डिल्यगोत्रत्रिप्रवरच्छंदोगसा (शा) खि।
वही, ४२, पृ० ३९१

५-६. कहल्लीयत (भ) ट्टजाखूपुत्रभारद्वाजगोत्रत्रिप्रवर व (ब) ह्वृंचसा (शा) खितिहुयणसीह—कार्पस, ४, पृ० ३९१

७-८. श्रीतत्तानन्दपुरे प्रतिवसमान श्रीमदार्यचातुर्व्वद्य सामान्य भारद्वाजसगोत्रव (ब) ह्वच स ब्र (ब) ह्मचारी भट्ट इ (ई)शानदत्त (स्त)—ए०इ०,१९, पृ० ६१

९-१०. वही, ५, पृ० २१३

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

के ब्राह्मण इस नामान्त का परम्परागत रूप से प्रयोग करते थे।[1]

शिव– आहार प्रस्तर अभिलेख के नामों में शिव उपपद भी मिलता है। ऋग्वेदीय बह्वृच् शाखा के शार्कराक्षि गोत्रीय ब्राह्मण-परिवार में शिव नामान्त[2] का प्रयोग किया जाता था। वे तत्तानन्दपुर के निवासी थे। उनका सम्बन्ध चतुर्वेदी समुदाय से था।[3]

स्वामी– भोजदेव के वराह ताम्रपत्र से ज्ञात होता है कि भारद्वाज गोत्र के ब्राह्मण-परिवार में स्वामी[4] नामान्त का प्रयोग होता था। वे वाजसनेय शाखानुयायी थे[5]

प्रतिहारकालीन नामान्त-सूची

उपपद	गोत्र	वेद शाखा चरण	वास्तव्य विनिर्गत	सन्दर्भ
ईश्वर			श्रीतत्तानन्दपुर	ए०इ०,१९, पृ०५९
कर	शार्कराक्षि	बह्वृच्	श्रीतत्तानन्दपुर	ए०इ०,१९ पृ ६०
दत्त	भारद्वाज	,,	,,	वही, पृ० ६१
देव	कश्यप	आश्वलायन	,,	वही, ५, पृ० २१२
,,	वार्द्धीनस	कण्व		वही,२७, पृ०१२२
शिव	शार्कराक्षि	बह्वृच्	,,	वही, १९, पृ० ६०
स्वामी	भारद्वाज	वाजसेनय		वही, पृ० १८

गहडवालकालीन नामान्त

गहडवालकालीन (१०५०–१२०० ई०) ब्राह्मण आदित्य, ईश्वर, दत्त, धर, नन्द, पाल, वर्मा, मित्र, शर्मा, सिंह तथा स्वामी उपपद का प्रयोग

१. वार्द्धीनस सगोत्राय यजुर्वेदान्तर्गत काण्व शाखैकदेश आध्ययिने। सोमदेव पौत्राय पुरुषोत्तमदेव पुत्राय। महाराणक श्री वासुदेव शर्म्मणे– ए० इ०, २७, पृ० १२२

२-३. श्रीतत्तानन्दपुरे प्रतिवसमाना (:) श्रीमदा (यं,चातुर्व्वैद्यसामान्याः शार्कराक्षिस गोत्राः (ब) ह्वच स (ब) ह्मचारिणो (णो) …शैवभट्टदीपक पुत्रौ अच्युतशिवौ अस्य अच्युतशिव (स्य) पुत्रो (त्रः)आनंदभट्ट शिवो— ए०इ०, १९, पृ० ६०

४-५. भरद्वाजसगोत्रवाजसनेयसब्रह्मचारिभट्टकाचरस्वाम्यन्वयजब्राह्मणानामान्तरा– वही, पृ० १८

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

करते थे।

आदित्य—चन्द्रदेव के चन्द्रावती दानपत्र (वि० सं० ११५० = १०९३ ई०) से ज्ञात होता है कि त्रिप्रवर से सम्वन्धित मौद्गल ब्राह्मण आदित्य नामान्त का प्रयोग करते थे।[1] जयचन्द के दानपत्र में भी आदित्य नामान्तधारी ब्राह्मण का उल्लेख है।[2]

ईश्वर—चन्द्रदेव के चन्द्रावती दानपत्र से ज्ञात होता है कि सौश्रावस, दक्ष, वसिष्ठ तथा धौम्य गोत्र के ब्राह्मण ईश्वर नामान्त का प्रयोग करते थे।[3] इस अभिलेख में अथर्व चरण के वसिष्ठ, धौम्य, भारद्वाज, कश्यप तथा सांकृत्य गोत्र के ब्राह्मणों को ईश्वर[4] नामान्तधारी बतलाया गया है।

दत्त—चन्द्रावती दानपत्र से ज्ञात होता है कि गौतम ब्राह्मण दत्त[5] उपपद का प्रयोग करते थे, वे ऋग्वेदीय थे।

धर—ऋग्वेदीय काश्यप, पारावस, शौनक, भारद्वाज, कृष्णात्रेय, कौशिक, धौम्य, वशिष्ठ, सार्वर्णि, भार्गव तथा गौतम गोत्र के ब्राह्मण धर उपपदधारी थे, जिनका उल्लेख चन्द्रावती दानपत्र में किया गया है।[6] इससे ज्ञात होता है कि उक्त ब्राह्मण चतुर्वेदीय समुदाय से सम्वन्धित थे।[7] यजुर्वेदीय वसिष्ठ, कश्यप, शार्कराक्षि तथा भारद्वाज गोत्र के ब्राह्मण धर नामान्तधारी थे।[8] गोविन्दचन्द्र के गगहा दानपत्र (वि०सं०११९९=११४३ई०) से ज्ञात होता है कि वत्स गोत्रीय ब्राह्मण धर नामान्त का प्रयोग करते थे।[9] वे यजुर्वेद शाखानुयायी थे।[10] जयचन्द्र के दानपत्र से विदित होता है कि वत्स गोत्र के ब्राह्मण-परिवार में धर उपपद का प्रयोग होता था।[11]

नन्द—जयचन्द्रदेव के लखनऊ संग्रहालय दानपत्र (वि० सं० १२३७ = ११८० ई०) से विदित होता है कि वत्स गोत्रीय ब्राह्मण-परिवार में नन्द उपपद

---

१. ए०इ०, ५, पृ० ११४
२. वही, ४, पृ० १२५
३-८. ए०इ०, १४, पृ० २०२-३
९-१०. वही, १३, पृ० २१९
११. वत्स गोत्राय भार्गव-च्यवनआप्नवान-और्व्व या (जा) मदग्नन्य-इति-य(ज्व) चप्रवराय ठक्कुर-श्रीगंगाधरपौत्राय-श्रीमालाधरपुत्राय राउत - श्रीरविध-राय। ए० इ०, ३५, पृ० २१६

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

का प्रयोग होता था ।[1]

पाल—चन्द्रावती दानपत्र से ज्ञात होता है कि ऋग्वेदीय सार्कर (संभवतः शार्कराक्षि) गोत्र के ब्राह्मण-परिवार में पाल नामान्तधारी थे ।[2] इनका सम्बन्ध चतुर्वेदीय समुदाय से था । इस समुदाय के यजुर्वेदीय धौम्य तथा भारद्वाज गोत्र के ब्राह्मण पाल[3] उपपद का प्रयोग करते थे । गोविन्दचन्द्र तथा महाराजपुत्र आस्फोटचन्द्र के दानपत्र (वि० सं० ११९० = ११३५ ई०) से विदित होता है कि कश्यप गोत्रीय ब्राह्मण-परिवार में पाल उपपद का प्रयोग किया जाता था ।[4]

वर्मा—शांडिल्य ब्राह्मण-परिवार में वर्मा[5] उपपद प्रयोग का ज्ञान चन्द्रावती दानपत्र से होता है । शांडिल्य ब्राह्मण-परिवार में वर्मा उपपद प्रयुक्त होता था । इस गोत्र के ब्राह्मण अथर्व चरण के अध्येता थे ।

मित्र— जयचन्द्र के दानपत्र (वि० सं० १२३३=११७६ ई०) से ज्ञात होता है कि बन्धुल गोत्र का एक ब्राह्मण मित्र नामान्तधारी था ।[6] इस परिवार का सम्बन्ध त्रिप्रवर (अघमर्षण, विश्वामित्र तथा बंधुल) से था ।[7]

शर्मा— गहडवालकालीन बन्धुल गोत्र के ब्राह्मण-परिवार में शर्मा उपपद का प्रयोग होता था । इसका उल्लेख गोविन्दचन्द्रदेव के दानपत्र[8] तथा उनकी रानी नयनकेलि देवी के दानपत्र[9] में किया गया है । इनके अतिरिक्त इस उपपद का उल्लेल गोविन्दचन्द्र तथा जयचन्द्र के दानपत्रों में भी हुआ है ।[10]

---

१. वत्सगोत्राय भार्गवच्यवनआप्नवानं-और्व्व(या) जामदग्न्य-इति-पञ्चप्रवराय पंडित सर्व्वानन्द पौत्राय पंडित-श्रीगोत्रानन्द—वही, २४, पृ० २९५

२-३. ए०इ० १४, पृ० २०२-२०३

४. काश्यपसगोत्राय काश्यपआवत्सार-ने (नै) ध्रव-त्रिप्रवराय-वाजसनेयसा(शा) शिने गुणपाल-प्रपौत्राय लोकपाल पौत्राय-पडित-त्री (श्री)मदनपाल । ए० इ०, ८, पृ० १५६

५. वही, १४, पृ० २०३

६. व (ब) न्धुलगोत्राय ठ। श्री विस्वा (श्वा) मित्राय— — — — ए०इ०, ४,पृ० १२९

७. तत्रैव ।

८. वही, पृ० ११५

९. वही, पृ० १०८

१०. वही, १०१-१२७

 Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

सिंह— गहडवाल दानपत्रों में वत्स, कृष्णात्रेय तथा वसिष्ठ गोत्र के ब्राह्मणों का सिंह उपपद मिलता है। चंद्रावती दानपत्र से विदित होता है कि वत्सगोत्रीय ब्राह्मण सिंह[1] नामान्त धारी था। गोविन्दचन्द्र के दोन बुजुर्ग दानपत्र से ज्ञात होता है कि सामवेदीय वत्स गोत्र का ब्राह्मण सिंह उपपदधारी था।[2] जयचन्द्र के दानपत्र में कृष्णात्रेय गोत्र के ब्राह्मण को सिंह नामान्तधारी बताया गया है।[3] इनके अतिरिक्त वसिष्ठ गोत्रीय भी सिंह उपपद को धारण करते थे।[4] सिंह शर्मन् का उल्लेख विजयचन्द्र के लखनऊ संग्रहालय दानपत्र में भी मिलता है।[5]

स्वामी— चन्द्रदेव के चन्द्रावती दानपत्र से ज्ञात होता है कि ऋग्वेदीय वसिष्ठ, बन्धुल, भारद्वाज, गार्ग्य तथा कौशिक गोत्र के ब्राह्मण स्वामी नामान्त का प्रयोग करते थे।[6] वसिष्ठगोत्रीय ब्राह्मणों में भी यह उपपद प्रचलित था।[7]

गहडवालकालीन नामान्त सूची

उपपद	गोत्र	वेद	शाखा	चरण	वास्तव्य	विनिर्गत	संदर्भ
आदित्य	मौद्गल्य						ए० इ०,५, पृ०११४
,,	वसिष्ठ						वही,९, पृ० ३०५
,,	सांकृत्य	ऋ०					वही, १४,पृ०२०२
,,	सौश्रावस	यजु०					वही, पृ० २०३
,,	दक्ष	,,					वही
,,	वसिष्ठ	,,					वही
,,	धौम्य	,,					वही
,,	वसिष्ठ	अथर्व०					वही
,,	धौम्य	,,					वही
,,	भारद्वाज	,,					वही
,,	काश्यप	,,					वही
,,	सांकृत्य	,,					वही

१. ए०इ० ८पृ०,१५६
२. ए० इ०, १८, पृ० २२२
३. वही, ४, पृ० १२९
४-५. वही, ३४, पृ० २२५
६. वही, १४, पृ० २०२-३
७. वसिष्ठ गोत्राय। वसिष्ठैकप्रवराय अणरुद्ध पौत्राय वर (ा) हस्वामिपुत्राय। ए० इ०, ९, पृ० ३०३

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

उपपद	गोत्र	वेद	शाखा	चरण	वास्तव्य	विनिर्गत	संदर्भ
दत्त	कश्यप	,,					वही
,,	गौतम	ऋ०					वही
धर	काश्यप						ए०इ०, ७, पृ०९९
,,	वत्स						वही, ३५, पृ० २१०, २१३, २१६
,,	श्रीवत्स	यजु०					वही, १३, पृ० २११
,,	वसिष्ठ	,,					वही, १४, पृ० २०२
,,	काश्यप	ऋ०					वही
,,	,,	,,					वही, ५, पृ० ११६
,,	पारावस	,,					वही, १४, पृ० २०२
,,	कौडिल्य	,,					वही
,,	शौनक	,,					वही
,,	भारद्वाज	,,					वही
,,	कृष्णात्रेय	,,					वही
,,	कौसिक	,,					वही
,,	धौम्य	,,					वही
,,	वसिष्ठ	,,					वही
,,	सावर्ण						वही
,,	भार्गव						वही
,,	गौतम						वही
,,	वसिष्ठ	यजु०					वही
धर	कश्यप	यजु०					वही
,,	शार्कराक्षि	,,					वही
,,	भारद्वाज	,,					वही
,,	वसिष्ठ	अथर्व०					वही
,,	कश्यप	,,					वही
,,	सांकृत्य	,,					वही
देव	सार्कवर	,,					वही
,,	कृष्णात्रेय	,,					वही
,,	कात्यायन	,,					वही

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

देव	भारद्वाज		”		वही
”	कृष्णात्रेय		”		वही
”	हारित		”		वही
”	कौण्डिन्य		”		वही
”	मौन्य		”		वही
धर	जीवन्तायन		”		वही
”	कौशिक		”		वही
”	बन्धुल	वाजसनेय	”	सावित्थ	वही,२, पृ०२६०
”	वसिष्ठ		”		वही,३४,पृ०२२५
”	वत्स		”		वही, २४, पृ० २९४-९५
”	काश्यप		यजुर्वेद		वही,१४,पृ०२०२
”	भारद्वाज				वही
”	कृष्णात्रेय		अथर्व		वही
”	वसिष्ठ				वही
”	शांडिल्य		”		वही, १४,पृ०२०२
”	काश्यप	वाजसनेय			वही,८,पृ०१५६
पाल	मौदगल्य				ए०इ०,५,पृ०११४
”	धौम्य		यजु०		वही,१४,पृ०२०२
”	सार्कर		ऋ०		वही
”	भारद्वाज		यजु०		वही
वर्मा	शाण्डिल्य		अथर्व०		वही
मित्र	वन्धुल				वही,४, पृ० १२१
शर्मा	”	वाजसनेय			वही,पृ०११२,१२८
”	वशिष्ठ				वही,३४, पृ०२२५
”	वत्स		यजु०		वही,१३,पृ०२२१
”	वत्स	छंदोग			वही,१३,पृ०२१९
”	वसिष्ठ	”		पाटलिपुत्र	वही,५,पृ०११७-१८
”	काश्यप				वही,१९,पृ०२९५
”	भारद्वाज				वही
”	”				वही,२६,पृ०२७२७३
”	गोभिल				वही, ४, पृ० १११

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

उपपद	गोत्र	वेद	शाखा	चरण	वास्तव्य	विनिर्गत	संदर्भ
,,	वत्स						वही,२४,पृ०२९४-९५
,,	कश्यप		वाजसनेय				वही,८, पृ० १५६
,,	पारावस		शांखायन	बह्वृच			वही,पृ०१५४
,,	वत्सभार्गव (द्विगोत्र)						वही,४,पृ० १३२-३३
,,	कश्यप						वही,८, पृ० १५९
,,	सांकृत्य						वही,३५,पृ०२०८
,,	काश्यप						वही,५,पृ०११६
,,	कृष्णात्रेय			ऋ०			वही,१४, पृ०२०२
,,	भार्गव			अथर्व०			वही
,,	सांकृत्य			,,			वही
शर्मा	भारद्वाज			,,			ए०इ०, १४, पृ० २०२
,,	काश्यप			,,			वही ।
	वत्स						ए०इ०,१४,पृ०२२२
,,	कृष्णात्रेय						वही,४, पृ० १२९
,,	वत्स	छंदोग					वही,१८,पृ०२२२
सिंह	वशिष्ठ						वही,३४,पृ०[illegible]२५
स्वामी	,,			ऋ०			वही,९ पृ०३०५
,,	बन्धुल			,,			वही, ९,पृ० २०२
,,	भारद्वाज			,,			वही
,,	गार्ग्य			,,			वही
,,	कौशिक			,,			वही
नन्द	बन्धुल	यजु०	वाजसनेय			सावित्र	ए०इ०,२, पृ०३६०
,,	वसिष्ठ						वही,३,४, पृ०२२५
,,	कात्यप			,,			वही,१४,पृ०२०२

State Museum Library Lucknow 7146

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

चौथा अध्याय

उपाधि

पूर्व-मध्यकाल के पहले किसी साहित्य या अन्य साक्ष्य से ब्राह्मण उपाधियों के सम्बन्ध में सूचना नहीं मिलती हैं । मात्र गुप्त शासक स्कन्दगुप्त के इन्दौर दानपत्र (वर्ष १४६=४६५-४६६ ई०) में चंद्रपुरक (आगरा का आधुनिक चंदरपुर जहां आजकल भी चतुर्वेदी ब्राह्मण रहते हैं) में स्थित पद्मा को चतुर्वेदी ब्राह्मणों का सुविख्यात केन्द्र बताया गया है ।[1] उक्त दानपत्र में उल्लिखित वार्षगण गोत्रीय ब्राह्मण चतुर्वेदी उपाधि धारण करते थे ।[2] पूर्व-मध्ययुगीन उत्तर भारत के विभिन्न प्रादेशिक ब्राह्मण-परिवारों में नाम के पूर्व समान उपाधियों को दो-दो तथा चार-चार पीढ़ियों तक धारण करने की परम्परा थी । कतिपय उपाधियाँ ऐसी भी थीं, जो आवश्यक नही था कि सर्वत्र नाम के पूर्व प्रयुक्त की जाती थीं, जैसा कुछ अभिलेखों में यत्र-तत्र चतुर्वेदी या त्रिवेदी समुदाय के भिन्न-भिन्न गोत्र के ब्राह्मणों का सम्बन्ध उट्टंकित है ।[3] इससे यह तात्पर्य लगाया जाता है कि अमुक स्थान या केन्द्र के अमुक गोत्र के ब्राह्मण चतुर्वेदी या त्रिवेदी समुदाय के थे यानी दूसरे शब्दों में वे वास्तव में चतुर्वेदी या त्रिवेदी उपाधिधारी ब्राह्मण थे ।

पूर्व-मध्ययुगीन ब्राह्मण-परिवारों में प्रायः अधोलिखित उपाधियाँ प्रचलित थीं, यथा—

१-२. चंदपुरक-पद्मा चातुर्विद्य-सामान्यब्राह्मण देवविष्णुर=देव-पुत्रो-हरित्रात-पौत्रः डुडिक-प्रपौत्रः सतत-आग्निहोत्र-(च) छन्दोगो राणायणी (नी) यो वार्षगण सगोत्र —फ्लीट, जान फेथफुल—कार्पस, ३, पृ० ७०

३. अहर प्रस्तर अभिलेख, ए० इ०, १९, पृ० ५९-६१ – गुर्जर दद्द द्वितीय का कैरा दानपत्र, मिराशी, कार्पस, ४, १, पृ० ६२; गुजरात के गोविन्दराजकालीन तोर्खेद ताम्रपत्र, ए० इ०, ३, पृ० ५५-५६

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

१. वेद आदि के अध्ययन के आधार पर पंडित, भट्ट, द्विवेदी, त्रिवेदी, चतुर्वेदी, श्रोत्रिय आदि उपाधियाँ ब्राह्मण-परिवारों में धारण की जाती थीं।

२. यजमानी, पुरोहिती या यज्ञादि कृत्यों को सम्पादित करने या कराने के कारण पुरोहित,गुरु,दीक्षित, अवस्थी,अग्निहोत्री, महामख, यज्वन्, ऋत्विक् आदि उपाधियाँ थीं।

३. ज्योतिष तथा अध्यापन से सम्बन्धित उपाधियाँ देवज्ञ, ज्योतिषी या पुरोधा, अध्यापक, उपाध्याय, महोपाध्याय, आचार्य, पाठक, नीति-पाठक आदि।

४. प्रशासनिक तथा राजनयिक उपाधियाँ—सेनापति, महत्तर, महा-महत्तर, राजपुरोहित, राजगुरु, धर्माधिकारी, राजपुरुष, दूतक, अमात्य, मंत्री, सान्धि विग्रहिक, शांत्यागारिक आदि।

५. सामंतवादी उपाधियां, यथा ठक्कुर, रौत, राउत, भोगिक, पंचकुल या पंचकल्पी आदि।

६. कतिपय विशेष उपाधियाँ—प्राणाचार्य, भट्ट, पंडित, मिश्र आदि।

उपर्युक्त उपाधियों में से कतिपय प्रमुख उपाधियों का अर्थ स्पष्ट करना यहाँ आवश्यक है, यथा—

भट्ट— भट्ट शब्द का अर्थ विद्वान् या किसी विषय में निष्णात है। वास्तव में भट्ट का अर्थ विद्वान् से होता है[1] जैसा कि आजकल 'प्रोफेसर' शब्द प्रयुक्त होता है। बाद में यह पारिवारिक नाम के रूप में प्रचलित हुआ। भट्ट हमेशा ब्राह्मण नामों के साथ प्रयुक्त हुआ है और यह भी ज्ञात है कि ब्राह्मण शूरू से ही उच्चकोटि के विद्वान् गिने जाते रहे हैं। इस उपाधि का प्रचलन उत्तर भारत के अधिकाँश ब्राह्मण-परिवारों में था। कतिपय दानपत्रों में भट्टपुत्र उपाधि का भी उल्लेख मिलता है। यह उस ब्राह्मण के लिए है जो विद्वान् पिता का पुत्र हो।[2]

चतुर्वेदी—यह उपाधि उस व्यक्ति या ब्राह्मण के लिए होती थी, जो चारों वेदों—ऋक्, साम, यजु० तथा अथर्व में निष्णात हो। इस प्रकार का उल्लेख

१-२. सरकार, डी० सी० इंडियन एपिग्राफिकल ग्लासरी, पृ० ५३

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

चरणव्यूह में हुआ है।[1] यह उपाधि गुप्तकालीन उपाधि में भी उट्टंकित है।[2] वाराणसी के निकट राजघाट के उत्खनन से एक मुद्रा उपलब्ध हुई है। इस मुद्रा पर नन्दी का चित्र है और उसके नीचे 'चातुर्विद्यस्य' अंकित है। डा० वासुदेवशरण अग्रवाल के मतानुसार यह एक संस्था थी जहाँ पर चारों वेदों का अध्ययन होता था।[3] पुनः इस शब्द का उल्लेख वाकाटक के अभिलेख में मिलता है।[4] चतुर्वेदी का उल्लेख पुराणों में भी आया है।[5] चतुर्वेदी का उल्लेख गुर्जर नरेश दद्द द्वितीय के बागुमार (नवसारी) ताम्रपत्र[6] (शक०सं० ४१५ चंदेलों,[7] गहडवालों[8] तथा परमारों[9] के अभिलेखों तथा अन्य अभिलेखों में भी हुआ है। ऐसा ज्ञात होता है कि एकादश शताब्दि तक 'चतुर्वेदी' केवल अलग-अलग ब्राह्मणों की उपाधि थी, जो सम्भवतः स्वाध्याय द्वारा उपार्जित की जाती थी। कुछ अभिलेख ऐसे हैं जिनमें पितामह, पिता और पुत्र के लिए विभिन्न उपाधियों का प्रयोग किया गया है। अतः यह उपाधि स्वाध्याय से प्राप्त की जाती थी, परन्तु बारहवीं शताब्दी के पश्चात् इस उपाधि का प्रयोग वंशानुगत रूप में किया जाने लगा। यह आवश्यक नहीं था कि चारों वेदों का ज्ञाता ही चतुर्वेदी कहा जाय। पिता या पुत्र भी चतुर्वेदी कहा जाने लगा। अभिलेखों में पितामह के पश्चात् पिता तथा पिता के पश्चात् पुत्र द्वारा इस उपाधि के ग्रहण किये जाने का उल्लेख हुआ है।

इसी प्रकार तीन या दो वेद का अध्ययन करने के कारण त्रिवेदी, त्रिपाठी या द्विवेदी उपाधिधारी ब्राह्मण पुकारे जाने लगे।

दीक्षित—दीक्षा कार्य में व्यस्त पुरोहित को दीक्षित का जाता है।[10] दीक्षित उस पुरुष को भी कहा जाता है, जिसने या जिसके पूर्व-पुरुषों ने ज्योतिष्टोम जैसे बृहद् यज्ञों का अनुष्ठान किया हो[11]। अरबी इतिहासकार अलबेरुनी का मत है कि अगर ब्राह्मण हवन करता था या अग्नि में एक विशिष्ट प्रकार की आहुति

---

१. चरणव्यूह, १,पृ० ५
२. स्कन्दपुर का इन्दौर अभिलेख-सरकार—सेलेक्ट इन्सक्रीप्सन्स, पृ० ३१०
३. ज० न्यू० सो०, इ०, २३ (गोल्डेन ज्यूबिली वाल्यूम), पृ० ४१०
४. प्रभावती गुप्ता का पूना अभिलेख—सरकार—सेलेक्ट इन्सक्रीप्सन्स, पृ०४१२
५. चतुर्वेदीय भवेद्विप्रो वेदवेदाङ्गपारगः—ब्रह्मपुराण, अध्याय ५६, श्लोक ७७
६. ए० इ०, १८, पृ० १९९
७. परमर्दिदेव का सेमरा ताम्रपत्र, ए० इ०, ४, पृ० १५७
८. ए० इ०, ४, पृ० १२४
९. देवपाल का मांधाता ताम्रपत्र, ए० इ०, ९, १०८
१०-११. आप्टे, संस्कृत हिन्दी कोश, पृ० ४६०

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

देता था तब वह 'दीक्षित' कहलाता था ।[1] आगे दीक्षित उपाधिधारी अनेक ब्राह्मणों का उल्लेख इस अध्याय में किया गया है ।

आचार्य, उपाध्याय, गुरु, ऋत्विक्—मनुस्मृति से ज्ञात होता हैं कि जो ब्राह्मण शिष्य को यज्ञोपवीत देकर यज्ञविधि और उपनिषद् के सहित वेदों को पढ़ाता है उसको आचार्य कहते हैं ।[2] जो जीविका के लिये वेद का एक देश (मंत्र या ब्राह्मण) अथवा वेदांग पढ़ाता है, वह उपाध्याय कहलाता है ।[3] जो ब्राह्मण गर्भाधान से लेकर अन्त तक जीवन के समस्त संस्कारों को विधिपूर्वक कराके अन्न से विद्यार्थी को पालता है, वह गुरु कहा जाता है[4]। याज्ञवल्क्य स्मृति में प्रायः ऐसा ही उल्लिखित है कि ऋत्विक् से उपाध्याय, उपाध्याय से आचार्य, आचार्य से गुरु और गुरु से माता अधिक माननीय है ।[5] स्यासस्मृति से अवगत होता है कि जो ब्राह्मण अग्निहोत्री और तपस्वी हैं और यज्ञविधि तथा उपनिषद् के सहित वेदों को पढ़ाता है वह आचार्य कहलाता है ।[6] शंखस्मृति में यह उल्लेख किया गया है कि जो ब्राह्मण गर्भाधान आदि संस्कार करके वेदों को पढ़ाता है, उसको गुरु और जो द्रव्य लेकर पढ़ाता है उसको उपाध्याय कहते हैं ।[7]

अवस्थी—अवस्थी उस ब्राह्मण को कहा जाता है जो नियमितरूप से आवसथिक होम या हवन किया हो ।[8] अलबेरुनी का कथन है कि वे ब्राह्मण जो एक अग्नि रखते थे 'इष्टिन्' कहलाते थे और जो दो अग्नि रखते थे वे अग्निहोत्री कहलाते थे ।[9]

---

१. सचाऊ, भाग १, पृ० १०२
२. उपनीय तु यः शिष्यं वेदमध्यापयेद्द्विजः ।
संकल्पं सरहस्यं च तमाचार्यं प्रवक्षते ।। मनुस्मृति, २/१४०
३. एकदेशं तु वेदस्य वेदांगान्यपि वा पुनः ।
योऽध्यापयति वृत्यर्थमुपाध्यायः स उच्यते ।।—वही, २/१४१
४. निषेकादीनि कर्माणि यः करोति यथाविधि ।
संभावयति चान्नेन स विप्रो गुरुरुच्यते ।। – वही
५. याज्ञवल्क्य स्मृति, अ० १, श्लोक ३४-३५
६. व्यासस्मृति, ४/४३
७. शंखस्मृति, ३/२,
८. सरकार, इ० ए० ग्लो०, पृ० ४०
९. सचाऊ, भाग १, पृ० १०२

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

पुरोहित–महापुरोहित– सर्वाधिक रूप से पुरोहित को यजमानी कृत्यों को विधिवत् वेदादिक नियमों के अनुसार संपादित कराने पड़ते थे । पूजा–पाठ से सम्बन्धित कार्यों को पुरोहित किया करता था । बलिदान कराना, होम या हवनादिक कृत्य करना, वेदों का पारायण करना, राजा के सुखी जीवन के लिए ईश्वर से प्रार्थना करना इत्यादि को पुरोहित अपना कर्तव्य मानता था । प्राचीन धार्मिक नियमों के अनुसार वही व्यक्ति पुरोहित चुना जाता था जो तपस्या करने, अनुष्ठान करने, इतिहास, धर्मशास्त्र, ज्योतिषशास्त्र तथा यज्ञ की विविध पद्धतियों को जानने, वेदों का ज्ञान तथा धार्मिक कार्यों को पूर्ण करने की कुशलता रखता हो ।

महत्तर, महत्तक और महामहत्तक– स्टीन केनो के अनुसार महत्तर का अर्थ राजमहल का प्रधान कर्मचारी है । गांव या परिवार के मुखिया, परिवार या समूह के प्रधान अथवा ग्राम पंचायत के सदस्य को महत्तर कहा जाता था ।[1] यत्र-तत्र हिन्दी में महतो तथा गुजराती में मेहता शब्द का प्रयोग होता है ।[2] ऐसा विदित होता है कि महत्तक तथा महामहत्तर (विशिष्ट प्रधान सदस्य या प्रधान कर्मचारी) महत्तर से बना है ।[3] आप्टे ने महत्तर का अर्थ प्रधान, मुख्य या सबसे बड़ा व्यक्ति अर्थात् सम्माननीय पुरुष, कंचुकी, राजभवन का महाप्रतिहार, दरबारी अथवा गांव का मुखिया बताया है ।[4]

पंचकुलि– मिराशी के अनुसार किसी देवालय के लिए गांव, जमीन, कर-वसूली आदि का अधिकार देते समय यह पद्धति बन गयी थी कि उसकी व्यवस्था के लिए पांच अथवा इससे अधिक सदस्यों की कमेटी नियुक्त की जाय और वही उसका सारा काम-काज देखे । इस पंचकुल को न्याय–दान के अधिकार भी थे ।[5] पंचकुल के सदस्य 'महत्तर' (प्राकृत में महल्लक) कहलाते थे। वे नगर अथवा ग्राम की जनता द्वारा चुने जाते थे । प्रमुख सदस्य 'महत्तम' कहलाता था । स्मृतियों में यह बताया गया है कि 'महत्तम' में कौन से गुण आवश्यक हैं । उसमें कहा गया है कि महत्तम को आदर्श, धर्मज्ञ, इन्द्रि-

---

१-२. स्टीन कोनो (अनुवादक) राजतरंगिणी, ८, पृ० ६५९, सरकार, इ० ए०, ग्लो०, पृ० १९१

३. वही, नोट—दशकुमार चरित पृ० ७७ में जनपद- महत्तर का उल्लेख मिलता है ।

४. आप्टे, संस्कृत हिन्दी कोश, पृ० ७८३

५. मिराशी, वामन विष्णु, कलचुरि नरेश और उनका काल, पृ० ५७

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

यनिग्रही और कुलीन होना चाहिए । शिलालेखों में महत्तम को 'पांच कुलिक' कहा गया है । उनका महापांचकुलिक राजधानी में रहता था ।[1]

ठक्कुर या महाठक्कुर– आप्टे के अनुसार ठक्कुर पूज्य व्यक्ति के नाम के साथ लगने वाली सम्मानसूचक उपाधि होती है ।[2] ठक्कुर शब्द का अर्थ गांव का प्रधान, सामंत या जमींदार या जागीरदार लगाया जाता है ।[3] ऐसा विदित होता है कि इन जागीरदारों या जमींदारों से यह आशा की जाती थी कि ये अपनी शक्ति के द्वारा अपनी संपत्ति की रक्षा करें और चूंकि इन जमींदारों तथा जागीरदारों में से कुछ क्षत्रिय भी होते थे । अतः ठक्कुर शब्द राजपूतों तथा क्षत्रियों का पर्यायवाची हो गया । यही कारण है कि गुजरात में ठाकोर जागीरदार के अतिरिक्त ठाकोरदास कहा जाने वाला व्यक्ति राजपूत समझा जाता है । अगर जाति के आधार पर यह सिद्धान्त अपनाया जाय कि ठक्कुर कहा जाने वाला व्यक्ति क्षत्रिय या राजपूत ही होगा तो प्रस्तुत अध्याय में वर्णित ठक्कुर उपाधिधारी व्यक्ति क्षत्रिय समझे जाने चाहिए, जबकि ऐसी बात नहीं मिलती । संभवतः यह हो सकता है कि जो ब्राह्मण भूमि-कर्षण में लग गये थे वे अपनी भूमि के मालिक समझे जाते थे । अतः उन्हें ठक्कुर कहा जाने लगा । इससे स्पष्ट ज्ञात होता है कि भूमि का अधिकारी चाहे वह ब्राह्मण हो या क्षत्रिय उन्हें 'ठक्कुर' कहा जाता था । इसी प्रकार महाठक्कुर ठक्कुर से बड़ी उपाधि या विशिष्ट उपाधि हो सकती है ।

रौत राउत–रौत शब्द राजपूत से बना है ।[4] ऐसा ज्ञात होता है कि राउत या रावत भी इसी से बना है ।[5] यह सामन्तवादी शासक के लिये या राजपुरुष के लिए प्रयुक्त होता था ।[6]

मिश्र– प्रायः यह शब्द बड़े-बड़े पुरुषों और विद्वानों के नामों से पूर्व लगाया जाता है । यह आदरणीय या योग्य व्यक्ति के लिए प्रयुक्त होता है ।[7] मालविकाग्निमित्र में 'आर्यमिश्राः प्रमाणम्'–उल्लिखित है ।[8] ऐसा विदित होता

१. मिराशी, कलचरि नरेश और उनका काल पृ० ५८

२. आप्टे, सं० हि० कोश, पृ० ४१३

३. सरकार, इ० ए० ग्ला०, पृ० ३४० ;
राजतरंगिणी, ७, पृ० २९०, ७०६, ७३८

४-६. सरकार, इ० ए० ग्ला०, पृ० २७९

७-८. आप्टे, सं० हि० को०, पृ० ८०१

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

है कि संस्कृत नाटकों में इसका अर्थ 'पूज्य' के रूप में लिया गया है। भास के लगभग सभी नाटकों में यह शब्द सूत्रधार द्वारा तथा 'आर्यमिश्रान् विज्ञापयामि' कहलाया गया है।[१] ऐसा अवगत होता है कि यहाँ निश्चित रूप से इसका अर्थ पूज्य से लिया गया है। संस्कृत नाटकों में इसका उल्लेख इसकी प्राचीनता को प्रकट करता है।[२] शंकराचार्य के शास्त्रार्थ–प्रतिस्पर्धी मंडन की उपाधि भी मिश्र ही थी।

उपर्युक्त तथ्यों को देखने से ब्राह्मण–उपाधियों का अध्ययन आवश्यक तथा विशेषरूप से महत्वपूर्ण और रुचिकर प्रतीत होता है। प्रस्तुत अध्याय में विभिन्न प्रदेशों के ब्राह्मण–परिवारों में प्रचलित उपाधियों का उल्लेख पूर्व-मध्य युगीन विभिन्न राजवंशों के दानपत्रों में उट्टंकित तथ्यों की सहायता से किया गया है।

वलभी

मैत्रककालीन बलभी के ब्राह्मणों की उपाधियाँ–

मैत्रककालीन दानपत्रों में ब्राह्मणों की दो उपाधियाँ भट्ट तथा दीक्षित उल्लिखित हैं।

भट्ट– भट्ट उपाधि श्री आनन्दपुरवासी शार्कराक्षि गोत्र के चतुर्वेदी ब्राह्मण-परिवार में दो पीढ़ियों तक प्रचलित थी जिसका उल्लेख शिलादित्य सप्तम के अलिन ताम्रपत्र (व० सं० ४४७=७६६ ई०) में किया गया है।[२]

दीक्षित

दीक्षित उपाधिधारी चतुर्वेदी कौशिक गोत्र के ब्राह्मण शिलादित्य तृतीय के समय बलभी में निवास करते थे, जिनके सम्बन्ध में सूचनार्थ जेसर के दानपत्र (व सं० ३४७=६७६ ई०), व (व०सं० ३५७=६७६ ई०) ध्यातव्य हैं।[3] इसमे इनके पूर्वजों के आद्य स्थान पुष्यसाम्बपुर का भी उल्लेख मिलता है।[४]

---

१. स्वप्नवासवदत्ता, (प्रथम अंक) अभिषेक नाटकम्-पंचरात्रम्, दूतवाक्यम्, उरुभङ्गम् इत्यादि।

२. श्रीमद् आनन्दपुरवास्तव्य तच्चातुर्विद्य सामान्य श(ा)र्कराक्षि सगोत्र (त्र) बह्वृच स ब्रह्मचारि-भट्ट-आखंडलमित्राय(य) भट्ट विष्णु-पुत्राय। कार्पस, ३, पृ० १७९

३-४. ए० इ०, २१, पृ० २१०; वही, २२, पृ० ११९

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

मध्यदेश

वर्द्धन तथा प्रतिहारकालीन ब्राह्मणों की उपाधि

भट्ट– वर्द्धन तथा प्रतिहार वंशीय राजाओं के समय में ब्राह्मणों की एक विशिष्ट उपाधि भट्ट थी, जो मुख्यतः विद्वत्तासूचक उपाधि रही है। हर्षकालीन वांसखेरा तथा मधुवन से प्राप्त दानपत्रों से ज्ञात होता है कि भारद्वाज[1] तथा सावर्ण[2] गोत्र के ब्राह्मणों में भट्ट उपाधि का प्रयोग नाम के लिए किया जाता था। इस तथ्य की पुष्टि भोजदेव कालीन बराह तथा अहर दानपत्रों से भी होती है। अहर दानपत्र से प्रमाणित होता है कि तत्तानन्दपुर के भारद्वाज[3] तथा शार्करक्षि[4] गोत्रीय ब्राह्मणों (श्रेष्ठ चतुर्वेदी ब्राह्मण) में यह उपाधि परम्परागत रूप से प्रयुक्त होती थी।

कलचुरिकालीन ब्राह्मणों की उपाधि

कलचुरि सोढ़देव के कहला दानपत्र से विदित होता है कि सरयूपार के विभिन्न ब्राह्मण–परिवारों में अनुलिखित उपाधियाँ नामों के पूर्व प्रयुक्त होती थी।

पंडित– सरयूपारीण ब्राह्मण पंडित उपाधि का प्रयोग परम्परागत रूप से किया करते थे। महुआली (गोरखपुर-धुरियापार) के काश्यप ब्राह्मण[5] परिवार में दो पीढ़ियों तक यह उपाधि प्रचलित थी। ताली निवासी सावर्णि गोत्र के ब्राह्मण पंडित उपाधि को दो पीढ़ियों तक प्रयोग किये थे।[6] कुलांची के शांडिल्य ब्राह्मणों में भी यह उपाधि प्रचलित थी।[7] इस प्रदेश के निवासी नागर ब्राह्मणो में उक्त उपाधि को दो पीढ़ियों तक धारण किया गया था।[8] कटौघनग्राम के राहुल गोत्रीय ब्राह्मण भी इस उपाधि का प्रयोग करते थे।[9]

१-२. भरद्वाज सगोत्र बह्वृचच्छन्दोग सब्रह्मचारि भट्टबालचन्द्र–ए०इ०,४, पृ०२११
सावर्णिसगोत्रच्छोग सब्रह्मचारि भट्टवात स्वामि। तत्रैव १, पृ० १३

३. श्रीतत्तानन्दपुरे प्रतिवसमान श्रीमदार्यचातुर्वेद्यसामान्य भारद्वाज सगोत्र व (ब)ह्वृचसब्र(ब)ह्मचारी भट्ट इ (ई) शानदत्त(त्त)भट्ट के शव पुत्र वही, १९, पृ० ६१

४. श्रीतत्तानन्दपुरे प्रतिवसमाना(:)श्रीमदा(र्य)चातुर्व्वेद्य सामान्याः शार्कराक्षिसगोत्राः व(ब)ह्वृचस(ब्र)ह्मचारिणा(णो)भट्टदिवाकर भट्टतारागणपुत्र तथा सैव भट्टदीयाक - वही, पृ० ६०

५. कार्पस, ४, २ पृ० ३९०

६-९. वही, पृ० ३९१

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

दीक्षित—दीक्षित उपाधि का दो-दो पीढ़ियों तक प्रयोग करने वाले धौम्र गोत्र के ब्राह्मण थे जो माथुर (मथुरा मूल स्थान) भी कहे जाते थे।[1] इस उपाधि को धारण करने की परम्परा हस्तिग्राम के पराशर गोत्रीय ब्राह्मणों में भी थी।[2]

इस ग्राम के एक ही पराशर गोत्रीय ब्राह्मण–परिवार में पिता-पुत्र की अलग-अलग उपाधि है यथा दीक्षित श्रीधर के पुत्र अग्निहोत्री भास्कर।[3] इससे यह संकेत मिलता है कि कतिपय ब्राह्मण–परिवारों में निश्चित रूप से किसी विशेष उपाधि को परम्परागत रूप में पालन करना आवश्यक नहीं समझा जाता था।

अग्निहोत्री– निखती ग्राम के कौशिक ब्राह्मण–परिवार में भी दो-दो उपाधियाँ प्रयुक्त की जाती थीं। यथा दीक्षित देवेश्वर का पुत्र अग्निहोत्री बाह्यट था। इससे भी उक्त तथ्य की पुष्टि होती है।[4]

द्विवेदी– ऐसा विदित होता है कि माथुर धौम्र गोत्रीय ब्राह्मण-परिवार में नाम के पूर्व द्विवेदी उपाधि धारण की जाती थी।[5]

भट्ट– उक्त दानपत्र से यह भी प्रमाणित होता है कि दो पीढ़ियों तक भट्ट उपाधिधारी भारद्वाज ब्राह्मण थे, जो कहला ग्राम (गोरखपुर-धुरियापार परगना) के निवासी थे।[6]

गहड़वालकालीन ब्राह्मण उपाधियाँ

गहडवाल राजाओं के शासनकाल में अनेक प्रकार की ब्राह्मण–उपाधियाँ प्रचलित थीं।

पंडित– पंडित उपाधि को परम्परागत रूप से तीन-तीन पीढ़ियों तक धारण करने की प्रथा वत्स,[7] पारावस[8] तथा कश्यप[9] गोत्रों के ब्राह्मण-परिवारों

१-२. कार्पस ४/२, पृ० ३९०

३. कार्पस, ४/२, पृ० ३९०

४-६. वही

७. वत्सगोत्राय भार्गव-च्यवन-आप्नवान-और्व-या (जा) मदग्न्य इति–पंच प्रवरया पंडित श्री-सर्व्वानन्द पौत्राय पंडित-श्री गोत्रानन्दपुत्राय पंडित श्री-ब्र-(ब्रा) ह्मणाय —जयचन्द्र देव का लखनऊ संग्रहालय, दानपत्र, ए० इ०, २४, पृ० २९४-९५

८. वही, ८ पृ० १५८

९. वही, ८, पृ० १५६; वही, ५, पृ० ११६

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

में प्रचलित थी, जिससे प्रतीत होता है कि यह उपाधि परम्परागत रूप से धारण की जाती थी।

भट्ट— भट्ट उपाधि का प्रचलन गोविन्दचन्द्रकालीन वत्स,[1] भारद्वाज[2] तथा पाराशर[3] गोत्र के ब्राह्मणों में थी। जयचन्द्र के दानपत्र (वि० सं० १२३३=११७६ ई०) में वन्धुल तथा कृष्णात्रेय गोत्रीय अनेक ब्राह्मणों को भट्ट उपाधिधारी कहा गया है।[4]

तिवाडी (त्रिपाठी)— एक प्रसंग में तिवाडी उपाधि तीन पीढ़ियों तक सांकृत्य गोत्र के ब्राह्मण-परिवार में प्रयुक्त है।[5] तिवाडी, त्रिपाठी या त्रिवेदी का विकृत रूप है। ऐसा विदित होता है कि उक्त गोत्र के ब्राह्मण पहले तीन-तीन वेदों के अध्येता थे।

ठक्कुर— ठक्कुर या ठाकुर उपाधि को धारण करने की परम्परा अनेक ब्राह्मणों के परिवारों में प्रचलित थी। गौविन्दचन्द्रकालीन दानपत्रों में वसिष्ठ,[6] काश्यप,[7] श्रीवत्स,[8] भारद्वाज,[9] मौद्गल्य[10] तथा शांडिल्य[11] गोत्रों के ब्राह्मण-परिवारों में चार-चार पीढ़ियों तक ठक्कुर या ठ उपाधि धारण करने का उल्लेख मिलता है। वत्स-भार्गव (द्विगोत्र) गोत्र के ब्राह्मण भी इसका प्रयोग करते थे।[12] ठक्कुर शब्द का प्रयोग ग्राम के प्रधान, जमीदार या जागीरदार के अर्थ में होता था।

---

१. द्रौणायणषडीयगच्छ (त्स) गोत्राय भार्गव चयवना (न) अर्य (और्व) जामदग्न्य (द) ग्न्यआप्नवान प (पं) च प्रवराय छ (ां) दोग सा (शा) खिने। भट्टश्री नरसिंह प्रपौत्राय भट्टश्री जगन्ता पौत्राय श्रीपून्तपुत्राय भट्टश्री टुल्टाइचश्च (श) र्मणे ए०इ०, १८, पृ० २२२
२. वही, १६, पृ० २७३
३. वही, १३, पृ० १५४
४. वही, ४, पृ० १२९
५. वही, ३५, पृ० २०८
६. वही, ३४, पृ० २२५
७. वही, १०, पृ० ९८-९९
८. वही, १३, पृ० २१९, वही, ३५, पृ० २१०, २१६
९. वही, ८, पृ० १५३
१०. वही, ५, पृ० ११४
११. वही, १३, पृ० २९७
१२. वही, ४, पृ० १३२

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

ऐसा ज्ञात होता है कि इन जमीदारों तथा जागीरदारों में से कुछ क्षत्रिय भी होते थे। आज भी उत्तर प्रदेश के ग्रामों में अधिकांश क्षत्रिय–नामों के पूर्व ठाकुर (ठक्कुर से बना है) उपाधि प्रचलन में है। किन्तु अधिकांशतः क्षत्रिय ही जमीदार थे, अतः ठक्कुर शब्द राजपूतों या क्षत्रियों का पर्यायवाची हो गया। बिहार के मैथिल ब्राह्मण भी ठाकुर उपाधि ग्रहण करते थे।

ऐसा संकेत मिलता है कि गहडवालकालीन अधिकांश भूमिदान ग्रहीता ब्राह्मण भूमि को जोतने लगे तथा इस प्रकार वे भूमि के स्वामी या जमीदार या ठक्कुर हो गये।

रौत– दो-तीन पीढ़ियों तक रौत उपाधि को धारण करने की परम्परा बन्धुल,[1] वत्स[2] तथा गोभिल[3] गोत्रीय ब्राह्मणों में थी, जिसका उल्लेख गोविन्द-चन्द्र तथा जयचन्द्र (द्वादश शताब्दी उत्तरार्द्ध) के दानपत्रों में मिलता है। रौत उपाधि सामन्त, राजपुरुष या राजदरबारी लोग धारण करते थे। ऐसा प्रतीत होता है कि उक्त गोत्र के ब्राह्मणों को गहडवाल राजाओं के काल में सम्मानित स्थान प्राप्त था।

दीक्षित– अनेक गहडवालकालीन दानपत्रों से प्रमाणित होता है कि तीन-चार पीढ़ियों तक दीक्षित उपाधिधारी बन्धुल गोत्रीय ब्राह्मण थे। गोविन्दचन्द्र के बनारस दानपत्र में पितामह, पिता तथा पुत्र के नामों के पूर्व दीक्षित उपाधि का उल्लेख है।[4] इससे यह भी ज्ञात होता है कि इनके पूर्वज साविथ देश (श्रावस्ती?) से निर्गत हुए थे।[5] उक्त शासक के अन्य अनेक दानपत्रों में भी बन्धुल गोत्रियों को दीक्षित उपाधिधारी बताया गया है।[6] इस उपाधि को धारण करने वाले उक्त गोत्र के ब्राह्मणों का उल्लेख जयचन्द्र तथा विजयचन्द्र के दानपत्रों (वि० सं० १२२८=११७१ ई०), (सं० १२२४=११६७ ई०)

१. ए० इ०, ४, पृ० १६१-१७
२. वही, ३५, पृ० २१६
३. वही, ४, पृ० १११
४-५. साविथ देशनिर्गताय वाजसनेय साखो मृगाय बंधुल गोत्राय बंधुल अधमर्षण विश्वामित्रत्रिप्रवराय दीक्षित नागानद पौत्राय दीक्षित पुरवास पुत्राय यजुर्वेद—विद्यानलिनीविकासनप्रत्क्ष भास्कराय दीक्षित नील्हकाय। —वही,२, पृ० ३६०
६. वही, ४, पृ० १०२-२०; वही, २६, पृ०७३

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

में भी मिलता है।[1]

महादीक्षित उपाधिधारी बन्धुल गोत्रीय ब्राह्मण भी जयचन्द्र के समय में थे।[2]

पुरोहित और महापुरोहित—सर्वाधिक संख्या में पुरोहित और महापुरोहित के पद पर काम करने वाले बन्धुल गोत्रीय ब्राह्मण थे, जो गोविन्दचन्द्र तथा जयचन्द्र के काल में अपना प्रभाव स्थापित किये थे।[3] ऐसा विदित होता है कि इस प्रकार के पदों को दो-तीन पीढ़ियों तक प्रयुक्त किया गया था। राज पुरोहित या महापुरोहित का पद राज्य के विशिष्ट पदों में स्थान रखता था। जयचन्द्र के दानपत्र (वि० सं० १२२६ = ११६९ ई०) में उल्लिखित राजगुरु महापुरोहित प्रह्लाद का नाम ध्यातव्य है, जो बन्धुलगोत्रीय ब्राह्मण था।[4] वत्स ब्राह्मण-परिवार में रौत तथा ठक्कुर उपाधि का प्रयोग किया जाता था, जिसका उल्लेख जयचन्द्र के दानपत्र (वि० सं० १२३३ = ११७६ ई०) में हुआ है। गोविन्दचन्द्र के दानपत्रों (वि० सं० १२११ = ११५४ ई०, वि०सं० ११९० = ११३३ ई०) में वत्स तथा गोभिल गोत्र के ब्राह्मण-परिवारों का उल्लेख है। वत्स ब्राह्मण-परिवार में रौत तथा दीक्षित उपाधि को नाम के पूर्व धारण किया जाता था।[5] गोभिल गोत्रीय ब्राह्मण के परिवार में रौत तथा ठक्कुर उपाधि प्रयुक्त होती थी।[6] उक्त प्रकार की उपाधियों से यह संकेत मिलता है कि कतिपय ब्राह्मण-परिवारों में यह आवश्यक नहीं था कि एक ही उपाधि परम्परागत और निश्चित समझकर ब्राह्मण नाम के साथ धारण की जाय। पुत्र पिता की उपाधि को छोड़कर स्वेच्छया दूसरी उपाधि धारण कर सकता था।

प्राणाचार्य-भट्ट-पंडित—गोविन्दचन्द्र के दानपत्र (वि०सं० ११८७ = ११३० ई०) से विदित होता है कि पराशर गोत्रीय ब्राह्मण-परिवार में एक साथ तीन-

---

१. वही, ४, पृ० १२२-२३; ११९-२०
२. वही, पृ० १२७-२८
३. वही, ४, पृ० १०६, १०८-९, १२१, १२४; वही, २, पृ० ३६२
४. वही, ४, पृ० १२१
५. वही, पृ० ११६-१७
६. वही ४, पृ० १११

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

तीन उपाधि ब्राह्मण–नामों के पूर्व चार पीढ़ियों तक धारण की गई थी।[1]

गहडवालकालीन राजाओं के शासनकाल में कुछ ऐसे भी परिवार थे, जिनमें भिन्न-भिन्न प्रकार की ब्राह्मण–उपाधियाँ प्रयुक्त होती थीं। गोविन्द-चन्द्र के छत्तरपुर ताम्रपत्र में भारद्वाज गोत्र के ब्राह्मण-परिवार का उल्लेख है।[2] इस परिवार में पितामह के नाम के पूर्व अवस्थी और पिता के नाम के पूर्व ठक्कुर उपाधि को जोड़ा गया है। यह कुछ विचित्र प्रतीत होता है।

मालवा

परमारकालीन ब्राह्मण उपाधियाँ

परमार कालीन दानपत्रों (दशम शताब्दी से लेकर त्रयोदश शताब्दी के पूर्वार्द्ध तक) में अधोलिखित–ब्राह्मण उपाधियों का उल्लेख मिलता है।[3]

१. भट्ट २. आवस्थिक (अवस्थी), ३. अग्निहोत्री (अग्निहोत्रि), ४.याज्ञिक ५. दीक्षित, ६. श्रोत्रिय, ७. शुक्ल, ८. द्विवेद, ९. त्रिवेद, १०. चतुर्वेद ११. राजन, १२. पंच (पंचकली, पंचकुल)।

भट्ट—भोजकालीन दानपत्रों से सूचना मिलती है कि यह उपाधि दो–तीन पीढ़ियों तक वत्स्य[4] तथा आत्रेय[5] गोत्र के ब्राह्मण-परिवारों में प्रचलित थी। वात्स्य ब्राह्मणों के पूर्वजों का मूल स्थान गौड देशान्तर्गत श्रवणभद्र था।[6] श्रीमान्यखेट के आत्रेय गोत्रीय ब्राह्मण का निवास यहाँ था।[7]

---

१. पारावस-गोत्राय कामकायन-कौसि(शि)कधौम्य-त्रिप्रवराय सीखायन वष्ठच साखिनो प्राणाचार्य–भट्टपंडितश्रीमंगलप्रपौत्राय । प्राणाचार्यभट्ट–पंडित–श्री-गोहड़ पौत्राय। प्राणाचार्य-भट्टपंडित-श्री-रणिधर पौत्राय। प्राणाचार्य-भट्टपंडितश्रीसोनस(श)र्म्मने ब्राह्मणाय—ए० इ०, ८, पृ० १५४

२. वही, १८, पृ २२६

३. अधिकांश परमारकालीन दानपत्रों में उक्त उपाधियों का संक्षिप्त रूप उल्लिखित है।

४. परमार भोज का महुदी दानपत्र, ए०इ०, ३३, पृ० २१२

५. राजा भोज का इन्दौर संग्रहालय दानपत्र, इ० हि० क्वा०, ८, पृ० ३१२

६. राजभोज इन्दौर संग्रहालय दानपत्र–इ० हि० क्वा०, ८, टि० सं०।

७. वही, टि० सं० २

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

अवस्थी– वाक्पति मुन्ज के गोनरी दानपत्र से अवगत होता है कि मध्यदेश अयक भट्ट ग्राम के वसिष्ठ गोत्रीय ब्राह्मण–परिवार में अवस्थी उपाधि धारण की जाती थी।[1] देवपाल के मान्धाता दानपत्र में शांडिल्य गोत्रीय को अवस्थी उपाधिधारी बताया गया है[2]। इनके पूर्वज मध्यदेश से आये थे।[3]

अग्निहोत्री– वत्स गोत्र के ब्राह्मण–परिवार में अग्निहोत्री उपाधि प्रयुक्त होती थी, जिसका उल्लेख गोनरी दानपत्र में किया गया है[4]। इनके पूर्वज अग्रुरेश मंडलान्तर्गत अविवा ग्राम से निर्गत हुए थे।[5] मान्धाता दानपत्र में मुतावथु के काश्यप गोत्र के ब्राह्मणों को तथा मध्यदेशीय मुद्गल गोत्र के ब्राह्मणों को अग्निहोत्री उपाधिधारी बताया गया।[6] मुद्गल गोत्र के ब्राह्मणों में यह उपाधि तीन पीढ़ियों तक प्रचलित थी[7]।

उक्त दानपत्र से अवगत होता है कि मध्यदेशीय शांडिल्य ब्राह्मण–परिवार में याज्ञिक उपाधि दो पीढ़ियों तक प्रचलित थी।[8] इस परिवार में पौत्र नाम के साथ अग्निहोत्री उपाधि का प्रयोग किया गया है।[9] ऐसा ज्ञात होता है कि उपाधि धारण करने में किसी नियम का आवश्यक रूप से पालन शांडिल्य ब्राह्मणों में नहीं था।

दीक्षित– गोनरी दानपत्र से ज्ञात होता है कि मध्यदेश के अयक भट्ट ग्राम के वसिष्ठ गोत्र के ब्राह्मण–परिवार में दीक्षित उपाधि प्रयुक्त होती थी।[10]

---

१. ए० इ०, २३, पृ० १०८
२. वही, ९, पृ० ११२
३. वही।
४. वही, २३, पृ० १०९
५. वही, ९, पृ० १११
६. मध्यदेश विनिर्गताय माध्यन्दिन शाखाध्यायिने मुद्गलगोत्राय आंगिरश (स) भारसमुद्गल-इति त्रिप्रवराय अग्निच्छीतू पुत्राय अग्नि धरणीधर पुत्राय अग्नि अनन्त शर्म्मणे ब्रा (ब्रा) ह्मणाय —ए०इ०, ९, पृ० ११२
७. मध्यदेश विनिर्गताय माध्यन्दिन शाखाध्यायिने शांडिल्यगोत्राय शांडिल्य-असितदेवल इति त्रिप्रवराय याज्ञि नागदेव पौत्राय याज्ञिकृष्ण पौत्राय अग्नि स्थानेश्च(श्व)र शर्म्मणे—ए०इ०, ९, पृ० ११२
८. वही
९.१०- वही, २३, पृ० १०९

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

इसके साथ ही पंडित उपाधि का भी प्रयोग ब्राह्मण नाम के साथ हुआ है।[1] इससे यह संकेत मिलता है कि दो उपाधियों को भी धारण किया जाता था। उक्त दानपत्र में उत्तर कुल देशान्तर्गत पौण्डरीक भट्ट ग्राम से आये हुए गार्ग्य गोत्रीय ब्राह्मण-परिवार में दीक्षित उपाधि प्रचलित थी।[2] नरवर्मा के कदम्बपद्रक दानपत्र (वि०सं० ११६७=१११० ई०) में मध्यदेश श्रृंगपुर से आये हुए कात्यायन गोत्रीय ब्राह्मण को दीक्षित उपाधिधारी बताया गया है।[3] इस परिवार में परम्परागत रूप से एक उपाधि धारण करने की प्रथा नहीं थी[4]। मान्धाता दानपत्र से विदित होता है कि महावन स्थान (मथुरा) के ओदल[5] तथा मुतावथु (मथुरा) के काश्यप[6] गोत्र के ब्राह्मणों[7] तथा टकारी के भारद्वाज[8] ब्राह्मणों में उक्त उपाधि का प्रचलन था। ओदल गोत्र के ब्राह्मणों में उक्त उपाधि का प्रचलन था। ओदल गोत्र के ब्राह्मण तीन पीढ़ियों तक यह उपाधि धारण किये थे।[9] भारद्वाज गोत्र के ब्राह्मण-परिवार में भी यह उपाधि तीन पीढ़ियों तक नामों के साथ प्रचलन में थी।[10] उक्त काश्यप परिवार में यह उपाधि दो पीढ़ियों तक धारण की गयी थी।[11]

श्रोत्रिय– आश्रमस्थान से आये हुए पराशर गोत्र के परिवार मे तीन पीढ़ियों तक ब्राह्मण-नामों के साथ श्रोत्रिय उपाधि प्रयुक्त होती रही।[12]

शुक्ल– दो पीढ़ियों तक शुक्ल उपाधिधारी पवित्र गोत्रीय ब्राह्मण थे,

---

१. वही, २३, पृ० १०९

२-३. वही, २०, पृ० १०६

४. ए०इ०, ९, पृ० १०९

५. वही, पृ० ११२

६. वही, ११

७. वही, द्रष्टव्य, टि० सं०४

८. वही, टि० सं०५

९. वही, टि० सं०६

१०-१२. आश्रमस्थान विनिर्गताय वाजिमाध्यन्दिनशाखाध्यायिने पराश(र)गोत्राय पराश-शक्ति-वशिष्ठ-इति त्रिप्रवराय–श्रोत्रि दामोदर पौत्राय श्रोत्रि ब्र (ब्र)-ह्मपुत्राय श्रोत्रि गंगाधर स(श)र्म्मणे ब्राह्मणाय–देवपाल का मान्धाता दानपत्र, ए० इ०, ९; पृ० ११०

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

जिनके पूर्वज उक्त स्थान से आये थे।[1] इस परिवार में शुक्ल के अतिरिक्त दीक्षित उपाधि प्रचलन में थी।[2]

पाठक—देवपाल के मान्धाता दानपत्र के अनुसार मध्यदेशीय भारद्वाज गोत्र के ब्राह्मण-परिवार में पाठक उपाधि नाम के साथ प्रयुक्त होती थी।[3] इस परिवार में साथ ही दीक्षित उपाधि भी धारण की जाती थी।[4] जयवर्मा के मान्धाता दानपत्र में भार्गव गोत्रीय ब्राह्मण को भी पाठक उपाधिधारी बताया गया है।[5] इस परिवार के ब्राह्मण अग्निहोत्री और द्विवेदी उपाधि को धारण करते थे।[6]

द्विवेदी—दो पीढ़ियों तक द्विवेद (दिवेदी) उपाधिधारी ब्राह्मण कश्यप गोत्र के ब्राह्मण थे जिनके पूर्वज मुतावथु (मथुरा) से आये थे।[7] नरवर्मा के कदम्ब-पद्रक दानपत्र में कात्यायन गोत्रीय ब्राह्मणों को उक्त उपपदधारी बताया गया है।[8]

त्रिवेदी—मथुरा के भारद्वाज गोत्रीय ब्राह्मण-परिवारों में तीन-तीन पीढ़ियों तक त्रिवेद (त्रिवेदी) उपाधि प्रचलित थी।[9] महावन स्थान के कात्यायन गोत्र के ब्राह्मणों में भी तीन पीढ़ियों तक उक्त उपाधि प्रचलित थी।[10]

चतुर्वेदी—देवपाल के मान्धाता दानपत्र से प्रमाणित होता है कि मालवा में दो-तीन पीढ़ियों तक चतुर्वेदी उपाधि को धारण करने वाले मथुरा के वसिष्ठ,

---

१-२. ए० इ०, ९, पृ० ११२

३-४. वही, पृ० १२२

५. वही, पृ० ११२

६. वही २०, पृ १०६

७. वही, ९, पृ० १११-१२

८. महावनस्थान विनिर्गताय कात्यायन गोत्राय शा (सा) मवेद अध्यायिने त्रि रामेस्व (श्व) र पौत्राय त्रि जसोधर पुत्राय त्रि शूरशर्म्मणे ब्रा (ब्रा) ह्मणाय —वही, पृ० १११

९-१०. ए० इ०, ९, पृ० १११

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

भार्गव,[1] काश्यप,[2] धौम्य,[3] भारद्वाज[4] तथा कौत्स[5] गोत्र के ब्राह्मण थे। इसके अतिरिक्त डिण्डवानक से आये हुए दो पीढ़ियों तक गौतम गोत्र के ब्राह्मण इस उपाधि का प्रयोग करते थे।[6] चतुर्वेदी उपाधिधारी तीन पीढ़ियों तक हारित कौत्स द्विगोत्र के ब्राह्मण थे, जिनके पूर्वज सरस्वती (सारस्वत प्रदेश?) से आये थे।[7] उक्त वसिष्ठ गोत्र के ब्राह्मण श्री गोसे शर्मा महाराज पंडित उपाधि को प्राप्त किया था, जो चतुर्वेदी धरणीधर का पुत्र था।[8] सम्भवतः चार वेदों का विशिष्ट ज्ञाता होने के कारण उक्त उपाधि उसको दी गयी थी।

पंचकल्पी—मान्धाता दानपत्र से अवगत होता है कि मालवा में पराशर गोत्रीय ब्राह्मण-परिवार में तीन पीढ़ियों तक पंचकल्पि उपाधि प्रचलित थी।[9] इन ब्राह्मणों के पूर्वजों का आगमन हस्तिनापुर से हुआ था।[10]

राजन— उक्त दान पत्र में परावसु गोत्र के गोसल शर्मा ब्राह्मण की राज या राजन उपाधि का उल्लेख हुआ है।[11] इस ब्राह्मण के परिवार में ठ या ठक्कुर उपाधि प्रचलित थी।[12] ठक्कुर या ठ सामान्तवादी उपाधि है। ऐसा संकेत मिलता है कि राज या राजन उपाधि सामन्त होने के कारण ही उक्त ब्राह्मण को मिली थी।

त्रिपुरी

कलचुरिकालीन ब्राह्मणों की उपाधियाँ— कलचुरि राजाओं के दानपत्रों (द्वादश शताब्दी) से अवगत होता है कि त्रिपुरीवासी ब्राह्मणों में भट्ट, पंडित, उपाध्याय, आवसथिक, ठक्कुर तथा नायक उपाधियाँ प्रचलित थीं।

भट्ट— भट्ट उपाधि का प्रयोग काश्यप गोत्र के सूत्र ज्ञाता ब्राह्मण-परिवार में दो पीढ़ियों तक था, जिसका उल्लेख यशःकर्ण के जबलपुर दानपत्र (क० व० ९२९=११७७ ई०) में हुआ है।[13]

१-६. ए० इ०, ९, पृ० ११२

७. सरस्वतीस्थान-विनिर्गताय कठशाखाध्यायिने (ह र इ त) कुत्स गोत्राय अंगिरश। स-अम्ब(ब)रीष यौवनास्व(श्व) इति त्रिप्रवराय च विजयि पौत्राय च अजयि पुत्राय च अलिल शर्म्मणे ब्रा(ब्रा)ह्मणाय।
—देवपाल का मान्धाता दानपत्र, ए० इ०, ९, पृ० ११२

८-१० वही

११-१२. ए०इ०, ९, पृ० १११

१३ काश्यपगोत्राय काश्यपावत्सार नैध्रुवत्रिप्रवराय वाजसनेयशाखिने भट्ट श्री भवनाम पौत्राय भट्ट श्रीनागोपुत्राय सूत्राध्ययन संपन्नाय हरिशर्म्मणे ब्राह्मणाय—कार्पस, ४/२, पृ० ६३४

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

पंडित–विजयसिंह के कुम्भी दानपत्र (क० व० ९३२=११८० ई०) से ज्ञात होता है कि पंडित उपाधि का प्रचलन परम्परागत रूप से सार्वाण गोत्र के ब्राह्मणों में चार-चार पीढ़ियों तक था ।[1] इस उपाधि को धारण करने की परम्परा अगस्त्य, कौशिक तथा विदर्भी कौण्डिन्य (विदर्भ से आगत कौंडिन्य) गोत्रीय ब्राह्मण गोत्र के ब्राह्मणों में भी थी ।[2]

आवसथिक तथा उपाध्याय— कर्ण के गोहरवा दानगत्र से विदित होता है कि पंडित के अतिरिक्त आवसथिक तथा उपाध्याय उपाधिधारी ब्राह्मण भी विदर्भी कौंडिन्य परिवार में थे ।[3] एक ही परिवार में भिन्न-भिन्न उपाधि को धारण करने की भी परम्परा यत्र-तत्र व्याप्त थी । इसके अतिरिक्त यह भी ज्ञात होता है कि उक्त गोत्र के ब्राह्मण आवसथिक तथा उपाध्याय का काम करके अपनी जीविका का निर्वाह किया करते थे । आवसथिक से तात्पर्य उस ब्राह्मण से है जो विशेष प्रकार की अग्नि रखता है या जो यज्ञ में प्रयुक्त होने वाली पवित्र अग्नि या पंचाग्नियों को हवनादि से प्रचालित करता है । इससे उनके पौरोहित्य का संकेत भी मिलता है । आधुनिक अवस्थी पारिवारिक नाम आवसथिक से ही बना प्रतीत होता है । ऐसा ज्ञात होता है कि शुरू में आवसथिक उपाधि नाम के पूर्व प्रयुक्त होती थी । जो बाद में पारिवारिक नाम का रूप बन गयी । ठीक इसी प्रकार से ब्राह्मण उपाध्याय (अध्यापक) का काम करके भी अपनी जीविका चलाते थे ।

ठक्कुर— ठक्कुर उपाधि कौशिक गोत्रीय ब्राह्मण-परिवार में तीन-तीन पीढ़ियों तक नाम के पूर्व प्रयुक्त की जाती थी, जिसका उल्लेख जयसिंह के रेवा दानपत्र (क० व० ९२६=११७५ ई०) में हुआ है । ठक्कुर शब्द का तात्पर्य गांव के जमींदार या जागीरदार से है जो शक्ति के द्वारा अपनी सम्पत्ति

---

१. सावर्ण्यगोत्राय भार्गवच्यावन आप्नवान और्वजामदन्येति पंचप्रवराय छंदोगशाखिने पंडित श्री जनार्दन प्रपौत्राय पंडित श्री सूल्हण पौत्राय पडित श्री छीक्तू पुत्राय पंडित श्री सोढशर्मणे ब्राह्मणाय—कार्पस,४/२ पृ० ६४९-५०

२. जयसिह का जबलपुर दानपत्र, ए० इ०, २१, पृ० ९९५-९६; कर्ण का बनारस दानपत्र, कार्पस, ४/१, पृ०२४४; कर्ण का गोहरवा दानपत्र, वही, पृ० २४४

३. विदभी (र्भी) कौण्डिन्य गोत्रायांगिरसाम(म्ब)रीष यौवनास्य त्रि: प्रवराय वाजसनेयसा (शा)खिने उपाध्यायसीलपौत्राय आवसथिक माल्हू पुत्राय पंडित श्री शांतिशर्म्मणे व्रा (ब्रा) ह्मणाय—कार्पस ४/१, पृ० २५९

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

की रक्षा करता है[1] । जमीदारों तथा जागीरदारों में से कुछ क्षत्रिय होते हैं जो ठक्कुर या ठाकुर उपाधि धारण करते हैं । बंगाल में ठक्कुर या ठाकुर उपाधिधारी ब्राह्मण अभी भी मिलते हैं यथा टैगोर परिवार में ठाकुर या ठक्कुर उपाधि । कहीं–कहीं यह पारिवारिक नाम के रूप में हो गया ।

नायक—जयसिंह के काल में नायक (प्रशासकीय) पद पर कात्यायन गोत्रीय ब्राह्मण नियुक्त था । इस परिवार के ब्राह्मणों का निवास स्थान सीखाग्राम (मालवक)में था । उक्त नायक पद से ज्ञात होता है कि कात्यायन ब्राह्मणों का राज्य में प्रशासकीय दृष्टि से भी विशिष्ट प्रभाव था ।[2]

डाहल मंडल

परिव्राजककालीन ब्राह्मण उपाधि

भट्ट— महाराज हस्तिन के नवग्राम दानपत्र (गु० व० १९८=५१७ई०) के अनुसार डाहल मंडल (जबलपुर) के अनेक पाराशर ब्राह्मण इस उपाधि का धारण करते थे ।[3] इससे ज्ञात होता है कि पिता-पुत्र के नामों के पूर्व यह उपाधि परम्परागत रूप से प्रयुक्त होती थी ।[4]

मगध

सौरादित्यकालीन दरदगण्डकी मंडल के ब्राह्मणों की उपाधि

भट्ट—दरदगण्डकी मंडल के सौरादित्य कालीन दानपत्र (वि० सँ० १०७७= १०२० ई०,से ज्ञात होता है कि भट्ट उपाधि का प्रचलन उशीय ग्रामवासी सावर्णि गोत्र के ब्राह्मण–परिवार में तीन पीढ़ियों तक था । इनके पूर्वज क्षेल ग्राम से बहिर्गत होने के पश्चात् उशीयग्राम में रहते थे ।[5]

---

१. कौसि(श)कगोत्रस्यौदल विश्वामित्रदेवरात(त)त्रिप्रवरेभ्यः यजनयाजनाध्ययन(ना)ध्यापनदानप्रतिग्रहषट्कर्मरतेभ्यः । ठकुर श्रीत्रिलोचन प्रपौत्राय श्रीगयाधर प्रौत्रेभ्यः । चतुर्भुज पुत्राभ्यां ठकुर श्रीमहादित्य सीलण व्रा(ब्रा) ह्मणाभ्यां—कार्पस. ४/१, पृ० ३८२

२. नायक केस(श)वस्ये(स्य)गोत्रं कात्यायनं स्थान मा(ल?)वके सीखाग्रामः । —जयसिंह का तेवर दानपत्र, वही, पृ० ३४६

३. ए० इ०, २१, पृ० १२६

४. वही

५. क्षेल विनिर्गतउशीयग्रामीय–सावरण (र्ण्य) सगोत्राय भार्गवच्यवनआप्नवान-और्व्व-य (ज) मदग्निइति पंच प्रवराय भट्ट-श्र (ी) यशादित्याय भट्ट वाठो सुताय भट्ट अडवि नप्त्रे — ए० इ०, ३५, पृ० १३५

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

कामरूप

वर्माकालीन-ब्राह्मण उपाधियाँ– भास्करवर्मा के निधनपुर ताम्रपत्र में ब्राह्मण नामों के साथ किसी भी प्रकार की उपाधियाँ शैक्षणिक योग्यता से सम्बन्धित भट्ट सदृश उपाधि या राज्यस्तर का पद या राजकीय पद का उल्लेख नहीं है, किन्तु उसके दुबी दानपत्र के आधार पर कहा जा सकता है कि कामरूप के कौशिक ब्राह्मण-परिवार के लोग निम्नांकित उपाधि प्राप्त किये थे—

(१) भट्ट,[1]
(२) महत्तर,[2] और
(३) आवसरिक।[3]

भास्कर वर्मा के दुबरी दानपत्र से ज्ञात होता है कि कौशिक गोत्रीय परिवार के लोग भट्ट उपाधिधारी होते थे। दुबी दानपत्र में वर्णित सभी नामों के पूर्व भट्ट उपाधि का प्रयोग हुआ है। ऐसा संभाव्य है कि इसी प्रकार के निधनपुर दानपत्र में वर्णित ब्राह्मणों में से अवश्य ही कुछ तो भट्ट जैसी विद्वत्तापूर्ण उपाधि को प्राप्त किये होंगे। ऐसा प्रतीत होता है कि कामरूप में ब्राह्मणों का शैक्षणिक स्तर श्रेष्ठ था।

भट्ट उपाधिधारी कौशिक गोत्र के ब्राह्मण भास्कर वर्मा के समय में राज्य के विशिष्ट पदों को प्राप्त कर चुके थे। इस सन्दर्भ में भट्ट महत्तर प्रियंकर घोष स्वामी ब्राह्मण का नाम ध्यातव्य है। ज्ञात होता है कि उसने अपनी विद्वत्ता के कारण महत्तर जैसे विशिष्ट पद को प्राप्त किया था। महत्तर का अर्थ होता है प्रधान, मुख्य या सबसे बड़ा व्यक्ति अर्थात् सम्मानित पुरुष। कहीं-कहीं इससे कंचुकी या राजभवन का महा प्रतिहार का अर्थ लगाया जाता है, किन्तु दुबी दानपत्र में वर्णित महत्तर ब्राह्मण प्रियंकर ब्राह्मणों का नेता या अग्रणी था।

कौशिक ब्राह्मण आवसरिक भट्ट देवघोष का नाम उल्लिखित है। आवसरिक उपाधि अवसर से बना है। डी० सी० सरकार ने अवसर[4] का अर्थ राज्य के उस शाही अधिकारी से बताया है जो राजा को कोई भी काम तत्काल करने या कराने का ध्यान दिलाता है। सम्भवतः वह राजकीय परामर्शदाता या दरबारी का पद था। इस ब्राह्मण को भी भट्ट उपाधि मिली थी।

उक्त महत्तर और आवसरिक पद पर रहकर पराशर ब्राह्मण भी अपनी

१-३. ए० इ०, ३०, पृ० ३०४
४. सरकार, डी० सी०, इ० ए० ग्लो०, पृ० ३९-४०

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

जीविका चलाते थे। इस प्रकार की उपाधियों को व्यावसायिक उपाधियों की श्रेणी में रखा जाता है।

भट्ट उपाधिधारी ब्राह्मण से तात्पर्य विशिष्ट विद्वान् से है। प्रायः सभी पराशर ब्राह्मण विद्वान् थे।

पालकालीन ब्राह्मणों की उपाधियाँ—पाल दानपत्रों में नामों के साथ विभिन्न प्रकार की उपाधियों का उल्लेख है। ज्ञात होता है कि ब्राह्मण-परिवारों में नामों के साथ सम्मान सूचक, शैक्षणिक तथा व्यावसायिक उपाधियों का प्रयोग किया जाता था।

श्री—आदरसूचक उपाधि श्री का प्रयोग ब्राह्मण-परिवारों में किया जाता था। श्री शब्द का प्रचलन आज भी प्रायः प्रत्येक व्यक्ति के नाम-रखने के पूर्व सम्मान या आदर प्रकट करने के लिये किया जाता है। सम्भवतः पाल ब्राह्मणों को भी तत्कालीन समाज में सम्मान की दृष्टि से देखा जाता था। ब्राह्मणों को श्री या श्रीमान् कह कर पुकारा जाता था। मीमांसक महाबाहु (कौशिक ब्राह्मण) को श्रीमान् कहा जाता था।[1]

सम्मानसूचक उपाधियों के अतिरिक्त ब्राह्मणों के नामों के साथ शैक्षणिक उपाधियों यथा सर्वशास्त्रविशारद्, वेदविद्, मीमांसक तथा भट्ट आदि का प्रयोग पाल ब्राह्मण किया करते थे।[2] सर्वशास्त्रविशारद, वेदविद तथा मीमांसक जैसी विद्वत्तापूर्ण उपाधियों से पाल ब्राह्मणों के उच्च शिक्षित जीवन का पता चलता है। यत्र-तत्र विशिष्ट विद्वान् ब्राह्मणों को भट्ट[3] कहा जाता था।[4] काश्यप ब्राह्मण उम्मोक सर्वशास्त्रविशारद, योगी तथा रथिक समझा जाता था।[5] इसी परिवार में शास्त्र का पारायण करने वाला विष्णु था। महाबाहु काश्यप ब्राह्मण को श्रीमान् मीमांसक[6] कहा जाता था। बलवर्मा के ताम्रशासन से

---

१. ए० इ०, ३०, पृ० २०८

२. ए० इ०, २, पृ० ३५२-५३

३. वही २९, पृ० १४६; वही, ३२, पृ० २९१; कामरूप शासनावलि, पृ० ५१

४. वही, ३०, पृ० २०८

५. कामरूप शासनावलि, पृ० ७८

६. ए० इ०, २९, पृ० १५८

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

ज्ञात होता है कि कपिल गोत्रीय ब्राह्मण मालाधर भट्ट[1] उपाधिधारी था। उसके वेदज्ञान तथा विद्या-तप की प्रशंसा की जाती थी। तेजपुर प्रशस्ति में शांडिल्य ब्राह्मण भट्ट जेज्जट[2] का उल्लेख किया गया है। बलवर्मा के हबराघाट दानपत्र से ज्ञात होता है कि उपमन्यव (उपमन्यु गोत्रीय) ब्राह्मण श्यामदेव भट्ट उपाधिधारी था। हरजरवर्मा के ताम्रशासन से ज्ञात होता है कि ब्राह्मण श्रीकंठ भट्ट[2] विशिष्ट विद्वान् ब्राह्मण समझा जाता था। धर्मपाल के ताम्रशासन से ज्ञात होता है कि मौद्गल्य ब्राह्मण-परिवारों में चतुर्वेदी उपाधि प्रचलित थी।[3] इस चतुर्वेदी परिवार की विद्वता का प्रभाव विशेष रूप से कामरूप में व्याप्त था।

उक्त शैक्षणिक उपाधियाँ शास्त्र विशारद, वेद विद्, मीमांसक, भट्ट और चतुर्वेदी कामरूप के ब्राह्मण-परिवारों में भी प्रचलित थीं। ऐसा प्रतीत होता है कि कामरूप के पाल कालीन (नवम से लेकर एकादश शताब्दी पूर्वार्द्ध) ब्राह्मण सुसभ्य तथा सुसंस्कृत परिवार के थे। उनके घरों में वेदशास्त्र आदि का विधिवत् पठन-पाठन होता रहता था।

महामख—शैक्षणिक उपाधियों के अतिरिक्त पाल ब्राह्मण व्यावसायिक उपाधियाँ भी धारण करते थे।[4] धर्मपाल के खोनमुख दानपत्र से ज्ञात होता है कि काश्यप ब्राह्मण 'महामख' कहे जाते थे।[5] महामख उस ब्राह्मण को कहा जाता था जो पंचमहायज्ञों का विधिवत् सम्पादन कराना जानता था।[6]

यज्वन्— धर्मपाल के एक-दूसरे दानपत्र में शांडिल्य ब्राह्मण को यज्वन्[7] कहा गया है। ऐसा प्रतीत होता है कि पाल ब्राह्मण वेद-विहित विधि के अनुसार यज्ञानुष्ठान किया करते थे। यज्ञीय कृत्यों में दान-दक्षिणा प्राप्त कर पाल युग के ब्राह्मण अपनी जीविका चलाते थे। जीविका चलाने के उद्देश्य से ब्राह्मण-परिवार में शास्त्र आदि का पारायण या पाठ किया जाता था। अध्यापन का काम पाल युग के ब्राह्मण करते थे। वैद्यदेव के ताम्रपत्र से ज्ञात होता है कि मुनि मुनिन्द्र कौशिक परिवार के ब्राह्मण शास्त्र तथा श्रुतियों के विद्वान् थे तथा अध्यापन का काम करते थे। हरजरवर्मा के ताम्रपत्र से ज्ञात होता है

१. वही, ३२, पृ० २९१

२. कामरूप शासनावलि पृ० ५१

३. वही, पृ० १६५

४-६. ए० इ०, ३०, पृ० २०८

७. कामरूप शासनावलि, पृ० १५६

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

कि पाल ब्राह्मणों को महाप्रतिहार, महामात्य तथा ब्राह्मणाधिकार[1] जैसे राज्यस्तर के विशिष्ट पदों पर नियुक्त किया गया था । इन पदों पर काम करने से प्रतिष्ठा के साथ वेतन आदि भी मिला करता था, जिससे उनकी जीविका चलती थी ।

उपर्युक्त तथ्यों के आधार पर कहा जा सकता है कि लगभग नवम शताब्दी से लेकर एकादश शताब्दी पूर्वार्द्ध तक के पाल ब्राह्मणों को श्री, श्रीमान्, सर्व-शास्त्र विशारद, वेदविद, शास्त्र परायणकर्ता, भट्ट महाभख, ऋत्विज्, यज्वन् तथा अध्यापक कहा जाता था । इसके अतिरिक्त पाल ब्राह्मणों को महाप्रतिहार, महामात्य तथा ब्राह्मणाधिकार का पद प्रदान किया गया था । इस काल के ब्राह्मणों को प्राप्त इन राजकीय उपाधियों के आलोक में यह सहज सिद्ध है कि ये ब्राह्मण विद्वान् के नाते तो प्रतिष्ठित थे ही, साथ ही अपनी सूझ-बूझ के कारण प्रशासन में भी इनका महत्त्वपूर्ण स्थान था ।

---

१. कामरूप शासनावलि, पृ० ५१

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

पांचवाँ अध्याय

गोत्र तथा प्रवर

आर्यों की सामाजिक व्यवस्था तथा उनके व्यावहारिक जीवन में गोत्र तथा प्रवर का विशेष महत्त्व था।

गोत्र— साधारणतः गोत्र का तात्पर्य किसी एक ऋषि की संतान म ना जाता है। इस शब्द का ऋग्वेद में अनेकत्र तथा अनेकार्थों में उल्लेख हुआ है। अनेक स्थलों पर यह गोष्ठ[1] अथवा ब्रज[2] का लगभग समानार्थी है। अन्यत्र इसका अर्थ मेघ या मेघ छिपाए हुए पर्वत अथवा पर्वत शिखर है।[3] कहीं-कहीं इस शब्द का अर्थ 'दुर्ग' भी हो सकता है।[4] कुछ ऋचाओं में गोत्र का तात्पर्य समूह से है।[5] इस आधार पर काणे महोदय की यह मान्यता है कि गोत्र शब्द के 'व्यक्तियों का समूह' अर्थ में प्रयोग होने में कठिनाई नहीं थी।[6] अतः निश्चित प्रमाण के अभाव में भी यह कहा जा सकता है कि ऋग्वेद के काल में गोत्र शब्द 'व्यक्तियों के समूह' का भी संकेत था।[7] इस प्रसंग में यह भी विचारणीय है कि ऋग्वेद में कुछ ऋषियों यथा वशिष्ठ[8] तथा आंगिरस[9] के लिए उन ऋषियों के नामों का बहुवचन में प्रयोग किया गया है। इन आधार पर यह कहना युक्ति-

---

१. ऋग्वेद, ६/२८/१; १०/९७/८
२. वही, ६/२०/८; ६/७३/३; ७/२७/१
३. वही, २/२३/३; १०/१०३/७; ६/१७/२; १०/१०३/६
४. वही
५. वही, २/२३/१८; ६/६५/५
६. काणे, हिस्ट्री आफ धर्मशास्त्र, २/१, पृ० ४७९
७. वही
८. ऋग्वेद, १०/६६/१४
९. वही, ६/३५/५

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

संगत होगा कि ऋग्वेदीय काल में कुछ ऋषियों की संतानों का निश्चित रूप से समूह के अर्थ में प्रयोग होता था। तैत्तिरीय संहिता में वशिष्ठ जैसे प्रसिद्ध ऋषियों के वंशजों के लिए ऋषि के नाम का प्रयोग किया गया है। तैत्तिरीय संहिता में पृथक्-पृथक् अनुष्ठानों में पौरोहित्य के लिए ऋषि-विशेष की संतानों को ही नियुक्त करने का विधान है।[1] अथर्ववेद तथा मैत्रायणी में गोत्र शब्द का प्रयोग आधुनिक अर्थ (प्राचीन महान् ऋषियों की संतान) में किया गया है।[2] ताण्ड्य तथा अन्य ब्राह्मणों में भी सगोत्र शब्द का प्रयोग इसी अर्थ में हुआ है।[3] उपनिषदों से ज्ञात होता है कि ब्रह्मचारी को शिष्य के रूप में प्रवेश करने से पूर्व अपना गोत्र बताना पड़ता था।[4] इस प्रकार यह कहना अनुचित न होगा कि उपनिषदों के समय तक गोत्र व्यवस्था सुदृढ़ हो चुकी थी और सामाजिक जीवन में उसका महत्त्व स्वीकृत हो चुका था। बौधायन श्रौत सूत्र के अनुसार विश्वामित्र, जमदग्नि, भारद्वाज, गौतम, अत्रि, वशिष्ठ, कश्यप तथा अगस्त्य आठ ऋषियो से गोत्रों के नाम पड़े।[5] संभवत. पाणिनि के समय भी यही आठ मूल गोत्रों के रूप में ज्ञात थे।[6] पतञ्जलि के अनुसार अस्सी हजार ऋषियों ने ब्रह्मचर्य का पालन किया और केवल आठ से आगे वंश चले, जिनमें से एक अगस्त्य भी थे।[7] इन्हीं आठों के नाम से गोत्र बने तथा

---

१. तैत्तिरीय संहिता, १/८/१८/१

२. अथर्ववेद, ५/१२/३; मैत्रायणी सं०, ३/८/९

३. ताण्ड्य महाब्राह्मण, १८/२/१२; कौषीतकि ब्राह्मण २५/१५०; शाँखायन ब्राह्मण, २५/१५; जैमिनीय उप०ब्राह्मण; ३/३/४

४. प्रश्नोपनिषद् १/१; बृहदारण्यक उप, २/२/४

५. विश्वामित्रो जमदग्निर्भरद्वाजोऽथ गौतमः। अत्रिर्वसिष्ठः कश्यप इत्येते सप्तऋषयः तेषां सप्तर्षीणामगस्त्याष्टमानां यदपत्यं तद्गोत्रमुच्यते– बौ०श्रौ०सू०–प्रवराध्याय-५४; इस श्रौतसूत्र में यह भी कहा गया है कि गोत्रों की संख्या सहस्रों, लक्षों तथा अर्बुदों तक है परन्तु उनके प्रवर केवल ४९ हैं।

६. काणे, हि० आ० ध०, २/१, पृ० ४८४

७. अष्टाशीतिः सहस्राणि ऊर्ध्वरेतसामृषीणां
बभूवुस्तत्रागस्त्याष्टमैर्ऋषिभिः प्रजनोऽभ्युपगतः॥
तत्रभवतां यदपत्यं तानि गोत्राणि अतोन्ये गोत्रावयवाः–महाभाष्य २, पृ० ३३; पाणिनीयाष्टाध्यायी, ४/१/७८ में 'गोत्रावयवात्' उल्लिखित है।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

अन्य वंशजों के लिए गोत्रावय शब्द का प्रयोग बताया गया है।[1] पाणिनि ने गोत्र का तात्पर्य किसी ऋषि की पौत्र से आगे की संतानों के लिए बताया है।[2] महाभारत में मूल गोत्रों की संख्या केवल चार–अंगिरस, काश्यप, वशिष्ठ तथा भृगु बताई गयी है।[3] पुराणों में गोत्रों तथा प्रवरों के परस्पर विरोधी विवरण प्राप्त होते हैं।[4]

मेधातिथि के अनुसार जिस प्रकार किसी ब्राह्मण को ब्राह्मण कहने या बताने के लिए साक्ष्य की आवश्यकता होती है, उसी प्रकार गोत्र का परिचय भी पिता अथवा अन्य ज्येष्ठ व्यक्ति से होता है।[5] उनके विचार से ब्राह्मण वर्ण तथा वेद की भाँति गोत्र भी अनादि है।[6] मिताक्षरा में कहा गया है कि गोत्र का ज्ञान पारिवारिक परम्परा से होता है।[7] इन उल्लेखों से स्पष्ट है कि पूर्व-मध्यकाल तक गोत्र-निर्णय जन्मना किया जाता था।

गोत्र व्यवस्था ने हिन्दू जीवन के सामाजिक तथा आर्थिक दोनों ही महत्त्व-पूर्ण पक्षों को समान रूप से प्रभावित किया। विशेषतः पारिवारिक जीवन की आधारशिला के रूप में स्थित विवाह सम्बन्ध की दृष्टि से गोत्र पर विचार करना आवश्यक था।[8] इसी प्रकार उत्तराधिकार तथा सम्पत्ति विभाजन में भी गोत्र-विचार आवश्यक था।[9] आपस्तम्ब तथा गौतम धर्मसूत्रों के अनुसार, जहाँ तक

---

१. पाणिनि–अष्टाध्यायी, ४/१/१६२
काणे, हि० आ० ध०, २/१, पृ० ४८५
२. वही
३. मूलगोत्राणि चत्वारि समुत्पन्नानि पार्थिव।
अंगिरा कश्यपश्चैव वसिष्ठो भृगुरेव च।
कर्मतोन्यानि गोत्राणि समुत्पन्नानि पार्थिव॥
नामधेयानि तपसा तानि च ग्रहणं सताम्॥–महाभारत, शांति०, २९७, १७–१८
४. मत्स्य पु०, अ० १९५-२०२
वायु०, अ० ८८, ९९
स्कन्द०, ३/२
५. मनुस्मृति, ३/५ पर मेधातिथि का भाष्य
६. वही, ३/५, १९४
७. याज्ञवल्क्य स्मृति १/५३ पर मिताक्षरा (याज्ञवल्क्यस्मृति टीका)।
८. गोभिल गृह्यसूत्र ३/४; ३/५, हिरण्यकोशि; गृ० सू० १/१९/२, आप० ध० सू०, २/५/११-१५
९. गौतम ध० सू०, २८/१९

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

संभव हो, श्राद्ध में निमन्त्रण देनेवाले व्यक्ति को सगोत्र ब्राह्मण नहीं बुलाना चाहिए ।[1] मृत्यु के बाद प्रेततर्पण के समय मृतक के गोत्र तथा नामोच्चार करने का विधान है ।[2] चौल संस्कार में शिशु के सिर पर कुल तथा गोत्रानुसार ही शिखा रखी जाती थी ।[3] इस प्रकार हम देखते हैं कि जन्म से मृत्यु तक ब्राह्मण का सम्पूर्ण जीवन गोत्र-व्यवस्था से प्रभावित था ।

प्रवर— देवताओं तक यजमान की आहुति पहुचाने के लिए अग्नि का आह्वान करते समय यजमान के उन समस्त प्रसिद्ध ऋषि पूर्वजों का नाम लिया जाता था, जिन्होंने पूर्वकाल में अग्नि का आह्वान किया था ।[4] अतः प्रवर शब्द यजमान के एक अथवा अधिक विख्यात पूर्वजों का बोधक बन गया ।[5] प्रवर का समानार्थक शब्द आर्षेय या आर्ष है ।[6] गृह्य तथा धर्मसूत्रों से विदित होता है कि अनेक अवसरों पर गोत्र के अतिरिक्त प्रवरोच्चार भी करने की परम्परा थी । प्राचीन काल से ही गोत्र के साथ प्रवर भी सामाजिक तथा धार्मिक कृत्यों में विचारणीय रहा है । समान प्रवर में विवाह का निषेध है ।[7] उपनयन के समय एक, तीन या पांच लड़वाली मुंज-मेखला ब्रह्मचारी को अपने प्रवर-ऋषियों की संख्या के आधार पर धारण करनी पड़ती थी ।[8] चूड़ा-कर्म के समय शिखा की गाठों की संख्या प्रवर के आधार पर ही निर्धारित होती है ।[9]

प्रवर प्राचीन ऋषियों के नाम हैं जो परिवार के अति प्राचीन संस्थापक समझे जाते हैं ।[10]प्रवर का शाब्दिक अर्थ 'वरण करना' अथवा 'आह्वान

---

१. आप० ध० सू०, २/७/१७,४
गौ० ध० सू०, १५/२०
२. आश्वलायन गृह्यसूत्र, ४/३
३. खादिरगृह्यसूत्र, २/३/३०
४. काणे, गोत्र एण्ड प्रवर इन वैदिक लिटरेचर (जर्नल आफ दी बाम्बे ब्रांच आफ दि रायल एशियाटिक सोसाइटी) भाग-२, पृ० ११
५. वही, पृ० ११-१२ ६. वही
७. मानव गृह्य०, १/७-८; वाराह गृह्य० ९; गौ० ध० सू०, ४/२
८. शांखा० गृ०, २/२; काठक गृ०, ४/१/१३, मनु०, २/४३, आ० गृ०, ६/१६/६
९. आ० गृ०, ६/१६/६
१०. ब्रफ जान–दि अ० ब्रा० सि० आ० गो० ए० प्र०, पृ० २

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

करना' है ।[1] यज्ञाहुति देवताओं तक पहुचाने के लिए अग्नि की प्रार्थना में एक अथवा अधिक विख्यात ऋषियों (पूर्वजों) के नाम लिए जाते थे, जिन्होंने प्राचीन काल में अग्नि का आह्वान किया था ।[2] इसी कारण प्रवर शब्द का तात्पर्य यज्ञ करनेवाले के एक या अधिक पूर्वजों या ऋषियों से है ।[3] प्रवर का समानार्थक शब्द आर्षेय या आर्ष है ।[4]

ऋग्वेद में प्रवर शब्द का उल्लेख नहीं हुआ है परन्तु इसके लिये आर्षेय शब्द अवश्य प्रयुक्त हुआ है । अतः यह कहना अनुचित न होगा कि प्रवर की परम्परा ऋग्वेद के काल से ही आरम्भ हो गयी थी ।[5] इस प्रसंग में ऋग्वेद का एक उद्धरण बड़ा महत्त्वपूर्ण है । एक स्थल पर कहा गया है कि मैं अग्नि को और्व, भृगु, आप्नवान की भांति बुलाता हूँ ।[6] यहाँ पर ध्यातव्य है कि बोधायन के अनुसार उक्त तीन ऋषि वे ही हैं, जिनकी गणना वत्स-भृगुओं के पंच प्रवर ऋषियों में की जाती है ।[7] ऋग्वेद के एक मन्त्र में पराशर, शतयातु और वसिष्ठ के नामों का एक साथ उल्लेख है ।[8] इस मन्त्र में जिस पराशर का नाम आया है, वह पश्चात्कालीन पुराणशास्त्र या देवताख्यान में शक्ति का पुत्र तथा वसिष्ठ का पौत्र बतलाया गया है ।[9] दूसरे शतयातु ऋषि को सायण ने शक्ति माना है । आश्वलायन और बौधायन के मत से पराशर शक्ति तथा वसिष्ठ पराशर गोत्र के प्रवर हैं ।[10] जान ब्रफ के अनुसार ऋग्वेद काल में प्रवर-पद्धति का आरम्भ हो रहा था। इसका विकास ब्राह्मणकाल तक हो गया ।[11]

अथर्ववेद के समय इस पद्धति का पर्याप्त विकास हो गया । इस वेद में प्रयुक्त ऋषियों के वंशज या वे जो ऋषियों से सम्बन्धित हैं, का उल्लेख है ।[12]

१-२. संस्कार प्रकाश, पृ० ५९८
३. काणे—हि०, आ० धर्म०, २/१. पृ० ४८२
४. याज्ञवल्क्य स्मृति, १/५२
५. अग्नि की प्रार्थना में एक स्थल पर कहा गया है—'उससे हम धन तथा जमदग्नि के समान आर्षेय प्राप्त करें' —ऋ०९/९७/५१
६. और्वभृगुवच्छुचिमाप्नवानवदा हुवे । अग्निं समुद्रवाससम्—वही, ८/१०२/४
७. काणे, हि० आ० धर्म० २/१, पृ० ४८७
८. ऋग्वेद, ७/१८/२३१
९-१०. काणे, हि० आ० धर्म०, २/१, पृ० ४८७
११. ब्रफ, जान, दि अ० ब्रा० सि० आ० गो० ए० प्र०, पृ० २४
१२. अथर्ववेद ११/१/१६, ११/१/२५, १८/४/२-१२

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

तैत्तिरीय संहिता में प्रवर तथा आर्षेय शब्द समानार्थी हैं।[1] एक स्थल पर आर्ष का प्रयोग यजमान के एक या अधिक विख्यात पूर्वजों के अर्थ में हुआ है।[2] श्रौतसूत्रों के परिशिष्टों में प्रायः प्रवरखंड, प्रवराध्याय अथवा प्रवर प्रश्न के अन्तर्गत गोत्र-प्रवर की सूची प्राप्त होती है। इससे यह विदित होता है कि होतृ तथा अध्वर्यु कर्मकांड के अवसर पर यजमान के प्रवर का शुद्ध उच्चारण करने के लिए इन सूचियों की रचना की गई थी।[3] विभिन्न सूत्रों की सूचियों की तुलना करने से विदित होता है कि सम्भवतः ब्राह्मण-काल में मुख्य गोत्रों, उनके गणो तथा प्रवरों की सूची का निर्माण किया गया था, जैसा आश्वलायन प्रवराध्याय में प्राप्त होता है। कालान्तर में सामाजिक संगठन में परिवर्तन और प्रादेशिक अन्तर के कारण इनमें कुछ संशोधन आवश्यक हो गया। इसी कारण विभिन्न सूत्रों की सूची में अन्तर दिखाई देता है।[4] ब्राह्मण-समाज-व्यवस्था में विवाह का मुख्य आधार गोत्र है। इस प्रसंग में प्रवर का स्थान गोत्र के बाद आता है। परन्तु ऐतिहासिक काल में दोनों एक दूसरे से इतने सम्बद्ध हो गये कि एक को अलग कर देने से स्थिति स्पष्ट नहीं हो पाती।

प्रत्येक गोत्र अनेक गणों में विभक्त है और प्रत्येक गण के प्रवर हैं। पूर्व मध्यकाल तक गोत्र और प्रवर सम्बन्धी नियम सुनिश्चित हो चुके थे। मध्यकालीन ग्रन्थ प्रवरमंजरी में बोधायन, आपस्तम्ब, कात्यायन, लौगाक्षी, आश्वलायन तथा मत्स्य पुराण की गोत्र-प्रवर-सूचियां पूरी-पूरी उद्धृत हैं।[5] प्रस्तुत अध्याय में पूर्वमध्यकाल के अभिलेखों में उल्लिखित गोत्रों तथा प्रवरों पर विचार किया गया है। अतः आभिलेखिक विवरण को गोत्र-प्रवर-मंजरी की सूचियों से तुलना करना अत्यन्त उपादेय है। उल्लेखनीय है कि जान ब्रफ ने पुरुषोत्तम पण्डित की गोत्र-प्रवर-मञ्जरी के आधार पर अपनी पुस्तक 'दि अर्ली ब्राह्मनिकल सिस्टम आफ गोत्र एण्ड प्रबर' की संरचना की थी।

---

१. तै० सं०, २/५/८-७
२. काणे—हि० अ० धर्म०, २/१, पृ० ४८७
३. ब्रफ जान—दि० अ० ब्रा० सि० आ० गो० ए० प्र०, पृ० २६
४. वही, पृ० २८
५. वही, पृ० ४०

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

(१) भृगु (जमदग्नि)[1]

१.	वत्स	व	भार्गव, च्यावन, आप्नवान,
	जामदग्न्य-वत्स	आप०, आश्व० (क)	और्व, जामदग्नय,
		मान०, म (आप)	भार्गव, और्व, जामदग्न्य
१.अ	वत्स	आश्व०	
	(जो जमदग्नि नहीं हैं)		भार्गव, च्यवन, आप्नवान
	वात्स्य	क	
२	विद	व, आश्व०	भार्गव, च्वावन, आप्नवान, और्व, वैद
		व	भार्गव, च्यावन, आप्नवान, और्व, वैद
	भार्गव	व	
	जमदग्नि	(व)	भार्गव, च्यावन, जामदग्न्य, वात्स आप्नवान
	जमदग्नि-विद	क	और्व, वैदल
			भार्गव, और्व, जमदग्नि
	जमदग्नि	म, मान०	भार्गव, च्यावन, आप्नवान
३.	आर्ष्टिषेण	(आप०)	भार्गव, च्यवन, आप्नवान, आर्ष्टिषेण आनूप
			भार्गव, आर्ष्टिषेण, आनूप
४.	वैद-निमथित	मान०	भार्गव, च्यावन, आप्नवान वैद, नैमथित
५.	आवध्यायन मौंजायन	मान०	भार्गव, च्यावन, आवध्य
६.	वत्स-पुरोधास	मान०, व	भार्गव, च्यावन, आप्नवान, पौरोधास
७.	वेद-विश्वज्योति	मान०, व	भार्गव, च्यावन, आप्नवान, वात्स, पौरोधास

---

१. बफ जान—दि अ० प्रा०सि० आ०गो० ए० प्र०, पृ० ३१

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

केवल भृगु[1]

१.	यज्ञ		भार्गव, वैतहव्य, सावेतस (सावेधस)
२.	मैत्रयुस	व, क० मान०	भार्गव, वाध्रयश्व, दैवोदास
	वाध्रयश्व	व, म, व (आश्व०) आप०,	
		आश्व०, व	भार्गव, दैवोदास, वाध्रयश्व
३.	वैन्य	ब, आप०, व	भार्गव, वैन्य, पार्थ
	श्यैति	मान०, ब आश्व	
४.	गृत्समद	आप०,क,मान० आश्व (ब, व)	गार्दस, गार्त्समद
		(क, मान) म	भार्गव, गार्दस, गार्त्समद
		(व), आश्वा०	भार्गव, शौनहोत्र, गार्त्समद

गौतम[2]

१.	आयस्य	ब व	आंगिरस, आयास्य, गौतम
२.	शारदवतस		आंगिरस, गौतम, शारद्वात
३.	कौमण्ड		आंगिरस, औचथ्य, काक्षीवत, गौतम कौमण्ड
४.	दीर्धतमस		आंगिरस, औचथ्य, काक्षीवत, गौतम दैर्धतमस
५.	उशनस		आंगिरस, गौतम, उशनस
६.	करैणुपालिस		आंगिरस, गौतम, कारेणुपाल
७.	वामदेव		आंगिरस, गौतम, वामदेव

गौमत[1]

१.	आयस्य	आप०, क, मान०	आंगिरस, आयास्य, गौतम

१. ब्रफ जान—दि०अ०ब्रा०सि०आ०गो०ए०प्र० पृ० ३२

१. ब्रफज्ञान—दि अ०ब्रा०सि०आ०गो०ए०प्र० पृ० ३२

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

	गौतम	आश्व०	
२.	उचथ्य	आथ० क, मान०	आंगिरस, उचथ्य, गौतम
		व, आश्व०, म	आंगिरस, उचथ्य, उशिज
३.	उशिज	आप०	आंगिरस, उशिज, काक्षीवत
४.	बहुदुक्थ	आप०, आश्व०	आंगिरस, बार्हदुक्थ, गौतम
५.	वामदेव	आप०	आंगिरस, वामदेव, बार्हदुक्थ
		आश्व,० मान,० व	आंगिरस, वामदेव, गौतम
		क, म	आंगिरस, बार्हदुक्थ, वामदेव
६.	दैर्घतमस	क, आश्व०	आंगिरस, उचथ्य, दैर्घतमस
७.	आयास्व, उशिज गौतम	क	आंगिरस, आयस्य, उशिज, गौतम काक्षीवत
८.	राहूगण	आश्व०	आंगिरस, राहूगण्य, गौतम
९.	सापराजकिस	आश्व०	आंगिरस, सौममाज्य, गौतम
१०.	काक्षीवत	आश्व०, मान,	आंगिरस, उचथ्य, गौतम
		व	उशिज, काक्षीवत

भारद्वाज[1]

१.	भरद्वाज		आंगिरस, बार्हस्पत्य, भारद्वाज
२.	रौक्षायण	व, व	आंगिरस, बार्हस्पत्य, भारद्वाज
		आप, क, मान	वान्दन, मतवचस
	ऋक्ष	व, म (आप०)	आंगिरस, वान्दन, मातवचस
३.	गर्ग	ब, क, मान०	आंगिरस, बार्हस्पत्य, भारद्वाज
		व, म	सैन्य, गार्ग्य
		आश्व०	आंगिरस, बार्हस्पत्य, भारद्वाज गार्ग्य सैन्य
		व, ब, आश्व, क मान, न, म	आंगिरस, सैन्य, गार्ग्य
		आप०	आंगिरस, गार्ग्य, सैन्य
		आप०	भारद्वाज, गार्ग्य, सैन्य

---

१. ब्रफ, जान–दि अ०ब्रा०सि०आ०गो०ए०प्र०, पृ० ३३

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

४.	कपि	आप० ब, क, मान	आंगिरस, आमहीयव, उरुक्षय
		व, म, आश्व०	
५.	शुंग, शैशिरि	आप०, आश्व०, मान	आंगिरस, बार्हस्पत्य, भारद्वाज कात्य, ऐत्कील
		व, म, आश्व०	आंगिरस, बार्हस्पत्य, भारद्वाज
		म	शौङग, शैशिरि

केवल आंगिरस[1]

८.	हारित	आप, आश्व०, क	आंगिरस, आम्बरीष, यवनाश्व
	कुत्स	आप०	मान्धात्रा, आम्बरीष, यवनाश्व
			आंगिरस, मान्धात्रा, कौत्स
९.	कण्व	आश्व०	आंगिरस, आजमीढ, काण्व,
			आंगिरस, घौर, काण्व
१०.	रथीतरस	व, म, व	आंगिरस, वैरूप, रथीतर
		(व), आप०, मान	आंगिरस, वैरूप, पार्षदश्व
		(आप०)	आष्टा दष्ट्र, वैरूप, पार्षदश्व
११.	विष्णुवृद्ध	ब, आप०, मान० आश्व, व	आंगिरस, पौरुकुत्स, त्रासदस्यव
१२.	मुद्गल	(आप० आश्व०)	आंगिरस, भार्म्यश्व, मौद्गल्य
			तार्क्ष्य, भार्म्यस्व, मौद्गल्य
१३.	सांकृत्य	व, क, मान०	आंगिरस, सांकृत्य, गौरिवीत
		व, म, ब	
		आश्व०	आंगिरस, गौरिवीत, सांकृत्य
		(आश्व)	शाक्त्य, गौरिवीत, सांकृत्य

अत्रि[2]

१.	अत्रि		आत्रेय, आर्चनानस, श्यावश्व
२.	वाद्भुतक	ब, व	आत्रेय, आर्चनानस, वाद्भुतक
३.	गविष्ठिर	ब, आप०, व	आत्रेय, आर्चनानस, गाविष्ठिर
		क०, मान०, म	आत्रेय, गाविष्ठिर, पौर्वातिथ
३.अ	मुद्गल ?	ब	आत्रेय, आर्चनानस, पौर्वातिथ
		व	आत्रेय, आर्चनानस, आतिथि
		आप०	

१.२ ब्रफ जान दि० अ, ब्रा० सि० आ० गो० ऐ० प्र० पृ० ३४

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

४.	पुत्रिका	क, म, व	आत्रेय, वामरथ्य, पौत्रिक
	पुत्र	मान०	आत्रेय, (गाविष्ठिर), पौत्रिक

विश्वामित्र[1]

१.	विश्वामित्र (कुशिक)		वैश्वामित्र, देवरात, ओदल
२.	श्रीमत-कामकायन		वैश्वामित्र, देवश्रवस, दैवतस
३.	कत		वैश्वामित्र, कात्य, एत्कील
४.	धनमजय	ब, आप, आश्व०	वैश्वामित्र, माधुच्छन्दस, धननजय
			वैश्वामित्र
		क, म, व, मान	माधुच्छंदस, आघमर्षण
		(व)	वैश्वामित्र, कौशिक, आघमर्षण
५.	आघमर्षण	व, आप, आश्व	वैश्वामित्र, आघमर्षण, कौशिक
	कौशिक	व, क	
६.	पूरण-वारिधापयन्त	आश्व०	वैश्वामित्र, देवरात, पौरण
		रेस्ट	वैश्वामित्र, पौरण
७.	अज		वैश्वामित्र, माधुच्छन्दस, आज्य
८.	अष्टकलोहित	ब, व	वैश्वामित्र, अष्टक, लोहित
		क, ब	वैश्वामित्र, लौहित, आष्टक
		मान०, व, आप,	वैश्वामित्र, लौहित आष्टक
			वैश्वामित्र, अष्टक
		आश्व	वैश्वामित्र, माधुच्छन्दस, आष्टक
९.	रौक्षक	ब, व	वैश्वामित्र, रौक्षक, रैणव
	रेणुस (रैणवस)	रेस्ट	वैश्वामित्र, गाथिन, रैणव
९अ.		व	वैश्वामित्र, कथन, काठक
		मान	वैश्वामित्र, काठक, काथ्यक
१०.	आश्मरथ्य	क, म	वैश्वामित्र, आश्मरथ्य, बाधुल
		मान०, क	
११.	इन्द्र-कौशिक	ब, व	वैश्वामित्र, ऐन्द्र, कौशिक
१२.	रौहिण	आश्व०	वैश्वामित्र, माधुच्छन्दस, रौहिण
१३.	शालन्कायन	आश्व०	वैश्वामित्र, शालंकायन, कौशिक
१४.	हिरण्यरेतस	मान०, व	वैश्वामित्र, हैरण्यरेतस

---

१. ब्रफ, जान, दि अ० ब्रा० सि० आ० गो० ऐ० प्र०, पृ० ३५

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

१५.	सुवर्णरेतस	मान०, व	वैश्वामित्र, सौवर्णरेतस
१६.	कपोतरेतस	मान०, व	वैश्वामित्र, कपोतरेतस
१७.	घ्रत-कौशिक	मान०, व	वैश्वामित्र, धार्तकौशिक
१८.	साहुल-माहुल	मान०, व	वैश्वामित्र, साहुल,-माहुल
१९.	साठर-माठर	मान०	वैश्वामित्र, साठर-माठर

कश्यप[1]

१.	निध्रुव-कश्यप		काश्यप, आवत्सार, नैध्रुव
१अ.	कश्यप	आश्व०	काश्यप, आवत्सार, आसित
२.	रेभ		काश्यप, आवत्सार, रैभ
३.	शांडिल	ब,व	काश्यप, आवत्सार, शांडिल्य
		(ब, व)	काश्यप, आवत्सार, दैवल
		ब, व	काश्यप, आवत्सार, आसित
		(आश्व० ब- क)	शांडिल्य, आसित, दैवल
		मान, व, ब	
		(ब)	शांडिल्य, आवत्सार, काश्यप
		आप०	दैवल, आसित
		(आप०)	काश्यप, दैवल, आसित
		म, क, मान	काश्यप, आसित, दैवल
		(आश्व०, व)	
४.	लौगाक्षि	ब, क, मान	काश्यप, आवत्सार, वासिष्ठ
	(लौकाक्षि)	म, व	काश्यप, आवत्सार, आसित
		(ब)	काश्यप, आवत्सार, शारस्तम्ब
५.	शांखमित्र	व	काश्यप, आवत्सार, शांखमित्र

वसिष्ठ[2]

१.	वसिष्ठ		वासिष्ठ
२.	कुण्डिन		वासिष्ठ, मैत्रावरुण, कौण्डिन्य
३.	उपमन्यु	ब	वासिष्ठ, इन्द्रप्रमद, आभरद्वसक
		व	वासिष्ठ, इन्द्रप्रमद, उपमन्यव
		क, मान०, व	
		आश्व, म	वासिष्ठ, आभरद्वसव्य, इन्द्रप्रमद

१. ब्रफ, जान—दि० अ०ब्रा०सि०आ०गो०ए०प्र०, पृ० ३६
२. वही, पृ० ३७

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

४.	पराशर		वासिष्ठ, शाक्त्य, पाराशर्य
५.	जातूकर्ण्य	क, म	वासिष्ठ, आत्रि (?), जातूकर्ण्य
		व	वासिष्ठ, आतबोध, पाटव
६.	संकृति-पूतिमास	आप०	शाक्य, सांकृत, गौरिवीत
७.	लोहिण	व	वासिष्ठ, लोहिण्य, फाल्गुन्य

अगस्त्य[1]

१.	इध्मवाह	ब (आप), क मान०, व, ब आश्व०,	आगस्त्य, दार्ढच्युत, इध्मवाह
		आप०	आगस्त्य
२.	साम्भावाह	ब, व	आगस्त्य, दार्ढच्युत, साम्भवाह
३.	सोमवाह	ब, आश्व०, व	आगस्त्य, दार्ढच्युत, सौमवाह
४.	यज्ञवाह	व, व	आगस्त्य, दार्ढच्युत, याज्ञवाह
५.	अगस्ति	क, व, म	आगस्त्य, महेन्द्र, मायोभुव
६.	पौर्णमास	क, म	आगस्त्य, पौर्णमास, पारण
७.	हिमोदकस	मान०, व	आगस्त्य, हैमवर्चि, हैमोदक

गुर्जर देश

कलचुरि महासामन्त संगमसिंह कालीन ब्राह्मण गोत्र—

सुनाओ कला दानपत्र (क० सं० २९२=५४० ई०) से विदित होता है कि महासामन्त संगम सिंह के समय में भरुकच्छ में छन्दोगि, लौकाक्षि (लौगाक्षि), लौहायन, गालव तथा पौण्ड्र गोत्र के ब्राह्मणों का निवास था।[2]

---

१. ब्रफ-जान, दि अ० ब्रा सि० आ० गो० ए० प्र०, पृ० ३७

२. कार्पस, ४, पृ० २५ नोट—प्रो० स्टेन कोनो ने उक्त लौकाक्षि को लौगाक्षि बताया जाता है (ए० इ०, १०, पृ० ७५), किन्तु गोत्र प्रवर निबन्धक-दम्बक के अनुसार अंगिरसों या अंगिरस कुल में लोकाक्षि गोत्र पड़ता है। जान ब्रफ ने छन्गोदि गोत्र के ब्राह्मणों को अत्रि कुल से संबन्धित बताया है। इनके त्रिप्रवर ऋषियों के नाम आत्रेय, आर्चनानस तथा श्यावाश्व हैं। (द्र०-ब्रफ, जान-दि अ०ब्रा० सि० गो० ऐ० प्र०, पृ० १३९), लौगाक्षिब्राह्मण अत्रिकुल के अन्तर्गत आते हैं। (वही, पृ० १४१); बौधायन के अनुसार लौहायन गोत्र वसिष्ठ कुल के अन्तर्गत आता है। (वही, पृ० १७३); गालव गोत्र के ब्राह्मण को भृगुओं का कुल-संबन्धी बताया गया है (वही, पृ० ८७)

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

उक्त गोत्र में से अधिकांश का पूर्वमध्ययुगीन उत्तर भारत के अभिलेखों में उल्लेख नहीं प्राप्त होता है।

सैन्धवकालीन ब्राह्मण गोत्र—सैन्धव शासकों के समय (नवीं शताब्दी) पश्चिमी काठियावाड़ में सांकृत्य, वत्स तथा वशिष्ठ गोत्र के ब्राह्मण-परिवार रहते थे। अग्गुक द्वितीय के दानपत्र (गु० सं० ५१३=८३२ ई० से अवगत होता है कि सांकृत्य गोत्र के चतुर्वेदी ब्राह्मण सोमेश्वर (पाटन) वासी थे।[1] वत्स गोत्रीय परिवारों का उल्लेख जैक प्रथम तथा अग्गुक तृतीय के दानपत्रों में हुआ है। उनका केन्द्र भिल्लमाल (पाटन)[2] था और उनका निवास कच्छ विषय के गोमूत्रिका ग्राम में भी था।[3] जैक प्रथम (गु० सं० ५१५=८३४ ई०) के दानपत्र में वत्स गोत्र के ब्राह्मणों की गणना भिल्लमाल (पाटन) के चतुर्वेदी समुदाय के में की जाती थी। राणक के दानपत्र (गु० सं० ५५५=८७४ ई०) में वसिष्ठ गोत्र के ब्राह्मणों का उल्लेख है।[4]

चालुक्य नरेश कालीन ब्राह्मण गोत्र—नवसारी दानपत्र (क०व० ४२१=६६१ ई०) से अवगत होता है कि चालुक्य श्री शीलादित्य के समय में कश्यप गोत्र के ब्राह्मणों का केन्द्र नवसारिका (नवसारी-सूरत जनपद) था।[5] जयसिंह के नासिक दानपत्र (क० व० ४३६=६८५ ई०) के अनुसार भारद्वाज गोत्र के ब्राह्मण नासिक्य (नासिक जनपद) के निवासी थे।[6] सूरत दानपत्र (क०व० ४४३=६९३ ई०) से ज्ञात होता है कि शीलादित्य के शासन काल में शांडिल्य गोत्रीय ब्राह्मण कार्मणेय (सूरत) में रहते थे[7]; उन्हें चतुर्वेदी कहा गया है।[8] वत्स गोत्र के ब्राह्मणों का उल्लेख पुलकेशिराज के नवसारी दानपत्र (क०व० ४९०=७४७ ई०) में हुआ है। उनका आगमन वनवासी से हुआ था।[8]

---

१. सोमेश्वरवास्तव्य चातुर्व्वेद्यसामान्य सांकृत्यसगोत्र—ए० इ०, २६, पृ० २०,

२. वही, २६, पृ० २०६

३ वही, पृ० २२

४. ए० इ०, २६, २१६

५. कार्पस, ४/१, पृ० १२५

६. वही, पृ० १३०

७-८. वही, पृ० १३४

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

योगन, कौंश, अग्निवेश तथा सौदान गोत्र के ब्राह्मणों का पूर्वमध्ययुगीन अभिलेखों में अन्यत्र कही भी उल्लेख नहीं मिलता। इस अभिलेख में यह भी कहा गया है

राष्ट्रकूट कालीन ब्राह्मण गोत्र— गुर्जर देश में राष्ट्रकूट नरेशों के अभिलेखों में (७५०-९७० ई०)अनेक गोत्रों के ब्राह्मणों का लल्लेख है— अत्रि, अग्निवेश, कात्यायन, कौश, कौशिक, कौण्डिन्य, गौतम, भारद्वाज, माठर, मुद्गल, पराशर, शांडिल्य, सौदान, वार्ष्णेय, वत्स, योगन, लक्ष्मण तथा लावायन प्रिंस आफ वेल्स संग्रहालय दानपत्र (शक सं० ७३८=८१० ई०) में अत्रि गोत्र के ब्राह्मणों के नाम बताए गये है, जिनके पूर्वज गौड़ देश से बहिर्गत हुए थे।[1] इन ब्राह्मणों का वास्तव्य चम्मनिहौ (आधुनिक मिलोदिया तथा वाहोरा के बीच में स्थित चोमरखारा) था।[2] तोर्खेद दानपत्र (शक सं० ७३५=८१३ ई०) के अनुसार गोवत्तन ग्राम (सिंहरक्षी) ब्राह्मणों का केन्द्र था।[3] यहाँ कात्यान, गौतम, वार्ष्णेय, मुद्गल, वत्स, पराशर, माठर, शांडिल्य, योगन, कौश, भारद्वाज, सौदान तथा अग्निवेश गोत्र के ब्राह्मणों का निवास था।[4] ध्यातव्य है कि वार्ष्णेय, कि लावायन (लावायण) गोत्र के ब्राह्मण बररसिद्धि (बोर्सद) ग्रामवासी थे। वे त्रिप्रवरान्तर्गत चतुर्वेदी ब्राह्मण थे।[5] इन्द्रराज के दानपत्र (शक सं० ८३६=९१४ ई०) में लक्ष्मण गोत्र के ब्राह्मणों का उल्लेख है, जिनका आद्य स्थान पाटलिपुत्र था।[6] गोविन्दसुवर्णवर्ष के समय में कौशिक गोत्रीय ब्राह्मणों का गुजरात में निवास था।[7] इनका मूलस्थान पौण्ड्रवर्धन (पुण्ड्रवर्द्धन) बताया गया है।[8] ब्राह्मणपल्लिदानपत्र (शक सं० ७४६=८२४ ई०) के अनुसार कर्णसुवर्णवर्ष के काल में कौण्डिन्य गोत्र के ब्राह्मण कड्डिमर में निवास करते थे।

गुर्जरकालीन ब्राह्मण गोत्र—गुर्जरदेशान्तर्गत ब्रोच के गुर्जर नरेशों के दानपत्रों (सातवीं तथा आठवीं शताब्दी) में भारद्वाज, चौलि, दौण्डकीय, धूमरायण, हारित, काश्यप, कौशिक, कौण्डिन्य, लक्ष्मण, माठर, प्रगायण, शांडिल्य तथा वत्स गोत्रों के उल्लेख हैं। गुर्जर दानपत्रों में भारद्वाज गोत्र के ब्राह्मणों का अनेकत्र

---

१. कार्पस, ४/१, पृ० १४१

२. मोरेश्वर, जी० दीक्षित ने इसका तादात्म्य बंग देशीय गौड देश से स्थापित किया है—ए० इ०, २६, पृ० २५

३. वही, पृ० २५३

४-५. वही, ३, पृ० ५५-५६

६. ए० इ०, ३, पृ० ५५-५६

७. ए० इ०, ९, पृ० ३६-३७

८. एन० एन०, वसु—सोशल हिस्ट्री आफ कामरूप, पृ० १११

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

उल्लेख है। प्रिन्स आफ वेल्स संग्रहालय दानपत्र (क० व०४२७=६७५ ई०) से ज्ञात होता है कि दद्द तृतीय के समय गुजरात में श्रावस्ती के (मध्यदेश-सरयू-पार का सहेत-महेत) चतुर्वेदी परिवार के भारद्वाज गोत्रीय ब्राह्मण फैले हुए थे।[1] परन्तु दद्द द्वितीय के समय अक्रूरेश्वर विषय के अन्तर्गत शिरीषपद्रक निवासी चतुर्वेदी भारद्वाज ब्राह्मणों के पूर्वजों का आगमन जम्बूसर से बताया गया है।[2] दद्द द्वितीय के कैरा दानपत्रों में अनेक ब्राह्मण-गोत्रों के नामोल्लेख हैं। चौलिगोत्र के पांच चतुर्वेदी ब्राह्मण-परिवार भेरज्जिक (ब्रोच विषयान्तर्गत) में निवास कर रहे थे और उनके पूर्वजों का आगमन भरुकच्छ से हुआ था।[3] दौण्ड-कीय गोत्र के सात चतुर्वेदी ब्राह्मण-परिवारों का जम्बूसर तथा शिरीषपद्रक में निवास था।[4] इन केन्द्रों में हारित तथा धूम्रायण गोत्र के ब्राह्मण भी रहते थे।[5] शिरीषपद्रक में काश्यप, कौंडिन्य गोत्र के चतुर्वेदी ब्राह्मणों का केन्द्र था।[6] उनका आद्यस्थान जम्बूसर बताया गया है।[7] कौंडिन्य गोत्र के त्रिवेदी परिवार का उल्लेख प्रिंस आफ वेल्स संग्रहालय दानपत्र (क०व० ४८६=७३४ ई०) में हुआ है।[8] इनके पूर्वज लोहिकक्ष से बहिर्गत हुए थे।[9] जम्बूसर के निवासियों में लक्ष्मण तथा माठर[10] गोत्रीय ब्राह्मण भी थे। जम्बूसर से वत्सगोत्र के अनेक परिवार विनिर्गत होकर शिरीषपद्रक में निवास करने लगे थे।[11] नवसारी दान-पत्र (क०व० ४५६=७०४ई०) से प्रमाणित होता है कि जयभट्ट तृतीय के शासन-काल में प्रगायण गोत्र (प्रावायन सगोत्र) के चतुर्वेदी ब्राह्मणों के पूर्वज गिरि-नगर (काठियावाड़ के गिरनार) से निर्गत होने के पश्चात् श्रद्धिकाग्रहार (बड़ौदा जनपद) में रहने लगे।[12] अजनेरी दानपत्र (क०व० ४६०=७०८ ई०) में शांडिल्य गोत्र के चतुर्वेदी ब्राह्मणों का उल्लेख है, जो ब्रह्मपुरी में निवास कर रहे थे।[13]

---

१. संकालिया, हि० क० जि० इ० गु०, पृ० १२४
२. कार्पस, ४/२, पृ० ६२१
३-६. वही, ४/१, पृ० ६२
७-८. वही, पृ० १०६
९. वही, पृ० ७०
१०. वही, पृ० ६२ और ७०
११. वही, पृ० ६२
१२. गिरिनगरविनिर्गतश्रद्धिकाग्रा (ग्र) हारवास्तव्यतच्चातुर्विद्यसामान्यप्रावयन-सगोत्र—वही, ४/१, पृ० ८५
१३. ब्रह्मपुरीनिवास्येतच्चातुर्विद्यसामान्यशाण्डिल्लसगोत्र—वही, पृ० ९३

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

मैत्रककालीन ब्राह्मण गोत्र–मैत्रक कालीन दानपत्रों (५००-७७० ई०) में वलभी के अनेक ब्राह्मण गोत्र-नामों का उल्लेख है। वे इस प्रकार हैं–आत्रेय, उपस्वस्ति, कौशिक, कृष्णात्रेय, गार्ग्य, जाबाल, पराशर, भारद्वाज, मोनस, दर्भ, दौण्डकीय, वाराहक-लामकायन, व्रजगण, वत्स, शांडिल्य, शार्कराक्षि तथा शुनक। ध्रुवसेन प्रथम (५२६-५४६ ई०) के दानपत्र से ज्ञात होता है कि आत्रेय गोत्र के ब्राह्मण नगरक (वड्डनगर-नागर ब्राह्मणों का मूलस्थान) में रहते थे।[1] ध्रुवसेन तृतीय के शासनकाल में उक्त गोत्र के ब्राह्मणों के केन्द्र हस्तवप्र (सुराष्ट्र विषय) था।[2] उपस्वस्ति गोत्र के अक्रोलकवासी ब्राह्मणों का उल्लेख ध्रुवसेन प्रथम के के पलितनदानपत्र में हुआ है।[3] ध्रुवसेन द्वितीय के एकाधिक लेखों में कौशिक गोत्र के ब्राह्मणों का उल्लेख है। नोगबा दानपत्र के अनुसार जम्बूसर से बहिर्गत इस गोत्र के चतुर्वेदी ब्राह्मणों का वास्तव्य अयनकाग्रहार था।[4] ध्रुवसेन तृतीय के एक अभिलेख में उनका वास्तव्य तथा विनिर्गत महिछक बताया गया है।[5] शिलादित्य तृतीय के जेसर दानपत्र (गु०सं० ३४७ = ६६६ ई०) से विदित होता है कि कौशिक गोत्र के चतुर्वेदी ब्राह्मणों का केन्द्र वलभी था और उनका आद्यस्थान पुष्यशाम्बपुर था।[6] जेसर से प्राप्त एक अन्य दानपत्र (व०सं० ३५७= ६७६ ई०) में भी यही उल्लेख है।[7]

एक दूसरे वलभी दानपत्र से विदित होता है कि वलभी में सम्बन्धित गार्ग्य गोत्र के त्रिवेदी ब्राह्मणों का भी निवास था।[8] इनके पूर्वजों का मूलस्थान आनन्दपुर (नागर ब्राह्मणों का एक प्रख्यात केन्द्र) था।[9] पलितन दानपत्र (व० स० २१०=५२९ ई०) से ज्ञात होता है कि जाबाल (ज्याबाल) गोत्रीय

---

१. नगरकवास्तव्यब्राह्मणशान्तिशर्म्मणे आत्रेयसगोत्रय–ए०इ०, १७, पृ० १०८

२. हस्तवप्रवास्तव्यात्रेयसगोत्राथर्व्वण सब्रह्मचारिणे ब्राह्मणविष्णुयशः पुत्र ब्राह्मणमित्रशसे हस्तवप्राहारे —ए० इ०, २१, पृ० १०३

३. वही, ११, पृ० ११३

४. वही, ८, पृ० १९३

५. वही, १, पृ० ८८

६. वही, २१ पृ० २१०

७. वही, २२, पृ० ११९

८-९. इंडियन एंटीक्वेरी, भाग-११, पृ० ३०९

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

ब्राह्मण सिंहपुर के निवासी थे।[1] ध्रुवसेन द्वितीय के नोगवा से प्राप्त दो दानपत्रों (गु०सं० ३२०=६३९ ई० तथा गु०सं० ३२१=६४० ई०) से प्रमाणित होता है कि पाराशर गोत्र के ब्राह्मण अयनकाग्रहार में निवास करते थे।[2] इनके पूर्वज उदुम्बरगह्वर से बहिर्गत हुए थे।[3] उल्लेखनीय है कि इन पूर्वजों से सम्बन्धित एक दूसरी शाखा के लोग अगस्तिकाग्रहार में रहते थे[4] जो जो चतुर्वेदी कहे जाते थे।[5] ध्रुवसेन के दानपत्र से ज्ञात होता है कि भारद्वाज गोत्र के ब्राह्मण वडनगर के निवासी थे।[6] धरसेन के गनेशगद-दानपत्र (गु० सं० २०६=५२७ ई०) के अनुसार दर्भ गोत्र के ब्राह्मण हरियानक ग्रामवासी थे।[7] यह स्थान हस्तवप्राहरणी के अक्षसरक प्राप में स्थित है।[8] शीलादित्य द्वितीय के लुनसदी दानपत्र से सूचना मिलती है कि डौण्डव्य गोत्र के चतुर्वेदी ब्राह्मणों का आगमन द्वीप (गुजरात के दक्षिण समुद्र में स्थित एक टापू) से हुआ था।[9] मोनस गोत्र के ब्राह्मणों का उल्लेख ध्रुवसेन प्रथम के भावनगर दानपत्र (व० सं० २१०=५२९ ई०)में हुआ है।[10]वे वलापद्र(काठियावाड़ का दक्षिण भाग वलभी) के निवासी थे।[11]धरसेन द्वितीय(५७०-६००ई०) के मोटामचीयाला दानपत्र (व० स० २५२=५७१ ई०) में लामकायन गोत्र के ब्राह्मणों का उल्लेख है।[12]काठियावाड़ दानपत्र (व० सं० २०६=५२५ ई०) के अनुसार ध्रुवसेन प्रथम के शासनकाल में व्रजगण गोत्र के ब्राह्मण सिंहपुर में रहते थे।[13]इस स्थान का तादात्म्य काठियावाड़ प्रायद्वीप में स्थित सीहोर से स्थापित किया जाता है जो बला (प्राचीन वलभी ?) के निकट भावनगर-वढ्वान रेलवे लाइन पर है।[14]मलिय ताम्रशासन(व०सं० २५२=५७१ ई०) से ज्ञात

१-३. ए०इ०, ११, पृ० ११०, ए० इ० पृ० १९८

४-५. दुम्बरगह्वर (वि) निर्गतागस्तिकाग्र (ा) हार (ा) (नि) वासिउ (च्य) मानचातुर्व्विद्य सामान्यपाराशरस (गो)त्र –वही, पृ० १९३

६. नगरवास्तव्यब्राह्मणविश्वदत्तवसुदत्ताभ्यां भरद्वाजसगोत्राभ्यां–वही १९, पृ० ३०४

७-८. वही, ३, पृ० ३२०-२१

९. ए०इ०, ४, पृ० ८०

१०-११.वलापद्रवास्तव्यब्राह्मणणास्मायमोनसगोत्राय–वही, १५, पृ० २५७

१२. वही, ३१, पृ० ३०३

१३-१४.वही, १७, पृ० १०९

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

होता है कि महाराज धरसेन द्वितीय के समय में वत्स गोत्रीय ब्राह्मण उन्नत में निवास करते थे।[1] अलिन ताम्रपत्र के अनुसार शार्कराक्षि गोत्र के चतुर्वेदी ब्राह्मण आनन्दपुर के निवासी थे।[2] इस स्थान का तादात्म्य वर्तमान आनन्द से स्थापित किया जाता है जो कैरा से पूरब दक्षिण २१ मील की दूरी पर स्थित आनन्द तालुका का प्रमुख नगर है।[3] ध्रुवसेन प्रथम के मोटमचीयाला दानपत्र (व०सं० २०६=५२५ ई०) से विदित होता है कि शांडिल्य ब्राह्मणों का केन्द्र काशहृद था,[4] जिसका तादात्म्य अहमदाबाद से १२ मील उत्तर में स्थित कासन्द्रा से स्थापित किया जाता है।[5] उक्त शासक के वलभी दानपत्र के अनुसार शांडिल्य ब्राह्मणों का एक अन्य केन्द्र संकरवतक (शंकरवतक) था।[6] शांडिल्य गोत्र के ब्राह्मणों का उल्लेख धरसेन के बन्तिया दानपत्र (व० स० २५७=५७६ ई०) में भी हुआ हैं।[7] पलितन दानपत्र (व० सं० २०७=५२७ ई०) के अनुसार ध्रुवसेन प्रथम के समय शुनक गोत्र के ब्राह्मण ज्येष्ठनक ग्राम में रहते थे।[8] यह स्थान हस्तवप्र में स्थित है।[9] भावनगर राज्य में गोघा के दक्षिण ६ मील की दूरी पर स्थित हाथव से इनका तादात्म्य स्थापित किया जाता है।[10]

कलचुरिकालीन ब्राह्मण-गोत्र–छठीं-सातवीं शताब्दी के गुर्जर देशीय ब्राह्मणों के गोत्रों का ज्ञान आरम्भिक कलचुरी राजाओं के दानपत्रों से होता है। एभोन दानपत्र (क० व० ३४७=५९७ ई०) से अवगत होता है कि गौतम गोत्रीय ब्राह्मण कल्लिवन (कल्लवन–नासिक जनपद) के निवासी थे।[11] शंकरगढ़ के

---

१. फ्लीट, जान–कार्पस, ३, पृ० १६६
२. श्रीमद्आनन्दपुरवास्तव्यतच्चातुर्व्विद्यसामान्य श (ा) र्क्कराक्षिसगोश्र (त्र)- वही, पृ० १७९
३-४. फ्लीट जान=कार्पस, ३, पृ० १७९
५. ए० इ०, ३१, पृ० ३०१
६. वही, पृ० ३००
७. वही, ११, पृ० १०७
८. वही, २१, पृ० १८०
९. वही, १७, पृ० १०६
१०. वही, पृ० १०५
११. कार्पस,/१, ४ पृ० ४१

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

संखेड़ा दानपत्र में कौत्स गोत्रीय ब्राह्मणों का केन्द्र पाषाणहृद् (गुजरात में संखेड़ा के निकल आधुनिक सणिपाद्री) बताया गया है।[1] बडनेर दानपत्र (क० व० ३६०=६१० ई०) से ज्ञात होता है कि काश्यप गोत्रीय ब्राह्मण वटनगर (नासिक विषय) में फैले हुए थे।[2] बुद्धराज के सर्सवनी दानपत्र (क०व० ३६१=६१० ई०) के अनुसार पाराशर गोत्र के ब्राह्मणों का निवास स्थान डेभक (बड़ोदा) था।[3] कलचुरि राजकुल से सम्बन्धित तरलस्वामी के दानपत्र (क० व० ३४६=५९५-९६ ई०) में जातकर्ण गोत्र के ब्राह्मणों का उल्लेख है।[4]

त्रैकूटककालीन ब्राह्मण गोत्र—त्रैकूटक नरेश व्याघ्रसेन के सूरत दानपत्र में भारद्वाज ब्राह्मणों का उल्लेख है,[5] जिन्हें इक्षरकी आहार के अन्तर्गत पुरोहित पल्लिका ग्राम दान में मिला था।[6]

मध्यदेश

हर्षकालीन ब्राह्मणों के गोत्र—

हर्षकालीन दानपत्रों से मध्यदेश के जिन ब्राह्मण गोत्रों का परिचय मिलता है, वे इस प्रकार हैं—उपमन्यु, वत्स, कुहल, विष्णुवृद्ध, गालव, भारद्वाज, सांकृत्य, तथा सावर्णि। गविधुमत प्रस्तर अभिलेख में उपमन्यु, वत्स, सांकृत्य, कुहल और गालव गोत्र के ब्राह्मणों का उल्लेख है।[7] हर्ष के बांसखेड़ा दानपत्र में भारद्वाज गोत्रीय ब्राह्मण का नामोल्लेख है।[8] मध्यदेश में सावर्णि तथा विष्णुवृद्ध गोत्र के ब्राह्मणों का निवास मधुबन दानपत्र से प्रमाणित होता है।[9]

प्रतिहारकालीन ब्राह्मण गोत्र-प्रवर—प्रतिहार दानपत्रों में काश्यप, कात्यायन, भारद्वाज तथा शार्कराक्षि गोत्र के ब्राह्मणों के नाम प्राप्त होते हैं। भोजदेव प्रथम के दौलतपुर दानपत्र (ह० सं० १००=७०६ ई०) में काश्यप

१. कार्पस, ४/१, पृ० ४६
२. वही, पृ० ५०
३. वही, ४/१, पृ० ५५
४. वही, पृ० १६३
५. वही, पृ० २७
६. सर्वानवेक्षरक्याहारान्तर्गतपुरोहितपल्लीकाप्रतिवासिनो
७. ए० इ०, १, पृ० १८२
८. वही, ४, पृ० २११
९. वही १, पृ० ७३

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

और कात्यायन गोत्रों के ब्राह्मणों का उल्लेख है।[1] प्रतिहारकालीन आहर प्रस्तर अभिलेख (ह० सं० २९८=९०४ ई०) से विदित होता है कि भारद्वाज गोत्र के श्रेष्ठ चतुर्वेदी ब्राह्मण तत्तानन्दपुर में निवास करते थे।[2] भारद्वाज त्रिप्रवरान्तर्गत ब्राह्मणों का उल्लेख भारत कला भवन दानपत्र (वि० सं० १०४०=९८३ ई०) में हुआ है।[3] उक्त गोत्र के ब्राह्मण-परिवार का विवरण भोजदेव के वराह ताम्रशासन (वि० सं० ८९३=८३६ ई०) में भी किया है।[4] हर्ष संवत् २९६=९०२ ई० के अहरदानपत्र से अवगत होता है कि शार्कराक्षि गोत्र के ब्राह्मणों का केन्द्र तत्तानन्दपुर था और उन्हें अभिलेख में 'श्रीमहा(र्य) चतुर्वेदी' कहा गया है।[5]

सरयूपार के कलचुरि कालीनगोत्र प्रवर—कलचुरि नरेश सोढदेव के शासन-काल में सरयूपार क्षेत्र के गोत्र-नामों का विवरण कहला दानपत्र में प्राप्त होता है। वे गोत्र नाम इस प्रकार हैं—कात्यायन, काश्यप, कौशिक, कौंडिन्य, कृष्णात्रेय, धौम्र पाराशर, भारद्वाज, राहुल, शांडिल्य तथा सावर्णि। कात्यायन गोत्रीय ब्राह्मणों का त्रिप्रवर था।[6] इनके पूर्वजों का आगमन सांकस (संकिसा) स्थान से हुआ था।[7] काश्यप गोत्र के ब्राह्मणों का भी त्रिप्रवर था और इनका केन्द्र महुआली (ग्राम महुलिया) जिला गोरखपुर था।[8] कौण्डिन्य गोत्र के ब्राह्मणों का त्रिप्रवर था।[9] उल्लेखनीय है कि इन्हें नागर (नागर पंडित) कहा गया है।[10] स्पष्ट है कि इन ब्राह्मणों के पूर्वजों का आगमन नगरक या बडनगर (गुजरात) से हुआ था। कहला दानपत्र से ज्ञात होता है कि टीकरी के कृष्णात्र गोत्र के ब्राह्मणों का पंचप्रवर कहा गया

---

१. ए० इ०, ५, पृ० २१२
२. श्रीतत्तानन्दपुरे प्रतिवसमान श्रीमदार्यचातुर्व्वेद्यसामान्यभारद्वाजसगोत्र-वही, १९, पृ० ६१
३. वही, ३१, पृ० ३१२
४. ए० इ०, ३१, पृ० १८
५. श्रीतत्तानन्दपुरे प्रतिवसमान(:)श्रीमदा(र्य)चातुर्व्वेद्यसामान्याः शार्कराक्षिसगोत्राः—वही, पृ० ६०
६-७. कार्पस, ४/२, पृ० ३९१
८. वही ४/२, पृ० ३९०
९-१०. नागर········को (गोत्र त्रिप्रवर), वही, पृ० ३९१

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

है।[1] टीकरी ग्राम कहला ग्राम (घुरियापार) से उत्तर दो मील की दूरी पर है।[2] उक्त दानपत्र से ज्ञात होता है कि सोढदेव के काल में सरयूपार प्रदेश में निवास करने वाले धौम्र गोत्रीय ब्राह्मणों का आगमन मथुरा से हुआ था और वे त्रिप्रवर के ब्राह्मण थे।[3] पराशर गोत्र के ब्राह्मणों को भी त्रिप्रवर कहा गया है।[4] इनका केन्द्र हस्तिग्राम था।[5] कहला निवासी भारद्वाज, कटौवन निवासी राहुल तथा कोलाञ्च निवासी शांडिल्य गोत्र के ब्राह्मण त्रिप्रवरान्तर्गत थे।[6] परन्तु तालीक ग्रामवासी सावर्णि गोत्रीय ब्राह्मणों का पंचप्रवर था।[7]

गहडवाल कालीन ब्राह्मणों के गोत्र तथा प्रवर— गहडवाल कालीन दानपत्रों (एकादश तथा द्वादश शताब्दी) से मध्य देश में अनेक ब्राह्मण गोत्रों का परिचय मिलता है। उनकी सूची इस प्रकार है– उपमन्यु, कपिष्ठल, कात्यायन, कौंडिन्य, कौशिक, कृष्णात्रेय, काश्यप, गर्ग, गार्ग्य, गालव, गोभिल, गौतम, कृष्णात्रेय, जातुकर्ण, जीवन्तायन, पारावस, पराशर, पिप्पलाद, बन्धुल, भार्गव, भारद्वाज, मौद्गल्य, मौन्य, वत्स, वत्सभार्गत्र, वसिष्ठ, शांडिल्य, शौनक, शार्कराक्षि, सौश्रवस, सार्कर, सार्क्रवस, सांकृत्य तथा हारित। उपमन्यु कपिष्ठल, कात्यायन, कौंडिन्य, कौशिक, कृष्णात्रेय तथा काश्यप गोत्र के ब्राह्मणों का उल्लेख चन्द्रावली दानपत्र (वि० सं० ११५०=१०९३ ई०) में प्राप्त होता है।[8] विभिन्न गोत्रों के पाँच सौ ब्राह्मणों का भी उल्लेख हुआ है परन्तु गोत्रों के नाम नहीं बताए गये हैं।[9] गोविन्दचन्द्र तथा युवराज महाराजपुत्र आस्फोटचन्द के दानपत्र (व० सं० ११९०=११३३ ई०) से विदित होता है कि काश्यप गोत्रीय ब्राह्मणों के त्रिप्रवर के ऋषि काश्यप,

---

१. कार्पस, ४/२, पृ० ३९१

२. वही, पृ० ३८६

३. माथुरदीक्षितरामपुत्रधौम्रगोत्रत्रिप्रवरराव(ब)ह्वृचसा(शा)खिदीक्षित-गौतम—वही, पृ० ३९०

४-५. वही, पृ० ३७

६. वही, पृ० ३९१

७. वही, पृ० ३९०

८. ए०इ०, १४, पृ० २०२

९. वही, पृ० १९४

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

आवत्सार तथा नैध्रुव थे ।[1] इन ब्राह्मणों का उल्लेख गोविन्दचन्द्र के लार दानपत्र[2] (वि० सं० १२०२ = ११४५ई०) मछलीशहर के दानपत्रों[3] (वि० सं० १२०१ = ११४४ई०) तथा मधुवन दानपत्र[4] (व० सं० १२५३ = ११९६ई०) में किया गया है । इस काल में गर्ग, गार्ग्य तथा गालव गोत्र के ब्राह्मणों के अस्तित्व का प्रमाण चन्द्रावती दानपत्र में हुआ है ।[5] गहडवाल दानपत्र (वि० सं० ११९० = ११३३ ई०) से विदित होता है कि गोभिल गोत्रीय ब्राह्मणों के त्रिप्रवर ऋषि गोभिल, आंगिरस तथा अम्बरीष थे ।[6] गौतम, चन्द्रात्रेय, जातुकर्ण तथा जीवान्तायन गोत्र के ब्राह्मण चन्द्रदेव के शासनकाल में थे ।[7] गोविन्दचन्द्र के दानपत्र (वि० सं० ११८७ = ११३० ई०) से विदित होता है कि पाराशर गोत्र के ब्राह्मणों के त्रिप्रवर कात्यायन, कौशिक और धौम्य थे ।[8] पराशर, पिप्पलाद तथा भार्गव ब्राह्मणों के सम्बन्ध में सूचना चन्द्रावती दानपत्र से मिलती है ।[9] इस दानपत्र में भारद्वाज गोत्रीय ब्राह्मणों का भी उल्लेख हुआ है । छतरपुर ताम्रपत्र (वि० सं० ११७७=११२० ई०) अन्य दानपत्रों से अवगत होता है कि भारद्वाज ब्राह्मणों के त्रिप्रवर ऋषि भारद्वाज, आंगिरस तथा बार्हस्पत्य थे ।[10] उक्त शासक के राजघाट दानपत्र से ज्ञात होता है कि इस गोत्र के ब्राह्मणों के त्रिप्रवर ऋषियों के नाम

---

१. ए० इ०, ८, पृ० १५६
२. वही, ८, पृ० ९९
३. वही, ५, पृ० ११६
४. वही, १०, पृ० ९९
५. वही, १४, पृ० २०२
६. वही, ४, पृ० १११
७. ए० इ०, १४, पृ० २०२ बौधायन में जैवन्ताय शब्द मिला है—जान ब्रफ—दि अ० ब० सि० गो० प्र०, वही, पृ० ८२
८. पाराशर गोत्रीय काकायन कौसि(शि)कधौम्य त्रिप्रवराय-वही, ८, पृ० १५४
९. ए० इ०, १४, पृ० २०२
१०. भारद्वाजसगोत्राय भारद्वाजअङ्गिरस वा[बा]र्हस्त्य त्रिः प्रवराय—ए० इ०, १८, पृ० २२६; वही, ८, पृ० १५३

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

भारद्वाज, आँगिरस तथा वत्स हैं।[1] गोविन्दचन्द्र तथा राल्हणदेवी के पाली दान-पत्र से विदित होता है कि मौद्गल्य गोत्रीय ब्राह्मण त्रिप्रवर मौद्गल्य, आँगिरस तथा भारद्वाज से सम्बन्धित थे।[2] चंद्रावती दानपत्र में मौन्य, तथा वत्स गोत्र के ब्राह्मणों का भी उल्लेख है।[3] गोविन्दचन्द्र के बनारस ताम्र-पत्र (वि० सं० ११६२ = ११०५ ई०) तथा अन्य अभिलेखों[4] से ब्राह्मणों का सम्बन्ध त्रिप्रवर बंधुल, अधमर्षण तथा विश्वामित्र से था।[5] इनके पूर्वजों का बहिर्गमन साविथ देश (श्रावस्ती ?) से हुआ था।[6] इस वंश के अधिकांश ब्राह्मणों को गहडवाल नरेशों ने सम्मानित पद दिया था।[7] बन्धुल गोत्रीय ब्राह्मणों के नाम चन्द्रावती दानपत्र में भी मिलते हैं।[8] वत्सगोत्रीय ब्राह्मणों तथा उनके पंचप्रवर भार्गव, च्यवन, और्व, जमदग्नि तथा आप्नुवान का परिचय गोविन्दचन्द्र के दोन बुजुर्ज दानपत्र (वि० सं० ११७६ = १११९ ई) से प्राप्त होता है।[9] उक्त गोत्र के ब्राह्मणों का उल्लेख जयचन्द्र के लखनऊ संग्रहालय तथा अन्य दान-पत्रों में किया गया है।[10] गोविन्दचन्द्र के गगहा दानपत्र (वि० सं० ११९९ = ११४२ ई०) में श्री वत्स गोत्र के ब्राह्मणों का सम्बन्ध त्रिप्रवर से बताया गया है।[11] गोविन्दचन्द्र के सामंत वत्सराज के कमौली ताम्रशासन (वि० सं० ११९१ = १०३४ ई०) से ज्ञात होता है कि द्विगोत्र वत्स-भार्गव ब्राह्मणों के पंचप्रवर भार्गव, च्यवन, और्व, जमदग्नि तथा आप्नवान ऋषि थे।[12] वशिष्ठ गोत्र के ब्राह्-

---

१. ए० इ०, २६, पृ० २७३

२. वही, ५, पृ० ११४

३ वही, १४, पृ० २०२

४. वही, २६ पृ० ७३; वही, २, पृ० ३६३; वही, ४, पृ १०१-१२८

५-६. ए० इ०, २, पृ० ३६०

७. वही, २६, पृ० ७३; वही, २, पृ० ३७३; वही, ४, पृ० १०१-१२८

८. वही, १४, पृ० २०२

९. द्रोणायणषडीयवच्छ(त्स)गोत्राय भार्गवच्यववा(न)अर्म(और्व)जामद्(द)ग्न्यआप्नवान प (पं,च प्रवराय—वही, १८, पृ० २२२

१०. वही, ३५, पृ० २१३-१६; वही, ३५, पृ० २१०

११ श्रीवत्स-गोत्राय गर्ग्गभार्ग्गव-च(य,वन-त्रिप्रवराय —वही, १३, पृ० २१९

१२. भार्गव-च्यवन-आप्नुवन:-और्व्व-जामदग्न्य = इति पंचार्ष(र्षे)य प्रच(व,राय वच्छ(त्स)-भार्गव-गोत्राय गाड-आन्वयाय, वही, ४, पृ० १३२

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

मणों का उल्लेख चन्द्रावती दानपत्र तथा विजयचन्द्र के लखनऊ संग्रहालय दानपत्र (वि० सं० १२२१ = ११६४ ई०) में हुआ है ।[1] गोविन्दचन्द्र तथा उनकी रानी गोसलदेवी के वनगाँव दानपत्र (वि० सं० १२०८ = ११५१ ई०) से विदित होता है कि उक्त गोत्र के ब्राह्मणों के पूर्वजों का आगमन पाटलिपुत्र से हुआ था ।[2] चन्द्रावती दानपत्र तथा गोविन्दचन्द्रदेव के ताम्रपत्र (वि० सं० ११८६ = ११२९ ई०) से ज्ञात होता है कि शांडिल्य ब्राह्मण त्रिप्रवर शांडिल्य, असित तथा देवल से सम्बन्धित थे ।[3] गोविन्दचन्द्रदेव के उक्त ताम्रपत्र में शौनक, शार्क-राक्षि, सौश्रवस तथा सार्कर गोत्रीय ब्राह्मणों के नाम भी प्राप्त होते हैं ।[4] इलाहाबाद संग्रहालय दानपत्र (वि० सं० ११७१ = १११४ ई०) से विदित होता है कि ब्राह्मणों के त्रिप्रवर ऋषियों के नाम आंगिरस, आमहिच तथा अरुक्ष थे ।[5] सांकृत्यगोत्र के त्रिप्रवर ऋषियों– सांकृत्य, आंगिरस तथा गौरीवित के नाम गोविन्दचन्द्र के दानपत्र (वि० सं० ११९६ = ११३९ ई०) में प्राप्त होते हैं ।[6] उक्त गोत्र के ब्राह्मणों का उल्लेख चन्द्रावती दानपत्र में भी किया गया है ।[7] हारित गोत्र के ब्राह्मणों का नामोल्लेख चन्द्रावती दानपत्र में हुआ है[8]

बुन्देलखन्ड के ब्राह्मण-गोत्र और प्रवर

चन्देलकालीन बुंदेलखण्ड के ब्रह्मण-गोत्र तथा प्रवर—चंदेलों के दानपत्रों में अनेक दानपत्रों का उल्लेख हुआ है । वे गोत्रहैं—अत्रि, उपमन्यु, कुत्स, कात्यायन, कौशिक, कौंडिन्य, काश्यप, कृष्णात्रेय, गौतम, गर्ग, चन्द्रात्रेय जातूकर्ण, जीवन्तायन, त्रैकायन, ढाढ्यंच्युत, दर्भि, धौम्य, पराशर, पाणिनि, बन्धुल, भारद्वाज, माहुल, माण्डव्य, मौन, वत्स, विष्णुवृद्ध, वसिष्ठ, शांडिल्य तथा सांकृत्य । परर्मादिदेव के सेमरा दानपत्र (वि० सं० १२३३ = ११६६ ई०) में अनेक गोत्रों

१. ए० इ०, १४, पृ० २०२; वही, ३४, पृ० २२५

२. ए० इ०, ५, पृ० ११८

३-४. वही, १३, पृ० २९७; वही, १४, पृ० २०२

५. सार्क्कवस्यगोत्रायअंगिरस आमहिच-अरुक्ष त्रिप्रवराय-वही ३३, पृ० १८०

६. सांकृत्य-गोत्राय सांकृत्य-आंगिरसगौरीविवत्रिः (त्रि)प्रवराय-वही, ३५, पृ० २०८

७-८. वही, १४, पृ० २०८

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

तथा प्रवरों (नानागोत्रेभ्यो नानाप्रवरेभ्यो) के ब्राह्मणों का उल्लेख है।[1] इस दानपत्र में अत्रि,[2] उपमन्यु,[3] कुत्स,[4] कात्यायन,[5] कौशिक,[6] कौंडिन्य[7] तथा काश्यप[8] गोत्र के ब्राह्मणों के नाम प्राप्त होते हैं। प्रचर दानपत्र से (वि०सं० १२३३ = ११७६ ई०) काश्यप गोत्र के त्रिप्रवर ब्राह्मणों का आद्यस्थान मुताउष भट्टाग्रहार बताया गया है। उक्त गोत्र के ब्राह्मणों का उल्लेख वीरवर्मदेव के चरखारी दानपत्र में (वि० सं० १३११ = १२५४ ई०) में भी मिलता है।[9] चरखारी दानपत्र (वि० सं० ११०८ = १०५१ ई०) से विदित होता है कि कृष्णात्रेय गोत्र के ब्राह्मणों के त्रिप्रवर ऋषि अत्रि, अर्च्चनानस तथा श्यावाश्व थे।[10] इनके पूर्वजों का आगमन कुम्भटोभट्ट ग्राम से हुआ था।[11] इस गोत्र के ब्राह्मणों का उल्लेख सेमरा दानपत्र में भी किया गया है।[12] कौत्स गोत्र के ब्राह्मणों के त्रिप्रवर अंगिरस, अंबरीष तथा यवनाश्व थे और इनका मूलस्थान पाटलिपुत्र भट्टाग्रहार था।[13] आद्यस्थान पाटलिपुत्र के इन ब्राह्मणों का उल्लेख सेमरा तथा परमर्दिदेव के एक दूसरे दानपत्र (वि० सं० १२३९ = ११८२ ई०) में भी है।[14] इनका भी आदि स्थान पाटलिपुत्र नगर था।[15] सेमरा दानपत्र में

---

१. ए० इ०, ४, पृ० १५९-६९

२. अत्रि गोत्र……वही, पृ० १६३-६४-६५

३. वही, पृ० १५८, ६१, ६५

४. वही, पृ० १५९-६२

५. वही, पृ० १६८

६. वही, पृ० १५८, ६२

७. वही, पृ० १६०

८. वही, पृ० १५८-६९

९. मुताउषभट्टाग्रहारविनिर्गताय काश्यपगोत्राय कश्यपावत्सारनैध्र(ध्रु)वत्रि-प्रवराय—वही, १०, ४८; वही, २०, पृ० १३३

१०-११ ए० इ०, २०, पृ० १२७

१२. वही, ४, पृ० १५८, ६०, ६६

१३. वही, ३२, पृ० १२९

१४-१५. वही, पृ० १२५

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

गौतम[1],गर्ग,[2] चन्द्रात्रेय,[3] जातूकर्ण[4] ,जीवन्तायन[5] ,त्रैकायन[6] ,दाढ्र्यच्युत[7] दर्भि[8] , धौम्य[9] , पाराशर,[10], पाणिन[11], बन्धुल[12], बौधायन[13] तथा भारद्वाज[14] गोत्र के ब्राह्मणों का उल्लेख है ।

भारद्वाज गोत्र के ब्राह्मणों का उल्लेख नन्योरा दानपत्र[15] (९९८ ई०),त्रैलोक्य वर्मा के गर्र दानपत्र[16] (वि०सं० १२६१=१२०४ ई०) तथा हम्मीर वर्मदेव के चरखारी दानपत्र[17] (वि०सं० १३६४ = १२८९ ई०)में किया गया है। नन्योरा दानपत्र में इस गोत्र के ब्राह्मणों का मूलस्थान टकारी बताया गया है। माहुल[18],माण्डव्य,[19] मौन[20] तथा वत्स[21] गोत्र के ब्राह्मणों का उल्लेख सेमरा

---

१. ए०इ०, २० पृ० १५८-६१-६२
२. वही, पृ० १५८-६२
३. वही, पृ० १०४
४. वही, पृ० १६६
५. वही, पृ० १५८-६१-६४
६. वही, पृ० १६२
७. वही, पृ० १६७
८. वही, पृ० १६२
९. वही, पृ० १५९-६०-६२
१०. वही, पृ० १६१
११ वही, पृ० १६१-६७
१२ वही, पृ० १६५
१३. ए० इ०,४, पृ० १६१-६७
१४. वही, पृ० १६५
१५. वही, १६, पृ० २०५
१६. वही, पृ० २७४
१७. वही, २०, पृ० १३६
१८. 'माहुल गोत्र……'वही, ४, पृ० १६४
१९. 'मांडव्यगोत्र…… 'वही, पृ० १६०
२०. 'मौनसगोत्र……'वही, पृ० १६६-६७-६८
२१. वही, पृ० १६०-६४

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

दानपत्र में हुआ है। चरखारी दानपत्र (वि०सं० १२३६ = ११७९ ई०) से ज्ञात होता है कि वत्स गोत्रीय ब्राह्मणों का आद्यस्थान मुताउषभट्टग्रहार था। इस अभिलेख के विषय में यह पंच प्रवर (वत्सगोत्रेभ्यो वत्सभार्गवच्य-वनाप्नुवानौर्व्वया (जा) मदग्न्येतिपञ्चप्रवरे) था।[1] उल्लेखनीय है कि इसमें ऋषियों के पंचप्रवर के छः नाम बताये गये हैं। इसका कारण भूल के अतिरिक्त और कुछ नहीं हो सकता। बौधायन के अनुसार वत्स गोत्र के पंचप्रवर हैं। प्रस्तुत दानपत्र में वत्स का नामोल्लेख भ्रमवश हो गया है। त्रैलोक्यवर्मा के तेहरी दानपत्र (वि०सं० १२६४ = १२०७ ई०) में ब्राह्मणों के विनिर्गत रैकोर का उल्लेख है।[2] विष्णुवृद्ध, वसिष्ठ[3], शांडिल्य[4] तथा सांकृत्य[5] गोत्र के ब्राह्मणों का उल्लेख परमर्दिदेव के सेमरा दानपत्र में हुआ है। महोबा दानपत्र (वि०सं० १२३० = ११७३ ई०) में सांकृत्य गोत्र त्रिप्रवर सांकृत्य अंगिरस तथा गौरिवीत ऋषियों के नाम प्राप्त होते हैं।[6]

त्रिपुरी

कलचुरिकालीन ब्राह्मण–गोत्र और प्रवर

त्रिपुरी (जबलपुर, मध्यप्रदेश) निवासी ब्राह्मणों के गोत्र तथा प्रवर का ज्ञान कलचुरी राजाओं के दानपत्रों से ज्ञात होता है। जबलपुर दानपत्र (क० व० ९२६ = ११६२ ई०) से ज्ञात होता है कि जयसिंह के समय में यहाँ त्रिप्रवर अगस्त्य गोत्र के ब्राह्मणों का निवास था।[7] बौधायन के अनुसार अगस्त गोत्रीय त्रिप्रवर ऋषियों के नाम आगस्त्य, दाढ्र्यच्युत तथा साम्भवाह हैं[8] खैरा दानपत्र (क० व० ८२३ = १०७१ई०) से विदित होता है कि काण्व गोत्र के ब्राह्मणों का त्रिप्रवर था, परन्तु केवल दो प्रवर ऋषियों आप्नुवान तथा जामदग्न्य का उल्लेख किया गया है। सामान्यतः इस गोत्र के त्रिप्रवर ऋषि आप्नुवान, जामदग्न्य तथा और्व का उल्लेख मिलता है।[9]

---

१. ए०इ०, ४, २०, पृ० १३०
२ रैकौरविनिर्गताय वत्सगोत्राय-वत्सभार्गवच्यवनऔर्म्म(र्व्वं)या(जा)मदग्न्य पञ्चप्रवराय—वही, ३१, पृ० ७३
३. ए० इ०, ४, पृ० १६७
४-६. वही, पृ० १५८-१६१-६२-६५
७-८. आगस्त्यगोत्राय, त्रिप्रवराय……कार्पस, ४/१, पृ० ३२९
९. वही, पृ० २९५

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

जबलपुर दानपत्र(क० व० ५२९=७७८ ई०)से ज्ञात होता है कि काश्यप गोत्र के ब्राह्मणों के त्रिप्रवर काश्यप, आवत्सार तथा नैध्रुव थे।[1] इस गोत्र का उल्लेख विजयसिंह (क०व० ९३२=११८१ ई०) के गोपालपुर प्रस्तर अभिलेख में भी हुआ है।[2] बौद्धिक शक्ति और विशिष्ट ज्ञान के लिए इन विष्णु भक्त ब्राह्मणों की बड़ी प्रतिष्ठा थी। गोहरवा दानपत्र (१०४१ ई०) में कौंडिन्य गोत्र के ब्राह्मणों का उल्लेख है, जिनके पूर्वज विदर्भ (वाकाटक राज्य) से बहिर्गत हुए थे।[3] इस कारण इन्हें 'विदर्भी कौंडिन्य' गोत्र का ब्राह्मण कहा गया है।[4] इनके त्रिप्रवर ऋषि आंगिरस, अम्बरीष तथा यौवनाश्व थे।[5] रेवा प्रस्तर अभिलेख (क० व० ९२६=११७५ ई०) से ज्ञात होता है कि कौशिक गोत्रीय ब्राह्मणों के त्रिप्रवर ओदल, विश्वामित्र तथा देवरात थे।[6] एक अन्य रेवा दानपत्र (वि०सं० १२५३=११९५ ई०) में 'कौशिलल' गोत्र के ब्राह्मणों का उल्लेख है।[7] मिराशी इसको कौशिल पढ़ते हैं।[8] ऐसा प्रतीत होता है कि इसका तात्पर्य कौशिक गोत्र से ही है।[9] इनके त्रिप्रवर 'कौशिललविश्वामित्रदेवराज(त)त्रिप्रवराय' बताये गये हैं।[10] कर्ण के बनारस दानपत्र(क० व० ७९३=१०४२) में कौशिक ब्राह्मणों के त्रिप्रवर ओदल, देवरात तथा विश्वामित्र का उल्लेख है। इनके पूर्वजों का मूलस्थान वेसालग्राम (वैशाली)था।[11] जयसिंह के तेवर प्रस्तर अभिलेख (क० व० ९२८=११७६ ई०) के अनुसार कात्यायन गोत्रीय ब्राह्मण सीखा ग्राम (मालवा के सीखा ग्राम) में रहते थे।[12] यह ग्राम वलपुर (मध्यप्रदेश) से उत्तर पश्चिम में चार मील की दूरी पर स्थित है।[13] विजय सिंह के

---

१. काश्यपगोत्राय काश्यपावत्सारनैध्रुवत्रिप्रवराय—ए० इ०, ४/२, पृ० ६३४

२. काश्यपान्वयवर्द्धिष्णुभक्तिमनीषिणः/
प्र (ज्ञा)ज्ञानधना विप्रा बभूवुर्भुवि यद्यशोज्योतिरयापि प्रस्फुरन्न निवर्तते। वही, पृ० १५६

३-५. विदर्भी(र्भी)कौण्डिन्यगोत्रायाङ्गिरसाम्व(म्ब)रीष यौवनास्यत्रिःप्रवराय… कार्पस, ४/१, पृ० २५८

६. कौसि(शि)कगोत्रस्यौदलविश्वामित्रदेवरात्र(त)त्रिःप्रवरेभ्यः—वही, पृ० ३४२

७-९. कौशिललगोत्राय कौशिललविश्वामित्रदेवराज(त)त्रिप्रवराय—मिराशी, कार्पस ४/१, पृ० ३६१

१०. कार्पस, ४/१, पृ० ३६१

११. वही, पृ० २४४

१२-१३. 'गोत्रं कात्यायनं स्थानं मा (ल ?) वके सीखाग्रामः—वही, पृ० ३४६

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

रेवा दानपत्र (वि० सं० १२५३=११९६ ई०) से अवगत होता है कि कृष्णात्रेय गोत्र (आत्रेयगोत्रो ननु कृष्णपूर्व्वः) के ब्राह्मण काशी निवासी थे।[1] उक्त दानपत्र में उल्लिखित 'आत्रेय गौत्रो ननु कृष्णपूर्व्वः' का पाठ मिराशी कृष्ण-पूर्व, आत्रेयगोत्रः करते हैं।[2] उनके अनुसार इसका अर्थ कृष्णात्रेय गोत्र हैं।[3] ये ब्राह्मण तर्कशास्त्र, शब्दार्थशास्त्र तथा मीमांसा आदि में निष्णात थे।[4] उनके 'द्विज मुख्य' विशेषण से उनकी श्रेष्ठ सामाजिक स्थिति का परिचय मिलता है।[5] भारद्वाज गोत्र के ब्राह्मणों का उल्लेख कारीतलाई प्रस्तर अभिलेख में हुआ है।[6] वे उत्तम कुल के ब्राह्मण समझे जाते थे।[7] भेड़ाघाट प्रस्तर अभिलेख (क० व० ९०७=११५६ ई०) तथा जयसिंह के जबलपुर प्रस्तर लेख में मौन्य गोत्र के ब्राह्मणों का उल्लेख हुआ है।[8] इनके त्रिप्रवर ऋषि भार्गव, वैतहव्य तथा सावेतस् बताये गये हैं।[9] तृतीय ऋषिनाम सावेतस् का शुद्ध रूप सावेदश है।[10] जयसिंह के जबलपुर पाषाण अभिलेख के अनुसार त्रिपुरी में विश्वामित्र ब्राह्मण निवास करते थे।[11] कुंभी दानपत्र (क०व० ९३२=११८०) में सार्वणि गोत्र के ब्राह्मणों के पंचप्रवर ऋषि भार्गव, च्यवन, आप्नवान, और्व्व तथा जमदग्नि बताये जाते हैं।[12]

मालवा

परमारकालीन मालवा के ब्राह्मण-गोत्र और प्रवर

परमारकालीन दानपत्रों में अगस्त्य, आत्रेय, औदल, कात्यायन, काश्यप,

---

१-४. सर्व्वज्ञकल्पो द्विजमुख्य एव तस्याथ पुत्रो गुरुभक्तिचित्तो
दैवाच्छ्रिया यः परिहीन(ण)जातः आत्रेयगोत्रो ननु कृष्णपूर्व्वः।
काशीनिवासी च परोपकारी ॥ तर्क्के ज्ञानमतीव यस्य चतुरः शब्दा(ब्दा)
र्थशास्त्रे तथा मीमांसाधिगतो विपश्चितमवद्वे दांतयोगाधि(दि)धीः। वेदा
[भ्या]सरतः सदा सुविदुषां मूर्द्ध्नि प्रव[ब]द्धाञ्जलिर्विप्रः'—वही, पृ० ३५३

५. वही ४/१, पृ० ३५३

६. वशाद्भारद्वाजमुनेरननाद्गुणानतो धर्म्म इवापरो—ए०इ०, २, पृ० १७८

७. मौन्यान्वये भार्गववैतहव्यसावेतसेतिप्रवरत्रयाद्ये-कार्पस, ४/१, पृ० ३१७

८-९. मौन्यान्वये भार्गववैतहव्यसावेतसेतिप्रवरत्रयाद्ये—वही, ४/१, पृ० ३१७

१०. गोत्रप्रवरनिबन्धकदम्बक [वेंकटेश्वर प्रेस सं०], वही पृ० २५

११. विश्वामित्रजगन्मित्रगोत्रे मैत्र्यायलंकृता-वही, पृ० ३३५

१२. सावर्ण्यगोत्राय भार्गवच्यावनआप्नवानऔर्वजामदग्न्येतिपञ्च प्रवराय—
वही, ४/२, पृ० ६४९

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

कौशिक, कौत्स, हारित-कौत्स, गार्ग्य, गोपालि, गौतम, धौम्य, पवित्र, पाराशर, भार्गव, भारद्वाज, मौद्गल्य, माहुल, मैत्रेय, मौनि, मार्कण्डेय-वसिष्ठ, मुद्गल, वत्स, वाराह, शांडिल्य तथा सांकृत्य गोत्रों का नामोल्लेख है। वाक्पति मुंज के गोनरी दानपत्र (वि० सं० १०३८=९८१ ई०) से विदित होता है कि मालवा निवासी त्रिप्रवरान्तर्गत अगस्त्य गोत्र के ब्राह्मणों के पूर्वज उम्बराचर से आये थे।[1] इन्दौर संग्रहालय दानपत्र (१०७९=१०२० ई०) से सूचना मिलती है कि आत्रेय गोत्रीय ब्राह्मणों को त्रिप्रवर आत्रेय, आर्चनानस तथा श्वावाश्व ऋषि थे।[2] इनके पूर्वजों का मूल स्थान श्रीमान्यखेट था।[3] देवपाल के मान्धाता दानपत्र (वि० सं० १२८२=१२२५ ई०) से विदित होता है कि ओदल गोत्र के ब्राह्मणों का निवास मालवा में था।[4] जिनके पूर्वजों का आगमन महावन (मथुरा) के निकट से हुआ था।[5] उक्त दानपत्र में कात्यायन गोत्र के ब्राह्मणों के केन्द्र को महावन बताया गया है। उनके त्रिप्रवर–कात्यायन, कपिष्ठल, तथा विश्वामित्र का उल्लेख नरवर्मा के कदम्बपद्रक दानपत्र (वि० सं० ११६७= १११० ई०) में हुआ है। इनके पूर्वजों का मूलस्थान श्रृंगपुर (मध्यदेश) था।[6] गोनरी दानपत्र से सूचना मिलती है कि त्रिप्रवर के काश्यपगोत्रीय ब्राह्मण मालवा में फैले हुए थे।[7] इनके पूर्वजों का आगमनम धुपालिका ग्राम तथा लाट देश गुजरात से हुआ था।[8] इनके अतिरिक्त काश्यप गोत्र के ब्राह्मणों का मुतावथु[9]

---

१. उम्बराचरविनिर्गत अगस्त्यसगोत्रतृ (त्रि) प्रवर–ए०इ०,२३,पृ० १०९

२. श्रीमान्यखेटविनिर्गताय। आत्रेयसगोत्राय। आत्रेयार्च्चनानस श्यावाश्वेति त्रिप्रवराय—इण्डि० हि० क्वा०, भाग-८, पृ० ३१२

३. वही।

४. ओदल्यगोत्राय महावनस्थान विनिर्गताय ओदल्य गोत्राय,ए०इ०,९,पृ० ११०

५. वही।

६. वही, २०, पृ० १०६

७. मधुपालिकाग्रामविनिर्गतकास्य (श्य) पसगोत्रतृ (त्रि) प्रवर, ए०इ०, २३, पृ० ११०

८. (ला) टदेशविनिर्गतकास्य (श्य) पसगोत्रतृ (त्रि) प्रवर, वही।

९. मुतावथुसथानविनिर्गताय काश्यप (पआ) वत्सार-नैध्र ु व-इति-त्रिप्रवराय- वही, ९, पृ० १११-१२

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

(मथुरा[1])तथा मध्यदेश[2] से भी आगमन हुआ था। उनके त्रिप्रवर काश्यप, आवत्सार तथा नैध्रुव का उल्लेख मान्धाता दानपत्र में मिलता है।[3] परन्तु भंजदेव के वेतमा दानपत्र (वि०सं० १०७६=१०१९ ई०) त्रिप्रवरों के नाम अघमर्षण, विश्वामित्र तथा कौशिक बताये गये हैं।[4] इनके पूर्वज थानेश्वर(स्थाण्वीश्वर) से बहिर्गत होने के पश्चात् विशाल ग्राम (वैशाली ग्राम,मगध) में रहने लगे।[5] उनके वंशज वहाँ से निर्गत होकर उक्त शासक के काल में मालवा में आये। हारितकौत्स (द्विगोत्र) के ब्राह्मणों का उल्लेख मान्धाता दानपत्र में किया गया है।[6] इन चतुर्वेदी ब्राह्मणों के त्रिप्रवर आंगिरस, अम्बरीष तथा यवनाश्व थे।[7] इनके पूर्वजों का आगमन सरस्वती स्थान (सारस्वत प्रदेश) से हुआ था।[8] वहाँ कौत्स गोत्रीय चतुर्वेदी ब्राह्मणों का भी उल्लेख है।[9] उनके त्रिप्रवर आंगिरस, अम्बरीष तथा यौवनास्य (श्व) थे।[10] इनका मूलस्थान मथुरा था।[11]

गार्ग्यगोत्रीय ब्राह्मणों का पंच प्रवर था और इनके पूर्वजों का आगमन पौण्डरिक भट्टग्राम (उत्तर कुल देश=कामरूप) से हुआ था।[12] महाराजाधिराज श्री सीयक के हरसोला दानपत्र (वि० सं० १००५=९४८ ई०) में गोपालि गोत्र के ब्राह्मणों को त्रिप्रवर बताया गया है, जिनका आद्यस्थान आनन्दपुर (बडनगर)था।[13] गोनरी दानपत्र में गौतम गोत्र के ब्राह्मणों को गौतम, आंगिरस तथा उतथ्य बताया गया।[14] मालवा निवासी गौतम गोत्र के ब्राह्मणों के त्रिप्रवर ऋषि गौतम, आंगिरस तथा उतथ्य थे। उनका आगमन क्वाडी,[15] डिण्ड-

---

१. ए०इ०९, पृ० १११-१२
२, वही, पृ० ११२
३. ए० इ०, २३, पृ० ११०
४. विशालग्रामविनिर्गत पूर्व्व (जा)य स्थाण्वीश्वरादागताय। कौसिक गोत्राय अघमर्षणविश्वामित्रकौसिकेति त्रिः प्रवराय—वही १८, पृ० ३२३
५. वही।
६. सरस्वतीस्थानविनिर्गताय कठशाखाध्यायिने(हर)इत-कुत्स-गोत्राय आङ्गिरश (स) अम्व (ब) रीषयौवनास्व(श्व)इति···त्रि-प्रवराय च—वही, ९, पृ० ११२
७-११. वही।
१२. ए०इ०, ९, पृ० ११२
१३. आनन्द-पुरीय नागराय त्र्यार्षेयाय गोपालिसगोत्राय—वही, १९ पृ० २४३
१४. वही २३, पृ० १०९
१५. वही, ९, पृ० ११२

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

वानक,[1] महावन[2] (मथुरा) तथा टकारी[3] (श्रावस्ती) से हुआ था । देवपाल के मान्धाता दानपत्र में धौम्य गोत्र के चतुर्वेदी ब्राह्मणों के त्रिप्रवर ऋषि काश्यप, आवत्सार तथा नैध्रुव बतलाए गये हैं और उनका आगमन मथुरा से हुआ था ।[4] उक्त दानपत्र में त्रिप्रवर गार्ग्य, गौरिवीत तथा अंगिरस के पवित्र गोत्रीय ब्राह्मणों का उल्लेख हुआ है, जिनके पूर्वज महावनवासी थे ।[5] मालवास्थित पराशरगोत्रीय परिवारों का आगमन अनेक केन्द्रों से हुआ था। पंचप्रवर के इन ब्राह्मणों का आद्यस्थान दक्षिण बंगदेश में राढ़ा का विल्वगवास था ।[6] परन्तु त्रिप्रवर पराशर, शक्ति तथा वशिष्ठ वाले परिवार श्रावस्ती के मितिलपाटक,[7] आश्रमस्थान[8] तथा हस्तिनापुर[9] से बहिर्गत हुए थे । भार्गव गोत्रीय श्रावस्ती के दर्दुरिका ग्राम से आगत ब्राह्मण त्रिप्रवर के थे ।[10] इस गोत्र के ब्राह्मण मथुरा से भी बहिर्गत होकर मालवा में निवास करने लगे थे ।[11] उनमें से कुछ त्रिप्रवर थे । उनके ऋषियों के नाम भार्गव, वैतहव्य तथा सावेतस थे ।[12] कुछ परिवार नवगांव से भी आये थे ।[13] उनके पंचप्रवर ऋषि भार्गव, च्यवन, आप्नवान् और्व तथा जमदग्नि थे ।[14] गोनरी दानपत्र से विदित होता है कि मालवावासी

१-२. ए०इ०, ९, पृ० ११२
३. वही, पृ० १२२
४. वही, पृ० ११२
५. महावनस्थान विनिर्गताय पवित्रगोत्राय गार्ग्यगौरिवीत अङिगरस-इति-त्रि-प्रवराय—वही, पृ० ११०
६. दक्षिणराढान्तः पाति विल्वगवासविनिर्गतपारास[श]रसगोत्रपंचप्रवर—ए० इ०, २३, पृ० १०९
७. सावथि[क]देशान्तः पातिमितिलपाटकविनिर्ग[र्ग]तपराशरसगोत्र तृ[त्रि] वही, २३, १०९
८. वही, ९, पृ० ११०
९. वही, पृ० ११२
१०. शावथिकान्तः पाति दर्दुरिकाग्रामविनिर्गतभार्गवसगोत्रतृ[त्रि]प्रवर—वही, २३, पृ० ११०
११.१२- मथुरा स्थानविनिर्ग्गताय आश्वलायन शाखाध्यायिने भार्गवगोत्रायभार्गव वैतहव्यसावेतस इति त्रिप्रवराय च—वही, पृ० १११
१३-१४. नवगांवस्थान विनिर्गताय भार्गव सगोत्राय भार्गवच्यावनआप्नवान-और्व-जामदग्न्यइति पंचप्रवराय—वही, पृ० ११२

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

त्रिप्रवरान्तर्गत भारद्वाज ब्राह्मण खेटक[1] (गुजरातस्थित आधुनिक खेरा) तथा लाटदेश के नंदिपुर[2] (नर्मदा तट पर नानदोद) से आये थे। इनके अतिरिक्त, टकारी,[3] मथुरा,[4] त्रिपुरी[5] तथा मध्यदेश[6] से भी भारद्वाज ब्राह्मणों का आगमन हुआ था। इनके त्रिप्रवर ऋषि आंगिरस, भारद्वाज तथा बार्हस्पत्य थे। गोनरी दानपत्र से अवगत होता है कि मौद्गल्य, माहुल, मैत्रेय तथा मौन गोत्र के मालवा निवासी ब्राह्मण थे।[7] मौद्गल्य ब्राह्मणों के पूर्वजों का मूल स्थान खडुपल्लिका (इसका तादात्म्य खेडावल या खेडोलिया से स्थापित किया जाता है) था।[7] माहुल गोत्रीय ब्राह्मण खर्जूरिका ग्राम से बहिर्गत थे।[8] मैत्रेय गोत्र के ब्राह्मणों का आगमन मध्यदेश से हुआ था।[9] मौन गोत्रीय ब्राह्मणों का वहिर्गमन खेडापालिका से हुआ था।[10] मुद्गल तथा मार्कण्डेय गोत्र के ब्राह्मणों का उल्लेख मान्धाता दानपत्र में किया गया है।[11] इसमें से प्रथम के त्रिप्रवर ऋषि आंगिरस भारद्वाज तथा मुद्गल थे। वे मध्यदेश से आये थे।[12] मार्कण्डेय गोत्रीय ब्राह्मण

---

१. खेटकविनिर्गत भारद्वाजसगोत्र तृ[त्रि]प्रवर—ए० इ०, २३, पृ० ११०
२. लाटदेशान्तः पातिनान्दिपुरविनिर्गत्र भारद्वाजसगोत्रतृ[त्रि]प्रवर- वही,
३. वही, ९. पृ० १११
४. मथुरास्थानविनिर्ग्गताय··· भारद्वाजगोत्राय आंगिरस-वा (बा)ह्स्पत्य भारद्वाजइति त्रिप्रवराय—वही, पृ० ११२
५. त्रिपुरीस्थानविनिर्ग्गताय भारद्वाज-गोत्राय भारद्वाज-आंगिरस वा (बा) र्हस्पत्य इति त्रिप्रवराय—ए०इ०,९, पृ० ११२
६. मध्यदेश विनिर्गताय—भारद्वाज-गोत्राय आंगिरस (स)वा(बा) र्हस्पत्य इति त्रिप्रवराय—वही।
७. खडुपल्लिका ग्राम वि (नि) र्गतमौद्गल्यसगोत्रतृ (त्रि)प्रवर—वही, २३, पृ० १०९, खर्जुरिकाग्रामविनिर्गतमाहुलसगोत्रतृ (त्रि)प्रवर—वही, पृ० ११०
८. मध्यदेशान्तः पाति मैत्रेयसगोत्रतृ (त्रि) प्रवर—वही, पृ० ११०; खेडापालिका विनिर्गतमौनिसगोत्रतृ (त्रि) प्रवर—वही।
९. वही, पृ० १०९
१०-११. वही।
१२ मध्यदेश विनिर्गताय माध्यन्दिन शाखाध्यायिने मार्कण्डेय गोत्राय भार्गवच्यवन आप्नुवानऔर्व्व जामदग्न्य इति पंचप्रवराय—वही, पृ०११२

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

भी मध्यदेश से बहिर्गत हुए थे। इनके भार्गव, च्यवन, आप्नुवान, और्व, जामदग्न्य थे।[1]

वशिष्ठ गोत्र के ब्राह्मणों का उल्लेख मालवा के अनेक अभिलेखों में हुआ है। वाक्पतिमुंज के गोनरी दानपत्र में मध्यदेश के अयकभट्ट ग्राम से आगत इन ब्राह्मणों का त्रिप्रवर बताया गया है।[2] मथुरा से बहिर्गत वशिष्ठ गोत्रीय चतुर्वेदी ब्राह्मणों के त्रिप्रवर ऋषि कश्यप, अवत्सार तथा वशिष्ठ का उल्लेख मान्धाता दानपत्र में हुआ है।[3] बंसवर दानपत्र (वि० सं० १०७६=१०१९ ई०) में च्छिच्छा (लाट देश) से आये हुए इस गोत्र के प्रवर ऋषि वशिष्ठ का उल्लेख है।[4] गोनरी दानपत्र के अनुसार वत्सगोत्रीय पंचप्रवर ब्राह्मणों का आगमन श्रवणभद्र[5] तथा राजकीय ग्राम[6] से हुआ था। टकारी से बहिर्गत वत्स गोत्र के ब्राह्मणों का उल्लेख मान्धाता दानपत्र में हुआ है।[7] इनके पंचप्रवर ऋषियों के नाम भार्गव, च्यवन, आप्नुवान, और्व तथा जमदग्नि हैं।[8] श्रवणभद्र (गौड़देश) से आगत इन ब्राह्मणों का उल्लेख मिहिरभोज के महौदी दानपत्र (वि०सं० १०७४=१०१७ई०) में भी हुआ है।[9] गोनरी दानपत्र से प्रमाण मिलता है कि वाक्पति कालीन वाराह गोत्र तथा त्रिप्रवर के ब्राह्मणों के पूर्वज दपुर से आये थे।[10] इसी दानपत्र में शांडिल्य गोत्र तथा त्रिप्रवर के ब्राह्मणों का भी उल्लेख है, जिनका मूलस्थान चौरम्बभट्टग्राम तथा कुलाञ्चग्राम (श्रावस्ती) था।[11] माँधाता दानपत्र में उक्त गोत्र के ब्राह्मणों के त्रिप्रवर ऋषियों के नाम शांडिल्य, असित तथा देवल बताए गये है।[12] इनके पूर्वज मध्यदेश से बहिर्गत हुए थे।[13] सांकृत्य गोत्र के ब्राह्मण मगध देशान्तर्गत कणोपभट्ट ग्राम से बहिर्गत होकर मालवा में बसे थे। उनका त्रिप्रवर था।

---

१. ए० इ०, ९, पृ० ११२
२. वही, २३, पृ० १०९
३. वही, ९, पृ० १११
४. वही, ११, पृ० १४२
५. श्रवणभद्रविनिर्गतवत्ससगोत्रपंचप्रवर—वही, २३, पृ० ११०
६. राज (कीयग्राम) विनिर्गतवत्ससगोत्रपंचप्रवर—वही।
७-८. टकारिस्थानविनिर्गताय—वत्सगोत्राय भार्गवच्यवनआप्नुवान और्व जामदग्न्य इति पंचप्रवराय—वही, ९, पृ० ११२
९. ए० इ०, ३३, पृ० २१८
१०. दपुरविनिर्गत वाराहसगोत्रतृ (त्रि) प्रवर—वही, २३, पृ० ११०
११. चौरम्व (म्ब) भट्टगामविनिर्गत सां (शां) डिल्यगोत्रतृ (त्रि) प्रवर—ए०इ०, ९, पृ० ११२ कुलांचाग्रामविनिर्गत साँ (शां) डिल्यसगोत्र (त्रि) प्रवर—वही।
१२-१३. वही, पृ० ११२

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

छठाँ अध्याय

चरण तथा शाखा

पूर्वमध्य कालीन ब्राह्मण समुदाय के सामाजिक जीवन में वैदिक चरण तथा शाखा की भूमिका अत्यन्त महत्त्वपूर्ण रही है। पांचवीं शती से ब्राह्मण दानग्रहीताओं के विवरण में उनके शाखा, चरण, गोत्र तथा प्रवर का उल्लेख आवश्यक समझा जाने लगा, परन्तु लगभग बारहवीं शती के बाद से उनके शाखा और चरण के स्थान पर केवल उनके वेद का उल्लेख करने की प्रवृत्ति परिलक्षित होती है। कभी-कभी तो वेद का उल्लेख भी अनावश्यक समझा जाने लगा। वैदिक परम्परा में इन दोनों शब्दों का निरन्तर प्रयोग होता रहा है। चरण का उल्लेख निरुक्त,[1] पाणिनीयाष्टक,[2] महाभाष्य,[3] और प्रतिज्ञा परिशिष्टादि[4] ग्रन्थों में तथा शाखा का निरुक्त,[5] उत्तरमीमांसा[6] तथा चरणव्यूह[7] में प्राप्त होता है। शतपथ ब्राह्मण,[8] महाभारत,[9] रामायण[10] तथा पुराण[11]

---

१. सर्वचरणानां सर्वशाखान्तराणामित्यर्थः पार्षदानि प्रातिशाख्यानि— निरुक्त १/१७
२. पाणिनीयाष्टक, २/४/३
३. महाभाष्य ४/२/१०४, १३४
४. प्रतिज्ञापरिशिष्ट—भगवद्दत्त वैदिक वाङ्मय का इतिहास, प्रथम भाग, पृ० १७३ पर उद्धृत।
५. निरुक्त, १/१७
६. उत्तर मीमांसा, २/४/८
७. शौनक-चरणव्यूह, पृ० १-४९ (महिदास कृत भाष्य)
८. शतपथ ब्राह्मण, १४, ९, ४, ३३
९. पृष्टश्च गोत्र चरणं: स्वाध्यायं ब्रह्मचारिकम्—महाभारत शांति०, अ० १७० (स्वाध्याय का अर्थ शाखा प्रतीत होता है और चरण से यह पृथक् गिना जाता है)
१०. रामायण, अयोध्या० ३२/१८
११. डा० रघुबीर, 'शाखाज आफ द यजुर्वेद' जर्नल आफ द वैदिक स्टडीज, भाग २, पृ० १-१७

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

से भी तद्विषयक सामग्री उपलब्ध होती है।

चरण–चरण के स्वरूप का पतंजलि के महाभाष्य में बड़ा रोचक तथा महत्त्व-पूर्ण उल्लेख प्राप्त होता है। एक स्थल पर बताया गया है कि किसी व्यक्ति का चरण जानने के लिये तीन प्रकार से प्रश्न पूछा जा सकता है।[1]

१. के सब्रह्मचारिण: तव—आपके सहपाठी कौन हैं ?

२. किं सब्रह्मचारी त्वम् —आप किनके सहपाठी हैं ?

३. क: सब्रह्मचारी तव—आप का सहपाठी कौन है ?

इस प्रसंग में यह उल्लेखनीय है कि सब्रह्मचारी शब्द का प्रयोग पूर्वमध्यकाल में भी होता रहा। इस युग के अधिकांश दानपत्रों में चरण के अध्येता को सब्रह्मचारी बताया गया है। पाणिनि के अनुसार एक ही चरण के छात्र परस्पर सब्रह्मचारी कहलाते थे।[2]

डा० वासुदेव शरण अग्रवाल के अनुसार 'चरण' उस प्रकार की शिक्षा संस्था थी, जिसमें वेद की एक शाखा का अध्ययन शिष्य समुदाय करता था और जिसका नाम मूल संस्थापक के नाम से पड़ता था।[3]

डा० विश्वम्भर शरण पाठक ने भी चरण को एक प्रकार की शैक्षणिक संस्था माना है, जिसमें छात्र प्रवेश लेते थे।[4] आपने अपने इस मत की पुष्टि राजघाट से प्राप्त कतिपय गुप्तकालीन मुद्राओं से की है। राजघाट से वह्वृच् चरण की दो मुद्रा-प्रतिकृतियाँ प्राप्त हुई हैं।[5] इनमें स एक पर अर्ध-चन्द्राकार वितान के नीचे एक व्यक्ति दो बालकों के साथ प्रदर्शित है। आचार्य के हाथ में एक कुम्भ है, जिससे वह वृक्ष को सींच रहा है। नीचे वह्-

---

१. अग्रवाल, वासुदेव शरण, पाणिनिकालीन भारतवर्ष, पृ० २९५. चरणे-ब्रह्मचारिणि।

२. पाणिनि, ६/३/६८ नोट:—ऐसा प्रतीत होता है कि धार्मिक अनुयायियों को शिष्य अथवा ब्रह्मचारी कहते थे जो शाखाओं और वेद विशेष की विशिष्ट शाखा मानने वाले चरणों में विद्योपार्जन के निमित्त प्रस्तुत होते थे। इन शाखाओं में से मैत्रायणि, तैत्तिरीय, वाजसनेय तथा अनेक शाखाओं का अभिलेखों में उल्लेख हुआ है।

३. डा० अग्रवाल, पाणिनिकालीन भारतवर्ष, पृ० २९०

४-५. जे० एन० एस० आई, भाग २३, ४०९

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

वृच्' चरण लेख है।[1] दूसरी मुद्रा प्रतिकृति पर दो वृक्ष दिखाये गये हैं और वही लेख है। वह्वृच ऋग्वेद का एक चरण है। अतः इसमें संदेह नहीं कि ये मुद्राप्रतिकृतियाँ वह्वृच् चरण की शैक्षणिक संस्था की ओर से चलाई गयी थीं। प्रथम प्रतिकृति में वितान आश्रम का प्रतीक है, जिसमें आचार्य माणवकों के साथ प्रदर्शित है। दूसरी प्रतिकृति के वृक्ष आश्रम के परिचायक हैं। पतंजलि के प्रश्नों के संदर्भ में यह मुद्रा प्रतिकृतियाँ बड़ी महत्त्वपूर्ण हैं। इनसे चरण के प्रसंग में सब्रह्मचारी शब्द का अर्थ स्पष्ट हो जाता है।[2]

वासुदेव शरण अग्रवाल के शब्दों में 'अनेक गुरु-शिष्यों ने मिलकर पीढ़ी दर पीढ़ी जो ज्ञान साधना की थी, उस सबकी परम्परा के रक्षक चरण थे। आचार्य रूपी मूल बीज से जो महान् प्रज्ञा स्कन्ध या विद्याविटप जन्म लेता था, उसी की शाखा-प्रशाखाओं के रूप में चरणों के विद्वान् गुरु और शिष्य देश में सर्वत्र फैल जाते थे। यह बड़ी ही प्रशंसनीय और स्वाभाविक स्थिति थी, जिसमें स्वेच्छा से व्यक्ति के अधिकतम प्रयत्न की अभिव्यक्ति होती थी। ज्ञान साधना की इन परम्पराओं का मूर्तरूप वह वाङ्मय है, जिसका इन चरणों में निर्माण हुआ। इनमें सबसे विशिष्ट, सबसे विशाल और सबसे गम्भीर वह साहित्य था जो ब्राह्मणों के रूप में आज मिलता है। वैदिक मंत्रों के अध्यात्म, अधिदैवत, अधिभूत और अधियज्ञ अर्थों का जिस प्रकार निश्चित उहापोह ब्राह्मण ग्रन्थों में मिलता है, अन्यत्र नहीं।[3]

वैदिक ग्रन्थों में शाखाओं का आदिग्रन्थ आम्नाय था।[4] आम्नाय पद का अर्थ है अपने-अपने शास्त्रों का आदिग्रन्थ अथवा उपदेश। उसे चरण कहा गया है।[5] इसी अभिप्राय से कात्यायन मुनि ने ऋक्सर्वानुक्रमणी के आरम्भ में लिखा है—अथ श्री ऋग्वेदाम्नाये शाकलके।[6] अर्थात् शैशिरि आदि शाखाओं का मूल शाकलक आम्नाय था।

---

१. डा० पाठक : जे०एन०एस०आई०, २३, पृ० ४०९

२. राजघाट से चरक तथा छंदोग चरणों की मुद्राकृतियाँ भी प्राप्त हुई हैं— वही, २३, पृ० ४०९-१०

३. पाणिनि कालीन भारतवर्षः पृ० २९०

४-५. भगवद्दत्त, वै० वा० इ०, १, पृ० १५५

६. यही कात्यायन वाजसनेय प्रातिशाख्य में सूत्र रचता है 'स्याद् वाम्नायधर्मित्वाच्छंदसि नियमः' (१ / १)। यहां आम्नाय का अर्थ मूल चरण अथवा पार्षद हो सकता है — वही, पृ० १५५

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

महाभारत में इस अभिप्राय को बहुत अधिक स्पष्ट किया गया है 'आम्नायेभ्यः पुनर्वेदः प्रसृता सर्वतोमुखा':[1] अर्थात् चरणों से शाखायें विस्तृत हुईं। 'पुनश्च आम्नायमार्षं पश्यामि यस्मिन् वेदाः प्रतिष्ठिताः'[2] । अर्थात् मूल आम्नाय अथवा चरण में वेद अर्थात् शाखायें प्रतिष्ठित हैं। यहाँ वेद शब्द औपचारिक भाव से शाखाओं के लिये प्रयुक्त हुआ है ।[3]

अभिलेखों में दानग्रहीता ब्राह्मणों का परिचय देते हुए प्रायः उनके चरण का उल्लेख भी किया जाता रहा है। इनमें चरण शब्द के दो तात्पर्य प्रतीत होते हैं[4]—चार वेदों में से कोई एक वेद, दूसरा शाखाओं का समूह (बह्वृच् चरण की शाखायें—आश्वलायन तथा शांखायन, वाजसनेय चरण की काण्व तथा माध्यन्दिन, छांदोग की राणायनीय तथा कौथुम)।

अभिलेखों में उल्लिखित चरण के दूसरे अर्थ से मैक्समूलर के इस कथन की आंशिक पुष्टि होती है कि मूलतः चरणों की संख्या केवल तीन थी—बह्वृच्, अध्वर्यु तथा छन्दोग—जिनके अन्तर्गत वैदिक पुरोहितों के तीन वर्णों के लिए निर्धारित कर्मों का संग्रह ब्राह्मणों में हुआ तथा नये चरणों का जन्म हुआ। डा० पाठक के अनुसार अभिलेखों में पाँच चरणों का उल्लेख है—ऋग्वेद का बह्वृच् सामवेद का छन्दोग, कृष्ण यजुर्वेद का चरक तथा तैत्तिरीय तथा शुक्ल यजूर्वेद का वाजसनेय।

संस्थाओं के रूप में चरण का महत्त्व गुप्तकाल के पश्चात् कम होने लगा।[6] डा० पाठक के अनुसार शैक्षणिक संस्था के रूप में चरण का अस्तित्व ९ वीं-१० वीं शती तक बना रहा था।[7]

शाखा का अभिप्राय

मैक्समूलर के विचार से

तीन मूल वेदों में से प्रत्येक के विभिन्न संस्कृत—जिसे परम्परा कहना

---

१. महा० शांति०, अ० २६६
२. वही, अ० २७४
३. भगवद्दत्त, पृ० १५६
४. पाठक, वि०एस०—हि० मे० ब्रा० रे०सि०ना० इ०, शोधप्रबन्ध, पृ०४८
५. वही
६. मैक्समूलर—हि० ए० लि०, पृ० ९९
७. पाठक, हि० मे० ब्रा० रे० सि० ना० इ०, पृ० ४९

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

अधिक तर्कसंगत होगा, अपने दूसरे अर्थ में शाखा चरण का समानार्थी प्रतीत होता है।[1] परन्तु मूलतः दोनों के अर्थ में महत्त्वपूर्ण अन्तर था।[2] इसका प्रमाण इस बात से प्राप्त होता है कि शाखा के विषय में शाखां अधिते (वह वेद की शाखा (पाठ) का अध्ययन करता है) का उल्लेख तो मिलता है, परन्तु कहीं भी चरणं अधिते का उल्लेख नहीं मिलता।[3] इसका तात्पर्य यह है कि शाखा का अर्थ किसी साहित्य से था, जिसका अध्ययन किया जाता था और इसके विपरीत चरण का तात्पर्य साहित्य से नहीं था।[4]

शाखा और चरण के मौलिक अन्तर का बोध बराबर बना रहा, भले ही अनेकत्र दोनों को पर्यायवाची समझा गया है।[5] पाणिनि के सूत्र ४/१/६३ के वार्तिक में चरण की व्याख्या करते हुए शाखाध्येतृ (शाखा के अध्येता) का उल्लेख[6] है। मालती माधव पर जगधर की टीका में चरण का तात्पर्य उस समुदाय से बताया गया है, जो वेद की किसी एक शाखा का अध्ययन करता है और इस कारण एक वर्ग का है।[7] पाणिनि ने चरण का समूहार्थ में प्रयोग किया है।[8]

ऐसा विदित होता है कि शाखा और चरण का सम्बन्ध किसी न किसी रूप में विभिन्न वेदों से रहा है। कुछ लोग शाखाओं को वेद का अवयव मानते हैं और उनका यह कहना है कि सब शाखाओं के मिलने से चरण बनता है और सब चरणों के मिलने से वेद का सृजन होता है।[9] कुछ लोग शाखाओं को वेदों का व्याख्यान मानते हैं।[10] एक मत के अनुसार शाखा और चरण ब्राह्मणों की विशेषतायें हैं, तो दूसरे मत के अनुसार शाखा को चरण का अवान्तर विभाग माना जाता है।[11] उनका यह भी कहना है कि शाकल, बाष्कल, वाजसनेय तथा चरक आदि चरण हैं और आगे क्रमशः उनकी पांच, चार, पन्द्रह और बारह शाखायें हैं।[12] इन प्रतिशाखाओं से अनुशाखायें निकलीं।[13] अनुशाखा अवांतर शाखायें कहलाती हैं।[14] प्रतिशाखा शब्द भी विशेष रूप से ध्यातव्य है।[15] इसके अतिरिक्त

१-२. मैक्समूलर–हि० ए० लि०, पृ० ६५

३-६. मैक्समूलर–हि० ए० लि०, पृ० ६५

७. चरणशब्द शाखा विशेषाध्ययनपरैकतायन्नजनसंघवाची—द्र०, जुर लिटरेचर, पृ० ५७; हि०ए० लि० (मैक्समूलर) पृ० ६५ से उद्धृत।

८. चरणेभ्योधर्मवत् समूहार्थ—पाणिनि, ४/२/४६ (वार्तिक)

९-१०. भगवद्दत्त, वैदिक वाङ्मय का इतिहास, पृ० १७५

११-१५. वही

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

अनेक शाखायें केवल सौत्र शाखायें हैं–यथा–भारद्वाज, सत्याषाढ़ आदि शाखायें। किन्तु कोई विद्वान् इनको चरणों में नहीं गिनता, न इनकी वर्तमान में संहिता ही है और न ब्राह्मण। बहुत संभव है कि किसी काल में इनकी स्वतन्त्र शाखायें रही हों।

वास्तव में इनकी उत्पत्ति और अर्थ-विकास का इतिहास अत्यन्त रोचक है। ऐसा विदित होता है कि यज्ञ की आवश्यकता को लक्ष्य में रखकर संकलित संहिताओं का पठन–पाठन अक्षुण्ण बनाये रखने की उदात्त अभिलाषा से महामुनि व्यासजी ने अपने चार शिष्यों को पढ़ाया था। पैल को ऋग्वेद, कवि जैमिनि को साम, वैशम्पायन को यजुः तथा दारुण सुमन्तु मुनि को अथर्व का अध्ययन कराया गया।[1] इन शिष्यों ने अपने गुरुमुख के अधीन संहिताओं का अपने शिष्य-प्रशिष्यों में अधिक प्रचार किया, जिससे यह वेद-कल्प-तरु विविध शाखा सम्पन्न बनकर विपुल विस्तार को धारण करता रहा। पुराणों[2] तथा चक्रव्यूह[3] में इन शाखाओं का विस्तृत विवरण मिलता है। भाष्यकार पतंजलि ने ऋक् की २१ शाखाओं को, यजुर्वेद की १०० शाखाओं का, साम की १००० शाखाओं का तथा अथर्व की ९ शाखाओं का उल्लेख पस्पशाह्निक में किया है।[4] चरणव्यूह की गणना इससे भिन्न है। भाष्योक्त ११३० शाखाओं में से अधिकांश शाखायें अध्ययन के अभाव से विस्मृतिगर्त में लीन हो गई हैं। केवल कतिपय इनी-गिनी शाखायें वर्तमान काल में उपलब्ध होती हैं।[5]

डा० रघुवीर ने देवीपुराण, अग्निपुराण, विष्णुपुराण, अथर्ववेद, चरणव्यूह-यजुर्वेद परिशिष्ट आदि के आधार पर यह स्पष्ट बताने का प्रयास किया है कि यजुर्वेद की एक सौ शाखायें थीं।[6] उन्होंने चार्ट प्रकाशित किया है, जिनमें यजुः वृक्ष की एक सौ शाखायें भारत में विभिन्न भागों के फैली हुई हैं। यह

---

१ तत्रर्गवेदधरः पैलः सामगो जैमिनिः कविः
वैशम्पायन एवैको निष्णातो यजुषामुत।
अथर्वाङ्गरसामासीत सुमन्तुर्दारुणे मुनिः॥—भागवत् पु०,१/४/२१

२. विष्णु पु०,३/४/२-२५, वायु पु० ६१/५, भागवत पु०, २१/६/६१

३. शौनक चरणव्यूह सूत्रम् (महिदासकृत भाष्य), पृ० १-५१

४. एतत् सहस्रदशसप्तचैदाष्टवतो वाष्कलकेधिकानि वान् पारणे शाकले शैशिरीये बदन्ति शिष्टा न खिलेषु विप्राः—अनुवाकानुक्रमणी, श्लो० ३६

५. उपाध्याय, बलदेव-वैदिक साहित्य एवं संस्कृति, पृ० १६०

६. रघुवीर–शाखा आफ यजुर्वेद, जर्नल आफ द वैदिक स्टडीज, २,पृ० १-१७

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

यजुः वृक्ष इस वेद के प्रसार को जानने के लिये सहायता करता है। इस प्रकार इस वेद की एक सौ एक शाखायें थीं, जो बाद में शुक्ल तथा कृष्ण यजुर्वेद में विभक्त हो गईं।[1]

डा हंसमुख धीरज लाल संकालिया के मतानुसार यह शाखा वृक्ष अत्यन्त ही महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि इससे विभिन्न शाखाओं के प्रसार का ज्ञान होता है।[2]

पांचवीं शताब्दी से ही ताम्रपत्रों के माध्यम से ब्राह्मणों के शाखा, चरण, गोत्र तथा प्रवर की सूचना मिलती है,[3] परन्तु क्रमशः इन शाखा तथा चरणों का महत्त्व कम होता गया, दूसरे शब्दों में इन्हें कम महत्त्व प्रदान किया जाने लगा और बारहवीं शताब्दी से शाखाओं तथा चरणों का स्थान वेदों ने ले लिया।[4] यद्यपि कभी-कभी वेदों का उल्लेख भी नहीं किया जाता था। वेदों की शाखाओं के स्थान पर वेदों का अध्ययन किया जाने लगा।

धीरे-धीरे शाखा तथा चरण का प्रसार भारत के भिन्न-भिन्न भागों में हुआ जैसा कि अभिलेखों से ज्ञात है। बह्वृच् चरण का उल्लेख बर्द्धनों[5], कामरूप के वर्मनों[6], कलचुरियों[7] तथा गहडवालों[8] के अभिलेखों में मिलता है। वाजसनेय चरण का सम्पूर्ण उत्तरी भारत में प्रचलन था। वाजसनेय का उल्लेख प्रतिहारों[9], गहडवालों,[10] चंदेलों,[11], चेदियों[12] कामरूप के वर्मन[13],बंगाल के

---

१. जर्नल आफ द वैदिक स्टडीज, भाग २, पृ० १-१७
२. संकालिया, ह०धी०—स्टडीज इन दि हिस्टारिकल एण्ड कल्चरल जियोग्राफी एण्ड एथनेग्राफी आफ गुजरात—पृ० १३६
३ हि० मे० ब्रा० रे० स्रि० ना० इ०,पृ० ४९
४. परमर्दिदेव का सेमरा दानपत्र, ए०इ० ४, पृ० १५; चन्द्रदेव का चन्द्रावती ताम्रपत्र; वही, १४, पृ० १९३-९६
५. वही, ४, पृ० २०
६. भास्करवर्मा का निधनपुर ताम्रपत्र, वही, १२, पृ० ७४-७७
७. सोढ़देव का कहला दानपत्र, मिराशी, कार्पस, ४/२, १, पृ० ३९०-९१
८. गोविन्दचन्द्र का कमौली ताम्रपत्र, (वि०सं० ११९७), वही, ४, पृ० ११५
९. भोज का वाराह ताम्रपत्र, वही, १९, पृ० १७
१०. गोविन्दचन्द्र का कमौली ताम्रपत्र, (वि०सं० ११७१) वही, पृ० १३ गोविन्दचन्द्र तथा आस्फोटचन्द्र का बनारस ताम्रपत्र, वही, ८, पृ० १५५
११. परमर्दिदेव का महोबा, अभि०, वही, १६, पृ० १२
१२. शांतिल्ल का संखेड़ा ताम्रपत्र, वही, २, पृ० २३
१३. वही, १२, पृ० ७०-७४

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

वर्मन्[1] और गुजरात कलचुरियों के अभिलेखों में प्राप्त होता है। छन्दोग चरण का उल्लेख अनेक अभिलेखों में उपलब्ध होता है। छन्दोग चरण का उल्लेख उड़ीसा,[2], आसाम[3], मध्यदेश[4] तथा बुन्देलखण्ड[5] से प्राप्त दानपत्रों में किया गया है।

अभिलेखों के माध्यम से चरणों तथा शाखाओं का अध्ययन अत्यधिक महत्त्व-पूर्ण है, क्योंकि इनके विवरण से शाखाओं और चरणों की प्राचीनता पर प्रकाश पड़ता है और साथ ही साथ इनके विकास की गतिविधि भी परिलक्षित होती है। अभिलेखों के अध्ययन से शाखा तथा चरण का प्रसार दृष्टिगोचर होता है और पूर्व मध्यकाल में उत्तरी भारत में फैले हुए ब्राह्मणों की सामाजिक दशा का विवेचन भी सरलता पूर्वक किया जा सकता है।

गुर्जर देश

पूर्वमध्यकालीन गुर्जरदेश के ब्राह्मणों के वेद, शाखा तथा चरण के सम्बन्ध में सूचनार्थ संगमसिंह, कलचुरियों, गुर्जरों, चालुक्यों, सैन्धवों, राष्ट्रकूटों तथा मैत्रकों के दानपत्र में उल्लिखित तथ्य ध्यातव्य हैं।

संगमसिंह कालीन ब्राह्मण— सुनाओकला दानपत्र (क०व० २९२=५४१ ई०) से प्रमाणित होता है कि भरुकच्छ निवासी पौर्णगोत्रीय परिवार के ब्राह्मणों का सम्बन्ध बह्वृच् (अर्थात् ऋग्वेद) से था।[6] साधारणतया बह्-

---

१. भोजवर्मा का बेलवा ताम्रपत्र, इ० ब०,३, पृ० २१

२. मिराशी, कार्पस, ४/१, पृ० ४६,५०

३. महाशिवगुप्त का वक्रतौलि ताम्रपत्र—ए०इ०,११, पृ० ९३; कटक ताम्रपत्र, वही, ३, पृ० ३५३, रणभंज का यशपल्ले ताम्रपत्र, ज०बा०ओ० रा०सो०, २, पृ० २६

४. भास्करवर्मा का निधनपुर ताम्रपत्र, ए०इ,०१२, पृ० ७४-७७; मदनपाल तथा चन्द्रदेव का ताम्रपत्र, वही १८, पृ० १२

५. वही, २५, पृ० २०६

६. भारुकच्छकछन्दोगिसगोत्रछन्दोगसब्रह्मचारि ब्राह्मणानन्ददत्त तथा गालवसगोत्र छन्दोगसब्रह्मचारिप्रजापतिशर्म्मं तथा लौकाक्षिसगोत्राध्वर्यु सब्रह्मचारिशिवदेव तथा लोहायनसगोत्राध्वर्यु सब्रह्मचारिभाणुदेव तथा पौ(र्ण,सगोत्र बह्वृचसब्रह्मचारिभवरुचिभ्यो —मिराशी,कार्पस,४/१, पृ०३५

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

वृच् शब्द से ऋग्वेद का अभिप्राय लिया जाता है।[1] भरुकच्छ में लौकाक्षि तथा लोहायन गोत्र के ब्राह्मण अध्वर्यु वेद (अर्थात् यजुर्वेद) के अध्येता थे।[2] यजुर्वेद को प्राचीन काल में अध्वर्यु (अध्वर वेद) भी कहा जाता था।[3] उक्त दानपत्र से यह भी सूचना मिलती है कि छन्दोग (छन्दोगि) तथा गालव गोत्र के ब्राह्मणों का सम्बन्ध छन्दोग (अर्थात् सामवेद) से था।[4]

कलचुरिकालीन ब्राह्मण— आरंभिक कलचुरि दानपत्रों (लगभग छठीं शताब्दी उत्तरार्ध से सप्तम शताब्दी पूर्वार्ध) में उल्लिखित गुर्जरदेश के ब्राह्मण कृष्ण तथा शुक्ल यजुर्वेद के अध्येता थे। एभोन दानपत्र (क०व० ३४७=५९७ ई०) से प्रमाणित होता है कि शंकरगण के शासनकाल में गुर्जर देश के नासिक जनपद में स्थित कल्लिवन (आधुनिक कल्वन) के गौतम ब्राह्मण कृष्ण यजुर्वेदीय तैत्तिरीय शाखा के अनुयायी थे।[5]

उक्त नरेश के संखेड़ा दानपत्र से अवगत होता है कि बड़ौदा जनपद में स्थित संखेडा से चौदह मील उत्तर पाषाणह्रद के कौत्स गोत्रीय ब्राह्मणों की वाजसनेय शाखा थी[6]। बड़नगर के काश्यप ब्राह्मण शुक्ल यजुर्वेदीय माध्यन्दिन शाखा से सम्बन्धित थे[7]। इनका उल्लेख बडनेर दानपत्र (क०व०३६०=६१० ई०) में हुआ है।[8] पाराशरगोत्रीय डेभक निवासी ब्राह्मण वाजसनेय कण्व-शाखानुयायी थे।[9] कलचुरिकालीन तरलस्वामी के मंकनी दानपत्र (क०व० ३४६=५९५ ई०) में जातूकर्ण गोत्रीय परिवार को वाजसनेय शाखानुयायी बताया गया है।[10]

१-४. मिराशी, कार्पस, ४/१, पृ० ३५

५. कल्लिवनवास्तव्यगौतमसगोत्रतैत्तिरीयसब्रह्मचारि–वही, ४/१, पृ० ४

६. पाषाणिह्रदवास्तव्यकौत्ससगोत्रवाजिसनेय-सब्रह्मचारि – वही, ४/१, पृ० ४६

७. वटनगरवास्तव्यकाश्यपसगोत्रवाजसनेयमाध्यन्दिन (स) ब्रह्मचारि-ब्राह्मणबोधस्वामिने -वही, पृ० ५०

८. वही

९. डेभकवास्तव्यपाराशरसगोत्रवाजसनेयकण्व-सब्रह्मचारि...–बुद्धराज का सर्सवनी दानपत्र, वही, ४/१, पृ० ५५

१०. जातूकर्णसगोत्रवाजि (ज) सनेयसब्रह्मचारिणे–वही, पृ० १६३

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

सेन्द्रक कालीन ब्राह्मण– अल्लशक्ति के नसेर दानपत्र (क०व० ४४० =६५३ ई०) के अनुसार कृष्णात्रेय गोत्रीय परिवार के ब्राह्मण वाजसनेय माध्यन्दिन शाखानुयायी थे।[1] बगुमरा दानपत्र (क०व० ४०६=६५५ ई०) से ज्ञात होता है कि विजय अनिरुद्धपुर के भारद्वाज गोत्रीय परिवार के ब्राह्मण भी शुक्ल यजुर्वेदीय माध्यंदिन शाखा से सम्बन्धित थे।[2]

गुर्जरकालीन ब्राह्मण– गुर्जर कालीन दानपत्रों (६००-७५० ई०) में विभिन्न गोत्रीय ब्राह्मणों के वेद, शाखा तथा चरणों का उल्लेख प्राप्त होता है। कैरा दानपत्र (क०व० ३८०=६२९ ई०) से अवगत होता है कि शिरीषपद्रक (अक्रूरेश्वर विषय) निवासी ऋग्वेदीय (बह्वृच्) वत्स तथा काश्यप गोत्र के चतुर्वेदी ब्राह्मणों का आश्वलायन चरण था।[3] एक अन्य अभिलेख के अनुसार श्रावस्ती से बहिर्गत[4] भारद्वाज परिवार के ब्राह्मणों का सम्बन्ध भी बह्वृच् से था। कैरा दानपत्र से यह भी सूचना मिलती है कि धुमरायण, डौण्डकीय, कौडिन्य, माठर तथा हारीत गोत्र के चतुर्वेदी ब्राह्मण अध्वर्यु वाजयसानेव (यजुर्वेद) से सम्बद्ध थे।[5] उसका कण्व चरण था।[6] शुक्ल यजुर्वेदीय ब्राह्मणों का उल्लेख इस काल के अनेक अभिलेखों में प्राप्त होता है। संखेड़ा दानपत्र (क०व० ३९२=६४१ ई०) में भारद्वाज गोत्र के वाजसनेय माध्यन्दिन शाखानुयायी ब्राह्मणों का विवरण मिलता है, जो पश्चिमी मालवा के दशपुर (मंदसौर) से बहिर्गत होकर क्षीरसर में निवास कर रहे थे।[7] प्रगायन (प्रावायन) गोत्र के

---

१. ब्राह्मणवाजि (ज) सनेयसब्रह्मचारिमाध्यन्दिनक्रि (कृ) ष्णात्रेयसगोत्र बालप्रवसिताय –मिराशी, कार्पस, ४/१, पृ० ११४

२. विजयानिरुद्धपुरीवास्तव्यभारद्वाजसगोत्रवाजि (ज) सनेय (मा) ध्यन्दिन-सब्रह्मचारिणे बप्पस्वामिन (ने) दीक्षितस्यित्ये –वही, पृ० १२०

३. जंबूसरोविनिर्गताक्क्रु (क्रू) रेश्वरविषयान्तर्गत (शि) रीषपद्रकवासि-बह्वृचवत्ससगोत्राश्वलायन-सब्रह्मचारि–काश्यपसगोत्र ––मिराशी, कार्पस, ४/१, पृ० ६२

४. अभिलेख में भ्रान्तिवश श्रावस्ती को वास्तव्य बताया गया है, वही ४/२, पृ० ६२१

५-६. वही, ४/१, पृ० ६२

७. दा (द) शपुरविनिर्गतक्षीरसरग्रामवास्तव्य–भरद्वाज–सगोत्रवाजि (ज) सनेयमाध्यंदिनसब्रह्मचारि–संखेड़ा दानपत्र, वही, पृ० ७७

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

चतुर्वेदी ब्राह्मण वाजसनेय माध्यन्दिन शाखा के अनुयायी थे ।[1] इसी प्रकार लोहिकक्ष में वास करनेवाले कौण्डिन्य गोत्र के त्रिवेदी ब्राह्मणों की शुक्ल यजुर्वेदीय माध्यंदिन शाखा थी ।[2] ददद द्वितीय के समय (क०व०३८०=६२९ई०) के एक अभिलेख में अक्रूरेश्वर भारद्वाज परिवार के चतुर्वेदी ब्राह्मणों को छन्दोग (छान्दोग्य) कौथुम शाखानुयायी कहा गया है ।[3] अजनेरी दानपत्र (क०व० ४६० = ७०९ ई०) दानपत्र से विदित होता है कि ब्रह्मपुरी निवासी शांडिल्य गोत्रीय चतुर्वेदी ब्राह्मणों की शाखा भी छन्दोग कौथुम थी ।[4] कैरा दानपत्र से ज्ञात होता है कि भरुकच्छ विनिर्गत भेरज्जिक निवासी चौलि गोत्रीय ब्राह्मणों का सम्बन्ध अथर्वण (अथर्ववेद) से था और वे पिप्पलाद चरण के अध्येता थे ।[5]

सैन्धव कालीन ब्राह्मण– सैन्धव राजाओं (काठियावाड़) के दानपत्रों से ज्ञात होता है कि गुर्जर देश के उत्तरी भाग में ऋग्वेदीय, यजुर्वेदीय तथा सामवेदीय ब्राह्मण रहते थे । अग्गुक द्वितीय के दानपत्र (गु० सं० ५१३=८३२ ई०) के अनुसार सांकृत्य गोत्रीय चतुर्वेदी परिवार के ब्राह्मण बह्वृच् के अध्येता थे और उनका निवास स्थान सोमेश्वर था ।[6] एक अन्य दानपत्र (गु०सं०५५५ = ८७४ई०) में वसिष्ठ गोत्रीय ब्राह्मणों का सम्बन्ध भी बह्वृच से बताया गया है ।[7]

---

१. गिरिनगरविनिर्गतश्रद्धिकाग्रा (ग्र) हारवास्तव्यतच्चातुर्व्विद्यसामान्य–प्रागायन-सगोत्रवाज(स)नेयमाध्यन्दिन स (ब्र) ह्मचारि–नवसारी दानपत्र, मिराशी कार्पस, ४/१पृ० ८६

२. लोहिकक्षपकथाहारविनिर्गततत्त्रैविद्यसाम (मा) न्यकौण्डिन्य–सगोत्रविजा (मा) ध्यन्दिन–सब्रह्मचारि–प्रिन्स आफ वेल्स संग्रहालय, वही, पृ०१०६

३. वही, ४/१, पृ० ९२

४. बह्मपुरीनिवास्येतच्चातुर्व्विद्यसामान्य–शा (ण्डि) ल्यसगोत्र । छंदोग । कौथुमसब्रह्मचारि-ब्राह्मण–चष्टस्वामिपुत्रब्राह्मण (ना) रायणाय–वही, पृ० ९३

५. भरुकच्छविनिर्गतभेरज्जिकानिवासिअ (आ) थर्व्वण-चौलिसगोत्र–पिप्पलादसब्रह्मचारि–ब्राह्मण–भद्र । वायुशर्म्म । द्रोणस्वामि–वही, पृ० ६२

६. सोमेश्वरवास्तव्यचातुर्व्वेद्यसामान्य—सांकृत्य—सगोत्रबह्वृचसब्रह्मचारि–ए० इ०, २६, पृ० २०१

७. वसिष्ठगोत्रेण बह्वृच् सब्रह्मचारिणा वही, पृ० २१६

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

जैक प्रथम के दानपत्र से प्रमाणित होता है कि भिल्लमान के वत्स गोत्रीय चतुर्वेदी ब्राह्मण छन्दोग के सहपाठी थे।[1] इनका सम्बन्ध श्री भिल्लमाल के चतुर्वेदी समुदाय से था।[2] अग्गुक तृतीय के दानपत्र (गु० सं० ५६७ = ८८६ ई०) से विदित होता है कि वत्स गोत्रीय ब्राह्मण शुक्ल यजुर्वेदीय माध्यंदिन शाखा के अनुयायी थे।[3] इस परिवार के ब्राह्मणों का निवास स्थान गोमूत्रिका (कार्यायात कच्छ विषय) था।[4]

राष्ट्रकूटकालीन ब्राह्मण– राष्ट्रकूट नरेशों (गुजराती शाखा) के दानपत्रों (नवम शताब्दी पूर्वार्ध) से ज्ञात होता है कि उनके काल में गुर्जर देश के ब्राह्मण ऋग्वेदीय, यजुर्वेदीय तथा सामवेदीय शाखाओं के अनुयायी थे। कर्हाड से बर्हिर्गत भारद्वाज गोत्रीय तीन परिवारों के ब्राह्मण ऋग्वेद के अध्येता थे।[5] इनके अतिरिक्त वत्स तथा वशिष्ठ गोत्र के ब्राह्मण भी ऋग्वेद का अध्ययन किया करते थे।[6] गोविन्दराजकालीन तोर्खेद दानपत्र में गोवत्तन के अनेक ब्राह्मण-परिवारों का उल्लेख है। इस अभिलेख के अनुसार गोवत्तन निवासी भारद्वाज, लावाण, मुद्गल, पाराशर, शांडिल्य, सौन्दान, योगण, वार्षणेय, वत्स तथा आग्नेयस गौत्रीय ब्राह्मण वाजसनेय माध्यन्दिन शाखानुयायी थे।[7] पुण्ड्र-वर्धन से विनिर्गत कौशिक, जम्बूसरवासी वत्स तथा गोवत्तन के माठर गोत्रीय ब्राह्मण कण्व शाखानुयायी थे।[8] बादावि (कर्नाटक), तिगवी तथा वेंगी से बहिर्गत भारद्वाज गोत्र के ब्राह्मण कृष्ण यजुर्वेदीय तैत्तिरीय शाखा के अध्येता थे।[9] ब्राह्मण पल्ली दानपत्र में कड्डिमर निवासी कौण्डिन्य गोत्र के ब्राह्मणों की

१. श्रीभिल्लमालवास्तव्यत चातुर्व्वेद्यसामान्यवत्ससगोत्रच्छान्दोगसब्रह्मचारि– ए० इ०, २६, पृ० २०६
२. वही।
३. कार्यायातकच्छविषयात्त (न्तः) पातिगोमूत्रिकाभिधानस्थानवास्तव्यवच्छ(त्स) सगोत्रवाजिमाध्यन्दिनसब्रह्मचारि- वही, पृ० २२१
४. वही।
५. संकालिया, स्ट० हि० क० जि० ए० गु०, पृ० १२७
६. वही, पृ० १२८
७. ए० इ०, ३, पृ० ५५-५७
८. हि० क० जि० ए० गु०, पृ० १२७
९. वही।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

शाखा वाजसनेय बताई गई है ।[1] प्रिन्स आफ वेल्स दानपत्र (शक सं० ७३८ = ८१० ई०) से विदित होता है कि छन्दोग शाखानुयायी अत्रि गोत्र के ब्राह्मण गौड देश (आद्यस्थान) से बहिर्गत होने के पश्चात् चर्म्मनिहौग्राम में निवास कर रहे थे ।[2]

चालुक्यकालीन ब्राह्मण– चालुक्य दानपत्रों में ब्राह्मण परिवारों के केवल वेद तथा शाखा का उल्लेख मिला है। उल्लेखनीय है कि इन अभिलेखों में वर्णित सभी ब्राह्मणों का वेद अध्वर्यु (यजुर्वेद) अथवा उसकी कोई शाखा बताया गया है। नवसारी दानपत्र (क०व० ४२१ = ६७० ई०) के अनुसार नवसारी में निवास करने वाले काश्यप गोत्र के ब्राह्मण[3] और सूरत दानपत्र में वर्णित कार्मणेय वासी शांडिल्य गोत्रीय चतुर्वेदी ब्राह्मण[4] अध्वर्यु के अध्येता थे। भारद्वाजगोत्र के नासिक निवासी वाजसनेय शाखानुयायी ब्राह्मणों का सम्बन्ध शुक्ल यजुर्वेद से बताया गया है।[5] पुलकेशिराज के नवसारी दानपत्र (क०व० ४९० = ७३९ ई०) से विदित होता है कि के वनवासी में निवास करनेवाले वत्स गोत्रीय ब्राह्मण कृष्ण यजुर्वेदीय थे और वे तैत्तिरीय शाखा के अनुयायी थे।[6]

मैत्रक कालीन ब्राह्मण– मैत्रक नरेशों (५००-७०० ई०) के समय वलभी में चारों वेदों के अध्येता ब्राह्मणों का निवास था। तत्कालीन शीलादित्य के जेसर दानपत्र (गु० स० ३४७ = ६६६ ई०) से ज्ञात होता है कि आद्यस्थान पुष्यशाम्बपुर से वलभी में बसे कौशिक गोत्रीय चतुर्वेदी परिवार में अध्वर्यु वेद

---

१. कड्डिभरवास्तव्य । कौण्डिन्यसगोत्र । वाजिसनेय सब्रह्मचारि–भट्टदामोदर-सुत-नागकुमाराय –ए० इ०, २२, पृ० ८४

२. चर्म्मनिहौ (ह) ग्राम (वास्तव्य) गौडदेशादायातात्रेयसगोत्रच्छन्दोगसब्रह्मचारि– ए० इ०, ३१, पृ० २५३

३. नवसारिकाव (वा) स्तव्यकाश्यपसगोत्रगोमिस्वामिनः पुत्र–स्वा (सा) मन्तस्वामी । तस्य पुत्राय मात्रिस्थविर(:)तस्यानुजभ्राता किक्करस्वामिनः भोगिक्कस्वामिने अध्वर्य्यु (स) ब्रह्मचारिणे –मिराशी, कार्पस, ४/१, पृ० १२५

४. कार्म्मणेयचातुर्विद्यशालासामान्यशांडिल्यसगोत्राध्वर्य्यु काण्वसब्रह्मचारिणे ब्राह्म नण्ण स्वामिपुत्र दीक्षित मातृश्वराय –वही, पृ० १३४

५. नासिक्यवास्तव्या (व्य) वाजसनेयभरद्वाजसगोत्राया (य) (वि) (प्री) तिशर्म्म पुत्रत्रा (त्रि) विक्रमाया (य) –वही, पृ० १३०

६. वनवासिविनिर्गतवत्ससगोत्रतैत्तिरिक-सम्ब्रह्मचारिणे–वही, पृ० १४१

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

का अध्ययन किया जाता था।[1] वलभी के गार्ग्य गोत्र के त्रिवेदी ब्राह्मणों का सम्बन्ध इसी वेद से था।[2] इनके पूर्वजों का मूल स्थान आनन्दपुर था। धरसेन तृतीय के भावनगर दानपत्र तथा द्रोणायण[3] गोत्र के अथर्ववेदीय ब्राह्मणों का निवास हस्तवप्र (सुराष्ट्र विषय) में था।[4] इनके अतिरिक्त आनर्त्तपुर के कौशरवस गोत्रीय[5] ब्राह्मण तथा डबका निवासी पाराशर ब्राह्मण[6] अथर्ववेद के अध्येता थे। शीलादित्य सप्तम के अलिन ताम्रपत्र (गु० सं० ४४७ = ७६६-६७ ई०) से विदित होता है कि आनन्दपुर वासी शार्कराशि गोत्रीय चतुर्वेदी ब्राह्मण ऋग्वेदीय बह्वृच् शाखानुयायी थे।[7]। मैत्रककालीन अभिलेखों के अवलोकन से विदित होता है कि इस काल में शुक्ल यजुर्वेदीय शाखा के ब्राह्मणों का सर्वाधिक उल्लेख हुआ है। ध्रुवसेन प्र० (५२६–५४६ ई०) के दानपत्रों में आत्रेय गोत्र के नगरक वासी[8] हरियानक के दर्भगोत्रीय परिवार[9], अक्रोलक ग्रामवासी ओपस्वस्ति गोत्रीय[10] तथा सिंहपुरस्थ जाबाल गोत्र के ब्राह्मण वाजसनेय शाखानुयायी बताये गये हैं। काशहृद (अहमदाबाद) के शांडिल्य भी वाजसनेय शाखानुवर्ती कहे गये हैं।[11] धरसेन द्वितीय के पलितन दानपत्र (गु सं० २५२ = ५७१ ई०) के अनुसार कौशिक

---

१. पुष्यशाम्बपुर-विनिर्गततच्चातुर्व्विद्य-सामान्य—श्री-वलभी-वास्तव्य-कौशिक—सगोत्र-अध्वर्यु-सब्रह्मचारि—ए० इ०, २१, पृ० २१०

२. आनन्दपुरविनिर्ग्गतवल्लभीवास्तव्य-त्रैविद्यसासान्य—गार्ग्यसगोत्र—अध्वर्यु—वही, ११, पृ० ३०९

३. वही

४. हस्तवप्रवास्तव्यात्रेयसगोत्रार्थर्व्वणसब्रह्मचारिणे—सुराष्ट्रविषये हस्तवप्राहारे—वही, २१, पृ० १८३

५. स्ट०हि०क जिए०गु०, पृ० १३०

६. वही, पृ० १३१

७. फ्लीट, कार्पस ३, पृ० १७९

८. नगरकवास्तव्यब्राह्मणशातिशर्म्मणे आत्रेयसगोत्रायवाजि— ए० इ०, १७ पृ० १०८

९. यथाहस्तवप्राहारगायां अक्षसरकप्रागीयहरियानकग्रामे— – –अत्रैववास्तव्य ब्राह्मण— – – –गनेशगद दानपत्र, वही, ३, पृ० ३२०–२१.

१०. वही, ११, पृ० ११

११. काशहृदवास्तव्यब्राह्मणगंगाशर्म्म—गंगदेव—चुनुकेभ्यः—शाँडिल्यसगोत्रवाजि (स) सनेय-सब्रह्मचारिभ्यो-वही, ३१, पृ० ३०१

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

परिवार वाजसनेय माध्यंदिन शाखानुवर्ती था।[1] ध्रुवसेन द्वितीय के काल में जम्बूसर से बहिर्गत अयनकाग्रहारवासी कौशिक गोत्रीय चतुर्वेदी ब्राह्मण वाजसनेय शाखा के अध्येता थे।[2] उदुम्बरगह्वर से निर्गत अगस्तिकाग्रहार के पाराशर गोत्रीय चतुर्वेदी परिवार का सम्बन्ध वाजसनेय शाखा से था।[3] परन्तु इसी गोत्र का अयनकाग्रहार निवासी त्रिवेदी परिवार माध्यंदिन शाखानुयायी था।[5] शीलादित्य के लनसदि दानपत्र (गु० सं० ३५० = ६६९ ई०) के अनुसार द्वीप के डौण्डव्य गोत्र के चतुर्वेदी ब्राह्मण की शाखा वाजसनेय थी।[6] जेसर दानपत्र में पुष्पशाम्बरपुर के बहिर्गत कौशिक परिवार के चतुर्वेदी यजुर्वेदीय वाजसनेय शाखानुयायी कहे गये हैं।[7] ध्रुवसेन तृतीय के वलभी दानपत्र के अनुसार महिकछवासी इसी गोत्र के चतुर्वेदी ब्राह्मणों की भी वही शाखा बताई गई है।[8] वत्स गोत्र के ब्राह्मण शुक्ल यजुर्वेदीय कण्वशाखानुयायी थे, जो उन्नत के निवासी थे।[9]

मैत्रक सामन्त सिंहदित्य के पलितन दानपत्र (व०सं० २२५ = ५७४ ई०) से प्रमाणित होता है कि कृष्णात्रेय गोत्र के ब्राह्मण-परिवार का सम्बन्ध मैत्रा-

---

१. वाजसनेयमाध्यन्दिन कौशिकसगोत्र ब्र (ा) ह्मणरोघ श्येनाभ्यां–ए० इ०, ११ पृ० ८३

२. जम्बूसरविनिर्गतायानकाग्र(ा)हारनिवासि(उ)च्यमान (चा)तुर्विद्यसामान्य कौशिक-सगोत्र-वाजसानेयसब्रह्मचारि –नगवा दानपत्र, वही, ८ पृ० १९३

३. उदुम्बरगह्वर(वि)निर्गताय(ा)नकाग्र(ा)हार(नि)वासि दशपुर त्रैविद्य-सामान्य-पाराशर-सगोत्रमाध्यन्दिनवाजसनेय सब्रह्मचारि–वही, पृ० १९८

४. वही।

५. द्वीपविनिर्गततच्चातुर्व्विद्यसामान्य डौण्डव्यसगोत्रवाजसनेयिब्रह्मचारि–वही ४, पृ० ८०

६. पुष्य-साम्बपुर विनिर्गत-तच्चतुर्व्विद्य-सामान्य-कुशिकसगोत्रवाजसनेयि,सब्र (ब्र) ह्मचारि–वही, २२, पृ० ११९

७. महिछ(क)विनिर्गतमहिछकवास्तव्यैतच्चातुर्व्विद्यसामान्यकौशिकसगोत्रवाजसनेय सब्रह्मचारि–वही १, पृ० ८८

८. उन्नतनिवासी (सि) वाजसनेयी (यि) कण्व-वत्ससगोत्र-ब्राह्मणरुद्रभूतये–फ्लीट, कार्पस, ३, पृ० १६६

९. वही।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

यणी शाखा से था।[1] इस शाखा के अनुयायी एलापद्रवासी थे।[2] शाँडिल्य-परिवार के ब्राह्मण भी मैत्रायणी शाखा के अनुयायी थे।[3] इस परिवार का उल्लेख धरसेन प्रथम के वन्तिया दानपत्र (व० सं० २५७ = ५७५ ई०) में किया गया है।[4] धरसेन द्वितीय के एक दानपत्र (व० सं० २५२ = ५७१ ई०) से प्रमाणित होता है कि वाराहक-लामकायन गोत्र के ब्राह्मणों का सम्बन्ध भी उक्त शाखा से था।[5] वलभी में मैत्रक राजाओं के समय सामवेदी ब्राह्मणों का भी निवास था। पलितन दानपत्र (व० सं० २०७ = ५२५ ई० से ज्ञात होता है कि शुनक गोत्रीय ब्राह्मण ज्येष्ठनक ग्राम के निवासी छन्दोग शाखानुवर्ती थे ७। काठियावाड़ दानपत्र (व० सं० २०६ = ५२५ ई०) से प्रमाणित होता है कि सिंहपुर के व्रजगण गोत्र के ब्राह्मण सामवेदीय छन्दोग शाखा से सम्बन्धित थे।[7] भावनगर दानपत्र (व० सं० २१० = ५२६ ई०) से अवगत होता है कि वलापद्रवासी मोनस गोत्र के ब्राह्मण छन्दोग शाखा के अध्येता थे।[8] शंकरवतक के शांडिल्य गोत्रीय ब्राह्मण भी छंदोगशाखानुयायी थे।[9] छन्दोग शाखानुयायी ब्राह्मणों का केन्द्र आनन्दपुर था, जिसका उल्लेख ध्रुवसेन प्रथम के ववदिय जोगिया दानपत्र (गु० सं० २२२ = ५४१ ई०) में हुआ है।[1]

---

१. एलापद्रवास्तव्य, मैत्रायणिकसब्रह्मचारिणो क्रिष्णात्रेयसगोत्राय–ए०इ० ११ पृ० १८
२. वही।
३. मैत्रायणिकसब्रह्मचारिशांडिल्यसगोत्र–बन्तिया दानपत्र, वही, २१, पृ० १८
४. वही।
५. मैत्रायणि (णी) य वाराहक-लामकायनसगोत्र–वही, ३१, पृ० ३०२
६. हस्तवप्रहररायामक्षरसरकप्राबेश्यज्येष्ठनकग्रामे उत्तरसीम्निपादावर्त्त शतं षष्ट्यधिकं तस्मिन्नवव्युशनकसगोत्राणा छन्दोगसब्रह्मचारीणा–वही, १७, पृ० १०६
७. सिहपुरवास्तव्य···व्रजगणसगोत्राय (च) छन्दोगसब्रह्मचारिणे-वही, पृ० १०९
८. वलापद्रवास्तव्य बाह्मणस्माय मोनसगोत्रायछन्दोगसब्रह्मचारिणे–वही, १५, पृ० २५७
९. वही, ११, पृ० १०७
१. आनन्दपुरवास्तव्यब्राह्मणस्कन्दत्रात-गुहत्राताभ्याम छन्दोगसब्रह्मचारिभ्याम् –वियना ओरियन्टल जर्नल, ७, पृ० २९९

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

कश्मीर

वर्मा वंशीय नरेशों के समय ब्राह्मणों की शाखा—

कश्मीर से प्राप्त अभिलेखोंमें से केवल दो में ब्राह्मण गोत्र, प्रवर तथा शाखा का उल्लेख है। सुंगल ताम्रशासन के अनुसार विदग्ध वर्मा के काल में काश्यप गोत्रीय परिवार का आद्यस्थान कुरुक्षेत्र-तीर्थाश्रम था।[1] इस गोत्र के त्रिप्रवरान्तर्गत ब्राह्मण वाजसनेय शाखा के अनुयायी थे।[2] सोमवर्मा के केलैत ताम्रपत्र में भी उक्त शाखानुयायी ब्राह्मणों का उल्लेख है।[3]

राजस्थान

गुहिलकालीन ब्राह्मणों के चरण तथा शाखा—

राजस्थान के कतिपय अभिलेखों में ही ब्राह्मणों के चरण तथा शाखा का विवरण प्राप्त होता है। भाविहित के दानपत्र (ह०व०४८ = ६५४ ई०) से अव-होता हैं कि उज्जयिनी से बहिर्गत कूरगिरिका निवासी दौण्डायन गोत्र के ब्राह्-मण वाजसनेय चरण के अध्येता थे और माध्यन्दिन शाखा से सम्बन्धित थे।[4] उक्त शाखा तथा चरण के ब्राह्मणों का उल्लेख एक अन्य गुहिल नरेश बाभट (ह० व० ८३ = ६५९ ई०) के दानपत्र में भी मिलता है।[5] परवर्ती गुहिल नरेश विजयसिंह के कदमल दानपत्र (वि०सं०११४० = १०८३ई०) से प्रमाणित होता है कि वत्स गोत्र के ब्राह्मण का आद्यस्थान नागह्रद (राजस्थान) था और वे पल्लीग्राम (जोधपुर) में बस गये थे। माध्यन्दिन शाखा के अनुयायी (माध्य-न्दिन (न) शाखिने)थे।[6] जोधपुर दानपत्र (वि० सं० १०६९ = १०१३ ई०) में महाराजाधिराज दुर्लभराजकालीन त्रिप्रववरान्तर्गत वाजिमाध्यन्दिन शाखानु-यायी लोहायन गोत्र के ब्राह्मणों का उल्लेख है।[7] उक्त ब्राह्मण भिलमाल

---

१. वोगेल, जे० एफ०, एन्टीक्विटीज आफ चम्बा स्टेट, खं० १, पृ० १६७
२. वही।
३. वही, पृ० १८५
४. ए० इ० ३४, पृ० १७२
५. वही, पृ० १७५
६. ......नाग (ह्) दस्थाय (न) गिनिर्ग्गि (र्ग) ला (ता) य वसस्रगो-त्राय एतद्‌यगरा (य) माध्यन्दिनि (न)—शाखिने एव नागह्रद कास्ल-चापरना (न) य-वाचाय—वही, ३१, पृ० २४७
७. वही, ३६, पृ० ९६

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

या भिनमाल (श्रीभिल्लमाल) में निवास करते थे।[1]

मध्यदेश

वर्द्धनकालीन ब्राह्मण

वर्द्धन वंश के शासकों में केवल हर्षवर्द्धनकालीन अभिलेखों में ही दानग्रहीता ब्राह्मणों के चरणों का उल्लेख प्राप्त होता है। गवीधुमत प्रस्तर अभिलेख से विदित होता है कि गवीधुमत के शांकृत्य (साङ्कृत्य सगोत्र) तथा वशिष्ट गोत्रों के ब्राह्मण बह्वृच् चरण के अध्येता थे:[2] इस अभिलेख में गवीधुमत का वर्णन वैदिक अध्ययन के केन्द्र के रूप में हुआ है।[3] अभिलेख के अनुसार यह स्थान निरन्तर वेदाँगों से सम्बन्धित व्याखानों से गूंजता रहता था और यहाँ वैदिक क्रियाकलाप हुआ करते थे।[4] हर्ष के मधुबन ताम्रपत्र (ह० सं० २५ = ६३१ ई०) के अनुसार विष्णुवृद्ध गोत्र के ब्राह्मण भी बह्वृच् चरणानुयायी था।[5] बाँसखेड़ा ताम्रपत्र से प्रमाणित होता है कि भारद्वाज ब्राह्मणों की गणना भी बह्वृच चरण के अन्तर्गत होती थी।[6] गवीधुमत प्रस्तर अभिलेख में वत्स[7] तथा उपमन्यु[8] (औपमन्यव) गोत्र के ब्राह्मण अध्वर्यु चरण के अध्येता कहे गये हैं। मधुवन ताम्रपत्र के अनुसार सावर्णि गोत्रीय ब्राह्मण छन्दोग चरणान्तर्गत थे।[9] इसी चरण के भारद्वाज ब्राह्मणों का भी उल्लेख बाँसखेड़ा ताम्रपत्र में किया गया हैं।[10]

---

१. ए० इ०, ३६ पृ० ९६
२. ए० इ० १, पृ० १८२
३. रम्ये गवीधुमति संततवेदविद्याव्याख्यान घोषव (ब) धिरीकृतदिद्युखेस्मिन–वही।
४. वही।
५. विष्णुवृद्धसगोत्रवह्वृचसब्रह्मचारि–वही, पृ० ७३
६. भरद्वाजसगोत्र वह्वृच सब्रह्मचारि भट्ट– – –वही, ४, पृ० २११
७. अध्वर्यु चरणे वत्ससगोत्राः–वही, पृ० १८२ (१)
८. अध्वर्यु चरणे औपमन्यवसगोत्रो–वही, १ पृ० १८२
९. सावर्णिसगोत्रच्छन्दोगसब्रह्मचारि–वही, पृ० ७३
१०. भरद्वाजसगोत्र च्छंदोगसब्रह्मचारि–वही ४, पृ० २११

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

गवीधुमत प्रस्तर अभिलेख से प्रमाणित होता है कि कुहल[1] तथा गालव[2] परिवारों के ब्राह्‌मण भी छन्दोग चरण के अध्येता थे ।

प्रतिहारकालीन ब्राह्‌मण— कन्नौज के प्रतिहार राजाओं (अष्टम शताब्दी से दशम शताब्दी तक के समय के अभिलेखों में ऋग्वेदीय शाखाध्येता ब्राह्‌मणों का उल्लेख है । भोजकालीन अहर प्रस्तर अभिलेख (ह० सं० २९६ = ९०२ई०) के अनुसार तत्तानन्दपुर के शार्कराक्षि गोत्रीय[3] श्रेष्ठ चतुर्वेदी तथा भारद्वाज ब्राह्मण[4] (श्रीमदा(र्य) चातुर्व्वैद्य सामान्याः) ऋग्वेदीय बह्‌वृच शाखा के अनुयायी थे । दौलतपुर दानपत्र (ह० सं० १०० = ७०६ ई०) में काश्यप[5] तथा कात्यायन[6] गोत्र के ऋग्वेदीय ब्राह्मण आश्वलायन शाखानुयायी बताए गये हैं ।

वराह ताम्रपत्र (वि० सं० ८९३ = ८३६ ई०) में भारद्वाज ब्राह्‌मणों को यजुर्वेदीय वाजसनेय शाखानुवर्ती बताया गया है ।[7] भारत कला भवन दानपत्र (वि०सं० ११४० = ९८३ ई०) से विदित होता है कि प्रतिहार हरिराज के समय भारद्वाज ब्राह्‌मण शुक्ल यजुर्वेदीय वाजसनेय शाखा के अनुयायी निवास करते थे ।[8]

गहड़वाल ब्राह्‌मण— गहडवाल कालीन दानपत्रों में जिन मध्यदेशीय ब्राह्‌मणों का उल्लेख है वे मध्यदेश में ऋग्वेदीय, यजुर्वेदीय तथा सामवेदीय शाखाओं से सम्बन्धित हैं । गोविन्दचन्द्र के दानपत्र (वि० सं० ११८७ = ११३० ई०) से ज्ञात होता है कि पारावस गोत्र के ब्राह्मण शांखायन बह्‌वृच

---

१. छन्दोगचरणे कुहलसगोत्र— ए० इ० १, पृ० १८२ :

२. छन्दोगचरणे गालवसगोत्रो—वही ।

३ श्रीतत्तानन्दपुरे प्रतिवसमाना (:) श्रीमदा(र्य) चातुर्व्वैद्यसामान्याः शर्कराक्षि सगोत्राः व (ब) ह्‌वृचस (ब्र) ह्‌मचारिण (णे)—वही, १९, पृ० ६०

४. श्रीतत्तानन्दपुरे प्रतिवसमान-श्रीमदार्थचातुर्व्वैद्यसामान्य—भारद्वाजसगोत्र-व (ब)ह्‌वृचस ब्र (ब्र)ह्‌मचारी—वही, पृ० ६१

५. काश्यपसगोत्र आश्वलायन व (ब) ह्‌वचसब्रह्‌मचारि—वही, ५, पृ० २१२

६. कात्यायनसगोत्रआम्वलायन व (ब) ह्‌वृचसब्र (ब्र) ह्‌मचारि वही

७. मरद्वाजसगोत्रवाजसनेयसब्रह्‌मचारि—वही, १९, पृ० १८

८. भारद्वाजगोत्राय । वाजिसनेय साखिने—वही, ३१, पृ० ३१२

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

शाखा के (शाख्यायन बष्ठच-साखिनो) अनुयायी थे ।[1] गोविन्दचन्द्र तथा जयचन्द्र के अनेक दानपत्रों में साविथदेश (श्रावस्ती)[2] आद्यस्थान के वन्धुल गोत्रीय[3] तथा काश्यप गोत्र[4] के ब्राह्मणों की शाखा शुक्ल यजुर्वेदीय वाजसनेय बताई गई है। जयचन्द्र के समय (बारहवीं शताब्दी उत्तरार्द्ध) बन्धुल गोत्र के ब्राह्मण यजुर्वेद शाखा के अनुयायी थे ।[5] ऐसा प्रतीत होता है कि यहाँ यजुर्वेद का शाखा के रूप में उल्लेख भ्रान्तिवश किया गया है । इसका कारण यह है कि अधिकांश दानपत्रों में विशेषकर गोविन्दचन्द्र के समय के अभिलेखों में उक्त गोत्र के ब्राह्मणों को वाजसनेय शाखा का अनुयायी (वाजसनेय साखोमृगाय बंधुलगोत्राय) कहा गया है ।[6] गगहा दानपत्र में श्रीवत्स गोत्र के ब्राह्मणों को यजुर्वेद शाखानुयायी कहा गया है ।[7] दोन-बुजुर्ज दानपत्र (वि० सं० ११७६ = १११९ ई०) से विदित होता है कि द्रोणायणषड के वत्स गोत्र [द्रोणायणषडी यवच्छ (त्स)] के ब्राह्मण सामवेदीय छन्दोग शाखा के अनुयायी थे ।[8] वनगांव दानपत्र (वि० सं० १२०८) में वशिष्ठ (वसिष्ठ) गोत्रीय पाटलिपुत्र आदि स्थान के ब्राह्मणों को भी छन्दोगशाखा का अध्येता बताया गया है ।[9]

गोविन्दचन्द्र के इलाहाबाद संग्रहालय दानपत्र (वि० सं० ११७१ = १११४ ई०) से प्रमाणित होता है कि सार्कव (सार्क्कवस्य) गोत्र के ब्राह्मण

---

१. ए० इ०, ८, पृ० १५४

२-३. साविथदेशनिर्गताय वाजसनेयशाखोमृगाय वंधुलगोत्राय वंधुल अधमर्षण विश्वामित्र त्रिप्रवराय—वही, २, पृ० ३६०

४. काश्यपसगोत्राय काश्यप-आवत्सार ने (नै) ध्रुव त्रिप्रवर वाजसनेय सा (शा)खिने वही, ८, पृ० १५६

५. वम (बं)धुल गोत्राय बन्धुल-अधमर्षण विश्वामित्र इति त्रि-प्रवराय यजुर्वेदस्य (शा)खिने—वही, ४, पृ० १२२-२३

६. वही, २, पृ० ३६०

७. श्रीवत्स-गोत्राय । गर्ग्गभार्ग्गव च(य)वनत्रिप्रवराय । यजुर्वेद-सा (शा)खिने—ए०इ०,१३, पृ० २१९

८. द्रोणायणषडीयवच्छ(त्स)गोत्राय भार्ग्गवच्यववा (न) अर्म(और्व)जामद्द (द)ग्न्य आप्नवान प(पं)च प्रवराय छ(ं)दोग सा(शा)खिने—वही, १८, पृ० २२२

९. पटलि (लि) पुत्रविनिर्गताय (च्छ) न्दोगसा (शा) खाध्यायिने वसिष्ठ गोत्राय वही, ५, पृ० ११८

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

सामवेद के अध्येता थे।[1]

कलचुरि कालीन ब्राह्मण-- यह निश्चित रूप से कहा जाना संभव नहीं है कि सरयूपारीण ब्राह्मणों की सार्वदेशिक प्रतिष्ठा कब से बढ़ी; परन्तु इसमें संदेह नहीं कि पूर्वमध्यकाल के आरम्भ से ही उन्हें देश के विभिन्न भागों में सम्मान प्राप्त होने लगा था। इसी के परिणामस्वरूप उनका वहिर्गमन दूर-दूर तक हुआ। सरयूपार क्षेत्र में प्राप्त अभिलेखों में कहला दानपत्र प्रथम अभिलेख है, जिसमें इस प्रदेश के निवासी अनेक दानग्रहीता ब्राह्मणों की शाखाओं का उल्लेख हुआ है।

कलचुरि अभिलेखों में सोढ़देव के कहला दानपत्र (वि० सं० ११३४=१०७७ ई०) में सरयूपार क्षेत्र के अनेक ब्राह्मणों का उल्लेख किया गया है। इस अभिलेख में दानग्रहीता ब्राह्मणों के गोत्र तथा शाखा का विवरण प्राप्त होता है। ऋग्वेदीय बह्वृच् शाखानुयी गोत्रों में धौम्र,[2] कात्यायन,[3] राहुल[4] तथा भारद्वाज[5] का उल्लेख है। धौम्र गोत्रीय ब्राह्मणों का आद्यस्थान मथुरा था और उनके दीक्षित तथा द्विवेदी दो परिवार थे।[6] कात्यायन परिवार साङ्कस (सङ्कास्य) से बहिर्गत हुआ था।[7] राहुल गोत्र के ब्राह्मणों का आदिकेन्द्र कटौघन था।[8] भारद्वाज ब्राह्मण कहला ग्राम (गोरखपुर जनपद में आधुनिक धुरियापरगना का ग्राम) के बताये गये हैं।[9]

---

१. सार्क्कवस्यगोत्राय आङ्गिरस-आमहिच अरुक्ष त्रि प्रवराय सामवेदाध्यायिने-- ए० इ०, ३३, पृ० १८०

२. माथुरदीक्षितरामपुत्र धौम्रगोत्रत्रिप्रवर व(ब)ह्वृच् सा(शा)खि दीक्षित गौतम कार्पस ४/२ पृ० ३९०
माथुरव्रा(ब्रा)ह्मणदेवधरपुत्रधौम्रगोत्रत्रिप्रवरायव(ब) ह्वृच सा (शा) खि द्विवेदिमाल्हे--मिराशी, कार्पस ४/२, पृ० ३९०

३. साङ्कस(स्था)नीयवृ(बृ)हस्पतिपुत्रकात्यायनगोत्र त्रिप्रवर व ब)ह्वृच सा (शा)खिव्रा(ब्रा)ह्मणमाढ--वही, पृ० ३९१

४. कटौघनग्रामीयपडितभागू पुत्र राहुल गोत्रत्रिप्रवर व(ब)ह्वृचसा(शा)खिपण्डित सीघू--वही।

५. कहल्लीय भट्टसुन्द पुत्रभारद्रा(द्वा)जगोत्रत्रिप्रवरव(ब)ह्वृचसा(शा)खिभट्टसि(शि)वदास। कहल्लीयत (भ)ट्टजाखूपुत्रभारद्वाजगोत्र त्रिप्रवरव(ब)ह्वृच सा(शा)खितिहुयणसीह--वही।

६. कार्पस ४/२, ३९०

७. वही, ३९१

८-९. वही, पृ० ३९१

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

इस दानपत्र के अनुसार कृष्णात्रेय,[1] कुशिक,[2] तथा काश्यप[3] गोत्र के परिवार यजुर्वेदीय शाखाओं का अनुसरण करते थे। कृष्णात्रेय गोत्र के ब्राह्मण टिकरी ग्राम में रहते थे।[4] निखती ग्रामवासी कुशिक गोत्र के ब्राह्मणों की माध्यन्दिन शाखा थी।[5] महुआली निवासी काश्यप गोत्र के ब्राह्मणों को शुक्ल यजुर्वेदीय वाजसनेय शाखा का अनुयायी बताया गया है।[6] वे पराशर (पारास (श) र) परिवार के हस्तिग्राम वासी ब्राह्मण तथा निखती ग्राम के दीक्षित उपाधिधारी कुशिक ब्राह्मण माध्यन्दिन शाखा के अनुयायी थे।[7]

सामवेदीय छन्दोगशाखा के अनुयायी गोत्रों में सावर्णि[8] (सावर्ण), शांडिल्य[9] तथा कौण्डिन्य[10] गोत्रों का उल्लेख है। शांडिल्य गोत्र के ब्राह्मण कुलाञ्च से बहिर्गत हुए थे।[11] प्रसंगवश यह उल्लेखनीय है कि कुलांच सामवेदीय शांडिल्य ब्राह्मणों का सर्वाविख्यात केन्द्र था।[12] सर्वाधिक महत्व की बात यह है कि कौण्डिन्य ब्राह्मणों को इस दानपत्र में नागरपंडित कहा गया है।[13] इससे

---

१. टीकरिकीयय (भा) स्कर पुत्र– – –कृष्णात्रगोत्रपंचप्रवर यजुः सा (शा) खि ब्राह्मण संकरदेवे–कार्पस ४/२ पृ० ३९१

२. निखतीग्रामीय दीक्षितदेवेस्व (श्व) रपुत्रकुसि (शि) कगोत्रत्रिप्रवरमाध्यंदिन सा (शा) खिअग्निहोतृ (त्रि) वाह्मट–वही

३. महुछुआलीकीय पंडितनीम्वो (म्बो) कास (श्य) पगोत्रत्रिप्रवरवाजसनेयसा (शा) खिपडितच्छांच्छी (छी)—वही, पृ० ३९०

४-६. कार्पस, ४/२, पृ० ३९१

७. हस्तिग्रामीय दीक्षित श्रीधर पुत्रपारास (श) रगोत्रत्रिप्रवर माध्यन्दिनसा (शा) खिअग्निहोत्रिभास्कर—वही

८. तालीकीय पंडित गदाधर पुत्र सावर्णगोत्रपंचप्रवरच्छन्दोगसा (शा) खि-पडित दान्दू – वही, पृ० ३९०-९१

९. कुलाञ्च (ङ्ची) य श्रीसा (शा) ण्डिल्यगोत्रत्रिप्रवरच्छन्दोगसा (शा) खि पंडित–वही, पृ० ३९१

१०. नागरपंडित माहिलपुत्र को (कौ) ण्डिन्यगोत्रत्रिप्रवरच्छान्दोगसा (शा) खिपंडित भास्कर—वही, पृ० ३९१

११-१२. वही

१३. नागरपंडितमाहिल पुत्र को (कौ) ण्डिन्यगोत्रत्रिप्रवरच्छन्दोगसा (शा) खि पंडित भास्कर—वही, ४/२, पृ० ३९१

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

सिद्ध होता है कि ग्यारहवीं शती में गुर्जर देश के नागर ब्राह्मण सरयूपार क्षेत्र में आकर बस गये थे।

मध्यप्रदेश

सरभपुरीया कालीन ब्राह्मण— छठीं शताब्दी में मध्यप्रदेश के रायपुर जनपदान्तर्गत सीरपुर (प्राचीन श्रीपुर) के निकट सरभपुर में सरभपुरीया नरेशों का शासन था। उनके दानपत्रों से ज्ञात होता है कि वहाँ ऋग्वेदीय तथा यजुर्वेदीय शाखाओं के ब्राह्मणों का निवास था। इस प्रदेश के भार्गव गोत्रीय ब्राह्मणों को जयराज के मल्लर के दानपत्र में बह्वृच शाखानुयायी बताया गया है।[1] इनके अतिरिक्त भारद्वाज[2] तथा काप्य-आंगिरस गोत्र[3] के ब्राह्मणों की भी बह्वृच शाखा थी। सुदेव (महासुदेवराज) के कौवतल दानपत्र[4] तथा महाप्रवरराज के ठकुरीया दानपत्र से अवगत होता है कि पराशर (पारासर) गोत्र से संबंधित परिवारों में वाजसनेय शाखानुयायी ब्राह्मण थे। महाजयराज के अरंग दानपत्र में कौंडिन्य गोत्रीय ब्राह्मणों की वाजसनेय शाखा का उल्लेख है।[5] महासुदेवराज के रायपुर ताम्रपत्र से भी इस तथ्य की पुष्टि होती है।[6]

महानन्नराज के अभमर दानपत्र के अनुसार कौंडिन्य गोत्र के भागवत ब्राह्मण शुक्ल यजुर्वेदीय माध्यन्दिन शाखानुयायी (वाजसनेय माध्यन्दिन) थे।[7] कात्यायन गोत्र के ब्राह्मण भी उक्त शाखा का अध्ययन किया करते थे।[8] उक्त अरंग दानपत्र से यह भी ज्ञात होता है कि आत्रेय गोत्र के ब्राह्मण शुक्ल यजुर्वेदीय कण्व शाखानुयायी थे।[9] महासुदेवराज के रायपुर दानपत्र में वत्स गोत्र के ब्राह्मण यजुर्वेदीय औपमन्यव शाखा के अध्येता कहे गये हैं।[10]

---

१. ए० इ०, ३४, पृ० ३०
२. वही, पृ० ५२
३. व्याघ्रराज का मल्लर दानपत्र, वही, ३४, पृ० ४९
४. वही, ३१ पृ० ३१५ ; वही, २२, पृ० २३
५. फ्लीट, कार्पस, ३, पृ० १९३
६. वही, पृ० १९८
७. ए० इ०, ३१, पृ० २२१
८. ए० इ०, १३, पृ० २०
९. आत्रेय काण्व वाजसनेय—वही, पृ० २०
१०. औपमन्यव (व)त्सगोत्राय—फ्लीट, कार्पस, ३, पृ० १९८

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

त्रिपुरी

कलचुरिकालीन ब्राह्मण—कलचुरी दानपत्रों से विदित होता है कि एकादश शती में त्रिपुरी में ऋग्वेदीय, यजुर्वेदीय तथा सामवेदीय शाखाओं के ब्राह्मण निवास कर रहे थे।

खैरा दानपत्र (क० व० ८२३=१०७२ ई०) से अवगत होता है कि यशः कर्ण के समय काण्व गोत्र (कान्वस्य गोत्राय) के ब्राह्मण ऋग्वेद की बह्वृच् शाखा के अनुयायी थे।[1]

कर्ण के बनारस दानपत्र (क० व० ७९३=१०४२ ई०) के अनुसार त्रिपुरी में कौशिक गोत्र के ब्राह्मण वाजसनेय शाखा का अध्ययन किया करते थे।[2] उनसे सम्मबन्धित पूर्वज वेसाल ग्राम (वैशाली) से बहिर्गत हुए थे।[3]

विदर्भी कौंडिन्यगोत्र के ब्राह्मणों का सम्बन्ध वाजसनेय शाखा से था।[4] यशः कर्ण के जबलपुर दानपत्र (क० व० ८२९=१०७७ ई०) से अवगत होता कि काश्यप गोत्र के ब्राह्मण भी वाजसनेय शाखा के अनुयायी थे।[5] विजयसिंह के कुंभी दानपत्र (क० व० ९३२=११८० ई०) में सामवेद की छंदोग शाखा के अनुयायी सावर्णि (सावर्ण्य) गोत्र के ब्राह्मणों का उल्लेख है।[6]

रतनपुर

कलचुरिकालीन ब्राह्मण– रतनपुर (विलासपुर के उत्तर १६ मील) के

---

१. कान्वस्यगोत्राय आप्लवनजामदग्नित्रिप्रवराय व(ब)ह्वृ(च)सा(शा)खिने–मिराशी, कार्पस, ४/१, पृ० २९५

२. वेसालग्रामविनिर्गताय को(कौ)सि(शि)कगोत्राय ओदलदेवराजविश्वामित्र त्रिप्रवराय वाजसनेय साखाय—वही, पृ० २४५ ३. वही

४. विदभी(र्भी)कौण्डिन्यगोत्रायांगिरसाम्व(म्ब)रीषयौवनाश्यत्रिप्रवराय वाजसनेय सा(शा)खिने—कर्ण का गोहरवा दानपत्र, मिराशी, कार्पस, ४/१, पृ० २५८-२५९

५. काश्यपगोत्राय काश्यपावत्सारनैध्रुवत्रिप्रवराय वाजसनेय शाखिने—मिरासी, कार्पस, ४/२, पृ० ६३४

३. सावर्ण्यगोत्राय भार्गवच्यावन आप्नवान और्वजामदग्न्येति पंचप्रवराय छन्दोगशाखिने—वही, पृ० ६४९

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

कलचुरी पृथ्वीदेव के रायपुर दानपत्र (क० स० ८२१ = १०६९ ई०) से प्रमाणित होता है कि कौशिक (कौसिक गोत्राय) गोत्र के ब्राह्मण सामवेदीय छन्दोग शाखा के अनुयायी थे और वे श्रावस्ती (श्रावस्ति विनिर्गताय) से विनिर्गत हुए थे।[1]

टकारी के चन्द्रात्रेय गोत्रीय ब्राह्मणों को पृथ्वीदेव द्वितीय के अमोदा दानपत्र (क० व० ९००=११५३ ई०) में वाजसनेय शाखानुवर्ती बताया गया है।[2]

डाहल मण्डल

पारिव्राजक कालीन ब्राह्मण– परिव्रजकों के समय के केवल चार अभिलेखों में दानग्रहीता ब्राह्मणों का उल्लेख है। महाराज हस्तिनकालीन नवग्राम दानपत्र (गु०व० १९८=५१७ ई०) में पाराशर गोत्रीय ब्राह्मणों को शुक्ल यजुर्वेदीय माध्यन्दिन शाखा का सब्रह्मचारी कहा गया है।[3] बेतूल दानपत्र के अनुसार भारद्वाज ब्राह्मणों की भी यही शाखा थी।[4] भीमसेन द्वितीय के अरंग ताम्रपत्र (गु० सं० २८२=६०१ ई०) में भारद्वाजगोत्रीय बह्वृच चरणानुयायी परिवार का उल्लेख है।[5] महाराज हस्तिन के मझगांवां ताम्रपत्र (गु०व० १९१ = ५१०-११ ई०) अनुसार उपमन्यु (औपमन्यव) गोत्र के ब्राह्मण छन्दोग कौथुम शाखा के अध्येता थे।[6]

मालवा

परमारकालीन ब्राह्मण— परमारकालीन दानपत्रों (९५०-१३२५ ई०) से ज्ञात होता है कि मालवा के ब्राह्मण ऋग्वेदीय, यजुर्वेदीय तथा सामवेदीय शाखाओं के अनुयायी थे। वाक्पति मुंज के गोनरी दानपत्र (वि० सं० १०३८=

---

१. श्रावस्तिविनिर्गताय कौसि (शि) कगोत्राय त्रिप्रवराय छन्दोगसा (शा) खिने –मिरासी, कार्पस, ४/२पृ० ४००

२. वही, पृ० ४७७

३. ए० ई०, २१, पृ० १२६

४. वही, ८, पृ० २८७

५. वही, ९, पृ० ३४५

६. फ्लीट, कार्पस, ३, पृ० १०८

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

९८१ ई०) के अनुसार शांकृत्य (सांकृत्य),[1] भारद्वाज,[2] वत्स[3] तथा वराह[4] गोत्र के ब्राह्मण ऋग्वेदीय बह्वृच शाखा के अध्येता थे। इन्दौर संग्रहालय दानपत्र (वि० सं० १०७९ = १०२२ ई०) से अवगत होता है कि मान्यखेट से वहिर्गत आत्रेय गोत्र के ब्राह्मण बह्वृच शाखा के अध्येता थे।[5]

मालवा के ब्राह्मणों का अध्ययन करने के लिए देवपाल और जयवर्मा द्वितीय का मान्धाता दानपत्र (वि० सं० १२८२=१२२५ ई०) अत्यन्त महत्व पूर्ण है। इसमें उल्लिखित अधिकांश ब्राह्मण मथुरा या समीपस्थ स्थान से मालवा आये थे।[6] इस अभिलेख के अनुसार महावन स्थान से बहिर्गत पवित्र गोत्र के ब्राह्मण आश्वलायन शाखाध्येता थे।[7] मुतावथुस्थान[8] तथा मथुरा से[9] बहिर्गत हुये काश्यप गोत्रीय चतुर्वेदी परिवार आश्वलायन शाखानुयायी था।

मथुरा के भार्गव चतुर्वेदी ब्राह्मणों की शाखा भी आश्वलायन थी।[10] आद्यस्थान डिंडवानक के गौतम गोत्र के ब्राह्मण ऋग्वेदीय शांखायन शाखा के अध्येता

---

१. मगद्ध (ध) देशान्तः पातिकणोपाभट्टग्रामविनिर्गत सांस्कृत्यसगोत्रतृ (त्रि) प्रवरव (ब) ह्वृचशाखिने– ए०इ०, २३, पृ० १०९

२. खेटक-विनिर्गतभारद्वाजसगोत्रतृ (त्रि) प्रवर व (ब) ह्वृच् शाखिने-वही, पृ० ११०

३. श्रवणभद्रविनिर्गतवत्ससगोत्रपंचप्रवरव (ब)ह्वृच् शाखिने–वही।

४. दपुरविनिर्गत वाराहसगोत्रतृ(त्रि)प्रवरव (ब) ह्बृचशाखिने–वही, २३, पृ० ११०

५. श्रीमान्यखेटविनिर्ग्गताय। आत्रेयसगोत्राय ··· ··· ···आत्रेयार्च्चनानसस्यावाश्वति त्रिःप्रवराय बह्वृचशाखाय भट्टसोश्वर सुत ब्राह्मणवच्छलाय– इ० हि० क्वा०, ८, पृ० ३१२

६. ए० इ०,६, पृ० १०८-११२

७. ए० इ०, ९, पृ० ११०

८. मुतावथुस्थानविनिर्ग्गताय काश्यप-गोत्राय काश्यप प (आ) वत्सार नैध्रुव इति त्रिप्रवराय आश्वलायन शाखाध्यायिने—वही, पृ० १११

९. मथुरास्थानविनिर्गताय आश्वलायनशाखाध्यायिने काश्यपगोत्राय काश्यप-आवत्सार-नैध्रुव-इति-त्रिप्रवराय च–वही।

१०. मथुरास्थान–विनिर्ग्गताय आश्वलायनशाखाध्यायिने भार्ग्गवगोत्राय भार्ग्गव-च्यवन-आप्नुवान-और्व्व-जामदग्न्य इति पंच प्रवराय च–वही, ९, पृ० ११२

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

थे।[1] टकारी के गौतम ब्राह्मण भी आश्वलायन शाखाध्यायी थे।[2] मथुरा के धौम्य तथा कौत्स[3] गोत्र के ब्राह्मणों की गणना भी आश्वलायन शाखान्तर्गत होती थी। परमार राजाओं के दानपत्रों में यजुर्वेदीय, विशेष रूप से शुक्ल यजुर्वेदीय ब्राह्मणों का सर्वाधिक उल्लेख हुआ है। भोज के महुदी दानपत्र (वि० सं० १०७४ = १०१७ ई०) में गौड़देशान्तर्गत श्रवगभद्र से बहिर्गत वात्स्य गोत्र के ब्राह्मणों का उल्लेख है। वे वाजसनेयशाखा के अध्येता थे।[4] वशिष्ठ गोत्र के च्छिच्छा (लाट देश) से आगत वाजसनेय माध्यन्दिन शाखानुयायी ब्राह्मणों का उल्लेख बंशवारा दानपत्र (वि० स० १०७६ = १०१९ ई०) में किया गया है।[5] गोनरी दानपत्र से ज्ञात होता है कि खडुपल्लिका के मौद्गल्य गोत्र के ब्राह्मणों का सम्बन्ध वाजिमाध्यन्दिन शाखा से था।[6] अगस्त्य गोत्र के उम्बराचर से विनिर्गत ब्राह्मण वाजिमाध्यन्दिन शाखा के अनुयायी थे।[7] मध्यदेश के मैत्रेय गोत्रीय ब्राह्मण वाजिमाध्यन्दिन शाखा के अध्येता थे।[8] वाजिमाध्यन्दिन शाखा के पाराशर ब्राह्मणों का मूलस्थान श्रावस्ती स्थित मितिलपाटक था।[9] त्रिप्रवरान्तर्गत मौनि गोत्र

---

१. ए० इ० ९ पृ० ११९

२. टकारीस्थानविनिर्गताय गौतमसगोत्राय गौतमअंगिरस-औतथ्य इति त्रिप्रवराय आश्वलायनशाखाध्यायिने – वही, पृ० १२३

३. ए० इ०, ९ पृ० ११२

४. ए० इ०, २३, पृ० २१८

५. वशिष्ठसगोत्राय वाजिमाध्यन्दिनशाखायैक प्रवरायच्छि छास्थानविनिर्गतपूर्व्वजाय (य)—वही, ११, पृ० १८२

६. खडुपल्लिकाग्रा (म) वि (नि) र्गतमौद्गल्यसगोत्रतृ (त्रि) प्रवरवाजिमाध्यन्दिनशाखिने – वही २३, पृ० १०९

७. उम्बराचरविनिर्गतअगस्त्यसगोत्रतृ (त्रि) प्रवरवाजिमाध्यन्दिनशाखिने —वही।

८. मध्यदेशान्तःपाति मैत्रेयसगोत्रतृ (त्रि) प्रवरवाजिमाध्यन्दिनशाखिने— वही, पृ० ११०

९. सावथि (का) देशान्तःपातिमितिलपाटकविनिर्ग (र्ग) त पराशरसगोत्रतृ (त्रि) प्रवरवाजिमाध्यन्दिन शाखिने – वही।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

(मौनिसगोत्र) के ब्राह्मण वाजिमाध्यन्दिन शाखा के अध्येता थे।[1] आद्यस्थान आनोह (राजस्थान के भरतपुर के पास आनोह है) के भार्गव परिवारों के ब्राह्मणों के वाजिमाध्यन्दिन शाखानुयायियों में लाटदेश से आगत काश्यप गोत्र[3] और नान्दिपुर (लाटदेश) से बहिर्गत भारद्वाज ब्राह्मण भी थे।[4] वत्सगोत्रीय ब्राह्मणों का आगमन श्रवणभद्र से हुआ था और वे वाजिमाध्यन्दिन शाखा का अध्ययन करते थे।[5] भोज के बेतमा दानपत्र (वि० सं० १ ७६ = १ १९ ई०) से अवगत होता है कि विशाल ग्राम (वैशाली?) के कौशिक (कौसिक) गोत्रीय माध्यन्दिन शाखानुयायी ब्राह्मणों का निवास स्थान थानेश्वर (स्थाण्वीश्वर था।[6] शृंगपुर (मध्यदेश) से आगत कात्यायन गोत्र के ब्राह्मण भी इसी शाखा के अनुयायी थे।[7] मान्धाता दानपत्र (वि० सं० १३१७ = १२६० ई०) से ज्ञात होता है कि मध्यदेश के नव- ग्राम से बहिर्गत भार्गव गोत्र के ब्राह्मण माध्यन्दिन शाखा के अध्येता थे।[8]

---

१. खेडापालिकाविनिर्गतमौनिसगोत्रतृ (त्र) प्रवरवाजिमाध्यन्दिनशाखिने— ए० इ०, २३, पृ० ११०

२. आनोहभट्टग्रामविनिर्गतभार्गवसगोत्रतृ (त्रि) प्रवर वाजिमाध्यन्दिनशाखिने —वही ।

३. (ला)टदेशविनिर्ग्गतकास्य (श्य) पसगोत्रतृ (त्रि) प्रवरवाजिमाध्यन्दिन-शाखिने—वही ।

४. लाटदेशान्तःपातिनान्दिपुरविनिर्ग्गतभारद्वाजसगोत्रतृ (त्रि) प्रवरवाजिमाध्यादिन शाखिने—वही ।

५. श्रवणभद्रविनिर्ग्गतवत्ससगोत्रपञ्चप्रवरवाजिमाध्या (ध्य) न्दिनशाखिने—वही ।

६. विशालग्रामविनिर्गतपूर्व्व (जा) य । स्थाण्वीश्वरादागताय ··· ··· ··· कौसिकसगोत्राय । अधमर्षणविश्वामित्रकौसिके ति त्रिः प्रवराय माध्यन्दिन-शाखाय—वही, १८, पृ० ३२३

७. श्रीमध्यदेशान्तःपाति शृंगपुर-स्थानविनिर्गतकात्यायनगोत्र-कात्यायन गोत्र-कात्यायन-कपिलविश्व (श्वा) मित्र इति-त्रिःप्रवर-माध्यन्दिनशाखाध्यायि-नरवर्मा का कदम्बपद्रक दानपत्र, वही, २०, पृ० १०६

८. नवग्रामस्थानविनिर्गताय भार्गवच्यावन आप्नवानऔर्वजामदग्न्य इति-पंच-प्रवराय माध्यन्दिनशाखाध्यायिने—वही, ९, पृ० १२२

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

घटौशरी,[1] टकारी[2] तथा मध्यदेश[3] से आये हुए भारद्वाज ब्राह्मण परिवारों में माध्यंदिन शाखा का अध्ययन होता था। इसी प्रकार चौरम्ब[4] और मध्यदेश[5] आद्यस्थान के शांडिल्य ब्राह्मण माध्यन्दिन शाखानुयायी थे। महावन से बहिर्गत औदल गोत्र के ब्राह्मण माध्यन्दिन शाखा के अध्येता थे।[6] काश्यप ब्राह्मण-परिवार भी इसी शाखा के अनुयायी थे और इनका आद्यस्थान मुतावथ् (मथुरा?) था।[7] मध्यदेश बहिर्गत मुद्गल गोत्र[8] के और मार्कण्डेय गोत्र[9] के ब्राह्मणों की भी माध्यंदिन शाखा थी। हारित-कौत्स द्विगोत्र के चतुर्वेदी ब्राह्मण कृष्णयजुर्वेदीय कठ शाखानुयायी थे।[10] इनका आगमन सरस्वती स्थान (सरस्वती नदी के आस-पास का क्षेत्र) से हुआ था।[11]

---

१. घटौशरीस्थानविनिर्गताय भारद्वाज सगोत्राय आंगिरसवा (बा) र्हस्पत्य-भारद्वाज-इतित्रि-प्रवराय माध्यन्दिन-शाखाध्यायिने—ए०इ०,९, पृ० १२२

२. टकारीस्थान-विनिर्गताय भारद्वाज-सगोत्राय भारद्वाजआंगिरसवा (बा) र्हस्प (स्प) त्य इति त्रि-प्रवराय माध्यन्दिन शाखाध्यायिने—वही, पृ० १११

३. मध्यदेशविनिर्गताय माध्यन्दिनशाखाध्यायिने भारद्वाजसगोत्राय अंगिरश (स) वा (बा) र्हस्पत्य-भारद्वाज-इति–त्रिप्रवराय—वही।

४. वही, २३, पृ० १०९

५. मध्यदेशविनिर्गताय माध्यन्दिन शाखाध्यायिने शांडिल्य–वही, पृ० १११-११२

६. महावनस्था (न) विनिर्गताय औदलयगोत्राय माध्यन्दिनशाखाध्यायिने—वही, ९, पृ० ११०

७. मुतावथुस्थानविनिर्गताय माध्यन्दिनशाखाध्यायिने काश्यपगोत्राय काश्यप-आवत्सार-नैध्रुव-इति त्रिप्रवराय–वही, पृ० ११२

८. मध्यदेशविनिर्गताय माध्यन्दिनशाखाध्यायिने मुद्गलगोत्राय आंगिरश (स) भार–समुदगल इति त्रिप्रवराय –वही।

९. मध्यदेश-विनिर्गतायमाध्यन्दिनशाखाध्यायिने मार्कण्डेयगोत्राय भार्गव-च्यवन-आप्नुवानऔर्वजामदग्न्य इति पंचप्रवराय— वही।

१०. सरस्वतीस्थान-विनिर्गताय कठशाखाध्यायिने (हर) इत-कुत्सगोत्रायआंगिरश (स) अंबरीष यौवनास्य (श्व) इति त्रिप्रवराय च—वही।

११. मध्यदेशान्तःपातित्यकभट्टग्रामविनिर्गतवासिष्ठसगोत्रतृ (त्रि) प्रवर छ (च्छ) न्दोगशाखिने—वही, २३, पृ० १०९

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

मालवा में परमार राजाओं के समय सामवेदीय छन्दोग, कौथुम तथा राणायनीय शाखानुवर्तियों का भी निवास था। वशिष्ठगोत्र के ब्राह्मण छन्दोग शाखा के अनुयायी थे। उनका आद्यस्थान मध्यदेश का अयकभट्ट ग्राम था।[1] चौरम्ब[2] तथा कुलांचा[3] के शांडिल्य गोत्रीय ब्राह्मण भी इसी शाखा के अध्येता थे अशुरेशमंडलान्तर्गत अविग्रा ग्राम[4] तथा राजकीय ग्राम[5] से बहिर्गत वत्स गोत्रीय ब्राह्मण परिवार भी छन्दोग शाखानुयायी थे। भार्गव परिवार के ब्राह्मणों की शाखा छन्दोग थी।[6] उनके पूर्वज दर्दुरिका ग्राम (शवथिका या श्रावस्ती) से बहिर्गत हुए थे।[7] छन्दोग शाखानुयायी पाराशर (पारास(श, र)गोत्र के ब्राह्मण वंग देश में दक्षिण राढ़ा के विल्वगवास ग्राम के मूल निवासी थे।[8] उत्तरकुलदेश (कामरूप) के पौण्डरीक भट्ट ग्राम के मूल निवासी ब्राह्मण छन्दोगशाखानुयायी थे।[9] टकारी के भारद्वाज[10] तथा पञ्चप्रवर वत्स गोत्र[11] के ब्राह्मण सामवेदीय

---

१. ए० इ० २३, पृ० १०९

२. वही।

३. वही।

४. अशुरेसमंडलान्तःपाति अविवाग्राम-विनिर्गत-वत्सगोत्र-पञ्चप्रवर-छं (च्छं) दोगशाखिने—वही, पृ० ११०

५. (राजकीय ग्राम) विनिर्गत वत्ससगोत्रपंचप्रवर छं (च्छं) दोगशा (खि) ने —वही।

६. शावथिकान्तःपाति दर्दुरिकाग्रामविनिर्गतभार्गवसगोत्रत् (त्रि) प्रवर छं (च्छं) दोगशाखिने—वही, २३, पृ० ११०

७. वही, २३, पृ० ११०

८. दक्षिणराढान्तःपाति विल्वगवासविनिर्गतपारास (श) रसगोत्र पंपप्रवर छं (च्छं) दोगशाखिने—वही।

९. उत्तरकुलदेशान्तः पाति पौण्डरिकभट्टग्रामविनिर्गतगार्ग्यसगोत्रपंचप्रवर-छं (च्छं) दोगशाखिने—वही, पृ० ११०

१०. टकारीस्थान-विनिर्गताय भारद्वाजगोत्राय भारद्वाज-आँगिरस वा (बा) र्हस्पत्य इति त्रिप्रवराय कौथुमशाखाध्यायिने त्रि—वही।

११. टकारीस्थान-विनिर्गताय कौथुमशाखाध्यायिने वत्सगोत्राय-भार्गवच्यवन-आप्नुवान और्व्वजामदग्न्य इति त्रिपंचप्रवराय—वही, पृ० ११२

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

कौथुम शाखानुयायी थे। महावन (मथुरा?) से बहिर्गत हुए गोतम[1] गोत्रीय ब्राह्मण परिवार भी इसी शाखा का अनुयायी था।

पराशर गोत्र के त्रिप्रवर ब्राह्मण, जिनका बहिर्गमन हस्तिनापुर से हुआ था, कौथुम शाखान्तर्गत थे। मान्धाता दानपत्र से प्रमाणित होता है कि मथुरा के भारद्वाज गोत्रीय त्रिवेदी ब्राह्मणों की सामवेदीय राणायनीय शाखा थी।[2] महावन से आये हुए कात्यायन गोत्र के त्रिवेदी ब्राह्मण सामवेद का अध्ययन करते थे।[3]

बुन्देलखन्ड

चन्देल कालीन ब्राह्मण— चन्देलकालीन दानपत्रों (१०००-१२५० ई०) से ज्ञात होता है कि बुन्देलखण्ड (जेजाक भुक्ति) में ऋग्वेदीय, यजुर्वेदीय तथा सामवेदीय ब्राह्मण रहते थे। चरखारी दानपत्र (वि० सं० ११०८ = १२५०ई०) में कृष्णात्रेय (कृष्णत्रेय) गोत्र से सम्बन्धित परिवार के ऋग्वेदीय बह्वृच् शाखानुयायी ब्राह्मणों का उल्लेख है।[4] वे कुम्भटीभट ग्राम (मध्यदेश) से निर्गत हुए थे।[5] महोबा दानपत्र (वि० सं० १२३० = ११७३ ई०) से प्रमाणित होता है कि परमर्दिदेव के समय जेजाभुक्ति में सांकृत्य गोत्र के त्रिब्राह्मण वाजसनेय शाखा के अध्येता थे।[6] इन ब्राह्मणों का आगमन फोडिव भट्टाग्रहार (मध्यदेश) से हुआ था।[7] उक्त नरेश के समय में मुताउष भट्टाग्रहार से बहिर्गत कश्यप परिवार के ब्राह्मणों की शाखा वाजसनेय थी।[8] कौत्स गोत्रीय परिवार

---

१. महावनस्था (न) विनिर्गत्य कौथुमशाखाध्यायिने गौतम गोत्राय गौतम आङ्गिरस उतथ्य इति त्रिप्रवराय—ए० इ०, २३, पृ० १११

२. मथुरास्थानविनिर्ग्गताय राणायनी शाखाध्यायिने भरद्वाजगोत्राय आंगिरस, बा (बा) र्हस्पत्य भारद्वाज इति त्रिप्रवराय—ए० इ०, ९, पृ० १११

३. महावनस्थान-विनिर्ग्गताय कात्यायन गोत्राय शा (सा) मवेदाध्यायिने—वही

४. वही, २०, पृ० १२७

५. वही।

६. फोडिवभट्टाग्रहारविनिर्ग्गताय शांकृत्यगोत्राय शांकृत्यांगिरसगौरीवृत्तेत (ति) त्रिप्रवराय वाजसनेय सा (शा) खाध्यायिने—ए० इ०, १६ पृ० १३

७. वही।

८. परमर्दिदेव का प्रचर दानपत्र, वही, १०, पृ० ४८

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

पाटलिपुत्र के आद्यवासी थे और इनका सम्बन्ध वाजसनेय शाखा से था।[1] त्रैलोक्यवर्मा के तेहरी दानपत्र (वि० सं० १२४६ = १२०७ ई०) में रैकोर से बहिर्गत वत्स गोत्र के ब्राह्मणों को वाजसनेय शाखानुयायी कहा गया है।[2]

परर्मादिदेव के चरखारी दानपत्र (वि० स० १२३६ = ११७९ ई०) से विदित होता है कि वत्सगोत्र के ब्राह्मण सामवेदीय छन्दोग शाखा के अध्येता थे।[3] सेम्रा दानपत्र वि० सं० १२२३ = ११६६ ई०) में ऋग्वेद तथा यजुर्वेद चरण से सम्बन्धित अनेक गोत्रों का उल्लेख प्राप्त होता है। इसके अनुसार कश्यप, उपमन्यु, गौतम, भारद्वाज, शांकृत्य, त्रैकायन, कृष्णात्रेय, भार्गव, शांडिल्य, वशिष्ठ, कौत्स, पराशर (परासर), वत्स, चन्द्रात्रेय, बंधुल, गौतम, दार्ढ्यच्युत तथा धौम्य गोत्र के ब्राह्मण ऋग्वेद चरण (ऋग्वेद चरणे) के अध्येता थे।[4]

भारद्वाज कश्यप, कौत्स, गौतम, पराशर (परासर), चन्द्रात्रेय, त्रैकायन; कौशिक (कौसिक), वत्स, वशिष्ठ (वसिष्ठ), माहुल, शकृत्य, मौद्गल्य, उपमन्यु, शांडिल्य, भार्गव, अत्रि, कौंडिन्य, बौधायन (बौद्धायन), मौनस, कृष्णात्रेय तथा लौगाक्ष विष्णुवृद्ध (विष्णुवृद्धि), दर्भि, सावर्णि (सावर्ण्य) गर्ग, कात्यायन तथा बंधुल गोत्र के ब्राह्मण यजुर्वेद चरणान्तर्गत थे।[5]

---

१. पाटलिपुत्रनगरविनिर्गताय कौत्स-गोत्राय आद्वार्षि आम्बरीष योवनास त्रिप्रवराय वाजसनेय शाखाध्यायिने— ए०इ०, १६ पृ० १२५

२. रैकौरविनिर्गताय वत्स-गोत्राय वत्सभार्गवच्यवन औम्र्म (र्व्व) या (जा) मदग्न्य पंचप्रवराय वाजश (स) नेय शाखाध्यायिने—वही, ३१, पृ० ७३

३. मुताउषभट्टाग्रहारविनिर्गतभ्यो वत्सगोत्रभ्यो वत्सभार्गवच्यवनाप्नुवानौर्व्वया (जा) मदग्न्येतिपंचप्रवरेभ्यो (भ्यश्छं) दोगशाखाध्यायि (भ्यो)— ए० इ०, २० पृ० १३०

४. विस्तृत जानकारी के लिए द्रष्टव्य-सेम्रादानपत्र, वही, ४, पृ० १५८-६३

५. सेम्रा दानपत्र, ए० इ० ,४ पृ० १६३-१६९

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

मौलिक ग्रन्थ

१. ऋग्वेदसंहिता, वैदिक संशोधन मंडल, पुण्यपत्तन (पूना) संस्करण। अंग्रेजी अनुवाद, एच० एच० विल्सन कृत, हिन्दी अनुवाद-पं० रामगोविन्द त्रिवेदीकृत।
२. अथर्ववेद संहिता : संपादक, एस० पी० पंडित, बम्बई, १८९५-९८ अंग्रेजी अनुवाद : विलियम ड्वाइट ह्विटनी, वाराणसी संस्करण।
३. तैत्तिरीय संहिता, सपादक-ए० वेबर, बर्लिन, १८७१-७२
४. वाजसनेयि सहिता : संपादक ए० वेबर, लंदन, १८५२
५. सामवेद (हिन्दी भाष्य समेत) : पं० सातवलेकर, वैदिक स्वाध्याय मंडल, जिजा पारडी, सूरत।
६. शतपथ ब्राह्मण, बम्बई संस्करण, सं०—पं० हरिस्वामी प्रभृति, ५ भागों में, अंग्रेजी अनुवाद : जे० एगलिंङ्ग (५ भागों में), सेक्रेट बुक्स आफ दि ईस्ट, संपा० मैक्समूलर।
७. ऋग्वेदिक बाह्मणाज, ए०बी०कीथ, एच०ओ०एस०
८. बृहदारण्यक उपनिषद, गीताप्रेस, गोरखपुर संस्करण।
९. छान्दोग्य उपनिषद, " "
१०. कठोपनिषद्, " "
११. श्वेताश्वतर उपनिषद् " "
१२. निरुक्त : संपा०-पं० छज्जूराम शास्त्री प्रभृति
१३. निरुक्त तथा निघण्टु : लक्ष्मण स्वरूप
१४. पाणिनीय अष्टाध्यायी (अष्टाध्यायी आफ पाणिनि), संपा०- श्रीशचन्द्र बसु
१५. भट्टोजी दीक्षित कृत सिद्धान्त कौमुदी, बम्बई, १९२६
१६. पतंजलि कृत व्याकरण महाभाष्य, दिल्ली, १९६७
१७. जयादित्य वामन कृत काशिकावृत्ति, वाराणसी, १९६५
१८. महाभारत, पूना संस्करण, गीताप्रेस, गोरखपुर संस्करण।
१९. रामायण, हिन्दी व्याख्या सहित, व्याख्याकार पं० द्वारकाप्रसाद शर्मा चतुर्वेदी (१० भागों में)।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

२०. विष्णुपुराण, गीताप्रेस, गोरखपुर संस्करण, वि० सं० १९९३
२१. स्कन्दपुराण " "
२२. मार्कण्डेय पुराण (दो भागों में)
२३. वायुपुराण : संपा०-राजेन्द्र लाल मित्र
२४. भागवत पुराण : संपा०-वी०एल०पंसिकर, बम्बई, १९२०, गीताप्रेस गोरखपुर
२५. साम्बपुराण : संपा०-पी० तर्करत्न, कलकत्ता।
२६. भविष्यपुराण : बृहद्धर्मपुराण : संपा -पी० तर्करत्न, कलकत्ता
२७. ब्रह्मवैवर्त्त पुराण : संपा०-एच० पी० शास्त्री, कलकत्ता १८९७
२८. मनुस्मृति
२९. याज्ञवल्क्य स्मृति : संपा०-एच०एन० आप्टे, पुना।
३०. पराशर स्मृति : सपा०-वामन इस्लाम्पूकर, कलकत्ता १९५२
३१. बौधायन स्मृति
३२. गौतमस्मृति
३३. ब्राह्मणोत्पत्ति मार्त्तण्ड, बम्बई।
३४. निर्णय सिंधु, बम्बई।
३५. पुरुषोत्तम पंडित कृत गोत्रप्रवरमंजरी : संपा०-जान०, ब्रफ, कैम्ब्रिज, १९५३
३६. चरण व्यूह (शौनककृत), महिदासकृत भाष्य समेत। चौखम्भा, बनारस, १९३८
३७. बाणभट्ट, कृत हर्षचरित तथा कादम्बरी
३८. बाणभट्ट कृत कादम्बरी : टीकाकार, शास्त्री रामतेज
३९. शौनककृत बृहद्देवता, वाराणसी
४०. कमलाकरभट्ट कृत 'प्रवर दर्पण', संपा०-पी०सी०राव, मैसूर, १९००
४१. गोत्रप्रवरनिबन्धकदम्बकम्, संपा०-चेन्तसल राव, मैसूर, १९००

आधुनिक ग्रन्थ

अग्रवाल वासुदेव शरण — इंडिया ऐज नोन टु पाणिनि, बनारस, १९६३
" — पाणिनिकालीन भारत
" — गोत्राज इन पाणिनि
" — हर्षचरित : एक सांस्कतिक अध्ययन
— कादम्बरी : एक सांस्कृतिक अध्ययन

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

अग्रवाल, वासुदेव शरण — मार्कण्डेय पुराण : एक सांस्कृतिक अध्ययन
,,
उद्गीरकर, नारायण बापूजी : (संपा०) कलेक्टेड वर्क्स आफ सर आर० जी० भंडारकर, भाग १, पूना १९३३, भाग २, पूना १९२८
अल्तेकर, अनन्त सदाशिव : राष्ट्रकूटाज एण्ड दियर टाइम्स, पूना १९३६
ओझा, गौरीशंकर हीराचंद : राजपूताना का इतिहास, अजमेर, १९३६
,, ,, ,, मध्यकालीन भारतीय संस्कृति, हिन्दुस्तानी अकादमी, प्रयाग, १९१५
उपाध्याय भगवत शरण : भारतीय समाज का ऐतिहासिक विश्लेषण बनारस, १९५०
इन्थावेन, आर० ई० : दि ट्राइब्ज एण्ड कास्ट्स आफ बम्बई, बम्बई, १९२०
कनिंघम, अलेक्जेण्डर : दि एन्सियेन्ट ज्योग्राफी आफ इंडिया, वाराणसी, १९६३
काणे, पांडुरंग वामन : हिस्ट्री आफ धर्मशास्त्र, भाग २, खण्ड १, पूना १९४१
गांगुली, डी० सी० : हिस्ट्री आफ दि परमार डायनेस्टी, ढाका, १९३३
ईस्टर्न चालुक्याज बनारस, १९३७
चंदा आर० पी० : इंडो आर्यन रेसेज, राजशाही, १९१६
भंज डायनेस्टी आफ मयूरभंज एण्ड दिअर एन्सियेन्ट कैपिटल, किचिंग, १९२१
चाटुर्ज्या, सुनीतिकुमार : भारतीय आर्य भाषा और हिन्दी, द्वि० सं०, पटना, १९६३
चौधरी शशिभूषण : एथनिक सेटिलमेन्ट्स इन एन्सियेन्ट इण्डिया, भाग १, कलकत्ता, १९५५
टाड, लेफ्टिनेंट कर्नल जेम्स : एनल्स एण्ड एण्टिक्विटी आफ राजस्थान, संपा०-डब्ल्यू० क्रुक, आक्सफोर्ड, १९२२
डे, नन्दूलाल : दि ज्याग्राफिकल डिक्सनरी आफ एन्सिएन्ट एण्ड मेडियेवल इंडिया, द्वि० सं०, लंदन, १९२७
तिवारी, उदयनारायण : (अनुवाद) भारत भाषा का सर्वेक्षण, खंड १, भाग १, लेखक-सर जार्ज अब्राहम ग्रियर्सन—प्रकाशन शाखा-सूचना विभाग, उ० प्र० प्रयाग।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America, HHFA(USA)

दास, संतोष कुमार : एजुकेशनल सिस्टम आफ दि एन्सियेन्ट हिन्दूज, कलकत्ता, १९३०

दिवाकर, आर० आर० : बिहार थ्रु दि एजेज, नई दिल्ली, १९५९

पनिक्कर, के० एम० : ए सर्वे आफ इंडियन हिस्ट्री, बम्बई, १९५७

प्रभू, पी० एन० : हिन्दू सोशल आर्गनाइजेशन

पान्डेय, जगन्नाथ : (सपा०) सरयूपारीण ब्राह्मण वंशावली

पाण्डेय राजबली : हिन्दू-संस्कार, वाराणसी १९५७

पाठक, विश्वभरशरण : शैव कल्ट्स इन नार्दर्न इडिया, वाराणसी, १९६२ हिस्टोरियन्स आफ एन्सियेन्ट इंडिया, एशिया पब्लिशिंग, १९६६

भगवद्दत्त : वैदिक वाङ्मय का इतिहास, भाग १, वाराणसी, १९५६

भंडारकर, आर० जी० : फारेन एलीमेन्ट्स इन हिन्दू पापुलेशन, पुनर्मुद्रित
: सं०-वैष्णविजम शैविज्म एण्ड माइनर रेलिजस सिस्टम्स, पूना १९२९

भट्टाचार्य, जे० एन० : हिन्दू कास्ट्स एण्ड एक्टस, कलकत्ता, १८९६

बाजपेयी, कृष्णदत्त : (संपा०) दि ज्याग्राफिकल इन्साइक्लोपीडिया आफ एन्सियेन्ट एण्ड मेडियेवल इंडिया, भाग १, वाराणी, १९६७

बाजयेयी, कृष्णदत्त एवं नलिनाक्ष दत्त : उत्तर प्रदेश में बौद्धधर्म का विकास, हिन्दी-समिति प्रकाशन, लखनऊ।

बनर्जी, आर०डी० : हिस्ट्री आफ उड़ीसा, (२ भागों में), कलकत्ता १९३०-३१

ब्रफ, जान : दि अर्ली ब्राह्मनिकल सिस्टम आफ गोत्र एण्ड प्रवर कैम्बिज, १९५३

मैक्समूलर, : ए हिस्ट्री आफ एन्सियेंट सस्कृत लिटरेचर, इलाहाबाद, १९२६, सेक्रेट बुक्स आफ दि ईस्ट, पुनर्मुद्रण, वाराणसी, १९६५

मिश्र, केशवचन्द्र : चन्देल और उनका राजत्वकाल, वाराणसी, वि० सं० २०११

मजूमदार, आर०सी० एवं पुसालकर : वैदिक एज, दि एज आफ इंपीरियल यूनिटी, स्ट्रगिल फार इम्पायर, भारतीय विद्याप्रकाशन, वाराणसी।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

मजूमदार, आर०सी० : क्लासिकल एकाउन्ट्स आफ इंडिया, कलकत्ता, १९६१
हिस्ट्री आफ बंगाल, भाग १, ढाका, १९४३

मोटवानी, केवल : मनु-धर्मशास्त्र : मद्रास, १९५८

मुखर्जी, राधाकुमुद : एन्सियेंट एजूकेशन फ्राम इन्स्क्रिप्सन्स, आक्सफोर्ड, १९२६

मेहताब, एच० : दि हिस्ट्री आफ उड़ीसा, लखनऊ, १९४९

मुंशी, के० एम० : दि इंपिरियल गुजंराज, बम्बई १९५२
दि ग्लोरी दैट वाज गुर्जरदेश (दो भागों में), बम्बई, १९५१

मैक्डावल, ए०ए० : हिस्ट्री आफ सस्कृत लिटरेचर, लंदन, १९००

मैक्डानेल, एवं कीथ : वैदिक इंडेक्स (दो भागों में), मोतीलाल बनारसीदास, वाराणसी

मैक्रिण्डल, जे० डबल्यू : एंसियेंट इंडिया एज डिस्क्राइब्ड इन क्लासिकल लिटरेचर, वेस्टमिन्स्टर, १९०१

मिराशी, वासुदेव विष्णु : वाकाटक राजवंश का इतिहास (अनुवादक, अजय मित्र शास्त्री), वाराणसी, १९६४

राय चौधुरी एच० सी०: डायनेस्टिक हिस्ट्री आफ नार्दर्न इण्डिया, (दो भागों में), कलकत्ता, १९३१

ला, बी० सी० : ट्राइब्स इन इन्शियेन्ट इन्डिया

रीज डेविड्स, टी० डबल्यू, : बुधिस्ट इंडिया, कलकत्ता १९०२

वर्मा, धीरेन्द्र : मध्यदेश पटना, १९२५

विजापुरकर, विष्णु गोविन्द : ऋक्संग्रह : बम्बई, १९०७

विन्तरनित्स, एम० : हिस्ट्री आफ इन्डियन लिटरेचर, भाग-१ कलकत्ता

वैद्य, सी० वी० : हिस्ट्री आफ मेडियेवल हिन्दू इन्डिया (३ भागों में) पूना, १९२१

शर्मा, नन्दकुमार : सर्वार्य्य पंक्ति ब्राह्मण वैभव, प्रथम खण्ड, गोरखपुर, वि० सं० १९८५

शर्मा, आर०एस० : आस्पेक्स आफ पोलिटिकल आइडियाज एण्ड इन्स्टीट्यूशंस इन एन्शियेण्ट इन्डिया, वराणसी, १९५९

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

शर्मा, हरिकृष्ण : (संपा०), ब्राह्मणोत्पत्ति मार्तण्ड. बम्बई, १९५६
राजनारायण : सरयूपारीण ब्राह्मण वंशावली
सरकार, डी० सी० : स्टडीज इन द जियोग्राफी आफ मेडियवेल इंडिया, वाराणसी, १९६०
सरकार, डी० सी० : इन्डियन एपिग्राफिकल ग्लासरी, वाराणसी, प्र० सं० १९६६, इन्डियन एपिग्राफी, वाराणसी, १९६६
सूर्यकान्त : वैदिक देवशास्त्र, वाराणसी
सकालिया हंसमुख धीरजलाल : स्टडीज इन द हिस्टारिकल एण्ड कल्चरल ज्योग्राफी एण्ड एथनोग्राफी आफ गुजरात, पूना, १९४९
सकालिया, हंसमुख धीरजलाल : द आर्क्योलोजी आफ गुजरात, बम्बई, १९४०
सिंह, रामबृक्ष : द हिस्ट्री आफ चाहमानाज बनारस, १९६४

अभिलेख शास्त्र

१– कार्पस इन्स्क्रिप्सनम् इण्डिकेरम्, भाग ३, संपा०-जान फेथफुल फ्लीट
२– कार्पस इन्स्क्रिप्सनम् इंडिकेरम, भाग ४, (दो खंडों में), उटकमण्ड १९५५, संपा०-वासुदेव विष्णु मिराशी।
३– इन्स्क्रिप्सन्स आफ बंगाल, भाग ३, राजशाही, १९२७, संपा० एन० सी० मजूमदार।
४– कामरूप शासनावली, संपा० पद्मनाथ भट्टाचार्य, रंगपुर, १९३१
५– सेलेक्ट इन्स्क्रिप्सन्स, दिनेशचन्द्र सरकार, कलकत्ता १९४२
६– इंडियन एपिग्राफी, दिनेशचन्द्र सरकार, नई दिल्ली
७– इंडियन एपिग्राफिकल ग्लासरी, दिनेशचन्द्र सरकार, नई दिल्ली।
८– एपिग्राफिया इंडिका के प्रायः सभी अंक

शोध-पत्रिकायें

१– ऐन्शियन्ट इन्डिया
२– एनल्स आफ द भंडारकर ओरियन्टल रिसर्च इन्टीच्यूट
३– एपिग्राफिया इंडिका (भाग १ से ३५ तक)
४– इंडियन हिस्टारिकल क्वार्टर्ली
५– इंडियन एन्टीक्वेरी
६– इंडियन कल्चर

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

७– जर्नल आफ दि अमेरिकन ओरियन्टल सोसाइटी

८– जर्नल आफ द बनारस हिन्दू यूनिवर्सिटी

९– जर्नल आफ द बंगाल रायल एशियाटिक सोसाइटी

१०– जर्नल आफ द बिहार एण्ड उड़ीसा रिसर्च सोसाइटी

११– जर्नल आफ द बम्बई ब्रांच आफ एशियाटिक सोसाइटी

१२– जर्नल आफ न्यूमिसमेटिक सोसाइटी आफ इंडिया

१३– भारती (वाराणसी)

१४– काशी नागरी प्रचारिणी पत्रिका (वाराणसी)

१५– जर्नल आफ दि यू० पी० हिस्टारिकल सोसाइटी

१६– बुलेटिन आफ दि डेकन कालेज एण्ड रिसर्च इन्स्टीट्यूट

महत्त्वपूर्ण शोध-पत्रादि

१–रघुबीर, शाखाज आफ यजुर्वेद : जर्नल आफ वैदिक स्टडीज, भाग २

२–कोशाम्बी, डी० डी० : अर्ली ब्राह्मिन्स एण्ड ब्राह्मनिज्म, जर्नल आफ द बाम्बे ब्रांच आफ द एशियाटिक सोसाइटी, भाग २३, १९४७

३– ,, ,, : आन द ओरिजिन आफ ब्राह्मन गोत्राज–जर्नल आफ द बम्बई ब्रांच आफ द रायल एशियाटिक सोसाइटी, भाग २६, पार्ट १, लंदन, १९५०

४–काणे, पी० बी० : गोत्र एण्ड प्रवर इन वैदिक लिटरेचर-जर्नल आफ द बाम्बे ब्रांच आफ द रायल एशियाटिक सोसाइटी, भाग ३, लंदन, १९३५

५–दीक्षित, रामकुमार : लैन्ड ग्रान्ट्स आफ द चन्देल किंग्स–यू०पी० हिस्टारिकल सोसाइटी, भाग २३, लखनऊ, १९५०

६–फ्लीट, जे० एल० : नोट्स आन इंडियन हिस्ट्री एण्ड जियोग्राफी–इंडियन एंटीक्वेरी, भाग ३१, १९०२

७–भंडारकर, आर०जी० : फारेन एलिमेन्ट्स इन द हिन्दू पापुलेशन, इंडियन एन्टीक्वेरी, भाग ४०, १९११

८–डेवलेपमेंट आफ द गोत्र सिस्टम : पी० के० गोडे कमोमोरेशन वाल्यूम, पूना, १९६०

९–अग्रवाल, वासुदेवशरण : पाणिनिकालीन मनुष्य नाम, नागरी प्रचारिणी सभा पत्रिका, अंक ४, सं० २००६

१०–द ब्राह्मनिकल गोत्र सिस्टम : जर्नल आफ द एशियाटिक सोसाइटी आफ बंगाल, खण्ड ३, कलकत्ता, १९०४

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

११–संकालिया, एच० डी० : कलचरल सिग्नीफिकेन्स आफ द पर्सनल एण्ड द प्लेस नेम्स फ्राम वाकाटक इन्सक्रिप्शन्स–डेकन कालेज रिसर्च बुलेटिन, भाग १८, पूना, १९५७

१२–उपाध्याय, वासुदेव : माइग्रेशन आफ ब्राह्मनाज फ्राम मध्यदेश–द जर्नल आफ द बिहार रिसर्च सोसाइटी

१३–देव, विमलचरन : शाकद्वीप–एनल्स आफ बी० ओ० आर० आई०, भाग ३६, १९५५

१४–डा० भंडारकर : द नागर ब्राह्मणाज़ एण्ड द बंगाल कायस्थाज, इंडियन एन्टीक्वेरी, भाग ६१, बम्बई, १९३२

१५–घोष, जोगेन्द्र चन्द्र : श्रीहट्ट–नागर एण्ड श्री गौड ब्राह्मनाज–एनल्स आफ द भंडारकर ओरियन्टल रिसर्च इन्स्टीच्यूट, भाग १७, पूना, १९३६

१६–घोष, जे० सी० : ग्रान्ट आफ भास्करवर्मन आफ कामरूप एण्ड द नागर ब्राह्मणाज़, इंडियन हिस्टारिकल क्वार्टर्ली, भाग ६, १९३०

शब्दकोश :

अमरकोश, चौखम्भा, वाराणसी

इंगलिश–संस्कृत डिक्सनरी, वामन शिवराम आप्टे, दिल्ली, १९६४

इंडियन एपिग्राफिकल ग्लासरी, डी० सी० सरकार, वाराणसी, १९६६

इंडियन एपिग्राफी, डी० सी० सरकार, वाराणसी, १९६६

इन्साइक्लोपीडिया आफ रेलिजन एण्ड एथिक्स

इन्साइक्लोपीडिया आफ सोशल साइन्सेज

उपनिषद् महाकोश

ए संस्कृत इंगलिश डिक्शनरी, द्वि० सं०, लंदन, १९२७

कम्प्रेहेन्सिव इंगलिश हिन्दी डिक्सनरी : डा० रघुवीर

द कन्साइज आक्सफोर्ड डिक्सनरी आफ करेन्ट इंगलिश, पाचवाँ सं०, आक्सफोर्ड, १९६४

द ज्योग्राफिकल डिक्सनरी आफ एन्शियन्ट एण्ड मेडिवल इंडिया, लंदन, १९२७

वैदिक इण्डेक्स : मैकडानल एवं कीथ, दिल्ली।

शब्दकल्पद्रुम : चौखम्भा, वाराणसी।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

राज्य संग्रहालय पुस्तकालय
प्रो० बी० एन० पुरी
संग्र.
लखनऊ

State Museum Library
Lucknow
7146

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

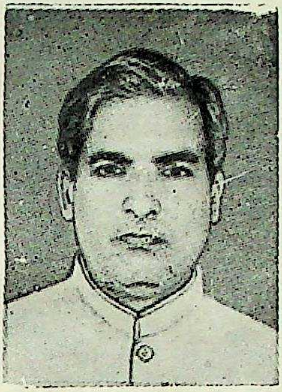

परिचय :— डॉ० गौरीशंकर तिवारी (१ जुलाई, १९३९) आत्मज स्व० पं० शुकदेव तिवारी, ग्राम-एकौनी, पो०-फेफना, जनपद-बलिया, (उत्तर प्रदेश)।

शिक्षा:— एम० ए०, पी-एच्० डी०, (गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर) शोध–कार्य—प्राचीन इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्त्व के विश्वप्रसिद्ध इतिहासकार डॉ० विश्वम्भरशरण पाठक, एम० ए०, पी-एच्० डी० (लंदन) के निर्देशन में।

प्रकाशित:— ग्रंथ 'उत्तर भारत के ब्राह्मणों का सामाजिक अध्ययन' (चरण, शाखा, गोत्र, प्रवर, विनिर्गत और वास्तव्य) तथा प्राच्यविद्या, इतिहास तथा संस्कृति पर अखिल भारतीय प्राच्यविद्या सम्मेलनों में पठित और अनेक शोध-पत्रिकाओं में प्रकाशित लगभग २ दर्जन से अधिक शोध लेख।

सम्प्रति:— अवध विश्वविद्यालयान्तर्गत, का० सु० साकेत स्नातकोत्तर महाविद्यालय, फ़ैजाबाद में प्राचीन इतिहास, संस्कृति तथा पुरातत्त्व-विभाग में अध्यापन कार्य, साकेत प्राच्यविद्या परिषद् के अध्यक्ष तथा परिषद् द्वारा प्रकाशित शोध-पत्रिका 'कोसल' के सम्पादक।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)